पंडित श्रीकांतिविजयजी विरचित

शील सत्त्व माहात्म्यमय

श्री महाबल मलया सुंदरीनो रास.

यथामति शुद्ध करीने

सम्यक् दृष्टि जनोने वांचवाने अर्थे

श्रावक भीमसी माणकें

श्री मोहमयी पत्तन मध्यें

शान्ति सुधाकर प्रेसमा छपावी

प्रसिद्ध कर्यो छे.

(आवृति बीजी)

संवत् १९६३ महासुद १ सने १९०७

॥ ॐ श्रीपरमगुरुज्योनमः ॥

॥ अथ पंडित श्रीकांतिविजयजी कृत ॥

॥ श्री महाबल मलयसुंदरीनो रास प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री सुख संपदा, पूरण परम उदार ॥ आदीसर आनंद निधी, प्रणमु प्रेम अपार ॥ १ ॥ फणी मणि मंमित नील तनु, करुणारस जरपूर ॥ पारस जलधर पल्लवो, बोध बीज अंकूर ॥ २ ॥ शासन नायक साहेबो, गिरुउ गुण विलसंत ॥ हरिलंछन हियमे धरुं, महावीर जगवंत ॥ ३ ॥ गणधर मुख मंरूप व से, अविहम महिमा जेह ॥ अंतर तिमिर विनासिनी, समरुं सरसति तेह ॥ ४ ॥ चउमंगल वरत्यां हवे, प्रगट्यो वचन प्रकाश ॥ निज श्छा पूर्वक पणे, जाषुं वारू जास ॥ ५ ॥ धर्म सहित कौतुक कथा, कविता कहेतो सार ॥ निज जीहा पावन करे, विकसे मति परिचार ॥ ६ ॥ ॐकार धुर संठव्यो, चउवेदा चोसाल ॥ तिम पुरुषारथ धुर धरयो, धर्म एक सुरसाल ॥ ७ ॥ डुरगति पम्ता जीवने, धारणथी ते भ

र्म ॥ नाणादिक त्रण रत्नमय, कहीयें ताहि सुधर्म ॥ ॥ ८ ॥ नाणादिक जिन उपदिस्या, निर्मलता गुण हेतु ॥ पण विशेष नाणज कह्यो, साधिवणो संकेतु ॥ ९ ॥ अकल पदारथ सोधिवे, परमारथथी नाण ॥ निरुपाधिक लोचन नवुं, त्रीजुं नाण प्रमाण ॥ १० ॥ निःकारण बंधव समो, भवजल तरण उपाय ॥ खल लता दुरगति खामसें, आलंबन निरपाय ॥ ११ ॥ अंतर तिमिरने भेदवा, नाण दीप निरबाध ॥ भरता दिक नृप नाणथी, भवजल तरया अगाध ॥ १२ ॥ नाण विपदथी उद्धरे, नाण दीये सवि थोक ॥ मल यसुंदरी जिम सुख लही, चित्त धरी गुरु सलोक ॥ १३ ॥ किम आपदथी उतरी, किम पामी सुख साथ ॥ तास चरित्र चौपै कहुं, सुणजो सहु चित्त लाय ॥ १४ ॥ आलश निद्रा परिहरी, ठंडी विकथा मित्र ॥ सुणतां मलयानी कथा, करजो करण पवित्र ॥ १५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ अजितजिणंदसुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ जंबूद्वीप सोहामणो, सोहे सोहे हो सवि द्वीप विचाल के, लवण समुद्रें वींटीउ, लाख जोय णहो वरतुल जिम थालके ॥ जं० ॥ १ ॥ तेमांहे क्षेत्र भरत अछे, खटखंडे हो मंडित सुविशाल ॥ नव नव

संपद नूमिका, ते साधे हो चक्री गेगाल ॥ जं० ॥ २ ॥
दक्षण नाग चंद्रावती, नगरी तिहां हो गजे निकलं
क ॥ अलकापुरि ऊपर गई, लंकावली हो सायर जस
संक ॥ जं० ॥ ३ ॥ विस्तर चहुटा चिहुं दिसें, चोरा
सी हो चावा जिहां खास ॥ सायर तजी जल दूष
णें, जाणे लखमी हो तिहां कीधो निवास ॥ जं० ॥
॥ ४ ॥ फटिक रतनमय सोधनी, रुचि ऊजल हो प
सरे अनिराम ॥ अंधारें पख पण नहीं, तिणे रहेवा
हो क्षण तिमिरनो ठाम ॥ जं० ॥ ५ ॥ किहां कणें
घर चंद्रकांतनां, पमिबिंबे हो तिहां चंद्र मरीच ॥ अ
स्खल जल परनालना, वरसालो हो परगट करे सी
च ॥ जं० ॥ ६ ॥ गयणांगणतल पूरती, अटारी हो
ऊंची कैलाश ॥ गोखें गोखें रहे गोरमी, जाणे अपछर
हो करे रंग विलास ॥ जं० ॥ ७ ॥ मरकत विद्रुम
कांचने, कै रचिया हो मंदरना जाल ॥ दिसि दिसि तेज
जलामझे, होये दिन दिन हो सुर धनुष अकाल ॥
॥ जं० ॥ ८ ॥ कुंकुम मृगमद वासीया, जलपूरें हो
दगगें प्रनाल ॥ नमर नमे रसीया परें, रस लंपट
हो करता ढक चाल ॥ जं० ॥ ए ॥ गढविंटी चिहु
दसि पुरी, परिसूरी हो सुखी ए सवि लोग ॥ छुखियां

आलंबन लहे बहु, पामे पामे हो नव नवला जोग ॥ जं० ॥ १० ॥ कंटक कंटक तरु रह्या, दो जीहा हो विषहर कहेवाय ॥ खल दाखीजे खेतमां, झंझदीजे हो सुर मंदिर गाय ॥ जं० ॥ ११ ॥ करछेदन नृप जे ग्रहे, तिम कुसुमे हो बंधन उपचार ॥ कुटिल पणो केसें ठव्यो, नव दीसे हो कोइ लोक मजार ॥ जं० ॥ ॥ १२ ॥ निर्मल सरवर जल जर्यां, के दर्प्पण हो दिसिनां मनुहार ॥ जोगी जमर जीले घणा, घण महके हो कमलोनो सार ॥ जं० ॥ १३ ॥ वनवाकी आरामनी, ठवि नीली हो अकती चिहुं ठेर ॥ स्वर्गपुरी जीतण ज णी, कसी जीड्यो हो बखतर दृढ जोर ॥ जं० ॥ १४ ॥ अतुलवली बली नृप समो, रिपुमृगने हो त्रासन जे सींह ॥ दाता ताता साहसी, न्याये धोरी हो गुणवंत अबीह ॥ जं० ॥ १५ ॥ सबल प्रतापें तापव्या. रिपु वसीया हो सीतल गिरि कूंज ॥ वनफल जखी निजर पीयें, मुनिवृत्तें हो जीवे दुःख पूंज ॥ जं० ॥ ॥ १६ ॥ लखमी करकमलें वसी, मुख पद्दने हो सरसती विलसंत ॥ विण आदर रहेवो किशो, जस कीरति हो गइ कोपी दिगंत ॥ जं० १७ ॥ देखें धनुप नमावतां, शिर नमिया हो अरिनां तत

काल ॥ वीरधवल नामे तिहां, करे राजा हो निज राज संभाल ॥ जं० ॥ १७ ॥ देशावर नृप भेटणा, बहु आवे हो हय गय रथ कोमि ॥ चतुरंगी सेनाधणी, नवि आवे हो तेहनी कोइ जोमि ॥ जं० ॥ १ए ॥ कोमल चंपक दल जिसी, घर राणी हो रतिने अनुहार ॥ चंपकमाला तेहने, शीलादिक हो गुण मणि नंमार ॥ ॥ जं० ॥ २० ॥ बीजी कनकवती अछे, सोहागिण हो नृप प्रेम निधान ॥ विलसे रंगे रायसुं, सुखलीणी हो बे चढते वान ॥ जं० ॥ २१ ॥ पुर वर्णनी परगमी, इंम कांते हो कही पहेली ढाल ॥ सुणो श्रोता जीजी करी, आगल छे हो अतिवात रसाल ॥ जं० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पालें प्रजा, निज संतति परें तेह ॥ दुःख दोहग दूरें करे, दिनदिन धरतो नेह ॥ १ ॥ एक दिन चिंतातुर थइ, बेठो तेह नूपाल ॥ अतिहिं आमण दूमणो, नीची दृष्टि निहाल ॥ २ ॥ आदर नवि दे केहने, दिलगिरी दिल मांह ॥ गेमी छय सें नवनवी, रागरंगनी चाह ॥ ३ ॥ वदनकमल जांखुं थयुं, दुरबल थयुं शरीर ॥ चिंता मायणी आगलें, धीरज कुंण सहे धीर ॥ ४ ॥ चिंता मायखि

मनवसी, क्षण क्षण पंजर खाय ॥ तिलतिल करी जे संचीउं, ते तोले तोले जाय ॥ ५ ॥ संतापें ता प्यो घणुं, न सुणे केहनी वात ॥ अन्न उदक त्यें परिहरि, जोगीसरज्युं ध्यात ॥ ६ ॥ चंपकमाला पे खीउं, इणे अवसर नरनाह ॥ आइ तुरत पणे ति हां, सभ्रम भर चित्तचाह ॥ ७ ॥ राय आगल उनी रही, धरती राग विशेष ॥ करजोमी बोली प्रिया, इ णीपरें अवर उवेख ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ करजोमी मंत्रि कहे ॥ ए देशी ॥

॥ करजोमी राणी कहे, अरज सुणो महाराज हो प्रीतम ॥ पूढुं हुं उंदे रह्या, कहेतां मत करो लाज हो ॥ प्री० ॥ क.र० ॥ १ ॥ बोलो नहीं मन मेलवी, खोलो नहीं सदभाव हो ॥ प्री० ॥ आवतां आव कहो नहीं, जातां कहो नहीं जाव हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ २ ॥ अइवेला आण उलखू, न धर्यो कांइ मने ह हो ॥ प्री० ॥ वारी जाउं लखवार हूं, मुजरो ल्यो गुण गेह हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ३ ॥ दासी हुं पा यें पमुं, थें म्हारा सिरना मोम हो ॥ प्री० ॥ थें जी वणरी उपधी, कुंण करे तुमची होम हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ४ ॥ किम सरसे बोल्या विना, प्रगटें ठ अ

म ताप हो ॥ प्री० ॥ मौन लीउ केणे कारणे, चिं
तातुर थइ आप हो ॥ प्री० कर० ॥ ५ ॥ केणे तु
म कथन कीउ नहीं, कुणे डुहव्या महाराय हो ॥
प्री० ॥ के कांता कोइ दिल वसी, चिंतो तास उपा
य हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ६ ॥ के कोइ अरिअण
जागीउ, चिंता पेठी तास हो ॥ प्री० ॥ के जोगी
जंगम भल्यो, कीधा तेणे उदास हो ॥ प्री० ॥ क
र० ॥ ७ ॥ के कोइ बाधा उपनी, अंगे जीवन प्रा
ण हो ॥ प्री० ॥ के इणे वेला सांभरयो, अरिअण
वयरी पुराण हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ८ ॥ कवण अ
वे ते राजीउं, जे बांधे तुमसुं तेग हो ॥ प्री० ॥ पं
चायण गिरि गाजते, मृग नासें करे वेग हो ॥ प्री०
॥ कर० ॥ ९ ॥ के केणे डुरजने भाखीउं, अणहूंतो
अम दोष हो ॥ प्री० ॥ के किणहिक अपहरि
लीउं, नवखो लखमी कोश हो ॥ प्री० ॥ कर०
॥ १० ॥ के मनमान्यो सांभरयो, परदेशी कोइ मित्त
हो ॥ प्री० ॥ सुरत समयनुं बोलडुं, के खटक्यो को
इ चित्त हो ॥ प्री ॥ कर० ॥ ११ ॥ के मारग सं
वेगनो, भेदाणुं सरवंग हो ॥ प्री० ॥ मनमेलु साचुं
कहो, आशाय एह अभंग हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥

१२ ॥ यद्यपि न जांजे श्रम थकी, चिंता मोटी कांय हो ॥ प्री० ॥ तो पण एकांगे रही, समतायें विंहचाय हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १३ ॥ एम सुणा ध रणी धवे, हृदयें खीना वोल हो ॥ प्री० ॥ सरिसा मन जेदन जला, मधुरा अमृतनें तोल हो ॥ प्री० ॥ ॥ कर० ॥ १४ ॥ कहेसे हवे राणी प्रतें, ए थइ बीजी ढाल हो ॥ प्री० ॥ कांति कहे धन ते त्रिया, जे लहे पति चित्त चाल हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी उद्वेग जर, वोल्यो तव जूपाल ॥ चिंता कारण चित्तधरी, सुण सुंदरी सुकुमाल ॥ १ ॥
जे तें पूव्या विविध परें, नहीं तेहनी मुज चिंत ॥
शुरू स्वजावे सर्वथा, तिण वातें निश्चिंत ॥ २ ॥
ए मुज चिंता उमटी, अकस्मात बलवंत ॥ मूल थकी मांमी कहूं, सुपरें सवि विरतंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ धिग धिग विषय विटंबना ॥ ए देशी ॥

॥ इण पुरमां व्यवहारिया, निवसे वे गुणवंतो रे ॥ लोजनंदी लोजाकरा, वे जाइ धनवंतो रे ॥ १ ॥ धिगधिग लोज विटंबना, लोजे लखण जाय रे, लोजे नर पीका सहे, लोजे डुरगति थाय रे ॥ धि० ॥ २ ॥

बांधव नेह धरे घणुं, मांहो मांहे बेहो रे, नेद न पामे ए कदा, खीर नीर परें तेहो रे॥ धि० ॥ ३ ॥ सोनाकरने सुत थयो, नाम दीउं गुणवर्म्मा रे ॥ सोजनंदी परण्यो फरी, पण सुत नही पूरव कर्म्मा रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ एक दिवस बेठा मली, हाटें बे हु जेवारो रे ॥ परदेशी एक पंथीयो, आयो तेथ तिवारो रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ नद्र प्रकृति उन्नो रह्यो, तेहने को न पिछाणे रे ॥ दीठो शेठें एकलो, उत्तम पुरुष प्रमाणे रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ बोलाव्यो गौरव पणे, आगत स्वागत कीधो रे ॥ आदरसुं आगल नलो, आसण बेसण दीधो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ पूछे शेठ किंहां रहो, किम आव्या इण गामे रे ॥ जात किसी छे तुमतणी, नीकलिया किणे कामे रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ कहे पंथी कृत्रि अछुं, परदेशी असहायो रे ॥ देश देशावर देखतो, फरतो हुंतो इहां आयो रे॥ धि०॥ ए ॥ शेठें निजघर तेडीउं, नोजन नगत नलेरी रे ॥ कीधी वली केइ दिन लगें, राख्यो जातो घेरी रे ॥ धि० ॥ १० ॥ विश्वासें हलि मलि रह्यो, अंतर कांइ न राखे रे ॥ देश विदेश तणी घणी, वात नली न ली नाखे रे ॥ धि० ११ ॥ अन्य दिवस कहे पंथी

यो, ए तुंबी मुज लीजे रे ॥ पाछी देजो शेठजी, जिण दिन फरी मागीजे रे ॥ धि० ॥ १२ मुखमुद्रा गाढी करी, शेठ तणे कर दीधी रे॥ ऊंची बांधी तुंबडी, हाट मांहे तेणे सीधी रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ वे साहने तेणे कह्यो, करजो एहनी संभाल रे ॥ ते कहे हुं जीव न समो, एह छे तुमचो माल रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ चतुर विदेशी चूकीउं, रोप्यो अनरथ मूल रे ॥ कांति विजय कहे ढाल ए, त्रीजी थइ अनुकूल रे ॥ धि० ॥ १५ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ तुंबी लागो ताप, अवर वस्तुनो आकरो ॥ वाध्यो रसनो व्याप, जरवा लागी जटकसुं ॥ १ ॥ दोहा ॥ तुंबीमांथी रस गली, हेठ वंधायें वंद ॥ लोह कोश नीचें पडी, सिंचाणी निरबंद ॥ २ ॥ लोह दिशा लघु नांखीने, हेमं हूउं द्युतिमंत ॥ हाट कोण जलिमलि रह्यो, सांड्यो तिमिर तदंत ॥ ३॥ दृष्टि पड्यो दो सेठने, सोवन साचे रंग ॥ चमत्कार चित्त पामीउं, जाण्यो रसनो संग ॥ ४ ॥ अतिलोभें आंधा हूआ, तुंबी ले निस्संक ॥ गुपत पणें मूकी रहे, न गण्यो काल कलंक ॥ ॥ ५ ॥ मायावी मन हरखीया, लोभें वाध्या लुंक ॥ कुलवट वहेती मूकीने, कीधो कारज त्तुंक ॥ ६ ॥ अ

ति उछक पंथी थयो, साचो चालण संच ॥ तुंबी मा
गी ते कन्हें, विनय वचन परपंच ॥ ७ ॥ मायावी मृदु
वचनसुं, बोल्या बे डुरबुद्धि ॥ व्यग्रपणे तुज तुंबिनी,
कीधी कांइ न सुद्धि ॥ ८ ॥ उद्धत उंदर आफले, ठा
म ठाम प्रचंम ॥ काढ्यो बंधण तुंबिका, पमी थइ श
तखंम ॥ ए ॥ कोइक दिन तसु कटकमा, दीठा पम्या
अनेक ॥ अम दिलमें अति डुःख हुउं, चिंताये व्यति
रेक ॥ १० ॥ समसगरां करी साचज्युं, कृतिम करे डुःख
जार ॥ अपर तुंबीना खंम ले, देखाम्या तेणी वार ॥
॥ ११ ॥ वैदेशिक विलखो थयो, खोइ सघली आथ॥
हाहा दैव किशुं कीयो, जूमि पम्या बे हाथ ॥ १२ ॥
दक्ष पणे जाएयो तेणे, ए नहीं तेहना खंम ॥ जिम
तिम तुंबी उलवी, लल काढे ठे लंम ॥ १३ ॥ किहां
जाउं केहने कहुं, किशो करुं हुं सूल ॥ दगो दिउ डुष्टें
बुरो, लीधो तुंब असूल ॥ १४ ॥ कहुं कदाचित राय
ने, तोपण रस ले तेह ॥ चिंति चुंपे चित्तमें, इम बोले
गुण गेह ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ विंछियानी देशी ॥

॥ मोरी तुंबी दीउ शेठजी, हुंतो कहुंछुं गोद बि
छाय रे ॥ काम न कीजें कांइ तेहवो, जेणे मान महा

तम जाय रे ॥ मो० ॥ १ ॥ अरे परदेशीनुं उलवी,
एह जीवन लीधो मुज्झ रे ॥ जण वीससीआ नीसा
समो, दुःख होसे सही तुज्झ रे ॥ मो० ॥ २ ॥ वली
तुम सरिखा जो इम करे, जन निंदित माठां काम रे ॥
तो संतति विना नृ लोकमां, सत्य रहेवानो कुंण ठाम
रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ जलनिधि रहे मर्यादमां, धरणि शिर
शेष वहंत रे ॥ अति सूर तपे नहीं आकरो, ते म
हिमा छे सत्यवंत रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ सत्यें सुर सानि
ध करे, होय सत्यें पुरुष प्रमाण रे ॥ जग उत्तम स
त्य राखण भणी, निज प्राण करे कुरवाण रे ॥ मो०
॥ ५ ॥ कांइ हांसुं न कीजें हेलथी, ए घर खोयानुं ठा
म रे ॥ पछतावो होसे तुम मने, इण वातें खोसो मा
म रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ इम जूठा सम खातां थकां, ना
ठी तुमची किहां लाज रे ॥ नर उत्तम हाम वहे न
ही, करतां भूंमां एहज काम रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ हवे
लोक वसें लहेता नथी, एह वावो छे विष वेलि रे ॥
तुम अनरथ फल देसें घणा, हुं कहुं हुं लज्जा मेलि
रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ विहुं शेठ कहे सुण पंथिया, कांइ
सुद्धि गइछे तुज्झ रे ॥ जग वाकि न चोरें चीजमां, दिल
बूज विचारि अबूज रे ॥ मो० ॥ ए ॥ इम जूठे दोष

चढावीने, तुं खोवे कां निज गाम रे ॥ किहां सुणिया शाह शिरोमणी, ए करतां जुंठा काम रे ॥ मो० ॥ १० ॥ फिट लाजे नहीं कां बोलतो, अणहुंति एम गमार रे ॥ जो होंस होये राउल तणी, तो जइ आवीयें ए वार रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ अति काठो उत्तर इम दी ठं, शेठें करी कपट जिवार रे ॥ ते पंथिक निरास प णो थई, कोप्यो अति जोर तिवार रे ॥ मो० ॥ १२ ॥ कांइ साची सीखामण द्युं हवे, इम बोल्यो तेणीवार रे ॥ एक विद्या गोठी थंत्तणी, ते थंन्या घरने बार रे ॥ ॥ मो० ॥ १३ ॥ तव संधे संधे बंधित थया, न खिसे त्यांथी तिल मात रे ॥ बिहुं चित्र लिखित परें थिर रह्या, मन मांहे घणुं अकुलात रे ॥ मो० ॥ १४ ॥ तेह ऊठी चल्यो परदेशियो, दुःखजाल बंधाणा बेह रे ॥ इहां चोथी ढाल सोहामणी, इम कांतिविजय कही एह रे ॥ मो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा शोरठी ॥

॥ सोचें सूधा शेठ, बेहु ऊना बारणे ॥ दैवें दीधी वेठ, पेट मसली पीडा करी ॥ १ ॥ आव्या लोक अ नेक, थंत्त जिशा थिर देखीने ॥ ठेतरिया ठग ठेक, इम बोले अचरिज तरया ॥ २ ॥ सुणतां लोक सुजाण ॥

शेठ कहे संकट पड्या ॥ करुणा करी को जाण, अ
मने छोडे इहां थकी ॥ ३ ॥ असे न जाएयो एह, आ
पद पडसे आकरी ॥ दुःखकर दाधी देह, प्राण हुआ
छे प्राहुणा ॥ ४ ॥ कीजे कवण उपाय, मरतांने मा
रया दिवे ॥ जो किम दूड्यो जाय, तो काम न कीजे
एहवो ॥ ५ ॥ लोक हसे लख कोडि, के रोवे के कूकु
ण ॥ देता दह दिसि दोड, कौतुक निरखे कइ जणा ॥
॥ ६ ॥ हुई त हाहाकार, पुर मांहे प्रबल पणे ॥ वा
त तणो विस्तार, जाएयो सघले जुगतिसुं ॥ ७ ॥
दोहा ॥ गुणवर्म्मा इणे अवसरे, ग्रामांतरथी गेह ॥
आयो वात कुटुंबथी, जाणी सघली तेह ॥ ८ ॥ पि
ता पितावांधव बेहु, द्वारे थंभ्या देखि ॥ लाज्यो
मनमांहे घणो, दुःख पाम्यो सविशेष ॥ ए ॥ कु
मर कहे सुणो तातजी, म करो चिंता कांय ॥ विधि
सुं तुम छोडण भणी, करसुं कोडी उपाय ॥ १० ॥
चींतातुर तव कुमर ते, सोधे नवनव बुद्धि ॥ कार न
आवी कांइ तिणे, जोवे तांत्रिक सिद्ध ॥ ११ ॥
॥ ढाल पांचमी ॥ अवला किम ऊवर्गीये रे ॥ एदेशी ॥
॥ कुमर हुवे उनमत थयो रे, सोधे नवनव ठाय
रे ॥ मांत्रिक तांत्रिक मेलवा रे, मांडे कोडि उपाय रे ॥

तातने ढोळवा ॥ करता ढील न कांय रे, पुरमांहे फरे ॥ जोवे जुगति बनाय रे, बंधण तोळवा ॥ पण नावे को य दाय रे, तातने ढोळवा ॥ १ ॥ गाम नगर पुर क ब्बडे रे, जमतो जासे रे आम ॥ जे अम तातने ढो ळवे रे, तो मुंह माग्या धुं दाम रे ॥ ता० ॥ २ ॥ व चन सुणी ऊठ्या तिसे रे, विविध वैद्यना पुत्र ॥ सिद्ध बुद्ध औषधी धरा रे, जाणता निज निज सूत्र रे ॥ ता० ॥ ३ ॥ केइ जंगम केइ जोगीया रे, केइ तापस अवधूत ॥ जाप जपंता आविया रे, चाढी शीस विजूत रे ॥ ता० ॥ ४ ॥ कै कापिल कै कापडी रे, कै सन्यासी जक्त ॥ कै बांजण वली वेदीआ रे, कै ध्याता शिव शक्ति रे ॥ ता० ॥ ५ ॥ ब्रह्मचारी केता मिल्या रे, केताइक श्रीपा त ॥ केइ निरंजन पंथना रे, केइक चरक कहात रे ॥ ता० ॥ ६ ॥ केइ दिगंबर दोडीया रे, जरडाने जगवंत ॥ केइ त्रिदंडी मुंडिया रे, आगल कीध महंत रे ॥ ता० ॥ ७ ॥ राउल रंगे ऊमट्या रे, दोड्या केइ दरवेश ॥ जगने फंदे पाडवा रे, करता नवनव वेश रे ॥ ता० ॥ ८ ॥ इष्टधरा अजिचारका रे, जतन करावे को डि ॥ आवी विध विध ऊपचरे रे, करता होडा होड रे ॥ ता० ॥ ए ॥ एक कहे आहुति दियो रे, बलि द्यो एक

कहंत ॥ इष्ट मनावो कोइ कहे रे, मंगल को विरचंत रे ॥ ता० ॥ १० ॥ एक कहे धूणावीयें रे, एक कहे दीजे मंत्र ॥ एक कहे शिर मूंकीने रे, करियें तंत्र अचंत्र रे ॥ ता० ॥ ११ ॥ एक कहे जल गंटीयें रे, मंत्री एहने अंग ॥ एक कहे ए यंत्रथी रे, थासे पहेला चंग रे ॥ ता० ॥ १२ ॥ एक कहे ग्रह पूजिने रे, करसुं साजा आंहिं ॥ एम अनेक शब्दे करी रे, कोलाहल हूउं त्यांहिं रे ॥ ता० ॥ १३ ॥ उद्यम सवि निःफल थयां रे, कोइ न आव्यो तंत ॥ रणनी ऊखर भूमिका रे, जिम जलधर वरसंत रे, ॥ ता० ॥ १४ ॥ जिम जिम युगति उपचरया रे, तिम तिम वाधे पीर ॥ सायर जल ऊंडा जिहां रे, तिहां वडवानल नीर रे ॥ ता० ॥ १५ ॥ दुर्जन परे मंत्रादिकें रे, कीधा तेह निरास ॥ ऊठी गया निज निज थले रे, साथ मनोरथ तास रे ॥ ता० ॥ १६ ॥ कुमर इस्यो मन चिंतवे रे. ऊठी जेहथी आग ॥ समसे तेहथी तेहने रे, आणुं उद्यम लाग रे ॥ ता० ॥ १७ ॥ उपलदक साथें लीउं रे, तव नर एक सखाय ॥ चाल्यो नर सोधण नणी रे, कुमर करी चित्त गाय रे ॥ ता० ॥ १८ ॥ शेठ रह्या वांध्या तिहां रे, करशे कुमर सहाय ॥ ढाल कही ए पांचमी रे, कांतिविजय सुख दायरे ॥ ता० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वनगिरि गुहिर पुर नगर, निसदिन तेह जमं
त ॥ पग पग पूछे पंथमें, पण खबर न कोइ कहं
त ॥ १ ॥ विकटपंथ श्रमथी पड्यो, मांदो तेह स
हाय ॥ मूकी कोइक नगरमां, कुमर चल्यो असहा
य ॥ २ ॥ पुर अटवी उल्लंघतो, पोहोतो एकण दे
श ॥ निर मानुष मोटो तिहां, (मनुष्यनी वस्तिविना
नो) दीठो नगर विशेष ॥ ३ ॥ उंचां मंदिर जलहले,
जाणे गिरि कैलास ॥ ठाम ठाम सुंनी पडी, मणिमा
णिकनी रासि ॥ ४ ॥ धानपूंज पंखी चणे, वस्त्र उ
डाडे वाय ॥ श्रीफल फोडीने वांनरां, खांत करीने
खाय ॥ ५ ॥ त्रूटा ध्वज धरणी पड्यां, ढोल्या मंदिरा
माट ॥ फूलपगर ठावे जर्यां, सुंना दीसे हाट ॥ ६ ॥
कुमर तव विस्मित पणे, कीधो नगर प्रवेश ॥ दीठो
नर तिहां एक अति, सुंदर तरुण वेश ॥ ७ ॥ बोल्यो
तरुणो कुमरनें, कुण छे तुं महाजाग ॥ आव्यो कि
हांथी किहां रहे, साचो कहे अम आग ॥ ८ ॥ कु
मर कहे सुण मोहनां, हुं पंथी असहाय ॥ पंथकरी
थाको घणुं, आव्यो हुं इणे ठाय ॥ ए ॥ तुं कुण
दीसे एकलो, बेठो छे किण काम ॥ रुक्मिनरी सुंनी

किसें, कुण नगरीनुं नाम ॥ १० ॥ तत्क्षण नर बोल्यो इश्युं, सुण बांधव गुणवंत ॥ मूलथकी कहुं मांडीने, सकल परें विरतंत ॥ ११ ॥

॥ ढाल ७मी ॥ कपूर होये अतिऊजलुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुशवर्द्धन पुर ए भलुं रे. स्वर्गपुरी उपमान ॥ राजासूर शोभतो रे. दिन दिन चढते वान ॥ सुगुण नर सांभल मोरी वात ॥ १ ॥ पुत्र हुआ बे सूरनें रे. जयचंद्र ने विजयचंद्र ॥ बे बांधव वाला घणुं रे. कुवलयनें जम चंद्र ॥ सु० ॥ २ ॥ मुज बांधव जय चंद्रने रे. ताते दीधुं राज ॥ लाडे लाड्यो हुं रहुं रे. न लहुं काज अकाज ॥ सु० ॥ ३ ॥ स्वर्गे तात सधारिया रे, मुज मन बेठी चींत ॥ सघला दिन नहिं सारिखा रे, जग सहु एम कहंत ॥ सु० ॥ ४ ॥ बांधव आणा किम वहूं रे. आणी एम अंदेश ॥ अभिमाने हुं नीसर्यो रे, जोवा देशविदेश ॥ सु० ॥ ५ ॥ जोतो जोतो नवनवा रे. देश विदेश चरित्त ॥ एक दिवस चंद्रावती रे. पुरी वन मांहे पहुत्त ॥ सु० ॥ ६ ॥ सोम्य सुरूप सोहामणो रे. कोइक विद्या सिद्ध ॥ दीठो नर में तत्क्षणें रे. प्रणपति विनयें कीध ॥ सु० ॥ ७ ॥ पीडा तनु तस आकरी रे, रोग विकट अतिसार ॥ की

ण अंग लागे नहीं रे, उठण सक्ति लगार ॥ सु०॥ ७॥ मुज मन करुणा ऊपनी रे, कीधा बहु उपचार ॥ थो मा दिन मांहे थयो रे, रोग सकल परिहार ॥ सु० ॥ ॥ ए ॥ प्रसन्न थई मुज पुढीउं रे, नामादिक सवि तेण ॥ विद्या बे दीधी नली रे, नक्ति विमोहे एण ॥ सु० ॥ ॥ १० ॥ थंजकरी एक वशिकरी रे, बीजी सूधी पाठ ॥ विगत बताई जूजूई रे, जोमी जाचा गाठ ॥ सु०॥ ११॥ रस तुंबी दीधी वली रे, सेवा साची जाण ॥ चतुर तु रत इम बोलीउं रे, मुज उपर हित आण ॥ सु० ॥१२॥ गाढी खप करतां लह्यो रे, अति डुर्लन्न रस एह ॥ लोह थकी कांचन करे रे, तिलन्नर फरस्यो जेह ॥ सु० ॥ १३ ॥ ते आप्यो बे तुजाने रे, करजे कोमी ज तन्न ॥ फिरि फिरि लहेतां दोहिलो रे, जेहवो दिव्य र तन्न ॥ सु० ॥१४॥ मात पिता जिम बालने रे, देई सीख सुजाण ॥ श्रीपरवत नेटण नणी रे, तेह गयो गुण खाण ॥ सु०॥ १५ ॥ तिहांथी हुं चाल्यो वली रे, जो वा देश विशेष ॥ कौतुक रंगे नवनवां रे, अचरज दीठ अलेख ॥ सु० ॥ १६ ॥ फिरि आव्यो चंडावती रे, केतेक दिवस अटंत ॥ जोग मले नवितव्यनुं रे, विधिना जेह घटंत ॥ सु० ॥ १७ ॥ पुरनां कौतुक निरखतो

रे, आयो मध्य बाजार ॥ लोत्ताकर लोत्तनंदीनेरे. हाट गयो सुविचार ॥ सु० ॥ १८ ॥ दक्षपणे बेहु बांधवें रे, हरी लीधो मुज मन्न ॥ हली मली तस घर हुं रह्यो रे, विश्वासें निसदिन्न ॥ सु० ॥ १९ ॥ ते तुं बी थापण धरी रे, जाणी साचा शाह ॥ केता दिवस विलंबीयो रे, पुर पेखणरी चाह ॥ सु० ॥ २० ॥ जननी दर्शन उमह्यो रे, कीधो चालण संच ॥ पहेलो शेठे जाणीयो रे, तुंबीनो परपंच ॥ सु० ॥ २१ ॥ तुंबी मागी ततखणे रे, करता निजपुर सिद्ध ॥ लोत्तप्रसित वे बांधवें रे, कूमो उत्तर दीध ॥ सु० ॥ २२ ॥ कही न शकुं जोरें किस्युं रे, दीप्यो क्रोध अपार ॥ जुगतो कूमाने शीरें रे, कीधो में प्रतिकार ॥ सु० ॥ २३ ॥ आयो इण पुर वेगशुं रे, दीठो शून्य समय ॥ मुज मन ताप वधारणी रे, पेठी चींता उदय ॥ सु० ॥ २४ ॥ रति नाठी दुःख उमट्यो रे, विरुउ विरह निपट्ट ॥ ढाल उठी कांती कही रे, कुमर वचन परगट्ट ॥ सु० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुणवर्मा चींते इस्युं, ए नर तेहिज होय ॥ विद्यावले जेणे कोप करि, बांध्या बांधव दोय ॥ १ ॥ मस्तकपरें जाणुं नहीं, ज्यां लगे सघली वात ॥ त्यां लगे

गें प्रगट करुं नहीं, आतम गत अवदात ॥ २ ॥ इम निश्चयकरी चित्तसुं, पूछे वलीससनेह ॥ पछी थयो सुं साहेबा, हितकरी सर्व कहेह ॥ ३ ॥ कुमर कहे हुं दुःख जरथो, फरियो नगर अशेष ॥ विस्मय सहित कुटुंबनी, व्यापि चिंत विशेष ॥ ४ ॥ शून्यपुरी सब निरखतो, नृपकुल पोहोतो जाम ॥ राजभुवन रमणिय द्युति, उपरें चढीउं ताम ॥ ५ ॥ दीन वदन विछाय तनु, करती चिंत अपार ॥ बेठी दीठी एकली, तिहां वरु बांधव नार ॥ ६ ॥ में बोलावी हेजसुं, आवी साहमी धाय ॥ नयणे श्रावण जरु लगी, हीयडें दुःख न समाय ॥ ७ ॥ मधुर लपा मुज आगलें, मूके बेसण पीठ ॥ वात विगत पूछण जणी, हुं तस निकट बईठ ॥ ८ ॥ रीति कीसी एह नगरीनी, दुखस्थित किम आम ॥ इंम पूछ्यो में ततखिणें, बोली का त विराम ॥ ए ॥

ढाल सातमी ॥ मोरासाहेबहोश्रीशीतलनाथके ॥ एदेशी

॥ मोरा देवर हो सुण दुःखनी वात के, कहेतां हइडुं थरहरे ॥ वाल्हाने हो आगें अवदात के, कह्या विण कहो किम सरे ॥ १ ॥ एक दिवसें हो इंण पुर उद्यान के, तापस कोइक आवीयो ॥ रक्तांबर हो धर

नो शिव ध्यान के, मास दिवस तप जावीयो ॥ २ ॥ तस सांजलि हो महिमा निरपाय के. लोक सकल आवी नमे ॥ केइ चरचे हो जक्ते करी पाय के. केशर चंदन कुंकुमे ॥ ३ ॥ केताएक हो सेवे तस पास के, अहनिशि शिष्य जेम तेहनां ॥ केताएक हो स्तुति मांझी खास के, लोक ते गहेला नेहना ॥ ४ ॥ आमंत्रे हो केइ जोजन हेत के. पण नावे नेहने घरे ॥ तुज बांधव हो एकदिन सुचि चेत के. पारण काजे तुंहतरे ॥ ५ ॥ ते तापस हो मानी नृप वयण के. आव्यो पारण कारणे ॥ नृप बोले हो इम विकसित नयण के, अंब फल्यो अम बारणे ॥ ६ ॥ ते वेळा हो जिमण जेणी वार के. सुजने इम नृपें कह्यो ॥ जो नाखे हो तुं पवन प्रचार के, ए तापस पुण्ये लह्यो ॥ ७ ॥ सें जुगतें हो बींज्यो ऋषी वाय के. गर्गे आगें बेसके ॥ जाणंती हो करुणानिधि आज के, प्रसन्न करुं दिल पेसके ॥ ८ ॥ ते पापी हो मुज रूप निहाल के, पापबुद्धी चित्तमां चल्यो ॥ चाहंतो हो मुज संगम व्याल के. कामाकुल मन टलवल्यो ॥ ९ ॥ निज थानक हो पोहोतो हट योग के. शास्त्र वस्यो मन आकरो ॥ संकल्पें हो मलवानो योग के, योग

सकल मूक्यो परो ॥ १० ॥ निशि आव्यों हो कर ले ई गोह के, नांखी मंदिर उपरें ॥ करी संचो हो चढी ने तव जोह के, चोर परें गृह संचरे ॥ ११ ॥ मुज पासें हो आव्यो ततकाल के, प्रारथना मांसी घणी, ॥ बीवरावे हो करतो चक्रचाल के, शक्ति देखाडे आपणी ॥ १२ ॥ प्रतिबोध्यो हो में दृढता काज के, पाप तणा फल दाखीने, ते बोले हो विरमुं नहीं आज के, काम सिद्धा विण चाखीनें ॥ १३ ॥ इम मसलत हो करतां सवि तेह के, नृप सुणी आव्यो बारणे ॥ मुनि दीठो हो उलखीयो तेह के, घर तेड्यो जे पारणे ॥ १४ ॥ फिट पापी हो धूरत शिरदार के, काम करे तूं एहवा ॥ तुज प्रगट्यो हो ए पाप अपार के, फल पामीस हवे तेहवा ॥ १५ ॥ एम कहीने हो बंधाव्यो तेम के, राजायें सेवक कने ॥ अपराधें हो गोधाने जेम के, जीकें जूके तेहने ॥ १६ ॥ परत्रातें हो फेरयो पुरमांहिं के, सेरी सेरी कूटता, खर चाढ्यो हो दुःख पामे त्यांहिं के, चट चट आमिष चूंटता ॥ १७ ॥ निंदितो हो राजायें जोर के, पुरजन वरग हसी जतो ॥ ताडीतो हो नमिठ चिहुं उर के, मलमूत्रें सिंची जतो ॥ १८ ॥ आक्रोस्यो हो सविलोक विडंब के, चोर मा

रें ते मारीउ ॥ वलपुरयो हो योगिणना तुंब कें, नृपे काम इस्यो कीयो ॥ १ए ॥ ते अपनो हो राक्स अव सान के, निज आतम विद्या करी ॥ संजारी हो पूर व अपमान के, वेर जाग्यो मत उंसरी ॥ २० ॥ अ ति नीषण हो विरुउ विकराल के, कोपाकुल गलगा जतो ॥ वलगाड्या हो कंठे विप व्याल के, गिरिवर वन तरु नाजतो ॥ २१ ॥ मुख वमतो हो विश्वानल जाल के, पिंगल लोचन हठ नस्यो ॥ कर लीधो हो तीखो करवाल के, जाणे गिरि कोइ संचस्यो ॥ २२ ॥ धस मसतो हो आव्यो ततकाल के, राजाने इणीपरें कहे ॥ मुज मारक हो पापी नूपाल के, किम सातायें तुं रहे ॥ २३ ॥ तुज बांधव हो सरणे गयो तास के, तापण जटकसुं मारियो, पापीयके हो आवी एक शा सके, नृपनो वेर उतारियो ॥ २४ ॥ नय देखी हो पु रना सविलोक के, जीव लेई नासी गया ॥ कइ मा स्या हो करता घणुं शोक के, पण नावी पापी दया ॥ २५ ॥ पुरुपनो हो देखी नयनृत के, नासंती मु जने ग्रही ॥ इम बोल्यो हो धरी राग प्रतीत के, नइ आवे किहां वही ॥ २६ ॥ मुजसाथें हो नोगव सुखनोग के, मत बीहे तुं कामनी ॥ रहे मंदिर हो ए सरिखो

योग के, जाग्ये लहीयें जामनी ॥ २७ ॥ एम कहि हूं हो राखी तेणे जूंग के, आप वसे सुख लंपटें, निशि आ वे हो मंदिरमां रंग के, दिवसें किहां किए ते अटें ॥ २७ ॥ देवरजी हो अम एहवा हवाल के, जे जा णो ते करो हवे ॥ इम कांतें हो कही सातमी ढाल के, वात कही विजया सवे ॥ २ए ॥

॥ दोहा ॥

कुमर निसासो नांखीने, पूछे मर्म्म विचार ॥ कि म जीतीने एहने, वालुं राज्य उदार ॥ १ ॥ मर्म्म कहे विजया हवे, सांजल सुजट पुरोग ॥ राज चिंत तुज शिर अछे, तिणे दाखुंबुं योग ॥ २ ॥ सूतां राक्ष सनां चरण, घृतशुं जो मरदाय ॥ मृतक समो अति निंद वश, तो निश्चेतन थाय ॥ ३ ॥ नर मरदें निंद्रि त हुवे, स्त्री फरसे नवि थाय ॥ जो नर जेद लहे व ली, नांखे शिस उताय ॥ ४ ॥ बांधव नारी सुख थ की, सांजली सर्व सरूप ॥ करवा कोइ सहाय नर, चा ल्यो हुं अजिरूप ॥ ५ ॥ तेटले मुजनें तुं मल्यो, जाग्य योग गुणवंत ॥ तें पूछी मुज वात ते, में जाखी सहु तंत ॥ ६ ॥ कुमर चतुरनर देखीने, करवा आतम काम ॥ वली गुणवर्म्माने इसी, अरज करे तेणे ठाम ॥ ७ ॥

रें ते मारीउ ॥ वलपुरयो हो योगिणना तुंव के, नूपे काम इस्यो कीयो ॥ १ए ॥ ते अपनो हो राक्षस अव सान के, निज आतम विद्या करी ॥ संजारी हो पूर व अपमान के, वैर जाग्यो मत उसरी ॥ २० ॥ अ ति नीषण हो विरुउ विकराल के, कोपाकुल गलगा जतो ॥ वलगाड्या हो कंठे विष व्याल के, गिरिवर वन तरु नाजतो ॥ २१ ॥ मुख वमतो हो विश्वानल जाल के, पिंगल लोचन दृढ नस्यो ॥ कर लीधो हो तीखो करवाल के, जाणे गिरि कोइ संचस्यो ॥ २२ ॥ धस मसतो हो आव्यो ततकाल के, राजाने इणीपरें कहे ॥ मुज मारक हो पापी नृपाल के, किम सातायें तुं रहे ॥ २३ ॥ तुज बांधव हो सरणे गया तास के, तोपण जटकसुं मारियो, पापीयमें हो आवी एक शा सके, नृपनो वेर उतारियो ॥ २४ ॥ नय देखी हो पु रना सविलोक के, जीव लेई नासी गया ॥ केइ मा स्या हो करता घणुं शोक के, पण नावी पापी दया ॥ २५ ॥ पुरुषनो हो देखी जयनृत के, नासंती मु जने महीं ॥ इम बोल्या हो धरी राग प्रतीन के, नइ आवे किहां वही ॥ २६ ॥ मुजसाथें हो नोगव सुखनोग के, मत बीहे तुं कामनी ॥ रहे मंदिर हो ए सरिखो

योग के, जाग्ये लहीयें जामनी ॥ २७ ॥ एम कहि हूं हो राखी तेणे जूंग के, आप वसे सुख लंपटें, निशि आवे हो मंदिरमां रंग के, दिवसें किहां किण ते अटें ॥ २८ ॥ देवरजी हो अम एहवा हवाल के, जे जाणो ते करो हवे ॥ इम कांतें हो कही सातमी ढाल के, वात कही विजया सवे ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर निसासो नांखीने, पूछे मर्म्म विचार ॥ किम जीतीने एहने, वालुं राज्य उदार ॥ १ ॥ मर्म्म कहे विजया हवे, सांजल शुजट पुरोग ॥ राज चिंत तुज शिर अछे, तिणे दाखुंबुं योग ॥ २ ॥ सूतां राक्षसनां चरण, घृतशुं जो मरदाय ॥ मृतक समो अति निंद वश, तो निश्चेतन थाय ॥ ३ ॥ नर मरदें निद्धित हुवे, स्त्री फरसे नवि थाय ॥ जो नर जेद लहे वली, नांखे शिस उराय ॥ ४ ॥ बांधव नारी सुख थकी, सांजली सर्व सरूप ॥ करवा कोइ सहाय नर, चाल्यो हुं अजिरूप ॥ ५ ॥ तेटले मुजनें तुं मल्यो, जाग्य योग गुणवंत ॥ तें पूछी मुज वात ते, में जाखी सहु तंत ॥ ६ ॥ कुमर चतुरनर देखीने, करवा आतम काम ॥ वली गुणवर्म्माने इसी, अरज करे तेणे ठाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे करजोमीने रे. सांभल सुगुण सुजाण ॥ मनरा मान्या ॥ तुज दरिशण करतां हूठे रे, मानव जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ म० ॥ अतिसाठा हो सकल दुःख नाठा, जयत्राठा महारा राज अति काठा. घाठा अ स्यिण मान ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ हियकुं हेजे गहगहे रे, उत्तम नरने संग ॥ म० ॥ अणचिंत्या साजन सले रे. ते आलससां गंग ॥ म० ॥ २ ॥ स ज्ञान सहेजे परगजूरे, दुखीआ चे आधार ॥ म० ॥ बलिहारी ज्युं लखगमें रे, घमिया जेणे किरतार ॥ म० ॥ ३ ॥ विधि सघली हूपण धरी रे. चूको सघ ली सृष्ट ॥ म० ॥ पण साजन घमतां करी रे. चतुरा ई उत्कृष्ट ॥ म० ॥ ४ ॥ स्वारथ तजी पर कारजे रे, समरथ सुगुण दुवंन ॥ म० ॥ चंद्रधवल जस शासनं रे. दिन दिन त प्रसवंत ॥ म० ॥ ५ ॥ परजन सु खीया देखीने रे. संत लहे संतोप ॥ म० ॥ हूहव्या जूठे माणसे रे. पण नाणे मन रोप ॥ म० ॥ ६ ॥ नरु तटनी घण धेनुका रे. संत शशी दिणकार ॥ म० ॥ मित्त कथ्या विण स्वारथें रे. करता जग उपगार ॥ म० ॥ ७ ॥ कर साहज तुं माहरा रे, यासे सु

जस अनंत ॥ म० ॥ दुरवस्थित पुर देखतां रे, कि
म तुज दुःख न वहंत ॥ म० ॥ ७ ॥ शेठ कुमर चिं
त इस्यो रे, कठए करेवो काज ॥ म० ॥ पण उपकार
कस्या पछी रे, ए करसे प्रतिकार ॥ म० ॥ ए ॥ अंगि
कस्यो शिर चाढीने रे, विजय वचन निरधार ॥ म० ॥
विनय सहित हवे शेठने रे, बोल्यो विजय कुमार ॥
म० ॥ १० ॥ राक्षसना पग मरदजो रे, घृतसुं हो
साहस धार ॥ म० ॥ सहस जपन करि मंत्रनो रे,
थन्नावीस तेणीवार ॥ म० ॥ ॥ ११ ॥ राक्षसने हुं व
श करी रे, करसुं चिंत्यां काम ॥ म० ॥ इम विचारी
मेलवी रे, सामग्री पर ताम ॥ म० ॥ १२ ॥ गुप्त प
णे आवी रह्या रे, मंदिरमां एकंत ॥ म० ॥ गुणव
म्मायें पहेरियो रे, विजया वेश सुतंत ॥ म० ॥ १३ ॥
रयणी पडी रवि आथम्यो रे, प्रगटयो घण अंधार ॥
म० ॥ राक्षस रमतो आवियो रे, रंगे रसे तिणिवार
॥ म० ॥ १४ ॥ रयणीचर कहे नरतणी रे, आज अ
ठे सी वास ॥ मननी मानी ॥ हणतां जे रह्यो जी
वतो रे, करशुं तास विनास ॥ मननी० ॥ १५ ॥ प्रि
या बोले हो धरचारी रे, मनुष नारी हुं खास ॥ म० ॥
महाराज ते वासें घणुंरे, अवर नही कोई पास ॥ म०

॥२६॥ अवगणतो उद्भट पणे रे, सूतो सेजें तुरंग ॥ म० ॥ कुमर वहु मिस आवीने रे, मरदे पय निरभंग ॥ म० ॥ १७ ॥ विजय कुमर विधिसुं जपे रे, थंभन मंत्र विशेष ॥ म० ॥ ते पण नरना गंधथी रे, ऊठे करी अंदेश ॥ म० ॥ १८ ॥ जिमजिम ऊठे सेजथी रे, राक्षस मारण हेत ॥ म० ॥ तिम तिम फरस तणे सुखें रे, लोटि पके गत चेत ॥ म० ॥ १९ ॥ मंत्र जाप पूरण थयो रे, मूक्यो मरदन जाम ॥ म० ॥ कुमर विहुने मारवा रे, ऊठ्यो राक्षस ताम ॥ म० ॥ २० ॥ थंभ्यो अनोपम मंत्रथी रे, सक्ति थइ विछिन्न ॥ म० ॥ दास थयो करजोडीने रे, भाखें एम वचन्न ॥ म० ॥ २१ ॥ रे रे साहस संकणी रे, कुमर सुणो एक वात ॥ म० ॥ मुज महिमा मंत्रे हर्यो रे, जिम घन दक्षण वात ॥ म० ॥ २२ ॥ किंकर हुं कीधो खरो रे, मंत्र शक्तिसुं आज ॥ म० ॥ सेवक साचो जाणीने रे, द्यो साहिब कोइ काज ॥ म० ॥ २३ ॥ कुमर कहे सुण तें करी रे, मुज नगरी निरलोक ॥ म० ॥ गत मंगल विधवा जिसी रे, दीसे आज सशोक ॥ म० ॥ २४ ॥ मणि माणिक कण कंचणे रे, पूरण भरी घर हाट ॥ म० ॥ रचि तोरण स्वस्तिक भलें रे, सुरचित कर स

वि वाट ॥ म० ॥ २५ ॥ तहत्ति करी क्षणमें करी रे, न
गरी नवले रूप ॥ म० ॥ लोक गया दह दिशि जिके
रे, ते तेमृया सवि नूप ॥ म० ॥ २६ ॥ विजय कुम
र मलि मंत्रवी रे, थाप्यो राज सनूर ॥ म० ॥ अन
मी अरियण नामिया रे, वाध्यो जस महि मूर ॥
म० ॥ २७ ॥ विजय नृपति करशे हवे रे, थंन्या व
णिक नो सूल ॥ म० ॥ कांतिविजय पूरी करी रे, आ
ठमी ढाल अमूल ॥ म० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विजय कुमर पाले प्रजा, दिन दिन परम प्रमोद
॥ शेठ कुमर संगे चतुर, करतो रंग विनोद ॥ १ ॥ ए
क दिवस गुणवर्म्मनें, नूप कहे सद्नाव ॥ राजगयुं
जे में लह्युं, ते सवि तुज परनाव ॥ २ ॥ अतिकुक
र पणो आदरी, कीधुं मोटुं काज ॥ प्रत्युपकार करण
नणी, ल्ये द्युं हुं तुज राज ॥ ३ ॥ अवसर निरखी बोली
उं, शेठ कुमर एम वाच ॥ में धरा फिरते निरखीउं, तुं
मणि बीजा काच ॥ ४ ॥ सुगुणा तेह सराहियें, जे ज
गमांहें कृतज्ञ ॥ प्रत्युपकार करे जिके, ते सघला धुरि
विज्ञ ॥ ५ ॥ राज्य वधो दिन दिन घणो, हुं सेवक तुं
स्वामि ॥ जो मानो मुज वीनती, तो सारो एक काम

॥ ६ ॥ लोलाकर बांधव सहित, चंद्रपुरीनो शाह ॥ विद्या थंन्यो तात मुज, ते छेलो नरनाह ॥ ७ ॥ अविनय सहियें साहेबा. करियें ए उपचार ॥ जां जीवुं तां तुम तणो. गणशुं ए उपकार ॥ ८ ॥ विगत पणे वृत्तांत सवि. भाखे करी मनुहार ॥ करतां नृपने वीनती. रीज्यो चित उदार ॥ ए ॥

ढाल नवमी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो राय अचंभो पामीउ, जीहो बोल्यो शीस धुंणाय ॥ जीहो विषथी अमृत ऊपनो. जीहो अकथ कथा केहवाय ॥ १ ॥ कुमर वारी धन धन तुम अवतार ॥ जीहो आप सहित दुःख दोहिलो. जीहो कीधो मुज उपकार ॥ कुमर० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो ते तेहवा तुं एहवो. जीहो उपकारक पवीत्र ॥ जीहो अद्भुत रचना देवनी, जीहो दीठी आज विचित्र ॥ कुम० ॥ २ ॥ जीहो कारण गुण कारज ग्रहे, जीहो ए हवुं शास्त्र प्रसिद्ध ॥ जीहो तात तणा दुरगुण विधि, जीहो पण तुज अंग न कीध ॥ कुम० ॥ ३ ॥ जीहो काम अछे ए केटलुं, जीहो करवो में निरधार ॥ जीहो पण कारण तुज हाथ छे, जीहो जेहथी न लागे वार ॥ कुम० ॥ ४ ॥ जीहो इणे पुर परिसर बाहरें, जी

हो एक सिंगगिरि नाम ॥ जीहो देवाधिष्ठित छे तिहां, जीहो कूई एक सुठाम ॥ कुम० ॥ ५ ॥ जीहो गुप्त रहे गिरि कूपिका, जिहो सुरसानिध दिन रयण ॥ जीहो क्षण मले क्षण ऊघडे, जीहो तस मुख जिम नर नयण ॥ कुम० ॥ ६ ॥ जिहो सिद्धोषध जल तेहनुं, जिहो पूर्णहि लहेरां खाय ॥ जिहो काम पडे विद्यानिलो, जिहो कोइक लेवा जाय ॥ कुम० ॥ ७ ॥ जिहो उत्तर साधक शिर रहे, जिहो साधक पेसे त्यांहिं ॥ जिहो जल लेइने नीकले, जीहो जो न डरें दिलमांहिं कुम० ॥ ॥ ८ ॥ जीहो ते जलनो महिमा घणो, जीहो भांजे भीड निदान ॥ जीहो थंभ्यो नर छूटे सही, जीहो जो सुत छांटे आण ॥ कुम० ॥ ए ॥ जीहो जेहने सुत नहीं आपणो, जीहो ते नर नवि छूटंत ॥ जीहो वार तीन छांटे सही, जीहो बंधन चट विघटंत ॥ कुम० ॥ १० ॥ जीहो कारण ए छूटा तणो, जीहो एहनो अन्य न कोय ॥ जीहो आरति कुमरें अनुमन्यो, जीहो दुःक्कर काज जोय ॥ कुम० ॥ ११ ॥ जीहो सामग्री सुसहायसुं, जीहो कुमर गयो गिरि शृंग ॥ जीहो आप कूईमां उत्तरे, जीहो जिम पंकज मांहे भृंग ॥ कु० ॥ १२ ॥

जीहो निर्भय जल तूंबी भरी. जीहो वेगो मांची संच॥ जीहो कूई बाहिर काढीउं. जीहो नृपें त्यांथी खंच ॥ ॥ कुम० ॥ १३ ॥ जीहो अती साहसथी रीजीउं, जीहो तव कूईनो देव ॥ जीहो प्रसन्न प्रगट आवी रह्यो, जीहो आगल करवा सेव ॥ कुम० ॥ १४ ॥ जीहो अश्वरूप कीधो सुरें, जीहो वे वेगा तस पीठ ॥ जीहो आव्या पुर चंद्रावती, जीहो थंभ्या वेहु दीठ ॥ कुम० ॥१५॥ जीहो कुमरें जलसुं सिंचीउं, जीहो लोचनाकरनो अंस ॥ जीहो जटक वूटी अलगो रह्यो, जीहो पाम्य थकी जिम हंस ॥ कुम० ॥ १६ ॥ जीहो लोचनदी वूठो नहीं. जीहो पाके मुख पोकार ॥ जीहो पुत्रविना कोण तहने, जीहो दुःखथी गोमण हार ॥ कुम० ॥ १७ ॥ जीहो विजयचंद्रने वीनवी, जीहो गुणवर्म्मे ते शेठ ॥ जीहो घरमांहे पेसवा दीउं. जीहो बीजा शिर रही वेठ ॥ कुम० ॥ १८ ॥ जीहो मंत्री पद मुद्रा लणी, जीहो आसंत्रे नरपाल ॥ जीहो गुणवर्म्मा नवी आदरे, जीहो जाणी पाप कराल ॥ कुम० ॥ १९ ॥ जीहो केतक दिन पूठें नृपें. जीहो निजपुर कीध प्रयाण ॥ जीहो विरहव्यथा हीयके वधी, जीहो कुमरनुं वांध्या प्राण ॥ कुम० ॥ २० ॥ जीहो करी [illegible]कार अनेक

धा, जीहो तूंबी दीधि काढि, जीहो नृपति वली पा
ढी दीए, जीहो कुमर लीए शिर चाढि ॥ कुम० ॥ २१ ॥
जीहो माया घोटक ऊपरें, जीहो बेसी विजय नरिंद ॥
जीहो निजपुर पोहोतो वेगशुं, जीहो जिम विद्याधर
इंद ॥ कुम० ॥ २२ ॥ जीहो गुणवम्मोयें आवीने, जी
हो रात्रि समय एकांत ॥ जीहो मुज आगें जेटण ध
स्यो, जीहो जाख्यो सवि वृत्तांत ॥ कुम० ॥ २३ ॥ जीहो
प्राण पियारी आगलें, जीहो राखीजें सुं गुज्ज ॥ प्रीयें
सुण चिंता कारण मुज्ज ॥ ए आंकणी ॥ जीहो काका
नो निज तातनो, जीहो आपण मोसा दोष ॥ जीहो
कुमरें खमाव्यो मुज्जने, जीहो विनय विविध परे पोष
॥ प्री० ॥ २४ ॥ जीहो राज्य गयुं वाल्युं फरी, जीहो
वाल्युं वैर डुरंत ॥ जीहो विजय कुमर निज तातने,
जीहो चाढी शोज्ज अनंत ॥ प्री० ॥ २५ ॥ जीहो मर
ण पणु पण आगमी, जीहो शेठ सुतें निज तात ॥
जीहो आपदमांथी उद्धस्यो, जीहो जूर्ज सुतनां अवदा
त ॥ प्री० ॥ २६ ॥ जीहो पुत्र पाखें कुण कामनी,
जीहो धण कंचणनी रासि ॥ जीहो सोच दिसा पामे स
दा, जीहो पुत्र रहित आवास ॥ प्री० ॥ २७ ॥ जीहो
धन्य ते कृत पुण्य ते, जीहो जेहने नवला पुत्र ॥ जीहो

लाज वधारे वंशनी, जीहो राखे घरनां सूत्र ॥ प्री० ॥२८॥ जीहो लोजनंदी संकट सह्यो. जीहो देखी सयल कुटुंब ॥ जीहो जो सुत होवे एहने, जीहो ग मावे अविलंब ॥ प्री० ॥२९॥ जीहो हुं जगमां निरभा गीयो, जीहो माहारे पोतें पोत ॥ जीहो पुत्र रहित मरज्यो किस्यो, जीहो वाल्यो चिंता पोत ॥ प्री० ॥ ३० ॥ जीहो कुंण पूजे गुरु देवने, जीहो कुंण उद्ध रे धर्म ठाण ॥ जीहो कुंण धारे कुल आपणुं, जीहो पुत्रविना हिन आण ॥ प्री० ॥ ३१ ॥ जीहो वंसल ना फरसी समो, जीहो सरज्यो कां जगदीश ॥ जीहो ए चिंता मुज चामिनी, जीहो वीजी रात न दीस ॥ प्री० ॥ ३२ ॥ जीहो नवमी ढाल पूरी थई, जीहो गाय कही ए वात ॥ जीहो कांति कहे पुण्यें हुवे, जीहो घर संतति सुख सात ॥ प्री० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंपकमाला चित्तमां, दुःखपूरी दिलगीर ॥ इम बोली प्रीतम प्रत्यें, नयण जरंती नीर ॥ १ ॥ धन्य जनम तस लहीजीयें, जेहने आगल बाल ॥ हंसे रमे गंवे लुटें, चाले चाल मराल ॥ २ ॥ घघर पग घम कावतो. करतो विविध टकोल ॥ माय तणो ठेको प्र

ही, बोले मण मण बोल ॥ ३ ॥ शुन्नग शिखा शिर फरहरें, धूलें धूसर देह ॥ लघुदंता आंकें परूे, हेलवी या करि वेह ॥ ४ ॥ सुतविण उंचां मालियां, प्रत्य क्ष खरा मसाण ॥ निजकुल कमल विकाशवा, पुत्र क ह्यो नव नाण ॥ ५ ॥ में पाम्यो नहीं एक पण, धि गधिग मुज अवतार ॥ पुत्र विहुणी दुःखणी, कां स रजी किरतार ॥ ६ ॥ पूरव पूण्य किया विना, क्यां थी संतति होय ॥ सुकृत करीजें दुःख तजी, ते जाणी आपण दोय ॥ ७ ॥ चींता दूरें ठोमियो, रुदय थकी हे कंत ॥ पुत्र हेतें आराधशुं, देव कोई सतवंत ॥ ८ ॥ प्रसन्नथयो सुर पुरशे, वंछित नवलो एह ॥ सुरसेवा सा ची करी, निःफल न होवे केह ॥ ए ॥ राय कहे सुण सुंदरी, मुजमन जावी वात ॥ शुन्नदिनथी आराधशुं, कोश्क सुर विख्यात ॥ १० ॥

ढाल दशमी ॥ राजाने परधान रे ॥ ए देशी ॥

॥ तिणे अवसर नृप नारि रे, वली बोले इस्युं, धर ते दिलमां दुःख घणुंए ॥ वंदन थयुं विछाय रे, चिंता उमटी, दीसे अंग दयामणुंए ॥ १ ॥ थरहर थरके गात्र रे, विनय विव्हल थई, चटपट लागी आकरीए ॥ रति नाठी संताप रे, व्याप्यो पापीउं, चतुराइ पण

उसरीए ॥ २ ॥ फरके जमणी आंख रे, प्रीतम मा हरी, कुंण जाणे से कारणेए ॥ नावि कोइ अनर्थ रे, फरि फरि सूचवे, मुज मन न रहे धारणेए ॥ ३॥ था शे कोइ उतपात रे. भृतादिक तणुं, दुःखदाई मुजने सहीए ॥ अथवा विद्युत्पात रे. थाशे मुज शिरे, के उलका पडशे वहीए ॥ ४ ॥ के जासे सर्वस्व रे, जी वन माहरो, कुशल होजो तुमने सदाए ॥ के थाशे मु ज रोग रे, शोक अशुभ कर, के पडशे कांइ आपदा ए ॥ ५ ॥ प्राण तणा संदेह रे, होशे माहरे, निश्चय लोचन एम कहेए ॥ हुं नवि जाणुं कांइ रे, बोली नामिनी, दैवगति ज्ञानी लहेए ॥ ६ ॥ रति नावी मु ज तेण रे, इहकुं कम कसे, अधृति धरतुं काहिलीए ॥ वीरधवल भूपाल रे, वलतुं एम वदे, कां नामिनी दुःखमां बलीए ॥ ७ ॥ चिंता म करिस लगार रे. मु ज वेगां किसी. शंका शंकटनी कहेए ॥ रवि तपते अ तितीव्र रे. तिमिर भरम समो, लोक मांहे केम थिति लहेए ॥ ८ ॥ जो होसे तुज कांइ रे. वाधा अणजा णी. विरह व्यथा दुःख कारणीए ॥ तो मुजने तुज सा थें रे, शरण अगनी तणो. होशे सही सुण नामि नीए ॥ ९॥ इणीपरें धरणी नाहरे, आश्वासी प्रिया,

सिंहासन जई बेसियो ए ॥ फिरिफिरि फरके नयण रे, राणीनो वली, तिमतिम थरके तस हीयोए ॥ १० ॥ मंदिरमांथी उठी रे, वनिकामां गई, अरति लहे तिण पण घणीए ॥ वनिकामांथी तेम रे, आवी मंदिरे, त्यां थी बाहिर वन जणीए ॥ ११ ॥ वनथी पुरमां आई रे, सहियर परवरी, देवकुलें जावे वलीए ॥ न लहे र ति लवलेश रे, क्लेश सहे घणु, जिम शूके जल मा छलीए ॥ १२ ॥ इम वोल्या मध्यान्ह रे, आवी निज घरें, सूती पण मन वाउलोए ॥ अल्प अल्प तव निंद रे, आवी तिणे समे, जेह थयो ते सांजलोए ॥ १३ ॥ वेगवती नामेण रे, दासी तेतलें, हाथांसु शिर कूटती ए ॥ आंशुधार प्रवाह रे, मारग सिंचती, केश चटा चट चूंटतीए ॥ १४ ॥ विलवंती दुःखपूर रे, आवी दोडी ने, राय कन्हे रोती घणुए ॥ हा हा शुं थयो तुज रे, सामणि माहरी, दीधुं देव विगोवणुए ॥ १५॥ फिटरे धीठ देव रे, इम कही ढली पडी, निरखी च क्यो नृप चिंतवेए ॥ आपद दीसे कांए रे, राणीने पडी, हा हा सुं करवुं हवेए ॥ १६ ॥ उठ्यो व्याकु ल राय रे, दीनवदन थई, पूछे दासीने इस्युंए ॥ उठ उठने उठ रे, कहेने सुं थयुं, सूल अंतेउरनुं किस्युं

ए ॥ १७ ॥ फाटे हीयडुं मुज रे, धीरज सहुं नहीं, कहेतां वार म लावीयेए ॥ वेगवती तव ऊठी रे. रूती इम कहे, हे सुं दुःख उदजावीयेंए ॥ १८ ॥ कहेवा सर खी वात रे, नहीं हो साहेवा, कहेतां न वहे जीनमी ए, वीर शिरोमणी देव रे, हृदय कठण करो, वज्र वि पम ठे वातमीए ॥ १९ ॥ चंपकमाला देव रे, प्रनु हृदयें सरी, दाहिण लोयण फुरकंतेए ॥ वेला गालण काज रे. चिंतातुर नमी, वाहिर अंतर जत ततेंए ॥ ॥ २० ॥ लहति अरति अपार रे, मंदिर आवीने, सूती एकांते जईए ॥ मुजने पान निमित्त रे. मूकी हुं पण, पान लई पाठी गईए ॥ २१ ॥ वोलावी नर हु ज रे, मुख वोले नहीं, दीठी काठ परें पमीए ॥ जीव रहित निश्चेष्ट रे, जांखी देहमी. मीचाणी दोय आं खमीए ॥ २२ ॥ के सोसी कुंण प्रेत रे, के साकिण ग्रसी. के कांइ सापणी मसी गईए ॥ अथवा उत्कृष्ट रोग रे. जीव लेई गयो. के निज हत्या करी मुईए ॥ ॥ २३ ॥ निरखी माता सूल रे. पमियो ध्रासको, पण न कलाय ए सुं थयुंए ॥ आई दोमी एथ रे. शुद्धि स घ गई, जीवमलो ऊमी गयोए ॥ २४ ॥ वयणासुणी नृपाल रे, कमुआ विष जिस्यां, मूर्छागत धरणी द

ल्योए ॥ वींज्यो सीतल वाय रे, सींच्यो चंदने, कष्टें मूर्छाथी वल्योए ॥ २५ ॥ लागो दुख अछेह रे, नेह विवस थयो, विलपण लागो एणीपरेंए ॥ ॥ रे हत्यारा दैव रे, कहेने किहां गयो, जीवन माहारुं अपहरिए ॥ २६ ॥ जो मुज देवा दुख्क रे, समरथ तुं हूउं, मुने कां प्रथम न मारियोए ॥ करुणा हीणा दुष्ट रे, देईने दगो, विण हथियारे विदारियोए ॥ २७ ॥ जाहि जाहि जाहि रे, मत रहे जीवमा, मन मेलूं सीधारतांए ॥ हा हा हूउं संताप रे, विरहानल तणु, सुंदरी विण तुज धारतांए ॥ २८ ॥ रे रे कुलनी देवीरे, अवसर आजने, कांइ उवेखो परिथईए ॥ ते ऋषीनी आसीस रे, सुकृत फलें नरी, ते पण निःफल केम गईए ॥ २९ ॥ हा गोरी गुणवंत रे, किम न कही मुज, मरण दिसा जाणी तरेए ॥ जो जाणत ए रीत रे, पहेली ताहरी, तो राखत हश्का उपरेंए ॥३० ॥ हाहा हुं अज्ञान रे, मूढ शिरोमणि, नावि आपद सांसहीए ॥ दीनवदन विछाय रे, धुरतें मुजने, हुं नारी आपद कहीए ॥ ३१ ॥ निंद्या करतो आप रे, नृपति विलपतो, परिजननें दुःखियां करेए ॥ क्षण हिरुं गति मंद रे, क्षण धरणी ढले, क्षण आंसू नय

णें भरेए ॥ ३१ ॥ क्षण बेशे मन शून्य रे, क्षण ऊठे धसी, क्षण वली करतो विलंबनाए ॥ छांकी नर म र्याद रे, धीरज हारियो, ऐऐ मोह विटंबनाए ॥ ३३ ॥ मलिया सचिव अनेक रे, डुःखभर भंगुरा, गदगद व चने वीनवे ए ॥ चालो हो महाराज रे, लायक सा हेवा, तुरत पणे जइयें हवेए ॥ ३४ ॥ ढील तणो न ही काम रे, देवी देखीजे, कवण दिसायें आक्रमीए ॥ जो विष व्यापि होय रे, तोपण जीवको, रहे ते ना भीमां संक्रमीए ॥ ३५ ॥ करतां कोइ उपाय रे, जो जीवे कदी, तो तुज भाग्य प्रशंसीयेंए ॥ वचन सुणी भूनाथ रे, चाले वेगशुं, वींटचो परियण दासीयेंए ॥ ॥ ३६ ॥ आव्या राणी गेह रे, दीठी कारसी, दव दाधी जिम वेलमीए ॥ शब्द रहित निश्चेष्ट रे, नील वदन छवी, दंत भीमी सेजें पमीए ॥ ३७ ॥ मूर्छाणो क्षितिकंत रे, भ्रांत नयण थयां, नेह दावानल वली जग्योए ॥ सींच्यो सीतल नीर रे, ऊठ्यो निज प्रिया, देखी वली मूर्छा लग्योए ॥ ३७ ॥ फरी ऊठे फरी तेम रे, मूर्छे नरपति, फरी ऊठे एम डुःख लहेए ॥ मंत्री मलीने अंग रे, देखी राणीनुं, मांहो मांहे इम कहेए ॥ ३ए ॥ अंग नहीं छे कोई रे, व्रण घातादिक,

अक्षत दीसे सर्वथाए ॥ के सुर मारी केण रे, के म न पीमायें, साजी तनु केम अन्यथाए ॥ ४० ॥ मरशे निश्चें राय रे, देवी मोहियो, राज्य नंग थाशे सहीए ॥ करवो कोण प्रकार रे, इम मंत्री सहू, अणबोल्या रह्या कहीए ॥ ४१ ॥ मंत्री नाम सुबुद्धि रे, बोल्यो तत्क्षणे, काल विलंब न कीजीयेंए ॥ तो होये कोइ उपाय रे, जेहथी नृपने, मरण थकी राखीजीयेंए ॥ ४२ ॥ मंत्री बोल्यो एक रे, वली एम चित्तधरी, कालक्षेप केणी परें हूवेए ॥ राजा देवी मोहें रे, घाल्यो परवशें, काज अकाज नवी जूवे ए ॥ ४३ ॥ वली कहे मंत्री सुबुद्धि रे, विषनी विक्रिया, ठे देवी ए जीवसेए ॥ मणिमंत्रोषध योग रे, विष टलशे परहो, राणी अति सुख पामसे ए ॥ ४४ ॥ जूठो कहीने एम रे, नृपने आश्वासी, करत अकाज निवारीयेंए ॥ गुप्तमंत्री करे सर्व रे, मंत्रीसर बोल्या, राजन विष उपचारियेंए ॥ ४५ ॥ कांइ करो महाराज रे, निपट अधिरता, नवलां मंगल वरतशेए ॥ सांजली एम नरेश रे, विकस्वर लोचने, हर्ष सुधा नाह्यो तिसेंए ॥ ४६ ॥ करशे कोमी उपाय रे, नृपने नोलवी, मंत्रीसर मति आगला ए ॥ दशमी

ढाल रसाल रे, कांतिविजय कहे, मोहें नकिया नक नलाए ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे रे व्यावो धाइने, विषधर औषध यंत्र ॥ आमंत्रो मंत्रिक प्रतें, धारे विष मणिमंत्र ॥ १ ॥ नृप आदेशे मेलवी, सामग्री ततकाल ॥ आरंभे मांत्रिक क्रिया, उचित कह्या सवि चाल ॥ २ ॥ एकांते देवी ठवी, करे चिकित्सा तेम ॥ मांत्रिक मंत्रीसर सहित, जाणे नृप जेम एम ॥ ३ ॥ हमणां देवी ऊठसे, करशे नेत्र विकाश ॥ हवणां कांइक बोलशे, वलशे वली उसास ॥ ४ ॥ बोली एम नृप चिंततां, अर्द्धदिवसने रात्र ॥ सचिवादि निरुपाय सवी, करे विचार प्रनात ॥ ५ ॥ नृपने केम उगारसुं, मरण दिशाथी आज, नेह ग्रस्यो जाणे नहीं, करतो चतुर अकाज ॥ ६ ॥ राज्य देश गढ सुंदरी, सेना लोक हिरण्य ॥ सचिव प्रमुख दिन आजथी, सकल थया अशरण्य ॥ ७ ॥ इम चिंता सायर पड्या, मंत्रीसर नयवाम ॥ एक एक साहामुं जूवे, जिम मृग चूका ठाम ॥ ८ ॥ दीठी कांता तिण समे, पूर्वपरें नृप आप ॥ आपूरयो अति दुःखसुं, इणिविध करे विलाप ॥ ए ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ रे रंगरत्ता करहला रे, मो पीउ विरतो जाण ॥ हुंतो ऊपर काढीने रे, प्राण करुं कुरबाण ॥ सुरंगा करहा रे ॥ मो पीउ पाछो वाल, मजीठा करहा रे ॥ ए देशी ॥

॥ रे गुणवंति गोरमी रे, कांइ रही रे रीसाय ॥ वि ण बोल्यां मुज जीवमो रे, प्राहुणमा परें जाय ॥ प्रि यारी बोलो हो, अइ प्रीतमशुं एक वार ॥ १ ॥ ह ठीली बोलो हो, विरत्त थइ कुण कारणे रे, एवमो छेह दिखाय ॥ प्रि० ॥ ए आंकणी ॥ तुज न घटे गजगाम नी रे, करवो मान अपार ॥ जीवतणी तुं औषधी रे, तुंहिज प्राणाधार ॥ प्रि० ॥ २ ॥ जक न लहे पल जी वमो रे, तुज विरहें प्रजलाय ॥ हासुं न कीजें तेहवुं रे, जिणे हासें घर जाय ॥ प्रि० ॥ ३ ॥ ऊठ प्रिया दिन बहु चढ्यो रे, लोक लगे व्यवसाय ॥ पण प्रित मने उवेखती रे, तुं बोले नहीं कांय ॥ प्रि० ॥ ४ ॥ तुं कहेती मुजने सदा रे, हृदय वसो छो मुज्झ ॥ ते मुज आज वीसारतां रे, वात लही में तुज्झ ॥ प्रि० ॥ ॥ ५ ॥ एक घमी मुज तुजविना रे, मुजने वरस स मान ॥ तो दिन ए केम वोलसे रे, गोरी कहे गुण खा ण ॥ प्रि० ॥ ६ ॥ केइ विलसे केइ हसे रे, सुखीयां

पुर नर नार ॥ आज अवस्था मुज जणी रे, दीधी ए किरतार ॥ प्रि० ॥ ७ ॥ मो तनु दुःख दुर्बल थइ रे, जो तुं आंख उघारू ॥ ग्रीषम पवने आकरी रे, जिम तरु नांख्या जारू ॥ प्रि० ॥ ८ ॥ तुं चतुरा चंद्रानना रे, जीव रहणनी वारू ॥ पण इण वेला पदमणी रे, हीयरुं नाख्युं जारू ॥ प्रि० ॥ ए ॥ हरिलंकी हसी बोलनें रे, निंद रयणरी ढांकि ॥ कर करुणा मुज कामनी रे, मननी पूर रुहांकि ॥ प्रि० ॥ १० ॥ तुज कारण कीधा घणा रे, सबल जुगति उपचार ॥ हा हा पण उठे नहीं रे, कीजें कवण प्रकार ॥ प्रि० ॥ ११ ॥ निश्चे दीसे छे हवे रे, पोहोती तुं परलोक ॥ नहिंतो मुख बोले सही रे, वालम करते शोक ॥ प्रि० ॥ १२ ॥ धिग प्रज्ञुता धिग चातुरी रे, धिग जीवन धिग राज्य ॥ संकट मांहेथी तुजाने रे, हुं राखी शक्यो नहिं आज ॥ प्रि० १३ ॥ हे मुगधे हे कोपनें रे, हे प्रमदे गई केथ ॥ तुज मुख निरखण उमह्यो रे, हुं पण आवुं तेथ ॥ प्रि० ॥ १४ ॥ हवे सूधे ठोकी हवे रे, तुजने पण निरधार ॥ सांसि सकी नहिं सोकने रे, फिट फिट तुज आचार ॥ प्रि० ॥ १५ ॥ इम कहीने धरणी ढल्यो रे, मूर्छावशें जूपाल ॥ शीतल जल सिंच्यो घणु

रे, उठ्यो वली करुणाल ॥ प्रि० ॥ १६ ॥ हा हा मं त्रीसर सुणो रे, जूमि पड्या मुज हाथ ॥ परलोकें जातां प्रिया रे, जाइस हुं पण साथ ॥ १७ ॥ सलुं णा मंत्रि हो, ढील करो मत कांइ, सुरंगा मंत्रि हो ॥ ए आंकणी ॥ गालानदीने कांठडे रे, हुं प्रजलीस संघा थ ॥ सलुं० ॥ सीघ्र करावो चय तिहां रे, काठें पुरो पूर्ण ॥ अंग बालीने आपणो रे, निर्वृत्ति थाइस तूर्ण ॥ स० ॥ १७ ॥ नयणे श्रावण जडीलगी रे, बोल्या एम प्रधान ॥ हाहाहा अनरथ किस्यो रे, मांड्यो ए राजा न ॥१ए ॥ रंगीला राजन हो ॥ समजो हीयडा मांहे, उबीला राजन हो ॥ मत करो आतम दाह, हठीला राजनहो ॥ कहीयें गोद बिछायने रे, साहेबजी रढ मान ॥ रंगी० ॥ कमल जिस्यां रवि आथमे रे, जल सूके जिम मीन ॥ माय ताय विण बालज्युं रे, कांइ करो जगदीन ॥ रंगी० ॥ २० ॥ मत ल्यो रिपु एह रा ज्यने रे, पामो प्रजा मत पीड ॥ वसुधा मत अशरण हुउ रे, न पडो अममां जीड ॥ रंगी० ॥ २१ ॥ तुम स रिखा महाराजवी रे, धीर पणुं मत छांड ॥ तो किहां रहेसे लोकमां रे, थानक ते देखाड ॥ रंगी० ॥ २२ ॥ मरण लही देवी प्रजो रे, ते तो कर्म निदान

॥ एह अवस्था ध्रुव कही रे, सघलाने अवशान ॥ रं
गी० ॥२३ ॥ राजा खेचर केशवा रे, चक्रधरा देवेंद्र॥
कर्मथकी नवि बूटीआ रे, गणधर देव जिनेंद्र ॥ रंगी०
॥ २४ ॥ जीवित अथिर संसारमां रे, कान्न अणी ज
ल विंद ॥ संपद चपल स्वन्नावथी रे, जेहवी स्त्री स्वछं
द ॥ रंगी० ॥ २५ ॥ सयण कह्यां सवि कारमां रे, जे
हवा सुपन जंजाल ॥ काया काचघटि जिसी रे, यौव
न संध्या काल ॥ रंगी० ॥ २६ ॥ जन्म जरा मरणे न्न
स्यो रे, ए संसार असार ॥ इम जाणीने साहेवा रे,
मतकरो दुःख लगार॥ रंगी० ॥२७॥ संन्नालो निज रा
ज्यने रे, टालो मननो शोक ॥ गालो अरियण मानने
रे, पालो पीकित लोकं ॥ रंगी० ॥ २८ ॥ राय कहे मं
त्रीसरो रे, साची तुमारी वात ॥ पण देवी मोहें मढ्यो
रे, तेन्नणी रह्यो न जात ॥ सलुं० ॥ २९ ॥ में पूर्वे अं
गी कस्यो रे, साथें मरणनो वोल ॥ जो न करुं तो कि
म रहे रे, सत्यवादीनो तोल ॥सलुं०॥ ३० ॥ आजल
गें में निरवह्यो रे, सूधो सत्य वचन्न ॥ ते अंतरावे
छोमतां रे, न वहे माहरुं मन्न॥ सलुं० ॥३१॥ निज
मुखथी जे आदरी रे, वे सम प्रतिज्ञा काय ॥ अवसर
वहेती मूकतां रे, सहसा सत्य लजाय ॥ सलुं० ॥ ३२ ॥

जिण सत्य कारण होमीउं रे, वल्लभ पणे निजदेह ॥ मूउं पण जग जीवतो रे, शास्त्रें कह्यो नर तेह ॥ ॥ सलुं० ॥ ३३ ॥ क्षिप्र करोने सज्जाता रे, महारी देवी साथ ॥ देशुं दुःखने जलांजली रे, ए निश्चय अम आथ ॥ सलुं० ॥ ३४ ॥ इम कहेतां नृप वारिउं रे, बहु परे सर्व प्रधान ॥ पण विरमे नहीं मरणथी रे, देवी मोह निदान ॥ रंगी० ॥ ३५ ॥ अनरथ करतां न वि चले रे, कोइ मंत्रीनुं मन्न ॥ ते जाणी मौन लेई रह्या रे, रोता मंत्री रतन्न ॥ रंगी० ॥ ३६ ॥ पूरी ढाल इग्यारमी रे, कांति विजय कहे एह ॥ मोह शुभट जीते जिके रे, होय नर सुखिया तेह ॥ रं० ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृपें मंत्रीशने, देखी करता ढील ॥ प्रेरुया पुरुष बीजा वली, करवा साज हठील ॥ १ ॥ तुरत मंगावी पालखी, रयण जडित मनुहार ॥ नवरावे कलेवर नारिनुं, कनक कलश जलधार ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन मृगमदे, कर्पूरें करी लेप ॥ कुसुम सरसुं पूजिकें, कस्यो धूप उत्क्षेप ॥ ३ ॥ शिबिका मांहे थापिउं, राणीनो देह चाले नृप गोलो तटें, शिबिका आगें

करेह ॥ ४ ॥ पुरथी जब नृप नीकले, तब दुखिया सविलोक ॥ जूरे विलपे हूबकें, रोवे करता शोक ॥५॥

॥ ढाल बारमी ॥ उलगडी उलगडी तो कीजे मुनिसुव्रत स्वामीनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ परिजन परिजन दुःखियो सहु रोवे घणु रे, नृप विरहो न खमाय ॥ करुणें करुणें शब्दें बोले आवीने रे, वदन हूआ विछाय ॥ १ ॥ रायजिम रायजिम छोडो अमने साहेवा रे, विण शरणें गुणवंत ॥ तुममुख तुम मुख दीठे सुख पासुं सदा रे, छेह न द्यो क्षितिकंत ॥रा०॥२॥ तुमविण तुमविण अमने कहो कुंण राखशे रे, शंकटथी महाराय ॥ मनना मनना मनोरथ हवे कुंण पूरसे रे, वहुला लाड लडाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ न शक्यो न शक्यो देखी दैव अटारडो रे, अमचो सुख निरधार ॥ नहींतो नहींतो समजु पण केम चूकीउं रे, मूके विण आधार ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिणदिन तिण दिन बाल तरुण घरढा मली रे, करे घणा आक्रंद ॥ अन्न न अन्न न भावे नाठी निंदडी रे, वाध्यो दिल दुःख दंद ॥ रा० ॥ ५ ॥ हणीया हणीया वज्रकें त्रिप व्यापिया रे, घूमे पडिया केई ॥ हृदय हृदय सुंनाहत सर्व स्वजुं रे, गहिला केइ फिरेई ॥ रा० ॥ ६ ॥ हा वत्स

हा वत्स हा निधि हा कुल दीवमा रे, कुलमंमण कुल मो
म ॥ हा नृप हा नृप अमने ऊंची चढावीने रे, धसका
ई विण ठोम ॥ रा० ॥ ७ ॥ कुलनी कुलनी वृद्धा इंम
विलपे घणुं रे, नाठी रति दिलगीर ॥ मनमें मनमें खू
तो नेह नरिंदनो रे, जिम तीखेरो तीर ॥ रा० ॥ ८
धिगधिग धिगधिग अमची बुद्धिने रे, जे नावी कोइ
काम ॥ सहज सहज सनेहो अमने ठोमीने रे, जो
जावे ठे आम ॥ रा० ॥ ए ॥ मुजरो मुजरो अमचो
कुंण लेशे हवे रे, कुंण देसे सनमान ॥ आतम आ
तम निचिंतायें वाउला रे, इंम निंदे परधान ॥ रा०
॥ १० ॥ हा जिणे हा जिणे रूपें काम हरावीयो रे,
वली हूउं निर्देह ॥ सुंदर हो सुंदर हो प्रजु नारी कार
णे रे, किम बालीश ते देह ॥ रा० ॥ ११ ॥ कदीहो
कदीहो रूप मनोहर पेखशुं रे, परगट पूनम चंद ॥
इमकही इमकही नयणे जल ऊवे रे, पुरनारिनां वृंद ॥
रा० ॥१२॥ जनक जनक तणी परें पाल्या प्रेमथी रे, ए
सघला पुर लोक ॥ रुलसे रुलसे दैव विठोह्या बापमा
रे, जिम दिणयर विण कोक ॥ रा० ॥ १३ ॥ नगरी
नगरी दीसे आज दयामणी रे, जिम दवदाधुं वन्न ॥
इंमकेइ इंमकेइ संचरता नृप मारगेंरे, जाखें दीन वचन्न

॥ रा० ॥ १४ ॥ सींचिय सींचिय धण कंचण मणि माणि कें रे, मोहोटा कीधा आप ॥ तुमविण तुमविण तरु सम अमचो टालशे रे, कुण दुःख दव संताप ॥ रा० ॥ १५ ॥ याचक याचक लोक जणे नृप आगलें रे, आपणो दुःख देखाय ॥ जीवन जीवन जातां जगमां केह्नो रे, धीरज जीव धराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ करुणा करुणा दाक्षिणताने सूरता रे, धीरज दान समान ॥ कविता कविता सत्य सुभग गंभीरता रे, निरुपम ज्ञान विज्ञान ॥ रा० ॥ १७ ॥ साहस साहस सत्य प्रचंड उदारता रे, उपगार करता धर्म ॥ ए सत्रि ए सत्रि गुण निरधारी आजथी रे, कीधा ते विण मर्म्म ॥ रा० ॥ १८ ॥ रंक्ति रंक्ति पंक्ति कीधा विण गुने रे, खंक्ति दैवे एण ॥ मंक्ति मंक्ति विद्यायें तुम सारिखा रे, पक्खिया शंकट जेण ॥ रा० ॥ १९ ॥ चोपद चोपद जल पीवे नहीं तिणे समे रे, ठोरे पंखी चूण ॥ तो नर तो नर देखी जातो राजवी रे, दुःख पामे नहीं कूंण ॥ रा० ॥ २० ॥ ममकर ममकर अणघटतुं इम राजीया रे, हाहा धींगड धीर ॥ इमपुर इमपुर वासी वचन उवेखतो रे, पोहोतो गोला तीर ॥ रा० ॥ २१ ॥ ते शव ते शव तीरें तव उतरावीने रे, मंकावे चय

त्यांहिं ॥ देतो देतो दान याचकने ऊतरे रे, न्हावा लागो मांहिं ॥ रा० ॥ २२ ॥ जूथव जूथव नाहें त्यां जल जेतले रे, रमते लोक समग्र ॥ जलने जलने पूरें तव एक तांणियो रे, आव्यो काठ उदग्र ॥ रा० ॥ २३ ॥ निरखी निरखी मंत्रीसर तब बोलीया रे, रे रे तारक जाहु ॥ लाकरू लाकरू जलमां सनमुख आवतुं रे, वेगें काढी ल्याहु ॥ रा० ॥ २४ ॥ एह ठे एह ठे योग्य चिताने इंम सुणी रे, धीवर पेसी त्यांहिं ॥ बाहिर बाहिर काढ्यो ताणी तत्क्षणे रे, जलकुंड अवगाहिं ॥ रा० ॥ २५ ॥ बंधन बंधन बहुले बांध्यो चिहुं परवें रे, आपा परें ते थंत्र ॥ दीसे दीसे स्थूल कठिन आगें पड्यो रे, जाणे वाहण थंत्र ॥ रा० ॥ २६ ॥ आदेशें आदेशें नृपने सेवकें रे, काप्यो छुरियें बंध ॥ जटक जटकसुं अर्द्ध जुदो उघरी पड्यो रे, त्रूटीगया सविसंध ॥ रा० ॥ २७ ॥ तेहमां तेहमां मृगमदें केशर चंदने रे, अरची सुंदर अंग ॥ चरची चरची घनसारादिक गंधशुं रे, माल ठवि बहुरंग ॥ रा० ॥ २७ ॥ कंठे कंठे लहके हार मनोहरू रे, निद्रित लोचन चंग ॥ जलमां जलमां ठांनि रति आवी रही रे, छेतरी आंणी अनंग ॥ रा० ॥ २ए ॥ चंपक चंपक

माला नृप मनमोहनी रे, दीठी दैव संयोग ॥ पेखवी पेखवी नृपतिनो दिल जागीउं रे, जागो विरह वियो ग ॥ रा० ॥ ३० ॥ अचरिज अचरिज पाम्या पुरजन सवे तिहां रे, दूरगया जंजाल ॥ इणी परें इणीपरें कांतिविजयें कही बारमी रे, सुंदर ढाल रसाल ॥रा०॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक सकलवस्थित पणे, नृपने बोले आम ॥ चंपकमाला जीवती, लही सुकृतथी स्वाम ॥ १ ॥ पालखीयें पोढामीने, राणी आणी गेह ॥ खरी एह के तेह छे, के कोइ छल छे एह ॥ २ ॥ नृपति कहे सेवक प्रतें, निरखो शिविका मांहिं ॥ तेह देह तिमहिंज अछे, के विध धरिउं आंहिं ॥ ३ ॥ जव सेवक जइ निरखीउं, आवी शिविका पास ॥ तव ते शव हम हम हसत, उडी गयो आकाश ॥ ४ ॥ हैहै हुं वंच्यो खरो, छेतरतां नृप छेल ॥ नारि कारण जे नर मरे, ते जग साचा वेल ॥ ५ ॥ इम कहेतो चलतो नजें, जलकार मय देह ॥ दंत रुसत करतल घसत, थयो उलका सम तेह ॥ ६ ॥ थरहरता सेवक सवे, आव्या नृपने पास ॥ वीतक व्यतिकर नृपनें, दाख्यो सकल प्रकाश ॥ ७ ॥ राय कहे ए वातनो, कोइ न लहे वि

श्याम ॥ ते माटे पूछे हवे, राणीने इण ठाम ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ सोनानी आंगीहे, सुंदर मारा साहेबाने अंग, विच विच रतन जमाव, कोमी सूरज करुं वारणेजी ॥ ए देशी ॥

मृगा नयणी राणी हे, सुंदर हवे नयण उघाम ॥ ऊठो राणी आलश छोमी, कथको प्रीतम अलजो करे जी ॥ १ ॥ प्रिया मोरी बोलो हे, हसित मुखें मीठमा बोल ॥ कहो राणी वीतक वात, धुरथी जाणीजे जिण परेंजी ॥ २ ॥ वयणा ते सुणी हे, राणी कहे निद्रा छांम ॥ कहो पीउ ऊठाछो केम, जीना वशन ए पहेरीनेंजी ॥ ३ ॥ लखगमे ऊठा हे, निकट चय पाखलें लोक ॥ कहो पीउ शिबिका मांहें, छवीय ला व्या छो केहनेजी ॥ ४ ॥ नृपति कहे माहरी हे, सुंद र पछे कहेसुं वात, कहो तुमचो विरतंत, जिम अम मन सांसो टलेजी ॥ ५ ॥ क्यां गइ क्यां रही हे, नव ल किहां पाम्यो हार ॥ कहो किम पेठी काठ, किणे वा ही गोला जलेंजी ॥ ६ ॥ पदमणी प्रेमे हे, कहे एणे वमनी छांहिं ॥ चालो पीउ थाउ सुख, संजलावुं अ म वातमीजी ॥ ७ ॥ नृपति तव आव्यो हे, सकल ज न विंट्यो तेथ ॥ श्रमें जरी कोमल काय, तमकें तपी

थइ रातमीजी ॥ ८ ॥ राणी कहे वाणी हे, प्रीतम प
ण जाणो गो तेह ॥ दाहिण भुज फुरक्यो जे नयण,
सूचक अशुभ निमित्तनोजी ॥ ए ॥ भमी वन वाली
हे, आवी फरी मंदिर मांहे ॥ दासी गइ लेवा पास,
वेगवती चंचल तनुजी ॥ १० ॥ निद्राभर तेणे हे,
सूती जव सेज हुं आय ॥ दुष्ट कोइ आयो पास, तुरत
उपाली लेई गयोजी ॥ ११ ॥ सूंने गिरि टूंके हे, मूकी
मुज नाठो धीठ ॥ भयें घण थरकित गात, सकल दि
श जोउं सुं थयोजी ॥ १२ ॥ दीसे नही कोइ हे, पा
ठल मुख आगल पास ॥ सुण्युं कोइ विषम आक्रं
द, विरुआ वनचरना घणाजी ॥ १३ ॥ वाघ सिंह
धडूके हे, सबल दीये चित्ता फाल ॥ रमे रींठ देतां दो
ट, किहां कणे मृग करे खेलणाजी ॥ १४ ॥ जाउं कि
ण आगें हे, सुणे कोण दुःखनी वात ॥ चिंता चयसुं
लगी चित्त, क्षणएक दुःख पूरें भरीजी ॥ १५ ॥ सा
हस धरी साचो हे, चाली दिशि एक निहाल ॥ किहां
पिउ किहां वन केलि, वैरी अकारण अपहरिजी ॥ १६ ॥
चढी गिरि टुंके हे, करूं निज आतम घात ॥ चित चिं
ती एहवुं त्यांहिं, चाली लक थकते पगेंजी ॥ १७ ॥
दीठो तस सिंगे हे, वारू एक नवल प्रासाद ॥ उंचो

अति जलहल ज्योति, जलके अंबर तल लगोंजी ॥ १८ ॥ ऋषभ प्रभु राजे हे, मोहन जिहां जगनो नाथ ॥ देखी मणि मूरत खास, अंतर आतम उल्लस्योजी ॥ १९ ॥ कीधी स्तुति मोटी हे, ललित पद अर्थ गंभीर ॥ लागो जिनसु एकतान, दुःख सयल मनथी खिस्योजी ॥ २० ॥ कांतें कही रुमी हे, सरस ए तेरमी ढाल ॥ मीठी जिम साकर द्राख, सुणतां काने अमृत वस्योजी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विधिविवेक पूर्वक पणें, कीधी में जिन सेव ॥ जगति निरखी हरखित थई, बोली शासन देव ॥ १ ॥ हुं शासन रखवालिका, चक्केसरी मुज नाम ॥ आदि भुवन रक्षा करुं, मलयाचल शुभ गाम ॥ २ ॥ मलय देवी मुज नाम छे, बीजुं गाण गुणेण ॥ साहम्मी धर्म जाणी चरण, प्रणमुं हुं तिणे एण ॥ ३ ॥ कठिण हीयुं करी कामनी, मनमां कांइ म बीह ॥ पक्के अवस्था माणसा, न टले सुख दुःख लीह ॥ ४ ॥ पूछ्युं में कहे मावली, किणे आणी मुज आंहिं ॥ कहियें सवि निरत्तसुं, तव सा बोली त्यांहिं ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥
॥ वीरधवल तुज नाहने रे, वीरपाल हुउं बंधु ॥ वछे सांजलो ॥ निर्गुण लोजी राज्यनो रे, कूरू कपटनो सिंधु ॥ व० १ ॥ वरू बांधव हणवा जणी रे, चिंते विविध उपाय ॥ व० ॥ अन्य दिवस वध कारणें रे, पेठो मंदिर आय ॥ व० ॥ २ ॥ खड्ग घाय मूके खरो रे, नृप साहामो अति धीठ ॥ व० ॥ एक घायें वरू बांधवें रे, पाड्यो धरणी पीठ ॥ व० ॥ ३ ॥ शुजजावें अंते मरी रे, एणे गिरि ए थयो जूत ॥ व० ॥ अतुल बली परिवारमें रे, दीठी माहरे दूत ॥ व० ॥ ४ ॥ गत जवें ते पापीउ रे, संजारे निज वयर ॥ व० ॥ ठल जोतो नरनाहनां रे, विचरे वनगिरि नयर ॥ व० ॥ ५ ॥ पुण्यबलें न सके करी रे, नृपने कांइ विरूप ॥ व० ॥ चिंते नृपने नारिशुं रे, प्रेम निवरू ठे अनूप ॥ व० ॥ ६ ॥ जो मारुं नृप नारिने रे, तो मरसे नृप आप ॥ व० ॥ खस जासे सीतल जलें रे, टलसे सर्व संताप ॥ व० ॥ ७ ॥ ठानो ठल ताके रसी रे, लागो रहे नित पूठ ॥ व० ॥ सूती सेजें तूं एकली रे, ऊपाडी तेणे डुठ ॥ व० ॥ ८ ॥ इणगिरि टूंकें मूकीने रे, आप थयो विसराल ॥ व० ॥ पूरव पुण्यें जेटीया

रे, तें श्रीऋषभ कृपाल ॥ व० ॥ ए ॥ तूठी हुं जिन भक्तिथी रे, आपुं तुं वर माग ॥ व० ॥ डुलहो दर्शन देवनो रे, दीठो ये सोभाग ॥ व० ॥ १० ॥ देवीने में वीनव्युं रे, जो तूठी मुज माय ॥ व० ॥ संतति नहीं मह्हारे किस्यो रे, कीजें तास उपाय ॥ व० ॥ ११ ॥ चंपकमालाने कहे रे, निसुणी वाणी एम ॥ व० ॥ चक्केसरी देवी वली रे, बोली धरी अती प्रेम ॥ व० ॥ १२ ॥ पुत्र पुत्रीने जोमले रे, थाशे तुज संतान ॥ व० ॥ गर्भ रोध तह्हारे थयो रे, तेतो भूत निदान ॥ व० ॥ १३ ॥ हवे डुःख देतां वारशुं रे, निज सेवकने भूत ॥ व० ॥ शिक्षा देसुं आकरी रे, खल न करे करतूत ॥ व० ॥ १४ ॥ नृप कहे मति तुज रूअमी रे, माग्यो वारू एह ॥ व० ॥ चिंता माह्हारी उद्धरे रे, तुज विण कुण गुण गेह ॥ व० ॥ १५ ॥ प्रिया कहे खिति कंतनें रे, परम कृपा परजूंज ॥ प्रीतम सांभलो ॥ हार दीधो ए देवीयें रे, नामें लक्ष्मी पूंज ॥ प्री० ॥ १६ ॥ सप्रभाव सुर संक्रम्यो रे, हार रयण बहु मूल ॥ प्री० ॥ सयल मनोरथ पूरसे रे, करशे जग अनुकूल ॥ प्री० ॥ ॥ १७ ॥ एहथकी सपराक्रमी रे, होशे तुज संतान ॥ प्री० ॥ अतुल विघन जाशे परां रे, वधशे जगमां

मान ॥ प्री० १८ ॥ पूछ्यो वली देवी कहे रे, जूत त
णो संबंध ॥ प्री० ॥ चंडावतीयें ते गयोरे, तुज वलि
गिरिने खंध ॥ प्री० ॥ १९ ॥ तुज ठामें तुज सारिखो
रे, करी रह्यो मृतक सरूप ॥ प्री० ॥ मरण लही द
यिता गणी रे, घणुं दुःख पाम्यो जूप ॥ प्री० ॥ २० ॥
सात पोहोरने अंतरें रे, मलशे ताहरो कंत ॥ प्री० ॥
तिण वेला एक खेचरी रे, नत्रपंथथी आवंत ॥ प्री०
॥ २१ ॥ अदृश्य नाव देवीलहे रे, खगनारी हुई संग
॥ प्री० ॥ एकाकी मुज देखीनें रे, पूछ्युं वचन विजं
ग ॥ प्री० ॥ २२ ॥ तस आगल में माहरो रे, जाख्यो
सवि विरतंत ॥ प्री० ॥ सुणी विस्मित बोलीतिका रे,
मुज दुःखथी निससंत ॥ प्री० ॥ २३ ॥ चिंता ममकर
जामिनी रे, करशुं अति उपकार ॥ प्री० ॥ चंडावतीयें
मूकशुं रे, जिहां तुज प्राणाधार ॥ प्री० ॥ २४ ॥ इम
आसासें खेचरी रे, वचन अमृत सुरसाल ॥ प्री० ॥ कांति
विजय इम चौदमी रे, जाखी निरूपम ढाल ॥ प्री० २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप निरखी हरखी तिका, कहे सांजल गुण
खाण ॥ विद्या साधन कारणे, हुं आवी इणे ठाण ॥ १ ॥
श्री संपट मुज पति इहां, आवे वे मुज पूठ ॥ जो

तुज रूप निहालशे, शील खंमशे जठ ॥ २॥ सोक भरम माहरे हसे, जनमां वधे डुःखदाय॥ खोइश तुं कुल वट्टमी, परवश वास वसाय ॥ ३ ॥ नवरस लोजी नाहलो, अवगणशे कुल लाज ॥ आवी तुरत जिम ताहरो, विषम सुधारुं काज ॥ ४ ॥ एम कही करतल ग्रही, खग नारी दे धीर॥ निकट नदी जल जर वहे, आवी तेहने तीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ घोमीतो आई थां ॥
रा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

गुहीर नदी जल जबले ॥ वारुजी ॥ ठटके पवन नी ठांट हो, मृगा नयणीरा जमर सुणो वातमी, मारुजी ॥ निरखी तट तरु मंमली ॥ वा० ॥ हीयमुं नाखे काट हो ॥ मृ० ॥ १॥ जाणुं हुं एह खेचरी ॥ वा० ॥ हणसे सही इंणि वाट हो ॥ मृ० ॥ के तरु माले बांधशे ॥ वा० ॥ के जाशे खिति दाट हो ॥ मृ० ॥ २ ॥ के जलपूरें वाहशे ॥ वा० ॥ इम सवि मुज डुःख घाट हो ॥ मृ० ॥ तव निरखे ते खेचरी ॥ वा० ॥ सुक्क कठिन एक काठ हो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ विद्या बलें ते खेचरी ॥ वा० ॥ कीधो फामी डुजाग हो ॥ मृ० ॥ छिद्र कस्यो तस अंतरें ॥ वा० ॥ पुरुष प्रमा

णे माग हो ॥ मृ० ॥ ४ ॥ मुज तनु चरच्यो चंदने ॥ वा० ॥ करी मृगमद ठिरकाव हो ॥ मृ० ॥ अगर प्रमुख शुभ वस्तुयें ॥ वा० ॥ कीधी मुने गरकाव हो ॥ मृ० ॥ ५ ॥ काठ विवरमां मुज धरी ॥ वा० ॥ ढांके ऊपर फाल हो ॥ मृ० ॥ तदनंतर न लहुं किस्युं ॥ वा० ॥ गर्भ रही जेम बाल हो ॥ मृ० ॥ ६ ॥ नयणें दीठा हवे नाथजी ॥ वा० ॥ पूरवपुण्य संयोग हो ॥ मृ० ॥ नृप कहे तुज विरहण दुखें ॥ वा० ॥ मेलविउं ए योग हो ॥ मृ० ॥ ७ ॥ चयमांकी गोला तटें ॥ वा० ॥ वारण मिलिया लोग हो ॥ मृ० ॥ दुःख सुख लाभे लोकमां ॥ वा० ॥ न टले पूरवकृत जोग हो ॥ मृ० ॥ ८ ॥ मंत्रि कहे तेणे खेचरी ॥ वा० ॥ शोक सबल दुःख जालि हो ॥ मृ० ॥ काठ दुबलविवरें धरी ॥ वा० ॥ वहेती करी जल बाल हो ॥ मृ० ॥ ए ॥ मारे ते जो खेचरी ॥ वा० ॥ तो विद्या होये आल हो ॥ मृ० ॥ पोहोर दिवस चढते मल्यां ॥ वा० ॥ सात पोहोर सवि काल हो ॥ मृ० ॥ १० ॥ नृप कहे मुज दयीता तणो ॥ वा० ॥ हरण हूउं सुख हेत हो ॥ मृ० ॥ कुलक्षयकारी भूतनो ॥ वा० ॥ बंध कर्यो संकेत हो ॥ मृ० ॥ ११ ॥ देवी जल मंदिर तलें ॥ वा० ॥ काठ धर्यो शुभठाम हो ॥

मृ० ॥ इणे अवसर बिरुदावली ॥ वा० ॥ बोल्यो वे
तालीक ताम हो ॥ मृ ॥ १२ ॥ प्रबल प्रतापी वि
श्वमां ॥ वा० ॥ कमला वासण जेह हो ॥ मृ० ॥
जय जय ते जग शिर ठव्यो ॥ वा० ॥ प्रभुपरें दिन
कर एह हो ॥ मृ०॥ १३ ॥ मंत्री भणे अवशर लही
॥ वा० ॥ पधारो पुर नाह हो ॥ मृ० ॥ नाहण भोय
ण पाणथी ॥ वा० ॥ वीसारो डुःख दाह हो ॥ मृ०
॥ १४ ॥ तहत्ति करी नृप ऊठीयो ॥ वा० ॥ आवे
नयरी वाट हो ॥ मृ० ॥ शब्द पंच नादेंकरी ॥ वा०॥
बीहिना दिसि गज थाट हो ॥ मृ०॥१५॥ मांगलिआ
जय रव भणे ॥ वा० ॥ नाचे गणिका कोमि हो ॥ मृ०॥
द्ये आसीश सोहामणी ॥ वा० ॥ गुणीजन होमा
होमि हो ॥मृ० ॥ १६ ॥ लेतो सद्गुअ वधामणा ॥
वा० ॥ देतो दान उदार हो ॥ मृ० ॥ जोतो पुरनां व्य
वहारिया ॥ वा० ॥ सणगार्या बाजार हो ॥ मृ० ॥
१७ ॥ भूपति लखनां भेटणां ॥ वा० ॥ ग्रहतो हय
गय घाट हो ॥ मृ० ॥ सुणतां याचकनी स्तुति घणी
॥ वा० ॥ करतो अरि मुख दाट हो ॥ मृ० ॥ १८ ॥
मंदिर पोहोतो महिपति ॥ वा० ॥ भेटे निज परिवा
र हो ॥ मृ० ॥ सचिव प्रमुख नमी भूपने ॥ वा० ॥

पोहोता निज निज गार हो ॥ मृ० ॥ १९ ॥ नाहण करी नरपति गृहें ॥ वा० ॥ पूजे अरिहंत बिंब हो ॥ मृ०॥ भोजन विविध प्रकारनां ॥ वा० आरोगे अ विलंब हो ॥मृ० ॥ २० ॥ भुपति दयीता संगतें ॥ वा० ॥ विलसे नवनव भोग हो ॥ मृ० ॥ पुण्यथकी दिशा पाधरी ॥ वा० ॥ लहेसे सकल संयोग हो ॥ मृ० ॥ २१ ॥ गर्भधरें ते दिनथकी ॥ वा० ॥ पटरा णी गजगेल हो ॥ मृ० ॥ कांति कहे ए पनरमी ॥ वा० ॥ ढाल सरस रस रेल हो ॥ मृ० ॥ २२॥

॥ दोहा ॥

॥ युगल गर्भ जिम जिम वधे, तिम तिम नृप मनमो द ॥ राणी भाग्य सोभाग्य भर, धारे विविध विनोद ॥ १ ॥ तन रक्षा रूकी परें, भुप करावे तास ॥ करे कृतारथ दोहला, पूरे मननी आस ॥ २ ॥ दयिता मुख केते दिनें, केतेक दल छवी हुंत ॥ तनु डुर्बल स णगार रस, अल्प अल्प भावंत ॥ ३ ॥ मुख परिमल रस लालचें, चिहुं दिसि भमर भमंत ॥ सहज सुरभि उसासथी, पंकज कुल लाजंत ॥ ४ ॥ पूर्ण दिवस शुभ वासरें, शुभ मुहूर्त्त शुभ वार ॥ पुत्र पुत्रिका रु प तिणे, प्रसव्यो युग्म उदार ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ गेंडुमानी ॥ एदेशी ॥

॥ पटराणी प्रसव्यो तिहां रे हांजी, सुत तनूजानो युगल अनूप ॥ ए रूडोरे ॥ रतिपतिनो रंग, ए रूडोरे ॥ सरसतीनो अंग, ए रूडो रे ॥ जिम नंदन खितिथी हूवेरे हांजी, कल्पवृक्ष ठे अंकूर रूप ॥ ए० ॥ १ ॥ वेगवती दासी धसी रे हांजी, दीये वधामणी नृपने आय ॥ ए० ॥ शिर न्हवरावे संतोषसुं रे हांजी, दास करम तस टाले राय ॥ ए० ॥ २ ॥ वेग करावो नयरमां रे हांजी, दशदिन नृप थितिपति काज ॥ ए०॥ पुत्रागमननां हर्षथी रे हांजी, हूउं अपूरव मन सुख साज ॥ ए० ॥ ३ ॥ नगर भुवन सवि चीतस्यां रे हांजी, बारण ठविया सोवन कुंभ ॥ ए० ॥ ध्वज पट लहकाविया रे हांजी, रोप्या टोडे कदली थंभ ॥ ए० ॥ ४ ॥ रयणथंभ शोभा कस्या रे हांजी, अति सुंदर पुर शोभा हेत ॥ ए० ॥ तोरण दल सहकारनां रे हांजी, बांध्या नव मंगल शंकेत ॥ ए० ॥ ५ ॥ पुरलोक हट सहेरमां रे हांजी, थापी सोवन दीपक ठेल ॥ ए० ॥ सेरी पंथी पूजावीने रे हांजी, कीधां सींचण चंदन घोल ॥ ए० ॥ ६ ॥ राज मारग त्रिक चाचरें रे हांजी, देवरावे मणि कंचन दान ॥ ए० ॥ वं

दि भवन सोधि विधि रे हांजी, मूक्यां सघला बंदी वान ॥ ए० ॥ ७ ॥ वाज्यो पमह अमारनो रे हांजी, देश मांहे भय भंजण भाग ॥ ए० ॥ कुसुम पगर भां तें भस्या रे हांजी, धूपघटा पसरी नभ माग ॥ ए० ॥ ८ ॥ जनपद अकर कस्या हसें रे हांजी, ताड्या डुंडु भि वाज्या घोर ॥ ए० ॥ नाच करी हाव भावथी रे हांजी, वार वधू कुल चतुर चकोर ॥ ए० ॥ ए ॥ अक्षत पात्र भरी रंगथी रे हांजी, नृपने वधावे आ वी नार ॥ ए० ॥ विकशित रंग वधामणां रे हांजी, चतुर सचिव मलिया दरवार ॥ ए० ॥ १० ॥ भुवन भुवन थापा दीया रे हांजी, सुरभी अगर कुंकुम घन घोल ॥ ए० ॥ उत्सवमहोत्सव मांझिया रेहांजी, शोभावी नगरनी पोल ॥ ए० ॥ ११ ॥ मांगलिआ मंगल भणे रे हांजी, वंभण भणे वहुला स्तुति पाठ ॥ ए० ॥ मल्ल रमें वल माल्हता रे हांजी, नटुआ उंके उंचा काठ ॥ ए० ॥ १२ ॥ जिन भुवन पूजा रचे रे हां जी, सामी भक्ति करंत अनेक ॥ ए० ॥ अवसर क र खेंचे नही रे हांजी, कहियें साचो तास विवेक ए० ॥ १३ ॥ अशुचिकर्म वित्या पठी रे हांजी, सं तोपे सुपरें कुटुंव ॥ ए० ॥ कर पंकज जोमी कहे रे

हांजी, ते आगल नृपति अविलंब ॥ ए० ॥ १४ ॥ सया करी मलया सुरी रे हांजी, आप्यां मुजने बे संतान ॥ ए० ॥ तस नामे होजो बिन्हे रे हांजी, मलय सुंदरी अभिधान ॥ ए० ॥ १५ ॥ पंचधाइ पालीजता रे हांजी, कुमर कुमरी वधे ससनूर ॥ ए० ॥ दिनदिन नवल कला ग्रहे रे हांजी, बीज तणो जिम चंद्र अंकूर ॥ ए० ॥ १६ ॥ हसण लुठण चलणादिकें रे हांजी, जिम जिम साधे शैशव योग ॥ ए० ॥ तिम तिम नृप राणी लहे रे हांजी, हर्ष मनोहर फल संयोग ॥ ए० ॥ १७ ॥ निरुपम योवनने रसें रे हांजी, शिशुता रस मूके आस्वाद ॥ ए० ॥ कालें उचित कला ग्रहे रे हांजी, बुध संगें निज मति उनमाद ॥ ए० ॥ १८ ॥ किणदिन मदगज राजथी रे हांजी, खेल करे पण नृप सुत बांध ॥ ए० ॥ ख्यालकरे हयथी कदे रे हांजी, खड्ग रमें नाखें सरसांध ॥ ए० ॥ १ए ॥ कुमरी पण भमरी परे रे हांजी, वींटी परिकर अति अनुकूल ॥ ए० ॥ वनवासी आरामसां रे हांजी, रमण करे यौवन मद जूल ॥ ए० ॥ २० ॥ कांतिविजय बुद्ध शोलसी रे हांजी, ढाल कही उत्सवनी एह ॥ ए० ॥ पुण्यथकी जय सा

लिका रे हांजी, वाधे दिनदिन वधते नेह ॥ ए० ॥ २१ ए० ॥ र० ॥ स० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४२ ॥

॥ चोपाइ ॥ खंमखंम रस छे नवनवा, सुणतां मीठा साकर लवा ॥ निर्मल मलयचरित्र जग जयो, प्रथम खंम संपूर्ण थयो ॥ १ ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनाम निमलयसुंदरिचरित्रे पंमितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे मलयसुंदरीप्रशवनो नाम प्रथमः खंमः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय खंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री गुरु जिन गिरा, गणधरने करजोमि ॥ बीजो खंम कहुं हवे, आलश निद्रा गोमि ॥ १ ॥ धुर मीठी जो होय कथा, कथक वचन निर्दोष ॥ मीठी सभा सुणे वली, तो होये रसनो पोष ॥ २ ॥ फोकट फोरवे चातुरी, विचमां करे बकोर ॥ रस नंजण विकथा करे, माणस नहीं ते ढोर ॥ ३ ॥ तेहनणी मन थिर करो, मूकी अलगो धंध ॥ कहेतां श्रोता सांजलो, सरस कथा संबंध ॥ ४ ॥ लही हवे कुमरी शुभग, यौवन पूर अभंग ॥ कालें काम समूझना, उगमें विविध तरंग ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ पनामारु यौवन आईजी पूर ॥ ए देशी ॥

॥ यौवन रस पूरें चढी रे, नवल गोरीरो गात ॥ जलकें करे छबिचंद्रिका रे, जाणु आसो पूनिमनी रात ॥ १ ॥ कन्यावारू यौवन आईजी पूर, राजी रूपे लूटी लीधी रति राणी ॥ कन्यावारू यौवन आईजी पूर ॥ ए आंकणी ॥ वेणि निहाली शामली रे, नाखुं नागिण घोल ॥ वदन कमल रस लालचें रे, मानु बेठी भमरनी ठेल ॥ क० ॥ २ ॥ भाल भलुं भाग्यें भर्युं रे, दीपे सबल सुघाट ॥ पुण्य रेख लिखवा भणी रे, विधि मांड्यो कनकनो पाट ॥ क० ॥ ३ ॥ वीछक्रिया मृगनां जिस्यां रे, लोचन तास वखाण ॥ तीखाई विधिना गर्ही रे, जिम सर चाढ्या खुरसाण ॥ क० ॥ ४ ॥ सज्जन मन धारा जिसी रे, नासा सरल सुहाय ॥ चांचें लाज्या सूडला रे, ते लखि लखि वनफल खाय ॥ क० ॥ ५ ॥ अधर धरे रंग रातडो रे, नवपल्लव सुकुमाल ॥ वडवानल संगति मिसें रे, मानु पेठी विद्रुम जाल ॥ क० ॥ ६ ॥ विहुं पख धारे अतिकला रे, तस मुख चंद्र हसाय ॥ निरखी खिसाणो चंद्रमा रे, नित्य उदय लही खिसी जाय ॥ क० ॥ ७ ॥ सरल सुंहाली बांहडी रे, तेह दुढावे बाल ॥ अभिनव ऊंपे जोमले रे, नमी आवी क

लिका रे हांजी, वाधे दिनदिन वधते नेह ॥ ए० ॥ २१ ए० ॥ र० ॥ स० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४२ ॥

॥ चोपाइ ॥ खंमखंम रस छे नवनवा, सुणतां मीठा साकर लवा ॥ निर्मल मलयचरित्र जग जयो, प्रथम खंम संपूर्ण थयो ॥ १ ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनिमलयसुंदरिचरित्रे पंमितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे मलयसुंदरीप्रशवनो नाम प्रथमः खंमः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय खंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री गुरु जिन गिरा, गणधरने करजोमि ॥ वीजो खंम कहुं हवे, आलश निद्रा ठोमि ॥ १ ॥ धुर मीठी जो होय कथा, कथक वचन निर्दोष ॥ मीठी सजा सुणे वली, तो होये रसनो पोष ॥ २ ॥ फोकट फोरवे चातुरी, विचमां करे वकोर ॥ रस जंजण विकथा करे, माणस नहीं ते ढोर ॥ ३ ॥ तेह जणी मन थिर करो, मूकी अलगो धंध ॥ कहेतां श्रोता सांजलो, सरस कथा संवंध ॥ ४ ॥ लही हवे कुमरी शुजग, यौवन पूर अजंग ॥ काले काम समूझमा, उगमें त्रिविध तरंग ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ पनामारु यौवन आईजी पूर ॥ ए देशी ॥

॥ यौवन रस पूरें चढी रे, नवल गोरीरो गात ॥ जलकें करे छबिचंद्रिका रे, जाणु आसो पूनिमनी रात ॥ १ ॥ कन्यावारू यौवन आईजी पूर, राजी रूपे लूटी लीधी रति राणी ॥ कन्यावारू यौवन आईजी पूर ॥ ए आंकणी ॥ वेणि निहाली शामली रे, नाखुं नागिण घोल ॥ वदन कमल रस लालचें रे, मानु बेठी जमरनी उल ॥ क० ॥ २ ॥ जाल जलुं जाग्यें जस्युं रे, दीपे सबल सुघाट ॥ पुण्य रेख लिखवा जणी रे, विधि मांड्यो कनकनो पाट ॥ क० ॥ ३ ॥ वीछन्निया मृगनां जिस्यां रे, लोचन तास वखाण ॥ तीखाई विधिना गही रे, जिम सर चाढ्या खुरसाण ॥ क० ॥ ४ ॥ सज्जन मन धारा जिसी रे, नासा सरल सुहाय ॥ चांचें लाज्या सूकला रे, ते लखि लखि वनफल खाय ॥ क० ॥ ५ ॥ अधर धरे रंग रातडो रे, नवपल्लव सुकुमाल ॥ वरूवालद संगति मिसें रे, मानु पेठी विद्रुम जाल ॥ क० ॥ ६ ॥ बिहुं पख धारे अतिकला रे, तस मुख चंद्र हसाय ॥ निरखी खिसाणो चंद्रमा रे, नित्य उदय लही खिसी जाय ॥ क० ॥ ७ ॥ सरल सुंहाली बांहडी रे, तेह लुढावे बाल ॥ अजिनव उपे जोडले रे, नमी आवी क

ल्पतरु माल ॥ क० ॥ ७ ॥ गोल कठिन कंचुक कस्या रे, कुच युग एम शोजाय ॥ काम नृपति जीतवा ज णी रे, इहां तंबू दीधा आय ॥ क० ॥ ए ॥ उदर स कोमल पातलुं रे, जेहवुं पोयण पान ॥ जलकारें जाएयो परुे रे, आत कनक तवकने वान ॥ क०॥१०॥ ठाजे सुंदर वाटलो रे, जीणो केम्नो लंक ॥ देखतही वन गिरि गया रे, मृगराज थया साशंक ॥ क०॥११॥ जंघ युगल दीपे जलां रे, अचला कदली खंज ॥ म दन मालियें सिंचिया रे, जरी लावण्य अमृत कुंज ॥ ॥ क० ॥ १२ ॥ ढंचा मांसल सुंदरू रे, पग काठव अनुहार ॥ तस तुलना करवा जणी रे, जाणे कमठ लीयो अवतार ॥ क० ॥ १३ ॥ कोमल कर पग आं गुली रे, ऊपर नख दीपंत ॥ माणिक मंमित लेखणी रे, रति पतिनी एहवी न हुंत ॥ क०॥ १४ ॥ पगें जांजर जम जम करे रे, कटि मेखल खलकार ॥ लक्ष्मी पूंज सोहामणो रे, तस कंठे ठाजे हार ॥ क० ॥ १५ ॥ कर कंकण मणिमय जड्या रे, काने कुंमल जोरु ॥ शोहे सखि शिणगारथी रे, गज गामणिआं शिर मो रु ॥ क० ॥ १६ ॥ निपुणपणे दिन निगमी रे, वर

लायक ते बाल ॥ नाखी बीजा खंमनी रे, इम कांतें पहेली ढाल ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

हवे अठे एह नरतमां, पुरवर पुहवी गाण ॥ सूरपाल नामे तिहां, राज्य करे खिति नाण ॥ १ ॥ पटराणी पद्मावती, रूप शील गुण वास ॥ सुत सुंदर तेहने हूर्ज, नाम महाबल तास ॥ २॥ विद्या साधक कोइक नर, सेव्यो कुमरे एण ॥ रूप पलट्टण कारणी, विद्या दीधी तेण ॥ ३ ॥ नाग दमण व्यामोहनी, नूत दमणि वशितंत ॥ मंत्र यंत्र कार्मण प्रमुख, शीख्यो कुमर अनंत ॥ ४ ॥ सूरपाल नृप कारजें, खासा आप खवास ॥ मिलणु आपी मोकले, वीरधवल नृप पास ॥ ५ ॥ कुमरें पण नृप वीनवी, कीधुं साथ प्रयाण ॥ केतेक दिन चंद्रावती, पोहोता सुगुण सुजाण ॥ ६ ॥ मूकी मुहगो नेटणो, उचित करी व्यवहार ॥ नृप आगल बेठा सहु, नाखे कुशल प्रकार ॥ ॥ ७ ॥ निरखी नूप कहे इश्यो, ए कुंण तरुणो जेह ॥ एक सचिव माह्यो कहे, मुज लघु बांधव एह ॥ ८ ॥ कही काम निज स्वामीनां, जव्यो तेह प्रधान ॥ नूप दत्त मंदिर जई, उतार्या शुन्नथान ॥ ए ॥ राज कुम

र मन कौतुकी, निरखत पुर आवास ॥ भमतो भम
तो आवीउं, मलया मंदिर पास ॥ १० ॥

॥ ढाल वीजी ॥ थाहारा मोहला ऊपर मेह जबूके
वीजली होलाल, जबूके वीजली ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरी कुमरनुं रूप, निहाली तव तिहां होला
ल निहाली० ॥ मांडे मींट अनूप कुमर ऊभो जिहां
हो० ॥ कु० ॥ जक न पडे तिल मात्र, के विरहथी
परजली हो० ॥ के ॥ कामातुर अकुलात, के हुइ
मन आकली हो० ॥ के० ॥ १ ॥ निरखी सुंदर अंग
वखाणे तेहनां हो० ॥ व० ॥ फूल्या जासू रंग चरण
तल एहनां हो० ॥ च० ॥ तेज तणो अंबार रह्यो सु
रपात जिस्यो हो० ॥ र० ॥ मयगल सुंडाकार सुजंघा
युग तिस्यो हो० ॥ सु० ॥ २ ॥ सुंदर कटीनो लंक वि
राजे लंकथी हो० ॥ वि० ॥ माने करतल माग भलो
मध्यं अंकथी हो० ॥ भ० ॥ हृदय महा सुविशाल भु
जा भोगल जिसी हो० ॥ भु० ॥ रेखा त्रण गलनाल
कहुं उपमा किसी हो० ॥ क० ॥ ३ ॥ सूडा चंचु स
मान सुहावे नाशिका हो० ॥ सु० ॥ मणिदर्प्पण उप
मान कपोलें भासिका हो० ॥ क० ॥ कामणगारी का
नें अमी विहुं आंखडी हो० ॥ अ० ॥ श्याम भमर

अनुमान शिखा रतिपति ऊमी हो० ॥ शि० ॥ ४ ॥ ब
लिहारी लउं तास घड्यो जेणे एहवो हो० ॥ घ० ॥
निरख्यो रूप निवास जनम सफलो हवो हो० ॥ ज०॥
नृप बाला नरी नयण पीये रस रूपनो हो० ॥ पी०॥
लागो जइनें गयण उमाहो चूपनो हो० ॥ उ० ॥ ५ ॥
नृपसुत पण ते देखी थयो मदनाकुलो हो० ॥ थ० ॥
बाध्यो विरह विशेष अलेख उपांपलो हो० अ० ॥
अहो अहो रूप निहाली चतुर गुण धारिका हो० ॥
च० ॥ परणी अछे एह बाल के हजीअ कुंआरिका
हो० ॥ के० ॥ ६ ॥ इम चिंतवतां लेख लखीने बा
लिका हो० ॥ ल० ॥ नाखे नीचुं देखत लागी जा
लिका हो० ॥ त ला० ॥ कुमरें सकल उदंत चतुर प
णें वांचिया हो० ॥ च० ॥ पदपद अंग अनंतह ह
रख रोमांचिया हो० ॥ ह० ॥ ७ ॥ कवण अछे तुज
जाति रहे तुं किहां वली हो० ॥ र० ॥ नाम कवण कु
ण जाति जायो तुं महाबली हो० ॥ जा० ॥ वीरधवल
नी जाति अ हुं बुं कुमारिका हो० ॥ अ० ॥ मोही ता
हरु गात निहाली बारिका हो० ॥ नि० ॥ ८ ॥ तुम
विरहें मुज काय रही ए जलबली हो० ॥ रही० ॥ ने
ट देइ महाराय करो हवे सीअली हो० ॥ क० ॥ वां

ची ईम विरतंत कुमर मन वेधिउं हो० ॥ ने
ह निविरूने तंत विहुं मन साधिउं हो० ॥ विहुं० ॥
ए ॥ कुमर थई थिरथंभ निहाले वली जिहां हो० ॥
नि० ॥ कोइक नर निरदंत कहे आवी तिहां हो० ॥
क० ॥ कुमर संवाहो वेग पियाणो आज छे हो० ॥
पि० ॥ छांरुो निरखण नेग उतावलो काज छे हो० उ० ॥
॥ १० ॥ वैर वसाव्यो ध्याय तिणे तिहां आविने हो०
॥ ति० ॥ हठ नाण्यो अकुलाय चल्यो विरचाइने हो०
॥ च० ॥ विरहो तास कठोर हियामां आथरू हो० ॥
हि० ॥ मांरुे आघा जोर चरण पाछा परू हो० ॥ च०
॥ ११ ॥ चिंते चित्तमां आप जणाव्यो में नही हो० ॥
ज० ॥ रहेसे मुज संताप मिलणनो ए सही हो० ॥
सि० ॥ चालणरी जो वार हसे एका घरूी हो० ॥ ह०
॥ रहेसे पण निशिचार आविश हुं दरूवरूी हो० ॥
आ० ॥ १२ ॥ धारी ईम मनमांहे गयो निज थानकें
हो० ॥ ग० ॥ अवसर देखी त्यांहिं आव्यो छचानकें
हो० ॥ आ० ॥ किरणरूप थइ फाल दिये गढ उपरें
हो० ॥ दि० ॥ आव्यो पहेले माल विद्याधरनी परें
हो० ॥ वि० १३ ॥ कनकवती नृपनारि निहाले पेम
तो हो० ॥ नि० ॥ कवण पुरुष इंणे ठाम आव्यो कि

म हिंसतो हो० ॥ आ० ॥ अतिडूंगा दरवान सूता इं
सो वेंचिया हो० ॥ सू० ॥ के कोइ मंत्र निदान तिणे
जन वंचिया ॥ हो० ॥ ति० ॥ १४ ॥ इम चिं
तवी ते तेह मोही रूपें घणुं हो० ॥ मो० ॥
नाखें धरती लेह मनोरथ आपणुं हो० ॥ म० ॥ आ
वो कुमर करार करो इणे आसणें हो० ॥ क० ॥ ला
हो ल्यो मुज सार शरीरने फरसणें हो० ॥ श० ॥ १५ ॥
कुमर सुणी ते वाणी विचारे निज हियें हो० ॥ वि० ॥
एसी एहवे गण विसास न कीजीयें हो० ॥ वि० ॥
कपट करी ए नारि करुं राजी खरी हो० ॥ क० ॥ बो
ले वचन विचार सुगुण तिहां अवसरी हो० ॥ सु०॥१६॥
सुण सुंदरी गुण रेख विदेशी आवीउ हो० ॥ वि० ॥
मलयानो एक लेख विगतसुं लावीउ हो० ॥ वि० ॥
देखाडे तसठाम देई ते तेहने हो० ॥ दे० ॥ तो वली
ताहारो काम करुं हुं थिर मने हो० ॥ क० ॥ १७ ॥
तव नृप दयिता आवी देखाडे वाटडी हो० ॥ दे० ॥
उंचो चढिउ धाय नारी नीचें खडी हो० ॥ ना० ॥
दीठी बाला दीन वदन करतल धरी हो० ॥ व० ॥
बेठी करी आकीन कुमर एक उपरिं हो० ॥ १८ ॥ कु० ॥

कुमरत्तणे सुण बाल करो चिंता किसी हो० ॥ क० ॥
करवा तुम संभाल आव्यो हुं उल्लसी हो० ॥ आ० ॥
देखो उघाडो आंख हवे कां पांतरो हो० ॥ ह० ॥
नाखो विरहो ताकी करो मत आंतरो हो० ॥ क० ॥
॥ १९ ॥ उठी बाला रंग मिलि मन मोदसुं हो० ॥ मि० ॥
माशुं अतिहें उमंग धरे तस गोदमां हो० ॥ ध० ॥ बीजे
खंडे ढाल थई बीजी इहां हो० ॥ थई० ॥ कांति
कहे वर बाल बिहुं मिलिया तिहां हो० ॥ बि० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ करे विविध तिहां गोठडी, बिहुं जण प्रेम धरंत
॥ कुमर कहे सवि आपणो, ते आगल विरतंत ॥ १ ॥
पुहवी ठाण तणो धणी, सूरपाल मुज तात ॥ पट
देवी पद्मावती, तेहनो हुं तन जात ॥ २ ॥ नाम महा
बल माहरो, देश निरखणनी खंत ॥ नृप कामे परि
वारशुं, इहां आव्यो गुणवंत ॥ ३ ॥ निरखत अचरज
पुरतणां, दीठो तें उपकंठ ॥ लेख लख्यो ते वांचतां,
जाग्यो नेह उल्लंठ ॥ ४ ॥ मलीउं हसि हवे शीख वे,
चालश मुख सहु साथ ॥ वचनसुणी बाला विलपि,
इम कहे जोडी हाथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ ऊंची नावलदे राणी अरज करेछे, अबको वरसालो घर कीजें हो ॥ गढबुंदी वाला ॥ ए देशी ॥

॥ मलया कहे विरहानल तापी, अवसर एह र ह्यानो हो ॥ प्रभु धणारा हो लोभी, वाला चलण न देस्यां ॥ चलण तुमारो मोहन मरण हमारो, रहो र हो कह्यु मानो हो ॥ प्र० ॥ १ ॥ करुणा करीने मुज ऊपर विभुजी, पूरो मनोरथ रूका हो ॥ प्र० ॥ लक्ष्मी पूंज मुत्ताहल मनजुं, एह ल्यो चातुर सूका हो ॥ प्र० ॥ २ ॥ हार तणे मिसे ए वरमाला, कंठ ठवी इम जाणो हो ॥ प्र० ॥ हवणाही गांधर्व विवाहें, परणी मुज सुख माणो हो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कुमर कहे सुण चंद्र मुखी तें, वचन कह्युं ते वारू हो ॥ प्र० ॥ मात पिता आणा विण कन्या, वरवी नहीं विवहारू हो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ दुःख म धरिस रही दिन केताइक, बुद्धि करुं हुं तेहवी हो ॥ प्र० ॥ मात पिता जन जोते तु जनें, देसे मुज ततखेवी हो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पण बांध्यो ए में तुज आगें, मन स्वीआयत कीजें हो ॥ प्र० ॥ ढील हुवे जावाने तेहथी, सीखडी सी हवे दीजें हो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ कनकवती नीचें नृपराणी, वातसुणे र

ही ठानें हो ॥ प्र० ॥ रीसाणी चिंते ए धूरत, लागो कन्याने कानें हो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ करी संकेत मल्यो ए एहनें, मुज कारज नवि सीधुं हो ॥ प्र० ॥ दोमीने दादरने द्वारें, ठानेंसें तालुं दीधुं हो ॥ प्र० ॥ ८ ॥ कुमरी कहे मुज एह विमाता, मुज मातानी शोकि हो ॥प्र०॥ कनकवती इणे कपट करीनें, राख्यांछे विहुं रोकी हो ॥ प्र० ॥ ए॥ व्यतिकर सर्व सुण्यो रीसाली, अनरथ करसे ग्राहिं हो ॥ प्र० ॥ कुमर भणे एहनें हुं कूमे, वंची आव्यो आहिं हो ॥ प्र० ॥ १० ॥ वात करे जई इम तेणी वेला, कनकवती नृप पासें हो ॥ प्र० ॥ आवी अकाशे सुख रस वाही, दीठी वात उल्लासे हो ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कोपें लोचन रातां कीधां, हणवाने मन ध्रे स्युं हो ॥ प्र० ॥ सुभट घटा वींटघे नरनाथें, कन्या मंदिर घेर्युं हो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ कहे कुमरी हैहै विष कन्या, हुं सरजी कां नाथें हो ॥ प्र० ॥ मुज कारण अनरथ लहेसे, ए आयो परायें हाथें हो ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कुमर भणे सुभगे कां वीहो, एहथी नहीं मुज पीका हो ॥ प्र० ॥ परघर पेसे तेतो किहां किणे, राखे ठलचल ठींका हो ॥ प्र० ॥ १४ ॥ इम कही आप शिखाथी काढी, गुटिका मुखमां धारी हो ॥ प्र० ॥ तस

अनुजावें चंपक माला, थइ बेठो ते नारी हो ॥ प्र०
॥ १५ ॥ रूप निहाली निज जननीनुं, कुमरी अचर
ज जारी हो ॥ प्र० ॥ जांजी तालुं नरवर आव्यो, दे
खे सुताने नारी हो ॥ प्र० ॥ १६ ॥ नृप बोल्यो क
नका मुख देखी, कूडुं इंम कां जांखेहो ॥ प्र० ॥ अल
वे आल देई पर उपर, कां डुरगति फल चाखे हो ॥
॥ प्र० ॥ १७ ॥ आक्रोसी विलखी थई कुमरें, बोला
वी हसी आगें हो ॥ प्र० ॥ कहो वहेनी पीउ को
प्या केणे, इहां आव्या किण ठागें हो ॥ प्र० ॥
॥ १८ ॥ पुरनो लोक अनादर वयणे, कनका में निर
धारे हो ॥ प्र० ॥ कहे कनका जो हुं बुं जूठी, तो कि
हां हार देखारे हो ॥ प्र० ॥ १९ ॥ ब्रल जननी निज
कंठथकी ते, उंचो हार उब्लाले हो ॥ प्र० ॥ नृप प्रमु
ख सहुने देखारे, कनकानो मद गाले हो ॥ प्र० ॥ २० ॥
तिण वेला कुमरीनी जननी, जर निद्रामांहें हूंती हो
॥ प्र० ॥ सुख निद्रायें निज पुत्रीनी, विगत लहे नहीं
सूती हो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ फरी आव्या हसंतां निज
थाने, नृपादिक सविलोक हो ॥ प्र० ॥ कनकवती
नी निंदा करतां, लोक वदन कह्यां बोक हो ॥ प्र० ॥
॥ २२ ॥ कूडी परी कनका महाबलनो, विघन थयो

जो लखमी गंथ ॥ ८ ॥ कहे बाला नरी लोयणां, रे जयलां गोगाल ॥ नेह नवल तुज खटकशे, जिम तन खूतो शाल ॥ ९ ॥ गुप्त मोहोलथी नीसरी, आवी च ढ्यो केकाण ॥ नियत प्रयाणे चालतो, पोहोतो पु हवी गाण ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ करेलणां घमिदे रे ॥ एदेशी ॥

॥ तात चरण आवी नम्यो, आपे अनोपम हार ॥ वीरधवल दीधो मुने, इम कही कूम तिवार ॥ १ ॥ नविक जन सांजलो रे, मलयानो अधिकार ॥ न० ॥ एतो सु णतां हर्ख अपार ॥ न० ॥ ए आंकणी ॥ राय कहे तुज चातुरी, दीठी अधिक वदीत ॥ थोमा दिनमां जेहथी, वा धी एवमी प्रीत ॥ न० ॥ २ ॥ इम कहीने कंठे ठव्यो, कुमरें मायनें हार ॥ घणुं सराहें पुत्रने, राणी पण तेणीवार ॥ न० ॥ ३ ॥ राज कुमर इम चिंतवे, पण बांध्यो में जेह ॥ कन्या किम परणी हवे, साचो करशुं तेह ॥ न० ॥ ४ ॥ तिणे अवसर एक आविउ, वीरधवल नो दूत ॥ प्रणमी नृपनें वीनवे, सांजल नर पुरुहूत ॥ न० ॥ ५ ॥ पुत्री अमचा स्वामीनी, मलया सुंदरी नाम ॥ तास स्वयंवर मांकीउं, करीने प्रतिज्ञा आम ॥ न० ॥ ६ ॥ धनुष पूर्व परिया तणुं, वज्रसार छे

सार ॥ जे नर तेह चढावशे, वरशे तेह कुमार ॥ जा०
॥ ७ ॥ देशदेशावर रायना, नंदन तेहण काज ॥ दू
त मोकल्या राजीये, हुं मूक्यो तुमराज ॥ जा० ॥ ८ ॥
देव महाबल मोकलो, कुमर काम अवतार ॥ कुं
ण जाणे एहथी विधें, योग लिख्यो थानार ॥ जा० ॥
९ ॥ ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी, आज थइ तिथि खास ॥
आगाली चौदशि दिने, होसे स्वयंवर तास ॥ जा० ॥
१० ॥ वाटे हुं मांदो थयो, तेहथी हूउ विलंब ॥ क
री उतावलो मोकलो, लगन अछे अविलंब ॥ जा० ॥ ११ ॥
सनमानी ते दूतनें, शीख करे नूपाल ॥ कुमर सजा
मां सांजली, चिंतवे इम हरखाल, ॥ जा० ॥ १२ ॥
देवें मुज करुणा करी, नीठा दुःख संयोग ॥ जुखमां
हे नोजन मले, तिम ए दीसे योग ॥ जा० ॥ १३ ॥
काज हतुं सांसे पड्युं, लिखायह्युं ते आज ॥ विश्वा
वीश दया करी, मुज उपर महाराज ॥ जा० ॥ १४ ॥
तात दीए मुज आगन्या, तो तिहां जइ तत्काल ॥
राजपुत्र कुल अग्रगणी, हुं परणुं ते बाल ॥ जा० ॥
॥ १५ ॥ तव नृप निरखी पुत्रने, कहे वछ तुं शुनका
ज ॥ बल वाहनना थाटस्यों, रातें सधावो आज ॥
जा० ॥ १६ ॥ कहे कुमर विनयें नम्यो, तात वचन

परमाण ॥ दल सज कीधुं तांवली, बोल्यो हरखें रा
ण ॥ज० ॥ १७ ॥ लखमी पूंज मनोहरू, सुत ल्यो
साथें हार ॥ कुमर कहे ते हारनी, वात सुणो निर
धार ॥ ज० ॥ १८ ॥ सूतां मुज निशिनें समें, करें उ
पद्रव कोइ ॥ वस्त्र शस्त्र नूषण हरे, गुप्त बीहावें सोइ
॥ ज० ॥ १९ ॥ मात कनेथी में ग्रही, हार ठव्यो मुज कं
ठ ॥ आज रयणमां अपहरी, लीधो तेणे उत्कंठ ॥
ज० ॥ २० ॥ हार गयो जाणी हवे, माता धारे डुःस्क ॥
करी प्रतिज्ञा में तिहां, माताने आनमुस्क ॥ ज० ॥ २१ ॥
जो नापुं दिन पांचमां, ते मुक्तावली हार ॥ तो मुज
काया आगमां, दहेवी ए निरधार ॥ ज० ॥ २२ ॥ हार
कदापि नवि लहुं, तो मुज मरण सहाय ॥ करे प्र
तिज्ञा आकरी, डुःख धरती इम माय ॥ ज० ॥ २३ ॥
अहश नमे जे रातिमां, राक्षस के चूमेल ॥ पोहोर
एक बे रही इंहां, नाखुं तस पग जेल ॥ ज० ॥ २४ ॥
स्ववश करी तेह डुष्टनें, लेई हार नलिनांति ॥ सुंपी
माताने पछें, चालीश पाछली राति ॥ ज० ॥ २५ ॥
राय प्रशंसे पुत्रनां, साहस सत्त्व विशाल ॥ बीजे खंमें
ए कही, कांतें चोथी ढाल ॥ ज० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर मंदिर गयो, अलवे त्यांथी ऊठ ॥ वार जमी खांडुं ग्रही, बेठो दीवा पूंठ ॥ १ ॥ मध्य रयणीनें आंतरें, चंचल सबल जस टेक ॥ गोख मांथी सलपतो, पेसें कर तिहां एक ॥ २ ॥ कुमर विचारे पूर्वपरें, करसे कांइ विरुद्ध ॥ तेह थकी पहेली जली, आपुं शिक्षा शुद्ध ॥ ३ ॥ सोवन चूडी खलखलें, उपें कंकण रेह ॥ तेह जाणी कर नारिनो, ए छे निस्संदेह ॥ ४ ॥ देवी अथवा दानवी, आवी छे इहां कोय ॥ देव सक्तीनां बल थकी, दृष्टें नावे सोय ॥ ॥ ५ ॥ जो नांखुं खांडुं खरुं, तो वली जासे नागि ॥ चढशे हाथ न माहरे, नहीं आवे वली लाग ॥ ६ ॥ एम विचारी ऊठ्यो, त्रिवली नालें चाढि, चढि बेठो कर ऊपरे, ग्रही बे हाथें गाढि ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ तट यमुनानोरे अतिरलिया मणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मंदिरमांथी रे ते कर कंपतो रे, गयणें चढिउ आंटा खाय ॥ सुर असुरनां रे कुल बीवरावतो रे, उलट पलट करी चाल्या जाय ॥ मं० ॥ १ ॥ निरभय बेठो रे कुमर ते ऊपरें रे, तेहनें जोरें कर लचकाय ॥

पवने ऊमाड्यो रे ध्वज पटनी परें रे, हठ चढिउं चिहुं दिशि मोलाय ॥ मं० ॥ २ ॥ जटकि आबाटें रे नीचो नांखवा रे, पण आसण न करे चलचाल ॥ कुमरें थ काड्यो रे अलम केकाण ज्युं रे, तव प्रगटी देवी वि कराल ॥ मं० ॥ ३ ॥ एह रोशाली रे मुजनें नांखसे रे, विषम महावन गिरिवर ठेह ॥ इम निरधारि रे मारी आकरी रे, कुमरें करकश मुठी तेह ॥ मं० ॥ ४ ॥ दीन रमंती रे देवी इम कहे रे, रे करुणा वंत दयाल ॥ मुज अबलानें रे सबला कां नमें रे, मूक हवे न करुं तुज चाल ॥ मं० ॥ ५ ॥ मूकी कुमरें रे ते नासी गइ रे, ठेद्यो कानें कूकर जेम ॥ आप तिवारें रे पमिउं गयण थी रे, विद्या चूक्यो खेचर एम ॥ मं० ॥ ६ ॥ फलन्नर न्नारी रे वन आंबा शिरें रे, आवी रह्यो नृप नंदन वेग ॥ नयण निमेली रे क्षण मूरबा लह्यो रे, पवनें विंज्यो अति तेग ॥ म० ॥ ७ ॥ कुमर विमासे रे चे त वल्या पठें रे, किण थानक हुं आयो चालि ॥ रयणि अंधारें रे कर फरस्या थकी रे, जाण्यो तरु साही त स मालि ॥ मं० ॥ ८ ॥ क्षण एक मांहें रे तरुथी उ तरी रे, आवी बेठो तरुने खंध ॥ इम मन सोचे रे कुण ए आपदा रे, दीधी तिण कुण वैर प्रबंध ॥ मं० ॥

ए ॥ किहां मुज माता रे किहां तात माहरो रे, किहां हुं ए किम थासे सूल ॥ हार न पामे रे जननी जो हवे रे, करशे जीवितनुं प्रतिकूल ॥ मं० ॥ १० ॥ माय वियोगें रे वली मुज तातजी रे, धरवा प्राण अछे अ समछ ॥ हैहै दीसे रे कुलक्षय माहरो रे, इम चिंता जर चेठो तछ ॥ मं० ॥ ११ ॥ खरखर वागो रे तव रव जूमिनो रे, जूपति सुत निरखे तरुमूल ॥ नारि ग लीने अरधी आवतो रे, नजर पड्यो अजगर एक थू ल ॥ मं० ॥ १२ ॥ कुमर विचारे रे ए प्राणी गली रे, आवे तरु आफलवा कोय ॥ ए विछोडावुं रे जो जोरो करी रे, तो मुज आतम सफलो होय ॥ मं० ॥ १३ ॥ साहस धारी रे तरुथी ऊतस्यो रे, चेठो ग नें आंवा गौढ ॥ अजगर आयो रे देवा विंटली रे, कुमर ग्रहे तस मुख अति प्रौढ ॥ मं० ॥ १४ ॥ व दन विदाखुं रे होठ विन्हे ग्रही रे, ते मांहेथी काढी एक नारि ॥ वचन कहंती रे माहारे इण समे रे, श रण होजो महावल एक तारि ॥ मं० ॥ १५ ॥ ना म सुणीनें रे पोतानुं तिहां रे, विस्मय विकशित लो चन थाय ॥ दूरें ऊजामी रे अजगर नाखीउ रे. देखे अवला मुखगत ठाय ॥ मं० ॥ १६ ॥ मलया सरखी रे निर

खी गोरडी रे, चित्त चमक्यो ढोले तिहां वाय ॥ चेतन वाल्युं रे तव बाला जणे रे, पूरवलो ते श्लोक सुणा य ॥ मं० ॥ १७ ॥ कुमर सुणीनें रे तिहां निश्चय करी रे, वीरधवल तनुजा ए होय ॥ कर पद सेवा रे कुमर करे वली रे, जिम पीडा तनु विरली होय ॥ मं० ॥ १८ ॥ कुमर पयंपे रे ऊठो सुंदरी रे, तुम विरहें मुज मन शीदाय ॥ नयण ऊघाडे रे निरखी पदमणी रे, सेवापर नृप सुत चित्तलाय ॥ मं० ॥ १९ ॥ ला ज करंती रे नेहल मींटमां रे, कहे जीवन जीवाडी आज ॥ संगम दैवें रे किम मेळ्यो इहां रे, जांखोजी जांखो महाराज ॥ मं० ॥ २० ॥ कुमर तिवारे रे क हे सरिता जलें रे, प्रथम पखालो तनु पंकाल ॥ वी तक बेहु रे कहेशुं वली पछे रे, इम कही आणी नदी यें बाल ॥ मं० ॥ २१ ॥ अंग पखाल्युं रे जल पीधुं गली रे, वली आव्या पाछा तरु तीर ॥ कुमरें सुणावी रे निज वीती कथा रे, सुणतां थरके तास शरीर ॥ मं० ॥ २२ ॥ नृप सुत तेहनेरे धणिने पूछशे रे, वीतक सयल करी चित्त चूप ॥ कांतें प्रकाशी रे खासी पांच मी रे, बीजे खंडे ढाल अनूप ॥ मं० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाणे कुमर क्षीणोदरी, मांझी कहे तुं वात ॥ अजगर वदने किम पझी, राखीतीजटम्रात ॥ १ कहे कुमरी हुं नवि लहुं, अजगर वदन प्रवेश ॥ सुणो कणि थइ जे कहुं, अवर वात लवलेश ॥ २ ॥ तेहवामां पग रव थकी, जाण्यो जन संचार ॥ कुमर विचारे रातमां, केहनो एह विहार ॥ ३ ॥ आवे ठे साहमो धस्यो, रसीयो के लूंटाक ॥ व्यसनी मद पीधो अठे, के कोइ जार लझाक ॥ ४ ॥ के कोइ परिचित नारिनो, आवे ठे इणि वाट ॥ मीट न पारुं गोरमी, ए अवसर ते माट ॥ ५ ॥ एम विचारी शिर थकी, काढी गुटिका टाल ॥ आंवानां रसमां घसी, कस्युं तिलक तस जाल ॥ ६ ॥ पुरुष थयो नारि टली, कुमर कहे मत शंक ॥ रूप पालटयुं तुज में, आवत नर आशंक ॥ ७ ॥ ज्यां नहिं मांजुं थूंकथी, त्यां लगें तुज नर रूप ॥ पुरुष गया मांज्या पठी, थाशे मूल सरूप ॥ ८ ॥ आपण वे ए एक ठे, सुखें पधारो आंहिं ॥ इम कही निरखत वाटमी, दीठी नारी त्यांहिं ॥ ए ॥ तरुणी हरिणी परें धसी, आवे थिरकित गात ॥ नृप नंदन मधुरे स्वरें, पूठे तस अवदात ॥ १० ॥

॥ ढाल ७ठी ॥ नदी यमुनाके तीर, उ
के दोय पंखीया ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे तुं आंहिं, आवी कुंण एकली; किम कं
पे तुज गात, चिंतातुर कां वली ॥ कुण तटनी ए भूप,
कवण नगरी किसी; इहां पाम्या सुखशात, अमें मन
मां वसी ॥ १ ॥ नारी भणे ए नीर, नदी गोला वहे;
चंद्रावती उपकंठ, पुरि अति गहगहे ॥ दशदिशि पस
री जास, महा कीरति ध्वजा; वीरधवल भूपाल, इहां
पाले प्रजा ॥ २ ॥ कुमर विचारे जेथ, आवण हुं
चाहतो, पमतो पमतो तेथ, आयो भज गाहतो ॥ अ
हो मुज पुण्य प्रमाण, प्रसन्न छे जगपती; जस मुखें
पेठी नारि, मली जे जीवती ॥ ३ ॥ कहे वली आ
गल वात, नारि अचरिज भरी; पुत्री हुइ ते भूपने,
मलया सुंदरी ॥ मंमप मांमयो तास, स्वयंवर भूपतें;
मूक्या दूत निमंत्रणे, नृप नंदन प्रतें ॥ ४ ॥ आज
थकी विवाह, होसे त्रीजे दिनें; कीधी सामग्री सर्व,
अगाउ मेलीनें ॥ नृपने बीजी नारि, अछे कनकाव
ती; मलया साथें रोश, वहे ते डुर्मति ॥ ५ ॥ सोमा
माहरुं नाम, हुं तास महोलणी; सर्व रहस्यनुं ठा
म, घणुं विसवासणी ॥ मलयानां केइ छिद्र, जोवे मु

ज सामिनी; पण नवि देखे कोइ, किहां अवगुण कणी ॥ ६ ॥ नृप पुत्री नर रूप, रही पूछे इस्युं, ते साथें इम रोष, तणुं कारण किस्युं ॥ कुमर कहे संतान, होवे जो शोक्यनां, शोक्यतणे मनशाल, समा हुए सहेजनां ॥ ७ ॥ नारी जणे ए साच, कह्यो छे जेहवो; जो तां तेहनां छिद्र, समय केतो हवो ॥ आजूनी अधरात, थइ कौतुक कथा, दीठी कहुं तुज आगें, नही ते अन्यथा ॥ ८ ॥ नाखे लखसी पूंज, गले कनका तणें; हार ठव्यो किण आइ, गगनथी चुंप पणे ॥ कुमर विचारे हार, ठव्यो तेणे व्यंतरी; निश्चय कोइक नेह, कारणथी ऊतरी ॥ ए ॥ पामी नाहिं में शुद्ध, किहां हमणां लगें; ते पाम्यो हवे वात, सवे होसे वगें ॥ सोमा कहे मुज हार, देखाडी श्रीमुखें; वारी हुए लाच, किहां कहेती रखे ॥ १० ॥ हार रयण बहु मूल, छुपाडी एकमने; मुजनें साथें लेइ, गइ नृपति कनें ॥ अवसर देखी दोष, ऊघाडे अतिघणा; विरस पणे एम आल, लवे मलया तणा ॥ ११ ॥ स्वामी सुणो अवदात, कहुं पुत्रीतणा; नयणे दीठा आज, निपट असुहामणा ॥ पुहवी ठाण नगरनो, नृप वखाणियें; सूरपाल तस पुत्र, महाबल जाणियें ॥ १२

॥ तेहनो किंकर एक, गुप्त मलया घरें; आवे छे नित्य रात, निशाचरनी परें ॥ हार रयण ते साथ, कुमरने पाठव्यो; लेखें लिखि संदेश, इस्यो वली सूचव्यो ॥ १३ ॥ मलशे नृपना नंद, अनेक स्वयंवरे; तेमिस तुं पण वेग, आवे आमंबरें ॥ मुज बुद्धियें राज्य, सकल हाथें करी; परणी मुज फलवंत, करे यौवन सिरि ॥ १४ ॥ राज्य ग्रहणनी चाहि, कुमारी धूरतें; धूतीए तिण बेहु, थया एकण मतें ॥ नारी हूए मति हीण, कपटनी कोथली; वाल्हाने घे छेह, सारें स्वारथ वली ॥ १५ ॥ अतिविरुद्ध रोशाली, वाघण जिम सुंदरी; साहसनो नंमार, अनृतनी छे दरी ॥ मुखमीठी मन धीठ, धरमणी दामणी; न हुवे केहनी नेट, संतोषी कामणी ॥ १६ ॥ एहनें संग विलुद्धा, जे नर बापमा; ते पामे दुःख लाख, थया रस लांपमा ॥ नाहिं करुणानो लेश, हीयामां नारीनें; मलतानें सविशेषें, मूके मारीनें ॥ १७ ॥ अनरथ ए हो नारि, कह्यो में छे जिस्यो; करतां पूर्व उपाय, पछे नही सोचसो ॥ जो मुज वचन विचार, जरोसों नवि करो; मांगो अमूलिक हार, न देसे तो खरो ॥ १८ ॥ ईम उदनाव्या दोष, अनेक मृषा कही, रोषारुण जूपाल, कस्यो द्वेषें ग्रही

॥ छही ढाल रसाल, ए बीजा खंमनी; कांतें कही मीठास, जरी मधुखंमनी ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रोष गहिल नरपती तिहां, अमने करी विदाय॥ चंपकमाला जामिनी, वोलावी विलखाय ॥ १ ॥ व्य तिकर सर्व सुणावियो, राणीने राजान ॥ निजपुत्री उपर तिका, थई रोप असमान ॥ २ ॥ मांगो हार मनोहरु, जो नवि देसे वाल ॥ तो व्यतिकर सघलो खरो, इम कहे चंपक माल ॥ ३ ॥ कन्या तेमी मांगीयो, हार रयण ततकाल ॥ भ्रमजूली मौनें रही, मनमां पेठी जाल ॥ ४ ॥ चित्त विकल्पी कूम इम, उत्तर दीधुं एण ॥ तात हार मुज कंठथी, अपहरि लीधो केण ॥ ५ ॥ अवगुण इंधण अति सवल, वचन पवन नृप कुंम ॥ रोप अनल कुमरी दहन, वागो जई ब्रह्मंम ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जीणा मारुजीनी करहलमी, करह लमी केशररो कूपो मने आलाहो राज ॥ एदेशी ॥

॥ नृप कहे निज पुत्री जणी, फिट पापिणी हति यारी, मुखकुं कांइ देखामे होराज ॥ अलगी रहे मुज नयणथी, कुलखंपणी मति हीणी, मुजकां लाज ल गामे होराज ॥ १ ॥ न्हानी पण दोपें जरी, जिम त्रि

षहरनी दाढा, अलवें लागी मारे होराज ॥ कन्या रूपें वैरणी, थइ लागी उपरांठी, वैर विरोध वधारे होराज ॥ २ ॥ एवकुं तुज किणें सीखव्युं, चरित्र विषम अति ऊंकुं, जुंकुं सुणतां लागे होराज ॥ आज थकी जो इम करे, वधती वधती वली शुं, करशे जातां आगें होराज ॥ ३ ॥ दोष नहीं माहरे शिरें, कीधुं ढे तें जेहवुं, तेहवां फल तुं चाखे होराज ॥ प्रत्यक्ष विषनी वेलमी, उखेमी हवे नाखी, सारसुं तुज पाखें होराज ॥ ४ ॥ तात वचन कमुआ सुणी, माय रीसाणी जाणी, आई निज आवासें होराज ॥ बेठी आसण ऊमणी, करीनें मुख नीचुं, मनमां एम विमासे होराज ॥ ५ अणगमतुं में तातनुं, विकल पणे सुं कीधुं, जेहथी तात रीसाणो होराज ॥ हार रयण खोया थकी, एवमो कोप किवारें, राजा मनमां नाणे होराज ॥ ६ ॥ स्यो अवगुण नृप माहरो, देखीने कलुषाणो, बोल्यो विरुआं वयणा होराज ॥ इम कुमरी चिंता नरी, मुखपंकज करमाणी, वरसे आसुं नयणा होराज ॥ ७ ॥ नृप कहे पटराणी प्रत्यें, तुज तनुजानां दीठां, चरित्र महा विष तोले होराज ॥ हार रयण तिण कुमरनें, इंणे दीधो ढे निश्चें, मुज मारणने कोलें होरा

ज ॥८॥ वाल्ही पण वैराणी हूई, जिम विषधरीयें मंकी, आंगुली होय डुवालही होराज ॥ रिपुकुलने जां न वी मले, ते पहेली ए हणवी, पाप न गणवो काल्ही होराज ॥ ए ॥ डुःख नरी रयणीनें गमी, प्रह कालें नृप तेमी, सेवकनें इम नासे होराज ॥ मलयाने ह णजो तुमें, हुकम फरी मत पूछो, रखे किहां किण ए नासे होराज ॥ १० ॥ मंत्री सुबुद्धि सुणयो सवे, व्यति कर ए कन्यानो, आवी नृपने नेटे होराज ॥ करजोमी इम वीनवे, असमंजस ए मांड्यो, नृप कहो किण खेटें होराज ॥ ११ ॥ सुं अपराधि कन्यका, नेह गयो क्यां पहेलो, धरता जे एह सायें होराज ॥ विषतरु वर पण कापवो, न घटे जेह उठेर्यो, धुरथी आपणें हाथें होराज ॥१२ ॥ देव विचारी कीजीयें, जिम न होवे पछतावो, पछे फल पाकंतां होराज ॥सकल वि चार सुणावीउं, सचिव नणी नृप धुरथी, सचिव म स्यो नाखंतां होराज ॥ १३ ॥ मौनधरी मंत्रि रह्यो, सेवक नृप आदेशें, मलया मंदिर आवे होराज ॥ गद् गद् कंठें इम कहे, तुज उपर नृप रूठो, आणा वध फुरमावे होराज ॥ १४ ॥ दीन वदन कन्या कहे, वीरा नृप किम कोप्यो, ते कहे न लहुं कांई होराज॥ क

न्या इंम विलपे तिहां, हाहा मुज किण नाख्या, अत्र गुण वैर वसाई होराज ॥ १५ ॥ मुज मुख निरखी हरखतो, ते पण थइ अतिवांको, नरपति मुजनें मारे होराज ॥ चंपकमाला मावकी, ऊपरांठी थई बेठी, नृपने ते नवी वारे होराज ॥ १६ ॥ मलयकुमर मुज सुंदरू, ते पण आंखुं आमा, कान देईने बेठो होराज ॥ बंधु वरग हुं परिहरी, परिहरियें जिम मीठो, पण जे जोजन एठो होराज ॥ १७ ॥ पुण्य गयां किहां माहरां, प्रगट्यां क्यांथी प्रौढा, पाप पूरव जव केरां हो राज ॥ करुं धरणी तुज वीनती, द्ये मारग जिम पेसी, काढुं प्राण आघेरा होराज ॥ १८ ॥ महोल मांहे मलया रही, पूर्व कर्मने निंदे, कहेसे वली कांइ आगें होराज ॥ बीज़े खंके सातमी, ढाल सरस ए नाखी, कांतें इंम अति रागें होराज ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेहावे मलया हवे, वेगवतीने वेग ॥ नृप आदेश सुणावीने, कहे निज कारज नेग ॥ १ ॥ सखी सिधावो नृप कन्हें, कहेजो इंम संदेस ॥ तुम पुत्री इंम मुज मुखें, दीधो ठे निर्देश ॥ २ ॥ वेगवती बाला थ

की, आवे नृपनें पास ॥ कुमरीनां संदेसमा, इम संभ लावे तास ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ कोइलो परवत धूंधलो ॥ होलाल ॥ ए देशी ॥

॥ संदेसो मलया कहे होलाल, सांभल पुरना इस ॥ नरिंदजी ॥ गुनह करी में रावलो होलाल , अलवें पाई रीस ॥ न० ॥ १ ॥ सं० ॥ अवगुण खमजो माहरो होलाल, कीधा जे में अजाण ॥ न० ॥ मरण सरण में तें सिरें होलाल, दरू कस्यो परमाण ॥ न० ॥ सं० ॥ २ ॥ आवुं प्रभु पद भेटवा होलाल, तुम वचनें महा भाग ॥ न० ॥ अतिथि हूआ परलोकना होलाल, लहेसुं ते वली लाग ॥ न० ॥ सं० ॥ ३ ॥ इम न ग में तो इहां थकी होलाल, ग्रहेजो प्रणति अनेक ॥ न० ॥ प्रणति वली विहुं मायने होलाल, कहेजो मु ज सुविवेक ॥ न० ॥ सं० ॥ ४ ॥ अनरथ जे में आच स्यो होलाल, ते भांखो निरसंक ॥ न० ॥ दोष देखा मी मारतां होलाल, न हुवे कालकलंक ॥ न० ॥ सं० ॥ ५ ॥ नृप विचारें देखजो होलाल, करी वेरीनां काम ॥ सुलोचनी ॥ गुनह प्रगटावे आपणा होलाल ॥ अण जाणी थइ आम ॥ सुलोचनी ॥ ६ ॥ चरित्र भलो मल

यां तणो होलाल ॥ ए आंकणी ॥ कपट मंजूस त्रिया कही होलाल, मुखमीठी धूतारि ॥ सु० ॥ मधु लिपी त्रिष गोलिका होलाल, एवी रची किरतार ॥ सु० ॥ च० ॥ ७ ॥ प्रणति म होजो एहनी होलाल, नहीं सुख दीठे काम ॥ सु० ॥ मरण सरण वहेली करो होलाल, कन्या अवगुण धाम ॥ सु० ॥ च० ॥ ८ ॥ वेगवती व लतुं जणे होलाल, नरपतिने कुमणाय ॥ सु० ॥ गोला नदी तट दाहिणे होलाल, अंध कूउ कहेवाय ॥ सु० ॥ च० ॥ ए ॥ जंप देई कुमरी तिहां होलाल, करसे जीवित नास ॥ सु० ॥ इम करी रोती जूरती होलाल, आवे मलया पास ॥ सु० ॥ च० ॥ १० ॥ वेगवती मलया जणी होलाल, जाख्यो तेह प्रबंध ॥ सु० ॥ तास वचन अविलंबीनें होलाल, ऊठे तिहांथी मुंध ॥ सु० ॥ च० ॥ ११ ॥ वज्रकठीन हीयरुं करी होलाल, साहस वस असमान ॥ सु० ॥ पूरवकर्मने निंदती होलाल, धरती नवपद ध्यान ॥ सु० ॥ च० ॥ १२ ॥ धारी मन निर्जय पणे होलाल, विंटी सुजट अनेक ॥ सु० ॥ पालें पग पंथें वहे होलाल, साही सबलो टेक ॥ सु० ॥ च० ॥ १३ ॥ पग पग पंथें आफले होलाल, पडि पडि ऊठे तेम ॥ सु० ॥ दासी दास उदा

सीयां होलाल, पूछे बोले एम ॥ सु० ॥ च० ॥ १४ ॥
जो तुज मनमां एवमी होलाल, हुंती ताती रीस ॥
सु० ॥ कांइं स्वयंवर मांमीने होलाल, तें तेड्या अव
नीस ॥ सु० ॥ च० ॥ १५ ॥ पाल्या जे पोता वटें हो
लाल, पहेलां पोषी लाम ॥ सु० ॥ ते किंकर कुलने
हवे होलाल, थेठे कां फुःख हाम ॥ सु० ॥ च० ॥ १६ ॥
किम करशुं रहेसुं किहां होलाल, तुम विरहें तरसं
त ॥ सु० ॥ लागे ए अलखामणो होलाल, फीटल
प्राण रहंत ॥ सु० ॥ च० ॥ १७ ॥ लोक घणा नगरी
तणा होलाल, विलख वदन कहे वेण ॥ सु० ॥ कु
मरी रयण सीधावते होलाल, जगत हुउं गत रेण
॥ सु० ॥ च० ॥ १८ ॥ राय सुता पगमां चुने होलाल,
तीखा कंटक कोम ॥ सु० ॥ मान्न रक्त रसिया मुखें
होलाल, पैसे पगतल फोमि ॥ सु० ॥ च० ॥ १९ ॥
आई कूआ कंठमे होलाल, बोले इम मुख वाच ॥
सु० ॥ कुमर महाबलनो इहां होलाल, सरण हजो
मुज साच ॥ सु० ॥ च० ॥ २० ॥ वाल जंपावे कूपमां
होलाल, पमती जिम जलवाल ॥ सु० ॥ पुरजन तव
हा हा रवें होलाल, पूरे गगन विचाल ॥ सु० ॥ च० ॥
॥ २१ ॥ सिंचे धरणी आंसुयें होलाल, निंदे नृपने

केय ॥ सु० ॥ देता देव उलंनमा होलाल, आव्या लोक वलेय ॥ सु० ॥ च० ॥ २२ ॥ खबर कही जे सेवकें होलाल, संतूठो नरपाल ॥ सु० ॥ बीजे खंमे आठमी होलाल, कांतें कही ए ढाल ॥ सु० ॥ च० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नरपति हरख्यो हीये, चित्तमां चिंते एम ॥ हणतां पुत्री डुष्टनें, थयो वंशने खेम ॥ १ ॥ आमंत्र्या नृप नंद जे, तास जणावुं वात ॥ मुज तनुजा व्याधें मूई, मति आवो किण घात ॥ २ ॥ वली पूछुं कनका प्रत्यें, मुज उपकारक एह ॥ इम विचारी सचिवशुं, नृप पोहोतो तस गेह ॥ ३ ॥ बार जमयां देखी तिहां, पामे चित्र सरूप ॥ कुंची विवर कमामनो, तेहमां निरखे नृप ॥ ४ ॥ गर्न नवन दीपक करी, लेई हार ते नार ॥ दीठी नृपें विवरथी, करति इम मनोहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ केशर वरणो हो काढ कसुंबो मारा लाल ॥ ए देशी ॥ अथवा ॥ नेमि पयंपेहो प्रीति संनालो म्हारा लाल ॥ एदेशी ॥

॥ हार ठबिला हो करुणा धरजो ॥ मारा लाल ॥ संकट हरजो हो मंगल करजो ॥ मा० ॥ डुर्लन लाधो हो सुरमणि बीजो ॥ मा० ॥ दीठो ताहारो हो सबल-

पतीजो ॥ मा० ॥ १ ॥ राख्यो गोपवी हो छानो पहे
लो ॥ मा० ॥ नृप नंखेरी हो कीधो वहेलो ॥ मा० ॥
वैरिणी मलया हो कूप नखावी ॥ मा० ॥ संपत्ति स
घली हो मुज घर आवी ॥ मा० ॥ २ ॥ ते सांभलिने
हो नृपति बोल्यो ॥ मा० ॥ इण पापिणीये हो मुजने
जोल्यो ॥ मा० ॥ कपट करीने हो पोतें चोर्यो ॥ मा०॥
मलया माथे हो दूषण ठेर्यो ॥ मा० ॥ ३ ॥ धिग तुज
जीव्युं हो अधम छगारी ॥ मा० ॥ वांक विहूणी हो
मलया मारी ॥ मा० ॥ कदिही न तेणें हो कीधी दु
हवी ॥ मा० ॥ ऊंचे सासें हो बोले न तेहवी ॥ मा०
॥ ४ ॥ हैहै वंच्यो हो कपट पचारे ॥ मा० ॥ इम
कही वारे हो हाथ पछाडे ॥ मा० ॥ गाढें पोकारी
हो धरणी ढलीउ ॥ मा० ॥ दुःखरे दाधो हो मूर्छा
मलिउ ॥ मा० ॥ ५ ॥ लोक सुणीने हो दोडी आ
व्या ॥ मा० ॥ शुं थयुं नृपने हो इम कहेताव्या ॥
मा० ॥ तेहवा मांहे हो कनका नाठी ॥ मा० ॥ गोख
मारगथी हो कूदी नाठी ॥ मा० ॥ ६ ॥ हुं पण पूंठें
हो जई झंपावी ॥ मा० ॥ कनका पासें हो तत्क्षण
आवी ॥ मा० ॥ शूने मंदिर हो खूणे पगां ॥ मा० ॥
सुणियें वातो हो जाणनी वेगां ॥ मा० ॥ ७ ॥ चेतन

वाल्युं हो नृपनुं लोकें ॥ मा० ॥ नृपति रोवे हो लां
बी पोकें ॥ मा० ॥ चंपकमाला हो आवी दोमी ॥ मा० ॥
पीउने पूछे हो बेकर जोमी ॥ मा० ॥ ८ ॥ एह अ
मारुं हो प्राण निपातन ॥ मा० ॥ शुं मांरुयुं छे हो शो
ग संतापन ॥ मा० ॥ प्रगट प्रकाशे हो रोतां मंत्री ॥
मा० ॥ कनकवतीनी हो करणी सूत्री ॥ मा० ॥ ए ॥
चंपकमाला हो नृप गल वलगी ॥ मा० ॥ ङुःख
पावकनी हो जाला सलगी ॥ मा० ॥ गदगद सादें हो
रोवा लागी ॥ मा० ॥ करति ङुःखनां हो लोक विनागी
॥ मा० ॥ १० ॥ सचिव बिहुनें हो इम समजावे
॥ मा० ॥ मूआं जगमांहिं हो पाछा नावे ॥ मा० ॥ तो
पण देखो हो कूप एकंती ॥ मा० ॥ नाग्यें लहीयें
हो जइ जीवंती ॥ मा० ॥ ११ ॥ कूआ कंठे हो नृपति
आव्यो ॥ मा० ॥ जण पेसारुी हो ते शोधाव्यो ॥
॥ मा० ॥ मलया नावी हो मीटे क्यांथी ॥ मा० ॥
आशा त्रुटी हो नृपनी तिहांथी ॥ मा० ॥ १२ ॥ मं
दिर पोहोतो हो मन ङुःख करतो ॥ मा० ॥ कनका
धामें हो आवे फिरतो ॥ मा० ॥ बार उघारुी हो रा
णो नांखे ॥ मा० ॥ पापिणी नाठी हो अणियें आ
खे ॥ मा० ॥ १३ ॥ जोवा पगलां हो किहां गइ नागी

॥ मा० ॥ आणो वांधी हो केमें लागी ॥ मा० ॥ राय कह्याथी हो तस घर लूंट्यो ॥ मा० ॥ परिजन तेहनो हो पकमी कूट्यो ॥ मा० ॥ १४ ॥ वांक विना जे हो पुत्री मारी ॥ मा० ॥ अति पछतावो हो ते चित्तधारी ॥ मा० ॥ सूरज उगे हो राणी साथें ॥ मा० ॥ नरपति वलशे हो चयमां हाथे ॥ मा० ॥ १५ ॥ जिहां तिहां नमती हो नृप नट पेखी ॥ मा० ॥ कनकावीहिनी हो करणी देखी ॥ मा० ॥ इम मुज नांखे हो विहुं विछमीयें ॥ मा० ॥ रहेतां नेलां हो हाथे पमीयें ॥ मा० ॥ १६ ॥ हारादिक सवि हो ले निज संगें ॥ मा० ॥ मुजने छोमी हो दोमी रंगें ॥ मा० ॥ मगधा वेश्या हो मिलती पहेली ॥ मा० ॥ ते घर पेठी हो धसकी वहेली ॥ मा० ॥ १७ ॥ हुं एकलमी हो रही त्यां न शकी ॥ मा० ॥ रातें ऊठी हो वनमां चसकी ॥ मा० ॥ इहां आवीउं हो नय धूजंती ॥ मा० ॥ वात कही में हो जेहवी हुंती ॥ मा० ॥ १८ ॥ हवे हुं जाशुं हो रयणी विहाणी ॥ मा० ॥ इम कही सोमा हो आगें उजाणी ॥ मा० ॥ ढाल ए नवमी हो बीजे खंमें ॥ मा० ॥ कांति पयंपे हो वचन अखंमें ॥ मा० ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वात सुणी विस्मित हूउं, कहे कुमर गुण गेह॥ पहेलां इणे जे संग्रह्युं, वैर विशोध्युं तेह ॥१॥ दुष्ट हृदय युवती तणो, विषम चरित्र संचार ॥ करतां न जुए कामिनी, अनाचरण संचार ॥२॥ कन्या रयण विणासतां, मरणोन्मुख नृप कीध ॥ प्रजा अनाथ करी वली, पोतें अपजश लीध ॥३॥ कनकानी दासी थकी, सुंदरी तुज विरतंत ॥ लह्युं सकल में मूलथी, अहो चरित्र बलवंत ॥४॥ अल्पकालमां अतिघणी, दीठी तें दुःख राशि ॥ अंधकूप पमतां ग्रही, अजगर वदन विकाशि ॥५॥ निकट किहांकिण कूप छे, तेमांथी ते साप ॥॥ आफलवा आंबा थकें, इणी थल आव्यो आप ॥६॥ वदन विदार्युं बल करी, में तेहनुं कलसाज ॥ तेमांथी तुं नीसरी, मिली इहां मुज आज ॥७॥ एकांतें अजगर पम्यो, देखी बीहिनी बाल ॥ कुमर कहे शंका किसी, जो विधी छे रखवाल ॥८॥ पूरव श्लोक नणे तिहां, बिहुं जण धरी बहु राग ॥ मुख धोवे गोला जलें, नस्यां सबल सोनाग ॥९॥ तेहज आंबा फल ग्रही, नक्षण करी ससनेह ॥ देवी जल मंदिर नणी, वेगें आव्यां बेह ॥१०॥

॥ ढाल दशमी ॥ हांरे कांइ जोवनीयानो ल
टको दाहाडा चारजो ॥ एदेशी ॥

॥ हांरे वारी विहुं तिहां देखे काठ तणी बे फाडजो, पहेलां रे जेहमांथी नृप राणी लह्यो रेलो ॥ हांरे वा री कुमर ते देखी तेहमां विवर विचाल जो, धूणी रे शिर चित्तमां चिंति इम कह्यो रेलो ॥ १ ॥ हांरे वारी तीन कारज हवे करवां माहारे आंहिंजो, एकतो रे नृप बलतो चयमांथी राखवो रेलो ॥ हांरे वारी बीजुं ए तुज परणुं नृपनी चाहिजो, त्रीजुं रे जननी गले हार ते नाखवो रेलो ॥ २ ॥ हांरे वारी लखमी पुंज अनोपम नाठो हार जो. ते हुं रे तुज देईश दा हाडा पांचमां रेलो ॥ हांरे वारी इम पण बांध्यो जन नी आगें सार जो, सफलो रे करवो ते साची वाचमां रेलो ॥ ३ ॥ हांरे वारी ते माटे तुं पुरमां फरि नर रू पजो, सांजे रे मगधा घरे जाजे हामशुं रेलो ॥ हांरेवा री तिहां रहीने कनकांनुं निरखीश रूपजो, करतां रे ढल वल मुत्तावली पामशुं रेलो ॥ ४ ॥ हांरेवारी हुं पण जइ चय बलता नृपने संग जो, वाकुंरे नवली बुद्धि कोइ केलवी रेलो ॥ हांरे वारी नामांकित मुज ये तुज मुद्रा नंगजो, ग्रहेशे रे एहथी तुज को चोरी

ठवी रेलो ॥ ५ ॥ हांरे वारी मुद्रा दीधी ते थापि शि
र आपजो, इम कहीरे इहां ठानी फरतां फायदो रे
लो, हांरेवारी आजनी रजनी मगधा घरें थिर थापजो,
मलजो रे कालें सांजे ठे वायदो रेलो ॥ ६ ॥ हांरे
वारी साधी कारज सघलां काले सांजजो, आवीश रे दे
वीजल नवनें हुं वली रेलो ॥ हांरे वारी कुमर वचन
चित्तधारी ते पुरमांहिंजो, आवीरे नर वेशें किणही
न अटकली रेलो ॥ ७ ॥ हांरे वारी आगामी जे कर
वां काम अशेष जो, ते सविरे निरधारी पुर आव्यो
धसी रेलो ॥ हांरे वारी नृपनंदन नैमित्तिकनो लेइ वे
शजो, तरुतलेंरे बांध्यो एक गज देखे रसी रेलो ॥
८ ॥ हांरेवारी ते गजनुं बहुला जण लेइ ठांणजो,
दीठारे नाजनमां जलशुं गालता रेलो ॥ हांरेवारी कु
मरें पूछ्या कहे कारण परमाणजो, गतदिन रे नृप
सुत इहां आव्या मालता रेलो ॥ ए ॥ हांरे वारी रं
मतमां तेणे सोवन सांकल एकजो, विंटिरे सेलडीयें
नांखी गज दिशा रेलो ॥ हांरेवारी पकती ले गज मुख
मां घाली ठेक जो, ताणीरे थाक्या तिहां केइ महा
वत जिस्या रेलो ॥ १० ॥ हांरेवारी नृप आदेशें गालीजें
एह ठाणजो, तेहनांरे इहां खंरू कदाचित् पामीयेंरे

लो ॥ हांरेवारी काढी महावल केश थकी सुविनाण जो, सुडारे पूलामां ठवी गजने दीयें रेलो ॥ ११ ॥ हांरे वारी चावण लागो गयवर पूलो तेहजो, तेहवेंरे नृपति सुत आगें चालीउ रेलो ॥ हांरे वारी गोला कंठें मलिउ लोक अठेह जो, करतो रे कोलाहल कुमरें चालिउ रे लो ॥ १२ ॥ हांरेवारी कुमर विचारे चाल्यो हुं जिण कामजो, पुरवरें रे कारज एह तेहनो मेलव्यो रेलो ॥ हांरे वारी चयमांथी उललते अति उद्दामजो, दीसेरे घण धूमें नभतल मेलव्यो रेलो ॥ १३ ॥ हांरे वारी भुज ऊंचा करी दोमे कुमर तिवारजो, कहेतो रे इम मधुरवचन गाढे स्वरें रेलो ॥ हांरेवारी जीवे छे तुम पुत्री मलय कुमारिजो, खेले रे साहस कां भोला इणी परें रेलो ॥ १४ ॥ हांरे वारी कर्ण सुधासम सुणीने तेहनां वयणजो, साहामांरे आव्या लख लोक उजायनें रेलो ॥ हांरेवारी जीभें लवण उतारुं तुजने सयणजो, क्यांछे रे कहो मलया तेह बतायने रेलो ॥ १५ ॥ हांरेवारी इम सुणी बोले तेह निमित्तनो जाणजो, काढोरे नृप राणी चयथी वेगलां रेलो ॥ हांरेवारी तो भांखुं आगमगात हुं इणें ठाणजो, इम सुणीरे चयमांथी काढ्यां करी कला रेलो ॥ १६ ॥

॥ हांरेवारी कुंअर कहे वसुधाधिप कां अकुलायजो, किहांएक रे मलया छे निश्चें जीवती रेलो ॥ हांरेवारी निमित्तलणे बल जाएयुं में महारायजो, मतिबलेंरे कहुं छुं हुं तुमने ते वली रेलो ॥ १७ ॥ हांरेवारी हवे नृप पूछे मलया केरी वातजो, करशे रे अति कौतुक महाबल इंहां वली रेलो ॥ हांरेवारी बीजे खंडें एथइ दशमी ढाल जो, जांखी रे इंम कांति विजय रंगें जली रेलो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जूप कहे सुण निमित्तिया, छुःखियो हुं विण जाग ॥ देखुं मलया जीवती, एवमो किहां मुज जाग्य ॥ १ ॥ काल कूडी सम कूपमां, नाखी न मरे केम ॥ अहो दैवनी चित्रता, न मुइ जांखे एम ॥ २ ॥ शोधी पण लाधी नहीं, जिम निर्धन धन कोडि ॥ छुष्ट किणें जल थलचरें, खाधी होशे मरोडि ॥ ३ ॥ तेह जणी मुजनें सुखें, होजो अग्नि सहाय ॥ वचन सुणी इंम जूपनां, बोल्यो कुमर बनाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ सूवटिआलाइ ॥ ए देशी ॥

॥ जूपतिजी रूमा, सांजल चतुर सुजाण होरेहां ॥ वात न जाखुं कूअडी ॥ जू० ॥ आजदिवस सुख ग१

ण होरेहां ॥ वारश तिथि थइ रूअमी ॥ जू० ॥ १ ॥ आजथी त्रीजे दिवसें होरेहां, दोय पोहोर वासर च ढे ॥ जू० ॥ वेठा सहु अवनीश होरेहां, मंरूप आ रूंवर मढे ॥ जू० ॥ २ ॥ शोनित तनु शणगार होरे हां, कुमरी दरिशण आपशे ॥ जू० ॥ देखीस सहसा कार होरेहां, अचरज सहुने व्यापशे ॥ जू० ॥ ३ ॥ रचि स्वयंवर शुन्न एह होरेहां, आवत नृप मत वारजे ॥ जू० ॥ जो ठ तुज संदेह होरेहां, तो अहिनाणी ए धारजे ॥ जू० ॥ ४ ॥ सलया मुद्रिरयण होरेहां, का लें तुम्र कर आवशे ॥ जू० ॥ तो साचां मुज वयण होरेहां, वेद वाणी गुण पावशे ॥ जू० ॥ ५ ॥ चौद शने परन्नात होरेहां, पूरवदिशि पुर वाहिरें ॥ जू० ॥ नृपनां नन मन खांत होरेहां, परखावण तुज कुलसुरी ॥ जू० ॥ ६ ॥ पट करणो एक थंन्न होरेहां, पोल समीपें थापशे ॥ जू० ॥ लहेता लोक अचंन्न होरेहां, देख त रंग न धापशे ॥ जू० ॥ ७ ॥ ते लेइ तेणिवार होरे हां, थिरथापे मंरूप तलें ॥ जू० ॥ नेदशे थांन्नो ते ह होरेहां, (धनुष वज्रसार होरेहां,) वाण सहित पूजा नलें ॥ जू० ॥ ८ ॥ थापे थांन्ना ठेह होरेहां, जे नर तेह चढाइनें ॥ जू० ॥ नेदशे थांन्नो तेह हो

रेहां, होशे वर तुज जाइनें ॥ न्नू० ॥ ए ॥ अनोपम
ठे अतिन्नांति होरेहां, पूजाविधि ते यंत्रनी ॥ न्नू० ॥
न्नांख्या ए अवदात होरेहां, निमित्त कलायें अनुम
नी ॥ न्नू० ॥ १० ॥ मलसे ए अहिनाण होरेहां, नि
मित्त बलें न्नांख्यां अठे ॥ न्नू० ॥ न मले जो निरवा
ण होरेहां, मन मान्युं करजे पठें ॥ पंमितजी रूमा
॥ ११ ॥ लोक कहे शिरनाम होरेहां, अम न्नाग्यें तुं
आवियो ॥ पं० ॥ ज्ञानी तुं जस पाम होरेहां, उप
कारें धुर ठावियो ॥ पं० ॥ १२ ॥ ताहारा ए उपका
र होरेहां, वीसरशे नहीं जीवते ॥ पं० ॥ आप्यो ए
अधिकार होरेहां, जगदीसें तुज गुण ठते ॥ पं० ॥
१३ ॥ आले हरख निधान होरेहां, कंचन मणि न्नू
षण बहु ॥ पं० ॥ ते कहे जो ल्युं दान होरेहां, तो
उपकार किस्यो कहुं ॥ पं० ॥ १४ ॥ करजे तुंहिज ते
ह होरेहां, यंत्र तणी पूजा वमी ॥ पं० ॥ नृप वचन
ठेहमे एह होरेहां, बांधे शुकननी गांठमी ॥ पं० ॥
१५ ॥ नृप कहे कन्या कंत होरेहां, किण नामें होसे
कहो ॥ पं० ॥ आगम निगम अनंत होरेहां, प्रगट
पणे शास्त्रें लहो ॥ पं० ॥ १६ ॥ पोहवीपुर सूरपाल
होरेहां, महाबल नंदन परवमो ॥ पं० ॥ वरशे ते तु

ज वाल होरेहां, कुमर कहे एम परगमो ॥ पं० ॥ १७ ॥ दिवस थयो मध्यान्ह होरेहां, नृप आवे नगरी ज णी ॥ पं० ॥ कुमर घणुं सनमान होरेहां, साथें ले पुरनो धणी ॥ पं० ॥ १८ ॥ सामंवर महाराय होरे हां, आयो मंदिर ऊजमें ॥ पं० ॥ कुमर नृपति ति णठाय होरेहां, साथें वली भोजन जमे ॥ पं० ॥ १९ ॥ वीती करतां वात होरेहां, अरध दिवसने ते निशा ॥ पं० ॥ गह मह हुइ परभात होरेहां, रवि ऊगे पूरवदिशा ॥ भू० ॥ २० ॥ बीजे खंमे एह होरेहां, पूरण ढाल इग्यारमी ॥ भू० ॥ कांति कहे ससनेह होरेहां, सुणतां श्रोताने गमी ॥ भू० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पहेला नृप मूकया जिके, गालण गजनुं गण ॥ तेह प्रभातें आविया ॥ सेवक जिहां महिराण ॥ १ ॥ करजोमी कौतिक भस्या, बोल्या तिहां एम वयण ॥ लाधुं गजमल गालतां, ए प्रभु मुद्रा रयण ॥ २ ॥ नृ प लीधी ते मुद्रिका, उल्लास पणें ससलूंण ॥ वांचत नाम सुता तणुं, इम बोल्यो शिर धूंण ॥ ३ ॥ अहो अचंभो मुद्रिका, किम आवी गज पेट ॥ वली निमि त्त ए कारणे, मलतो दीसे नेट ॥ ४ ॥ तव बोल्यो ज्ञा

नी ईस्युं, निमित्त विकल नवि हुंत ॥ कुलदेवी कार
ण इहां, संन्नवियें खितिकंत ॥ ५ ॥ हरख्यो नृप वि
शेषथी, करे स्वयंवर काज ॥ लोक कहे कुमरी विना,
स्यो मांके नृप साज ॥ ६ ॥ कथन थकी किम रा
चियें, होये जूठ के साच ॥ पेटें पड्यां पतीजीयें, इम
बोले केई वाच ॥ ७ ॥ कन्या विण लघुता घणी,
लहेसे नृप नृप मांहिं, मल्या नृप विलखा थई, धुक
ल करसे प्रांहिं ॥ ८ ॥ सांज समय तेरस दिनें, आ
व्या नृपना नंद ॥ आप्यां मंदिर जूजूआं, त्यां उतस्या
नरिंद ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥ रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानी कहे इम रायने, जो आपो अम सीख लाल
रे ॥ मंत्र अर्द्ध में साधिउं, ते साधुं मन ईष लाल रे
॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ जो
नवि साधुं ए समे, तो वलतुं न सधाय लाल रे ॥ कोई
विघन शुन्न काममां, अण जाण्या उहराय लाल रे
॥ सु० ॥ २ ॥ आजूनी एक रातनो, आपो जो अव
काश लालरे ॥ साधी मंत्र प्रन्नातमां, आवीश हुं तुम
पास लालरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ शीख देई नृप इम कहे,
मंत्र साधनने काज लाल रे ॥ जोईयें ते आपुं हजी,

लेतां न करशो लाज लाल रे ॥ सु० ॥ ४॥ धन लेई केतुं तिहां, कुमर गयो वन मांहिं लाल रे ॥ रयणि गमाली दोहिलें, राजायें चित्त चाहिं लाल रे॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रहकालें पग नूपनां, नेटे नाणी आय लाल रे ॥ नृप कहे तुज मंत्रनी, सिद्धि थई निरपाय लाल रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ कुमर कहे कांइक थई, कांइक रही ठे शेप लाल रे ॥ अर्चन थंत्रतणुं करी, जाईस वली तेणे देश लाल रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ खवर करावा थंत्रनी, प हेलो मूक्यो जेह लाल रे ॥ सेवक ते तिहां आईने, वोल्यो धरी इम नेह लाल रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ तुम आदेशें हुं गयो, पुरवाहिर परजात लाल रे ॥ पोल तणी मावी दिशें, दीठो थंत्र सुजात लाल रे॥ सु० ॥ ॥ ए ॥ इम सुणी राजा ऊठीउ, ते नर साथें लेह लाल रे ॥ थंत्र समीपें आवीउ, निरखें दृष्टि जरेय लाल रे ॥ सु० ॥ १० ॥ लोक सहित पुर राजियो, आवे पूजण थंत्र लाल रे, तेहवे तेह निमित्तिउ, वोल्यो इम धरी दंत्र लाल रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ अम शे जे ए थंत्रने, समज्या विण नर कोई लाल रे ॥ तो कुलदेवी कोपशे, करशे अनरथ सोई लाल रे॥ सु० ॥ १२ ॥ राय प्रमुख पाछा खिसे, मनमां वी

होता अठेह लाल रे ॥ नृप जणे पूजो तुमें, पूज प्र भृति लेइ एह लाल रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ विधि पूर्वक नाणी तिहां, पूजी बेठो ध्यान लाल रे ॥ ह्रींपद मुख थी उच्चरी, मेले माया तान लाल रे ॥ सु० ॥१४॥ डोढ पहोर वासर चढे, सेवक नृप आदेश लाल रे ॥ थंत्र उपाडी पुर जणी, पावन थई सविशेष लाल रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ मंरूपमां आडंबरे, थाप्यो आणी का र लाल रे ॥ षटकरणी पत्थर शिला, कुमरे करावी त्यार लाल रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ तत्री खोसे मंरूपें, धरती मांहे बे हाथ लाल रे ॥ थंत्र निपुण निज सं चथी, लेइ बांध्यो ते साथ लाल रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ बे कर मुख उंचे रहे, शिला थकी ते थंत्र लाल रे ॥ बा ण धनुष तेहथी ठवे, पछिमनें आरंत्र लाल रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ सिंहासन नृपनां ठव्यां, दक्षिण उत्तर जाग लाल रे ॥ गंधर्वे मांड्यो तिहां, गावा मधुरो राग लाल रे ॥ सु० ॥ १ए ॥ थंत्र धनुष पूजावीने, नृप पासें ततकाल लाल रे ॥ कुमर कहे नृपति प्रतें, ते ड्याव्या नरपाल लाल रे ॥ सु० ॥ २० ॥ नाणी नृपनी जीडमां, देखी अवसर खास लाल रे ॥ जई बेगे गांध र्वमां, पलटी वेश प्रकाश लाल रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ बेठा नृप

सिंहासने, देव जिस्या सोहंत लाल रे ॥ परवरिया परिवारशुं, रूपें जग मोहंत लाल रे ॥ सु० ॥२२॥ ढाल थई ए वारमी, वीजे खंडें उदार लाल रे ॥ कांति कहे इहां परणसे, महावल मलया नार लाल रे ॥ सु० ॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप न देखे कुमरने, तव वोल्यो अकुलाय ॥ रे जोवो नाणी किहां, गयो खवर ल्यो जाय ॥ १ ॥ कहे सेवक जोई तिहां, आव्यो नहीं अम मीट ॥ करथी छूटो किहां गयो, जिम फल पाके वींट ॥ २ ॥ नृप जाणे पहेला इणे, साध्यो मंत्र सुसाज ॥ साधन अर्द्ध रह्यो हतो, गयो हशे तस काज ॥ ३ ॥ वचन सवे तेहनां मल्यां, पण न मल्यो एक वोल ॥ कन्या वर महावल कह्यो, एतो वचन टकोल ॥ ४ ॥ अवसरें इहां आव्यो नहीं, नहीं योग होनार ॥ निमित्त वचन निःफल होसे, हैं हैं सरजण हार ॥ ५ ॥ कुंअर सुणी तिहां वस्त्रसुं, ढांकी वदन हसंत ॥ सर्व जणासे ठहके, इम सनलांहें कहंत ॥ ६ ॥ वात लही कन्या तणी, नृपें सकल यथार्थ ॥ मांहो मांहिं ते कहे, आव्या हुं शे अर्थ ॥ ७ ॥ मलया वाला वापकी, मारी विण अपराध ॥ हवे नृपनें किम वालशे, उत्तर देई अवाध ॥ ८ ॥

एहवासमां नृप कहेणथी, ऊंचे स्वर संजलाई॥ निपुण नकीब कहे ईस्युं, राजसन्नामां आई ॥ ए ॥

ढाल तेरमी ॥ चित्रोमा राजा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो नृप हठाला रे, नरपति ठेगाला रे, थाउ उजमाला विकथा ठेमीने रे, मंमपतलें आवो रे, निजशक्ति जगावो रे, वज्र सार चढावो दावो जो मीनें रे ॥ १ ॥ शर पुंखी जोरें रे, थांन्ना मुख कोरें रे, करे घात कठोरें बे दल जूजूआं रे ॥ ते नृप महा बलने रे, प्रगटी ठलकलिने रे, वरसे अटकलीने अम नृपनी धूआ रे ॥ २ ॥ लाट देशनो राणो रे, उठ्यो सपराणो रे, आवे हर्ष नराणो मंमपनें तलें रे ॥ इंद्र धनुषथी न्नारी रे, दीसे एह करारी रे, मनमां इम धारी ते पाठो वले रे ॥ ३ ॥ चौम नृपति नामें रे, ऊठ्यो तिहां हामें रे, आव्यो मंमप ठामें थईने सांसतो रे ॥ निरखी चिलकारा रे, जिम तपत अंगारा रे, एतो जगत संहारा इम कहे नासतो रे ॥ ४ ॥ गौमाधिप हसतो रे, आव्यो धस मसतो रे, ते तो मरिउ खिसतो धनुष उपामतो रे ॥ हूतो ए रसिउ रे, पण देवें मुशिउ रे, इम नृपगण हसियो ताली पामतो रे ॥ ५ ॥ करणाटक स्वामी

सिंहासने, देव जिस्या सोहंत लाल रे ॥ परवरिया परिवारशुं, रूपें जग मोहंत लाल रे ॥ सु० ॥२२॥ ढाल अर्ड ए बारमी, बीजे खंडें उदार लाल रे ॥ कांति कहे इहां परणसे, महाबल मलया नार लाल रे ॥ सु० ॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप न देखे कुमरने, तव बोल्यो अकुलाय ॥ रे जोवो नाणी किहां, गयो खबर ल्यो जाय ॥ १ ॥ कहे सेवक जोई तिहां, आव्यो नहीं अम मीट ॥ करथी छूटो किहां गयो, जिम फल पाके वींट ॥ २ ॥ नृप जाणे पहेला इणे, साध्यो मंत्र सुसाज ॥ साधन अर्ड रह्यो हतो, गयो हशे तस काज ॥ ३ ॥ वचन सवे तेहनां मल्यां, पण न मल्यो एक बोल ॥ कन्या वर महाबल कह्यो, एतो वचन टकोल ॥ ४ ॥ अवसरें इहां आव्यो नहीं, नहीं योग होनार ॥ निमित्त वचन निःफल होसे, हैं हे सरजण हार ॥ ५ ॥ कुंअर सुणी तिहां वस्त्रसुं, ढांकी वदन हसंत ॥ सर्व जणासे देहके. इम मनमांहें कहंत ॥ ६ ॥ वात लही कन्या तणी, नृपें सकल यथार्थ ॥ मांहो मांहि ते कहे, आव्या दुःशे अर्थ ॥ ७ ॥ मलया बाला बापथी. मारी विण अपराध ॥ हवे नृपनें किम बालशे, उत्तर देई अबाध ॥८॥

एहवामां नृप कहेणथी, उंचे स्वर संजलाई॥ निपुण नकीब कहे ईस्युं, राजसत्नामां आई॥ ए॥

ढाल तेरमी॥ चित्रोमा राजा रे॥ ए देशी॥

॥ सुणो नूप हगला रे, नरपति गेगाला रे, थाउ उजमाला विकथा गेमीने रे, मंरूपतलें आवो रे, निजशक्ति जगावो रे, वज्र सार चढावो दावो जो मीनें रे॥ १॥ शर पुंखी जोरें रे, थांत्ना मुख कोरें रे, करे घात कगेरें बे दल जूजूआं रे॥ ते नृप महा बलने रे, प्रगटी ब्लकलिने रे, वरसे अटकलीने अस नृपनी धूआ रे॥ २॥ लाट देशनो राणो रे, उठ्यो सपराणो रे, आवे हर्ष जराणो मंरूपनें तलें रे॥ इन्द्र धनुषथी त्नारी रे, दीसे एह करारी रे, मनमां इम धारी ते पागे वले रे॥ ३॥ चौम नूपति नामें रे, जठ्यो तिहां हामें रे, आव्यो मंमप गमें थईने सांसतो रे॥ निरखी चिलकारा रे, जिम तपत अं गारा रे, एतो जगत संहारा इम कहे नासतो रे ॥ ४॥ गौमाधिप हसतो रे, आव्यो धस मसतो रे, ते तो मरिउ खिसतो धनुष उपामतो रे॥ हूतो ए रसिउ रे, पण देवें मुशिउ रे, ईम नृपगण हसियो ताली पामतो रे॥ ५॥ करणाटक स्वामी

सिंहासने, देव जिस्या सोहंत लाल रे ॥ परवरिया परिवारशुं, रूपें जग मोहंत लाल रे ॥ सु०॥२२॥ ढाल थई ए बारमी, बीजे खंडें उदार लाल रे ॥ कांति कहे इहां परणसे, महाबल मलया नार लाल रे ॥ सु० ॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप न देखे कुमरने, तब बोल्यो अकुलाय ॥ रे जोवो नाणी किहां, गयो खबर ल्यो जाय ॥ १ ॥ कहे सेवक जोई तिहां, आव्यो नहीं अम मीट ॥ करथी छूटो किहां गयो, जिम फल पाके बींट ॥ २ ॥ नृप जाणे पहेला इणे, साध्यो मंत्र सुसाज ॥ साधन अर्ध रह्यो हतो, गयो हशे तस काज ॥ ३ ॥ वचन सवें तेहनां मल्यां, पण न मल्यो एक बोल ॥ कन्या वर महाबल कह्यो, एतो वचन टकोल ॥ ४ ॥ अवसरें इहां आव्यो नहीं, नहीं योग होनार ॥ निमित्त वचन निःफल होसे, हैं हे सरजणहार ॥ ५ ॥ कुंअर सुणी तिहां वस्त्रसुं, ढांकी वदन हसंत ॥ सर्व जणासे ठहके, इम मनमांहें कहंत ॥ ६ ॥ वात लही कन्या तणी, नृपें सकल यथार्थ ॥ मांहो मांहिं ते कहे, आव्या तुं शे अर्थ ॥ ७ ॥ मलया बाला बापनी, मारी विण अपराध ॥ हवे नृपने किस बालशो, उत्तर देई अबाध ॥८॥

एहवामां नृप कहेणथी, उंचे स्वर संजलाई ॥ निपुण नकीब कहे ईस्युं, राजसजामां आई ॥ ए ॥

ढाल तेरमी ॥ चित्रोमा राजा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो जूप हगला रे, नरपति गेगाला रे, थाउं उजमाला विकथा गेमीने रे, मंमपतलें आवो रे, निजशक्ति जगावो रे, वज्र सार चढावो दावो जो मीनें रे ॥ १ ॥ शर पुंखी जोरें रे, थांजा मुख कोरें रे, करे घात कगेरें बे दल जूजूआं रे ॥ ते नृप महा बलने रे, प्रगटी ठलकलिने रे, वरसे अटकलीने अम नृपनी धूआ रे ॥ २ ॥ लाट देशनो राणो रे, उठ्यो सपराणो रे, आवे हर्ष जराणो मंमपनें तलें रे ॥ इंद्र धनुषथी जारी रे, दीसे एह करारी रे, मनमां इम धारी ते पाछो वले रे ॥ ३ ॥ चौम जूपति नामें रे, ऊठ्यो तिहां हामें रे, आव्यो मंमप गमें थईने सांसतो रे ॥ निरखी चिलकारा रे, जिम तपत अंगारा रे, एतो जगत संहारा इम कहे नासतो रे ॥ ४ ॥ गौमाधिप हसतो रे, आव्यो धस मसतो रे, ते तो मरिउं खिसतो धनुष उपामतो रे ॥ हूतो ए रसिउं रे, पण देवें मुशिउं रे, ईम नृपगण हसियो ताली पामतो रे ॥ ५ ॥ करणाटक स्वामी

रे, आयो गजगामी रे, राखे नाहिं खामी वल करतो अफे रे ॥ शर नाखी वंको रे, थयो ते साशंको रे, जिम हुये सुकुल कलंको तिम जांखो पफे रे ॥ ६ ॥ केता नवी ऊठे रे, केई वेठा पूंठें रे, केई शरनी मूठें जेडे थंजनें रे ॥ पण थंज न जेद्यो रे, नृप टोलो खेद्यो रे, निज दर्प्प उछेद्यो वल आरंजीनें रे ॥ ७ ॥ मरफक मूठाला रे, लाज्या जूपाला रे, करता ढकचाला निंदे आप आपनें रे ॥ मांटी पण मूळयां रे, जुजनुं वल चूक्या रे, साहामा वली ढूक्या कोई न चाणमें रे, ॥ ८ ॥ वीरधवल विमासे रे, कुमरी सविलासें रे, प्रगटी नहीं पासें जनमां लाजशुं रे ॥ मह वल ते तेहवे रे, थंज पासें एहवे रे, आव्यो धसि केहवे वीणा साजशुं रे ॥ ए ॥ तिहां वीण वजावी रे, आकाश गजावी रे, जूवया रीजावी जण तंती रसें रे ॥ वली धनुष उपाफी रे, वोल्यो अति त्राफी रे, परणीश हुं लाफी मुज वलने वशें रे ॥ १० ॥ गांधर्व ए धीगेरे, एहने विधि रुगे रे, नहीं छे इहां सीगे खावो जीखनो रे ॥ इम कही नृप हसता रे, महवलशुं सुसता रे, रहेशो कर घसता कहुं मग शीखनो रे ॥ ११ ॥ ताण्यो धनुष ते सीधो रे, टंकारव कीधो रे, जाणे सद पीधो नृ

प गण लोटव्यो रे ॥ शर चाढी खंचें रे, नाखे परपंचें रे, खीलीनें संचें थांनो चोटव्यो रे ॥ १२ ॥ संपुट ज घम्जिं रे, माथे जे जम्जिं रे, अलगो जई पम्जिं बाणे आह्णयो रे ॥ तेहमांथी सारी रे, नरराय कुमारी रे, प्रगटी मनोहारी वेश नलो बन्यो रे ॥ १३ ॥ श्रीखं रू कपूरें रे, कस्तूरी पूरें रे, अंबरनें चूरें लेपी देहमी रे ॥ दिव्यालंकारें रे, अति शोना धारें रे, श्रीपुंजने हारें ठबी बमणी चढी रे ॥ १४ ॥ बीमी कर मावे रे, जिमणे कर ठावे रे, वरमाल सुहावे हावें ते नारी रे ॥ दीपे द्युति नारी रे, जिम रतिपति नारी रे, जाणे नागकुमारी थंनमां ऊतरी रे ॥ १५ ॥ पेठी किम काठें रे, क्यारें किणे ठाठें रे, पूछे इति पाठें नृप कन्या प्रत्यें रे ॥ जीवी जस शक्तें रे, कन्या कहे विगतें रे, जाणे ते जुगतें कुलदेवी मतें रे ॥ १६ ॥ नृप कहे में चूंपें रे, नाखी ते कूपें रे, राखी इंणे रूपें अम कुलदेवीयें रे ॥ वरशोमां नूंमो रे, एहने वर रूमो रे, आलोचीने ऊंमो चित्त देवी तियें रे ॥ १७ ॥ नूपतिना वारु रे, बल परखण सारू रे, रचियो ए वारु थंनो काठनो रे ॥ कनकाथी लीधो रे, श्रीहार प्रसिद्धो रे, तुजने तेणे दीधो सुंदर काठनो रे ॥ १८ ॥ चर्चित अति रूके रे, मणि सोव

न चूके रे, ठंपी वाजूके कोमल वांहमी रे ॥ कुलदेवी सुधारी रे, वरमाला धारी रे, थंत्न मांहिं उतारी तुं अमने जमी रे ॥ १ए ॥ डुःखकुं मुज नावुं रे, कारज थयुं कावुं रे, पण लागे ए मावुं जे महावल नहीं रे ॥ जेणें थंत्न उघाड्यो रे, नृप गर्व ललाड्यो रे, गंधर्व देखाड्यो ते जाग्यें वही रे ॥ २० ॥ ईम शोचे तिवारें रे, नृपति डुःख जारें रे, महावल तेणि वारें मुख ढांकी हसे रे ॥ थांजाथी निकसी रे, कुमरी कहे विकसी रे, नाख्यो थंत्न उकसी ते नर क्यां वसे रे॥ २१ ॥ देखाके प्रकाशें रे, धाई मात उल्लासें रे, जणो थंत्न पासें श्लोक ते गोठवे रे ॥ नृपतिनी वाला रे, सुंदर वरमाला रे, महावलनें विशाला कंठें लोठवे रे ॥ २२ ॥ महावल वर वरीठ रे, जाग्यें अति जरीठ रे, रतिपति अवतरीठ रूप समाजशुं रे ॥ विजे खंमें दाखी रे, ढाल तेरमी जांखी रे, लेजो रस चाखी कांति कहे ईश्युं रे॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कोपें धमहम्या, वोले विषम वचन्न ॥ जूठ परीक्षा एहनी, वरीठ पुरुष रतन्न ॥ १ ॥ नृप मणि ढांकी आदस्यो, मूर्खपणे ए काच ॥ देव जिसी पात्री हुवे, ए उखाणो साच ॥ २ ॥ सहेशुं किम

जलपूर परें, प्रगट पराजव पाल ॥ हणी एह गंधर्वने, लेशुं बाल ऊलाल ॥ ३ ॥ ईम कही ते हुई एकठा, हणवा उठ्या रूठ ॥ धवल कटक गंधर्वनें, ततक्षण वींटे ऊठ ॥ ४ ॥ वज्र सार ते कर ग्रही, वेण करण रोषाल ॥ करे प्रगट शर वर्षणें, पौरुष वर्षाकाल ॥ ५ ॥ अण सहेता प्रति घात तस, नाठा तेह वराक ॥ जेम दंकाग्रें बीहता, जाये दिशोदिश काग ॥ ६ ॥ जट्ट पुत्र परिचित तिहां, ऊजो एक नजीक ॥ महबलनें ज़ाणी ईसी, जणी स्वस्ति निर्जीक ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ बावा किसनपुरी ॥ ए देशी ॥

॥ शूर नृपति कुल जासण चंद, पदमावती देवीना नंद ॥ मोहन स्वस्ति ग्रहो ॥ आया इहां केम कहोजी कहो ॥ घणा दिवसनी हुती चाह, सफल हुई दीठा नरनाह ॥ मो० ॥ आ० ॥ १ ॥ वायनी मारी कोयल जेम ॥ संजवे तुम आगम इहां एम ॥ मो० ॥ अलगा न कस्या मीटथी लेश, धीस्या किम नरपति परदेश ॥ मो० ॥ आ० ॥ २ ॥ परिकर साथें नहीं वे कोय, ईम क्यों आया एकाकी होय ॥ मो० ॥ कारज को सोंपो महाराज, मुज लायक करीयें जेम आज ॥ मो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ ईम सुणी त्यां रीज्यो नृप

न चूके रे, उपी बाजूके कोमल बांहमी रे ॥ कुलदेवी सुधारी रे, वरमाला धारी रे, थंज्ञ मांहिं उतारी तुं अमने जमी रे ॥ १९ ॥ दुःखकुं मुज नावुं रे, कारज थयुं कावुं रे, पण लागे ए मावुं जे महाबल नहीं रे ॥ जेणें थंज्ञ उघाम्यो रे, नृप गर्व लताम्यो रे, गंधर्व देखाम्यो ते जाग्यें वही रे ॥ २० ॥ ईम शोचे तिवारें रे, नृपति दुःख नारें रे, महाबल तेणि वारें मुख ढांकी हसे रे ॥ थांजाथी निकसी रे, कुमरी कहे विकसी रे, नाख्यो थंज्ञ उकसी ते नर क्यां वसे रे ॥ २१ ॥ देखामे प्रकाशें रे, धाई मात उल्लासें रे, जज्यो थंज्ञ पासें श्लोक ते गोठवे रे ॥ नृपतिनी वाला रे, सुंदर वरमाला रे, महाबलनें विशाला कंठें लोठवे रे ॥ २२ ॥ महाबल वर वरीउ रे, जाग्यें अति जरीउ रे, रतिपति अवतरीउ रूप समाजशुं रे ॥ बिजे खंमें दाखी रे, ढाल तेरमी जांखी रे, लेजो रस चाखी कांति कहे ईस्युं रे ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कोपें धमहम्या, बोले विपम वचन्न ॥ जूउ परीक्षा एहनी, वरीउ पुरुष रतन्न ॥ १ ॥ नृप मणि गंमी आदस्यो, मूर्खपण ए काच ॥ देव जिसी पात्री हुवे, ए उखाणो साच ॥ २ ॥ सहेशुं किम

ज़लपूर परें, प्रगट पराजव पाल ॥ हणी एह गंधर्वने, लेशुं बाल ज़लाल ॥ ३ ॥ इंम कही ते हुई एकठा, हणवा उठ्या रूठ ॥ धवल कटक गंधर्वनें, ततक्षण वींटे जठ ॥ ४ ॥ वज्र सार ते कर ग्रही, वेण करण रोषाल ॥ करे प्रगट शर वर्षणें, पौरुष वर्षाकाल ॥ ५ ॥ अण सहेता प्रति घात तस, नाठा तेह वराक ॥ जेम दंडाग्रें बीहता, जाये दिशोदिश काग ॥ ६ ॥ ज्ञट्ट पुत्र परिचित तिहां, ऊजो एक नजीक ॥ महबलनें जाणी ईसी, जणी स्वस्ति निर्जीक ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ बावा किसनपुरी ॥ ए देशी ॥

॥ शूर नृपति कुल जासण चंद, पद्मावती देवीना नंद ॥ मोहन स्वस्ति ग्रहो ॥ आया इहां केम कहोजी कहो ॥ घणा दिवसनी हुती चाह, सफल हुई दीठा नरनाह ॥ मो० ॥ आ० ॥ १ ॥ वायनी मारी कोयल जेम ॥ संजवे तुम आगम इहां एम ॥ मो० ॥ अलगा न कस्या मींटथी लेश, धीस्या किम नरपति परदेश ॥ मो० ॥ आ० ॥ २ ॥ परिकर साथें नहीं बे कोय, इंम क्यों आया एकाकी होय ॥ मो० ॥ कारज को सोंपो महाराज, मुज लायक करीयें जेम आज ॥ मो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंम सुणी त्यां रीज्यो नृप

चित्त, पूछे कवण साचुं कहो मित्त ॥ मो० ॥ ते कहे इहां नहीं छे संदेह, माहाबल नामें कुमर होय एह ॥ मो० ॥ आ० ॥ ४ ॥ बाध्यो जेहने हाथां हेठ, उल खीयें नहीं किम ते नेठ ॥ मो० ॥ नृप कहे साचुं नि मित्तनुं वयण, आज हुउं मिल ते नररयण ॥ मो० ॥ आ० ॥ ५ ॥ आव्यो हशे एह गयणने माग, के वली धरणी तलमां लाग ॥ मो० ॥ अकल कलाथी करतो केलि, अम नाग्यें पायो गजगेल ॥ मो० ॥ आ० ॥ ६ ॥ पूछीश पाछें सघली वात, पहेलां नृपनी टालुं घात ॥ मो० ॥ एम विमासी नृप आश्वास, समजावी वा ल्या आवास ॥ मो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ जीमाड्या वर कन्या बेह, नोजन मूके नृपने तेह ॥ मो० ॥ जोव राव्यो ते नाणी राय, पण नवि लाधो किणहीं ग य ॥ मो० ॥ आ० ॥ ८ ॥ राय विमासे ते निरलोन, पवन परें न लहे किहां थोन ॥ मो० ॥ चंपकमाला साथें नूप, नुंजे नोजन सरस अनूप ॥ मो० ॥ आ० ॥ ए ॥ लगननो दाहाडो लीधो समीप, करे सजाई अति अ वनीप ॥ मो० ॥ समराव्या जल छांट्यां सेर, शणगारी नगरी चोफेर मो० ॥ आ० ॥ १० ॥ समीआणा ता एया वली खास, जाणे उताऱ्या सुर आवास ॥ मो० ॥

कृष्णागरुना धूम धूखंत, आकाशें घण थइ वरखंत ॥ मो० ॥ आ० ॥ ११ ॥ तोरण माला झाक जमाल, घर घर वर्त्यां धवल धमाल ॥ मो० ॥ बीजे खंके चौदमी ढाल, कांति कहे सुणो वचन रसाल ॥ मो०॥आ०॥ १२॥

॥ दोहा ॥

॥ राज नवनमां रसन्नरें, प्रगटया रंग अपार ॥ अन्निनव शोन्नायें कस्यो, लीलायें संचार ॥ १ ॥ करे विलेपन कुंकुमें, साजन मांहोमांहिं ॥ देह धरी बाहिर रह्यो, जाणे राग उबांहिं ॥ २ ॥ कुलदेवी पूजी न्निधें, वजमाव्यां नीशाण ॥ अशन वसन तांबूलनां, लहे गुरु जन सनमान ॥ ३ ॥ नृत्य करे वारांगना, विध न्निध अंग उवट्ट ॥ सोहे मीन कुटुंबनी, लेती जेम पलट्ट ॥ ४ ॥ बांध्या जलके चंद्रुआ, जरतारी जर बाफ ॥ जेम अकालें युगतिनी, संध्या फूली स.फ ॥ ५ ॥ शणगारें सारी सबल, सधवा सुंदर तेह ॥ कोकिल कंठे कामिनी, धवल दिये धरी नेह ॥ ६ ॥ मले जम लशुं जानीया, खमकंते केकाण ॥ सोंधे न्नीना सा मगा, गाहिम नस्या जुवाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ करमो तिहां कोटवाल ॥ एदेशी ॥

॥ महाबल मलया बाल, चंदन चर्चित सोह्या न्नू-

पणेजी ॥ सुतरु मोहन वेलि, सरिखां दीसे विहुं नि
रूपणेजी ॥ १ ॥ वाजे भूंगल भेरि, ताल कंसाल न
फेरी नादशुंजी ॥ शणगास्या गजराज, आगल चाले
अति उनमादशुंजी ॥ २ ॥ चामर छत्र ढलंत, फरह
रते केसरीये वाघे सज्योजी ॥ निरुपम थाप्यो मोक,
श्रीफल करमां सुंदर राजतोजी ॥ ३ ॥ कुंकुम तिल
क बनाय, तंडुल भालें चोढ्या उजलाजी ॥ परवरिया
घमसाण, तोरण आव्यो वर वधती कलाजी ॥ ४ ॥
मोती थाल वधाव, पधराव्या वर कन्या चोरीयेंजी ॥
भट्ट भणे जयमाल, सोहला गाया सरलें गोरीयें
जी ॥ ५ ॥ ब्राह्मण भणते वेद, पंचामृतना होम ति
हां कीयाजी ॥ चारे चोरी अंग, दीपे जिम पुरुषारथ
वींटीयाजी ॥ ६ ॥ विहुंना छेहमा वांध, चारे फेरे मं
गल वरतियांजी ॥ प्रीति जिस्या सुसवाद, सार कंसा
र तिहां आरोगीयांजी ॥ ७ ॥ विधिपूर्वक कमनीय,
पाणी ग्रहण महोत्सव तिहां कियोजी ॥ नृप रा
णी आशीष, वचन इस्यो अति हेजें उच्चस्योजी ॥ ८ ॥
चंद्रिका चंद्र समान, अविचल होजो तुमची जोक
लीजी ॥ हयगयरथ धन कोकि, करमोचन वेलायें दे
भलीजी ॥ ९ ॥ वरकन्या मन रंग, मोहलामांहे तिहां

पधरावियांजी ॥ संतोष्यो परिवार, मान महोत दे सहु राजी कीयांजी ॥ १० ॥ लोक कहे लख कोमि, मलती जोमी विधाता मेलवीजी ॥ मुद्रा नंग समान, रतिपति नायकनी जोमी हवीजी ॥ ११ ॥ अवसर लही अवनी श, पूछे त्यां माहाबलने खांतशुंजी ॥ एकाकी इणे ग म, लगन समय आव्या किण नांतशुंजी ॥ १२ ॥ कुमर नणे महाराय, जाणुं नहिं किण देवी आणी उंजी ॥ नृप कहे सघलुं साच, कुलदेवी निपजावे जा णीउंजी ॥१३॥ वली माहाबल कहे एम, शीख क रो तो चालुं घर नणीजी ॥ मुज विरहें मा तात, कर तां होशे चिंता मन घणीजी ॥ १४ ॥ बार पहोरमां जाइ, न मलुं तो ते मरशे नेहथीजी ॥ करि करुणा क रुणाल, शीख दीयो हवे मुजने तेहथीजी ॥ १५ ॥ पमवेने दिन सूर, ऊग्या पहेलो जो जाई मलुंजी ॥ जीवंता मा बाप, तो देखुं हवे कहुं वली केटलुंजी ॥ १६ ॥ राय कहे सुण धीर, धैर्य धरो मत थाउ आ कलाजी ॥ सघलानी मुज चिंत, करवी में जाणो गु ण आगलाजी ॥ १७ ॥ बाशठ योजन दूर, पोहवी गण नगर इहांथी अछेजी ॥ आज रयणी एक याम, पमखोजी वोलावीश हुं पछेजी ॥ १८ ॥ करहलिया

करी साज, करवतियां धर काटण कोरमीजी ॥ संप्रेमी श ततकाल, असवारी मनधारी ए ठमीजी ॥ १ए ॥ कोप्या जे नरपाल, सतकारी वोलावुं तेहनेजी ॥ त्यां लगें धीर धराय, रहो रहो इंमद्दिज करतां ए वनेजी ॥ २० ॥ इंम कही ऊठ्यो नूप, वीजे खंकें सरस सोहामणीजी ॥ ए पन्नरमी ढाल, कांतिविजय सविलास पणे नणीजी ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे कन्या प्रत्यें, रहस्य पणें तजी लाज ॥ करी प्रतिज्ञा तुज मुखें, ते में पूरी आज ॥ १ ॥ गत दिवसें देवी गृहें, मिल्या रत्नसभां जेह ॥ कही न सक्या निज निज कथा, हवे कहीजें तेह ॥ २ ॥ एहवे वेगवती तिहां, मलयानी धामाइ ॥ आवी कर जोमी विन्हे, पूठे एम हसाइ ॥ ३ ॥ कारज ए देवी तणां, अथवा अवर उपाय ॥ अम मन संसय आफलें, कहो सुन्नग समजाय ॥ ४ ॥ कहे कुमरी ए माहरे, वीसवासणी ठे स्वामि ॥ सुखें कहो शंका तजी, एह मुज जामणि गाम ॥ ५ ॥ गजमुख दीधी मुड्रिका, तेह प्रमुख सुचरित्र ॥ नांखीने दिन अपरनुं, संध्यानुं कहे चित्र ॥ ६ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ सखीरी आयो उन्हालो अटारमो ॥ ए देशी ॥

॥ पियारी सांज समय बीजे दीने, वीजे दीने, नृपथी मांमी प्रपंच ॥ मृगाक्षी सांनलो ॥ पियारी मंत्र साधन मिश नीकल्यो, नीकल्यो, नृप कनें लेई लंच ॥ मृ० ॥ १ ॥ पि० ॥ ते ड्रव्यें सूतारना ॥ सू० ॥ उपकरण लेई मूल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ रंग अनेक लीया वली ॥ ली० ॥ मृगमद प्रमुख अतूल ॥ मृ० ॥ २ ॥ पि० ॥ सामग्री इम संग्रही ॥ सं० ॥ आव्यो देवी धाम ॥ मृ० ॥ पि० ॥ विवर सहित ते कालिका ॥ का० ॥ कीधी घमी अनिराम ॥ मृ० ॥ ३ ॥ पि० ॥ खीली गानी तेहमां, ते० ॥ बेसारी करी संच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ साल संचे मुख ढांकणो ॥ मु० ॥ नीपायो परपंच ॥ मृ० ॥ ४ ॥ पि० ॥ एहवे त्यां केइ तस्करा ॥ के० ॥ मूकी नीत मंजूष ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तस्कर एक ठवी गया ॥ ठ० ॥ ते पुर चोरी हुंश ॥ मृ० ॥ ५ ॥ पि० ॥ पूर्व सामग्री गोपवी ॥ गो० ॥ हुं थयो चोर समान ॥ मृ० ॥ पि० ॥ जाणी एकाकी ते कनें ॥ ते० ॥ उनो रह्यो करी शान ॥ मृ० ॥ ६ ॥ पि० ॥ मुजने निरखी इम कहे ॥ इ० ॥ ते अति लोनने व्याप ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तालुं नांजी

नवि शकुं ॥ न० ॥ तुं मुज खोली आप ॥ मृ० ॥ ७ ॥ पि० ॥ तुरत उघाडी में दीयो ॥ में० ॥ लीधो तिणे स त्रि माल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ताणी बांधे पोटली ॥ पो० ॥ द्रव्यतणी लोगाल ॥ मृ० ॥ ८ ॥ पि० ॥ बीहीतो मु जने इंम कहे ॥ इं० ॥ शूकी सतनी मूंठ ॥ मृ० ॥ पि० ॥ जाउंतो हवे चोर ते ॥ चो० ॥ के नृप जन करे पूंठ ॥ मृ० ॥ ए ॥ पि० ॥ मारे मुजने मूलथी ॥ मू० ॥ थरके तेहथी चित्त ॥ मृ० ॥ पि० ॥ थानक मुज जीव्या त णुं ॥ जी० ॥ देखाडो कोई मित्त ॥ मृ० ॥ १० ॥ पि० ॥ पद्मशिला ते जवननी ॥ ते० ॥ में उघाडी खांच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ माल सहित ते चोरने ॥ ते० ॥ घाल्यो उंचे खांच ॥ मृ० ॥ ११ ॥ पि० ॥ तिमहीज ऊपर ते ठवी ॥ ते० ॥ विवर अंतर राख ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊ तरतां अंगण तलें ॥ अं० ॥ दीठो वडतरु जांख ॥ मृ० ॥ १२ ॥ पि० ॥ दोडी वड ऊपर चढ्यो ॥ ऊ० ॥ रहुं जोतो तुज वाट ॥ मृ० ॥ पि० ॥ दीठो वडनी कूखमां ॥ कू० ॥ नूषण वसननो थाट ॥ मृ० ॥ १३ ॥ पि० ॥ अपह रि लीधा देवीयें ॥ दे० ॥ पहेलो मुज समुदाय ॥ मृ० ॥ ॥ पि० ॥ ते तिण ठांनां गोपव्यां ॥ गो० ॥ दीसे ठे ए प्राय ॥ मृ० ॥ १४ ॥ पि० ॥ में लीधो ते उलगी ॥ उ० ॥

निरखुं बेठो गुज्झ ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊवट वाटें आवती ॥ आ० ॥ नजरें पडी तुं मुज्झ ॥ मृ० ॥ १५ ॥ पि० ॥ वडतरुथी हुं ऊतरयो ॥ हुं० ॥ साहामो आव्यो दोड ॥ मृ० ॥ पि०॥ बेहुं मल्यां ए माहरी ॥ मा० ॥ वात कही डल छोड ॥ मृ० ॥ १६ ॥ पि० ॥ बीजे खंडें शोलमी ॥ शो० ॥ ए थई निरुपम ढाल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ कांति कहे मलया हवे ॥ म० ॥ कहेशे वात रसाल ॥ मृ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर जाणे में जुगतिशुं, जांख्यो मुज विरतंत ॥ तुं पण कहे ताहरो हवे, मूलथकी जिम हुंत ॥ १ ॥ ते कहे तुम शिक्षा ग्रही, पेठि हुं पुरमांहिं ॥ पुरुष वेष मगधासदन, पुछुं पग पग वांहिं ॥ २ ॥ घर न मली पुरमां जमी, किहांइ न दीठी स्वाम ॥ बेठी देवल एकमां, दीठी मगधा नाम ॥ ३ ॥ नाखी वांके फांकडे, धूरत एकें धूत ॥ जावा लाग लहे नहीं, रोकी सबल कुसूत ॥ ४ ॥ कारण में पूछ्या थकी, बोली करती रींग ॥ अहो सुगुण मुज पाछले, वलगो छे एक विंग ॥ ५ ॥ धूरत एह पूंठे पड्यो, लंघावे छे मुज्झ ॥ क्षण क्षण थइ विरुठे नडे, गूमड जेम अरु

जा ॥ ६ ॥ निःकारण मुजनें इणे, नीमी संकट मांहि ॥ वात कहुं ते आदिथी, सुणजो चित्तनी चाहिं ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥

गतदिन बेठी हो राज, मंदिर बारें राज, धूरत त्यारें रे, एतो आव्यो माल्हतो ॥ १ ॥ हास करीने हो राज, मैं बोलाव्यो राज, इमतो न जाण्यो रे धूतारो जन एह छे ॥ २ ॥ मुज तनु मरदे हो राज, खांते करीने राज, कांइक आपुं रे हुं तुमने रूअडुं ॥ ३ ॥ वचन सुणीने हो राज, आव्यो समीपें राज, मर्दी माहारी रे इणे देह चोलीने ॥ ४ ॥ हुं पण तूठी हो राज, मनमां वारु राज, जिमवा सारु रे मैंतो एहनें नोतर्यो ॥ ५ ॥ एह कहे माहरे हो राज, काम नहीं छे राज, भोजन न करुं रे कांइक मुने द हवे ॥ ६ ॥ पीत पटोली हो राज, ले नहीं देतां राज, सोगमे देतां रे दामें राजी ना थयो ॥ ७ ॥ नाम न भांखे हो राज, कांइक मागे राज, आज ए आवी रे लागो पूंठे माहरे ॥ ८ ॥ देहरे बेसारी हो राज, मुजनें लंघावे राज, जावा न दीये रे क्यांहि फीट्यो बाहिरें ॥ ए ॥ तव में विचारुं हो राज, जो हुं दुःखमां राज, जगको निवेकी रे वेश्याने छेम्बुं ॥ १० ॥ तो मुज थावे हो राज, कारज

एहथी राज, इम निरधारी रे बेठी त्यां हुं ते कन्हें ॥ ११ ॥ मगधानें काने हो राज, कहि कांइ गनें राज, में कह्युं त्रिहुंने रे जाउं जमवा जोखमां ॥ १२ ॥ त्री जे ते पहोरें हो राज, जगको हुं चांजीश राज, वेहेला आंहिं रे बेहु पाछां आवजो ॥ १३ ॥ माहाबल पूछे हो राज, वाद ए मोटो राज, किम करी चांज्यो रे गो री कहेने ते हवे ॥ १४ ॥ पथंनी थाकी हो राज, दे हरे हुं सूती राज, त्रीजे पोहोरें रे फरी बेहु आवीयां ॥ १५ ॥ मुजने ऊगारी हो राज, मगधानी दासी रा ज, घट एक ढांकी रे मांहे गनो त्यां ठवे ॥ १६ ॥ में कह्युं तेहने हो राज, जण करी साखी राज, कांइक अपावी रे तुजनें राजी हुं करुं ॥ १७ ॥ ते कहे वा रू हो राज, कांइक अपावो राज, तो नहीं दावो रे ए हथी माहारे आजथी ॥ १८ ॥ मगधाने कीधी हो रा ज, शान में ज्यारें राज, मगधा त्यारें रे चांखे एहवुं धूर्तनें ॥ १९ ॥ हुंतो हारी हो राज, तुं हवे जीत्यो राज, कांइक मूक्युं रे मेंतो मांहे कुंजमां ॥ २० ॥ ते तुं लेइनें हो राज, ठेहको गेरु राज, इम सुणी आ व्यो रे रंगें देवलमां वही ॥ २१ ॥ कुंज निहाली हो राज, ढांकणी उपाकी राज, कांइक लेवारे घाले मांहे

हाथ ते ॥ २२ ॥ फणिधर महोटो हो राज, हाथें वलगो राज, न रहे अलगो रे वांको कर आगमतां ॥ २३ ॥ ते कहे इहां तो हो राज, कांइक दीसे राज, मगधा हसतीरे चांखे एह छे ताहरो ॥ २४ ॥ में मुज वोल्यो हो राज, ते एह दीधो राज, तुज देणार्थी रे कीधो माहारे बूटको ॥ २५ ॥ लोक हसंता हो राज, कहे तिहां वहुलां राज, एहने दीधुं रे एणे कांइक रूअडुं ॥ २६ ॥ विपधर मूक्यो हो राज, ते नर मूक्यो राज, तोतिल नामें रे देवी केरें वारणें ॥ २७ ॥ मुजने तेडी हो राज, मगधा साथें राज, निजघर आवी रे पाड माहारो मानती ॥ २८ ॥ वीजे खंडे हो राज, ढाल सत्तरमी राज, कांति उमंगें रे चांखी रूडी नेहशुं ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हार रही में तेहने, आप्यो इम उच्चाट ॥ तुज घर नृपरूपी वसे, पेसुं नहीं ते माट ॥ १ ॥ इम सुणी ते विलखी थइ, चिंते एहवुं चित्त ॥ ए नाणी छे कोइक नर, जाणे रहस्य चरित्त ॥ २ ॥ वीहती मन मां वापडी, मुजने इम कहे वाण ॥ रखे सुगुण कहेता किहां, कहुं हुं जोडी पाण ॥ ३ ॥ किहां छुपाडुं

तुम थकी, न रहे छानी नेट ॥ कहो छिपायो किहां छिपे, दाई आगल पेट ॥ ४ ॥ बने कपट करवो तिहां, जिहां कपटनो लाग ॥ कोईक दिन तेहवो मले, काढे सघलो ताग ॥ ५ ॥ सुईछिद्र करे तिता, पूरण धागा साख ॥ सज्जन सहेजे गुण करे, ढांके अवगुण लाख ॥ ६ ॥ एहथी मुज पानुं पड्युं, तेतो पूरव जोग ॥ गले ग्रहीनें काढवा, हवे बन्यो छे जोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ चंदनरी कटकी जली ॥ एदेशी ॥

॥ वीरधवलनी गोरडी, कनकवती नामेण ॥ नाणिडा हो राज, चरित्र सुणो एहवी नारीनां ॥ कपट करीने नृपनंदनी, कूपें नखावी एण ॥ ना० ॥ च० ॥ १ ॥ कूड कपट जाणी नृपें, रोकीती निज गेह ॥ ना० ॥ नासी निशि आवी रही, मुज घर पूरव नेह ॥ ना० ॥ च० ॥ २ ॥ बलती जेहवी गाडरी, पेठी घरने खूण ॥ ना० ॥ मुज घरथी काढो परी, करीनें कांईक टूंण ॥ ना० ॥ च० ॥ ३ ॥ मानीश हुं उपगारडो, बीजो ए गुण जोई ॥ ना० ॥ पारथीयां होये स्वारथी, स्वारथ विण जग कोय ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ तव में मगधानें कह्युं, काढुं जो करी ख्याल ॥ ना० ॥ वैर वधे तो वेढुमां, जाएयो पण जंजाल ॥ ना० ॥ च० ॥ ५ ॥

तोपण तुज उपरोधथी, करशुं हुं ए काज ॥ ना० ॥
ते मुज रातें मेलवे, जिम करुं काढण साज ॥ ना०
॥ च० ॥ ६ ॥ गणीकायें अति आदरें, भोजन मुजने
दीध ॥ ना० ॥ रातें एकांतें मुने, कनका मेलवी सीध
॥ ना० ॥ च० ॥ ७ ॥ मुज साथें रागें भरी, वदती
मीठा बोल ॥ ना० ॥ भोग भणी मुज प्रारथे, करती
नयण कल्लोल ॥ ना० ॥ च० ॥ ८ ॥ में भांख्युं तेहने
ईस्युं, मुज वालो छे एक ॥ ना० ॥ ते अति आरथी
नारीनो, मनमथ रूपें छेक ॥ ना० ॥ च० ॥ ९ ॥ प
ण कामें गामें गयो, आज करी संकेत ॥ ना० ॥ मु
ज मलशे देवी घरें, रातें काले सहेत ॥ ना० ॥ च०
॥ १० ॥ मुज साथें तुं आवजे, देशुं जोग बनाय ॥
ना० ॥ नहींतो पण ए आपणी, प्रीति कीहां नहीं
जाय ॥ ना० ॥ च० ॥ ११ ॥ कहे कनका क्यांथी
तुमें, आव्या कुंण तुम जात ॥ ना० ॥ में कह्युं बिहुं
क्षत्री अमें, चाल्या विदेश सखात ॥ ना० ॥ च० ॥
॥ १२ ॥ मुज वचनें ते वीशमी, भांखे निज अवदात
॥ ना० ॥ गोष्टि करंतां रातनी, वीती थयो परभात
॥ ना० ॥ च० ॥ १३ ॥ पूछ्युं प्रपंचें में वली, तेह
ने प्रभातें तांई ॥ ना० ॥ छे तुज पासें के नहीं, आ

जरणादिक काई ॥ ना० ॥ च० ॥ १४ ॥ तव मुजने देखाड्यां, आभूषण तेणें काढि ॥ना०॥ हसतां में कह्युं थोडलां, ते कहे इम रस चाढि ॥ ना० ॥ च० ॥ १५ ॥ हार अछे माहारे वली, नामें लखमीपुंज ॥ ना० ॥ गुप्त धस्यो ते काढतां, आवे छे मुज धुंज ॥ ना० ॥ च० ॥ १६ ॥ में पूछ्युं ते क्यां धस्यो, ते कहे चहुटा मांहिं ॥ना०॥ शूना घर पासें वस्यो, कीर्त्ति थंभ छे त्यांहिं ॥ना०॥ च० ॥ १७ ॥ ते नीचें भंमारीयो, ते इमां मूक्यो झाट ॥ ना० ॥ न शकुं जावा वासरें, झर ती हुं तिण वाट ॥ना०॥ च० ॥ १८ ॥ रातें आज जई तिहां, आणीश तेह छिपाई ॥ ना० ॥ जाई शके जो तुं तिहां, तो लेई आव तकाई ॥ ना० ॥ च० ॥ ॥ १९ ॥ नहीं तो सांजे मुजनें, कहेजे जेहवुं होय ॥ ना० ॥ इम आलोच कस्यो घणो, मांहोमांहें रस हो य ॥ ना० ॥ च० ॥ २० ॥ मालथकी हुं उतरी, आ वी मगधा नाल ॥ ना० ॥ बीजे खंडें अढारमी, कांतें भणी इम ढाल ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मगधा कहे मुजने हसी, कहो केती छे ढील ॥ में कह्युं ए तुज घर थकी, काढी छे अम्खील ॥ १ ॥ सं

च कह्यो छे एहवो, पूरी पूरण पूंठ ॥ वारंतां पण रा
तमां, जाशे कनका ऊठ ॥ २ ॥ सामग्री जोजन तणी,
करे मगधा अति नेह ॥ जमी रमी तिहांथी वली, ग
ई दिवसने छेह ॥ ३ ॥ छाना थानक थंजनो, जोतां
न लह्यो हार ॥ रातें कनकाने वली, जई जांख्यो सु
विचार ॥ ४ ॥ हार लेई तुं आवजे, देवी जवन मजा
र ॥ पूछीने मगधा प्रत्यें, हुं चाली निशिचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ रयणी अंधारी मांहे, वहेती हुं चित्त चाहे, आछे
लाल ॥ अध मारगें जूली पमी ॥ आफलती पूर सेर,
खाती घारण फेर, आ० ॥ जिम तिम पासी वाटमी
॥ १ ॥ आवी हुं तुम पास, जांखी वात प्रकाश,
आ० ॥ कनकवती जोइ आवती ॥ हार लेइने एह,
आवे छे अतिनेह, आ० ॥ कनका तुमने चाहती ॥ २ ॥
वात सुणी इम नाह, आणी टेक अथाह, आ० ॥
प्रीति वचन ते उच्चप्यां ॥ बोलवुं नही घटमान, एह
थी होय नुकशान, आ० ॥ इम कही थें छाना छिप्या
॥ ३ ॥ कनका मन उत्कंठ, आवी मुज उपकंठ ॥
आ० ॥ तव में इम कह्युं तेहनें ॥ आवी म कर कांइ
स्सोर, ग्ग छे इहां चोर, आ० ॥ दे मुज जे होय तु

ज कनें ॥ ४ ॥ राखुं ब्रिपाफी क्यांहिं, तव ते आपे त्यां हिं, आ० ॥ बगचो हाथें उचकी, में तेहमांथी टालि, काढी वस्तु निहालि, आ० ॥ हार अने वली कंचूकी ॥ ५ ॥ बाकी सवि समुदाय, बांध्यो एक मिलाय, आ० ॥ चोर मंजूषें ते धस्यो ॥ में कह्युं तेहने एम, थरके ठे तुं केम, आ० ॥ थानक में ताहरे कह्यो ॥ ६ ॥ ज्यां लगें चोर न जाय, त्यां लगें तें न खमाय, आ० ॥ पेश मंजूषें ते जणी ॥ पेठी ते निर्जीक, में धारी मन ठीक, आ० ॥ तालुं दीधुं आहणी ॥ ७ ॥ आपण बे अति हुंस, ऊपाफीने मंजूष, आ० ॥ गोलामां वहेती करी ॥ वैर प्रथमनुं वालि, वाही नीर विचाल, आ० ॥ करताशुं करीयें खरी ॥ ८ ॥ मांज्युं पिउ ततकाल, थूंकें माहारुं जाल, आ० ॥ रूप सहजनुं हुं लही ॥ तुम आणाथी अंग, दीधुं विलेपण चंग, आ० ॥ पहेरी पटोली में वही ॥ ए ॥ पहेस्यां कुंफल खास, रविशशी मंफल जास, आ० ॥ लाधां जे वफने थर्फे ॥ पहेस्यो कंचुक सार, कंठें ठव्यो ते हार, आ० ॥ वरमाला धारी जलें ॥ १० ॥ पेठी संपुट मांहि, गुहिर विवर अवगाहि, आ० ॥ त्यारें मुज सवि शीखवी ॥ निसुणे वीणा घोर, तव ए खीली चोर,

आ० ॥ काढे इहांथी नीठवी ॥ ११ ॥ इम कही वी
जे खंभ, थाप्युं शीश अखंभ, आ० ॥ तेहमां वसी खी
ली जभी ॥ राख्या पवननां माग, नीचें ठनें लाग,
आ० ॥ चतुराईशुं ते घभी ॥ १२ ॥ जाणुं एती वात,
कहो आगें अवदात, आ० ॥ में न लह्या तिहां संक्र
मी ॥ वीजे खंभें एह, कांति कहे धरी नेह, आ० ॥
ढाल त्रणी उंगणीशमी ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे माहावल माननी सुणो, आगें जे हुई वा
त ॥ थंत्र तिस्यो में चीतस्यो, जिम जाएयो नवि जा
त ॥ १ ॥ रंग प्रमुख जे ऊगस्या, ते वाह्या जलपूर ॥
एहवामां फरी चोर ते, आव्या नवन हजूर ॥ २ ॥
चोर सहित पेटी तिकें, जिहां तिहां जोतां दीठ ॥ तस
शानें वोलावतां, कीधा आदर इठ ॥ ३ ॥ मुज पूछे मंजू
षशुं, दीठो एक किहां चोर ॥ वीकुं में देई आदरें, कह्युं
एम तिण ठोर ॥ ४ ॥ थंत्र एहजो पूर्वनी, पोलें मूको
आज ॥ तो देखाडुं चोर ते, व्यवहारें नहीं लाज ॥ ५ ॥
॥ ढाल वीशमी ॥ थें तोनें आया ठेहरुं, ठलगाणाजी ॥
जिरमट खास्यो गाल नएया ॥ ए देशी ॥
॥ चोर कहे इम उमही ॥ गुणवंताजी ॥ राज नखें

मल्या नाग्यथकी ॥ काम करे शुं ए वही ॥ उजमंता जी, अरथें अवसर एह तकी ॥ १ ॥ गुण करतां गुण कीजीयें ॥ गु० ॥ एहमां पारु न कोइ इहां ॥ कहोतो काढी दीजीयें ॥ उ० ॥ जीव सरखो काज जीहां ॥ २ ॥ जीवजीवातन सारीखो ॥ गु० ॥ ते जातां होय डुःख घणो ॥ पोतावटीनुं पारिखुं ॥ उ० ॥ लहीयें अर्थ सरे बमणो ॥ ३ ॥ इम कही ते थया एकठां ॥ गु० ॥ धन दाटी तेह सिंधु तमें ॥ उपारु मली सामटा ॥ उ० ॥ थंत्र तिहांथी एक धमें ॥ ४ ॥ ते पूंठें हुं चालियो ॥ गु० ॥ पूरव पोल समीप गया ॥ वंछित थल देखाम्यिो ॥ उ० ॥ ते तिहां मूकी निचिंत थया ॥ ५ ॥ में जाण्यो जो गोपव्यो ॥ गु० ॥ देखारुं ते चोर हवे ॥ तो ए टोलो कोपव्यो ॥ उ० ॥ धन लोन्नें तस लोही पीवे ॥ ६ ॥ इम धारी अंतर वटें ॥ गु० ॥ उत्तर कूरुं एम कह्युं ॥ लोन्न वशें तेणें चोरटे ॥ उ० ॥ तालुं ऊघामी ड्रव्य ग्रह्युं ॥ ७ ॥ गोला सिंधु प्रवाहमां ॥ गु० ॥ तरती मूकी मंजूष सुखें ॥ तेह उपर चढी राहमां ॥ उ० ॥ नदीयें थई ए जाय मुखें ॥ ८ ॥ दीठा में सघली परें ॥ गु० ॥ पासें ऊन्ने चरित्त घणां ॥ चोर सहु इम उच्चरे ॥ उ० ॥ साच चरित ए चोर त

णां ॥ ए॥ रातसूधी ते नीरमां ॥ गु० ॥ जाशे तरतो भूमि कीती ॥ देशुं वरू जंजीरमां ॥ ज० ॥ ग्रहिशुं करशे जेय थिती ॥ १० ॥ जाशे ए किहां वेगलो ॥ गु० ॥ चोटी एहनी हाथ अछे ॥ हमणां मूक्यो मोकलो ॥ ज० ॥ लेशे फल रस पाक पछें ॥ ११ ॥ इम कहेतां मन आमले ॥ गु० ॥ चोर गया निज काज वगें ॥ यत न करी में एकले ॥ ज० ॥ राख्यो थंभ प्रभात लगें ॥ १२ ॥ प्रहकालें जण भूपनो ॥ गु० ॥ आव्यो निरख ण थंभ तिहां ॥ हुं थई अलख स्वरूपनो ॥ ज० ॥ वेगें आवी छे भूप जिहां ॥ १३ ॥ इत्यादिक वीती कथा ॥ गु० ॥ कहीने वली महाबल भणें ॥ काढुं चोर ते सर्वथा ॥ ज० ॥ शिखर ठव्यो जे भुवन तणे ॥ १४ ॥ चालीश जो हुं निजपुरें ॥ गु० ॥ तो मरशे तिणें भीरु पड्यो ॥ चढशे पाप खराखरे ॥ ज० ॥ इणे फिकरें मुज चित्त नड्यो ॥ १५ ॥ तुं इहां रहेजे हुं वही ॥ गु० ॥ आवीश तेहनो सूल करी ॥ कहे मलया रहेशुं नहीं ॥ ज० ॥ सायें आवीश रंग धरी ॥ १६ ॥ तव कुमर विचारी चित्तमां ॥ गु० ॥ वेगवतीने एम भणे ॥ जो नृप आवे तुरतमां ॥ ज० ॥ तो कहेजो इम निपुण पणे ॥ १७ ॥ गोलातटें देवी नमी ॥ गु० ॥ आवशे कुमर इहां ह

मणां ॥ मानत किम शकीयें गमी ॥ उ० ॥ मान्या होय जे देव तणा ॥ १७ ॥ इम कही चाल्यो तिहां थकी ॥ गु० ॥ राति समय देवी भुवनें ॥ वारी पण नवि रही शके ॥ उ० ॥ मलया साथें हुइ सुमनें ॥ १९ ॥ बीजे खंमें वीशमी ॥ गु० ॥ ढाल भली अति सरस रसें ॥ सुणतां श्रोताने गमी ॥ उ० ॥ कांति कहे मनने हरसें ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ साम दाम दंमें करी, वीरधवल भूपाल ॥ समजाव्या नरपति घणुं, पण समजे नहीं हगाल ॥ १ ॥ तेह कहे परभातमां, मारी तुज जामात ॥ कन्या लेइ चालशुं, तुं न करे अम तात ॥ २ ॥ वचन सुणि भूपति चक्यो, आवे भुवन विचाल ॥ साज करावे करहलि, संप्रेषण वर बाल ॥ ३ ॥ चुंप करावण आविउं, वर कन्या भवणेह ॥ दीठा नहीं पूछ्युं तदा, वेगवती कहे तेह ॥ ४ ॥ बेठो जोवे वाटमी, भूपति करतो चिंत ॥ रात पमी तव जिहां तिहां, शोध्यां पण न मिलंत ॥ ५ ॥ खबर लही नृप नंदनां, कटक गयां परभात ॥ आव्या तिम निज निज पुरें, विलख वदन विरचात ॥ ६ ॥ जामाता कन्या तणी किहां न लही नृप सूज ॥ दुःखियो भूपति चित्तमां, चिंते एम अमूंज ॥ ७ ॥

॥ढाल एकत्रीशमी॥धिग धिग धणनी प्रीतमी ॥ए देशी
॥ नरराज अति चिंता करे, मनमां पोषी दाह ॥ वर कन्या विहुं किहां गयां, ए तो अचरिज रे दीसे जगनाह ॥ १ ॥ नृपति त्रटकीने कहे, कुंण जाणे रे एह अकल सरूप ॥ जोयां पण लाधां नहीं, थयुं होशे रे कांइ विपरिय रूप ॥ नृ० ॥ २ ॥ किहां नगरी चंद्रावती, किहां नगर पोहवीठाण ॥ किहां कन्या महाबल किहां, एतो विभ्रम रे रचना अहिनाण ॥ नृ० ॥ ३ ॥ अथवा दैवें वेहुनो, संयोग इम किम कीध ॥ इंद्रजाल परें कारिमो, देखाडी रे किम जरूपी लीध ॥ नृ० ॥ ४ ॥ तुज चित्तमां एहवुं हतुं, करवुं दैव अनिष्ट ॥ तो मूलथकी परगट करी, क्यां पाड्यो रे एह माहारी दृष्ट ॥ नृ० ॥ ॥ ५ ॥ नवि दीधुं भोजन भलुं, नहीं दीधुं लीधउ दालि ॥ मणि हीणुं भूपण भलुं, पण पञ्जिउ रे जश मणि ते टालि ॥ नृ० ॥ ६ ॥ हण्या दुष्ट किण व रीयें, अथवा निरुध्यां केण ॥ के किण देवें अपह स्यां, दंपत्ती दोइ रे आव्यां नहीं तेण ॥ नृ० ॥ ॥ ७ ॥ रूप करी महाबल तणुं, आव्यो हतो कोइ चोर ॥ परणी निज देशें गयो, मुज कन्या रे काम

जानी कोर ॥ भू० ॥ ७ ॥ कुमर कुमरी रूपें करी, भ्रांति मुज मन घालि ॥ मरण थकी वारी गयां, करुणालां रे केइ अथवा विचालि ॥ भू० ॥ ए ॥ शुं करुं केहने कहुं, कुंण लहे मुज मन पीम ॥ इंम कहेतां गलहथ करी, नृप बेठो रे पड्यो चिंता भीम ॥ भू० ॥ ॥ १० ॥ वेगवती वेगें कहे, प्रभु धरो मनमां धीर ॥ तेहिज मलया ए हती, तेह हुतो रे एह महबल वीर ॥ भू० ॥ ११ ॥ पण रातमां जातां वनें, बल बेतस्यां ततखेव ॥ कोइक वैरी विरोधथी, संभवियें रे हरिया किणें देव ॥ भू० ॥ १२ ॥ देशान्तर पुर पर्वतें, वनभूमि विषम प्रदेश ॥ मूकी नर विशवासिया, जो वरावो रे तजी अपर किलेश ॥ भू० ॥ १३ ॥ प्रथम पुहवीठाण पुर दिशि, तुरत करवी शोध ॥ किणहीक कारणथी कदे, नारी लेई रे गयो होय तिहां योध ॥ भू० ॥ १४ ॥ सूरपाल नरिंदनें, एह सयल जणावो वात ॥ ते पण खबर करे वली, करतां इंम रे सवि आवशे धात ॥ भू० ॥ १५ ॥ भलुं भलुं भूपति कहे, तें कह्यो साहु उपाय ॥ वेगवतीने सराहतो, तिम करवा रे नरपति सज थाय ॥ भू० ॥ १६ ॥ मलयकेतु निजपुत्रनें, देई शीख नृप ससनेह ॥ सूरपाल दिशि

मोकल्यो, कहेवानें रे व्यतिकर सवि तेह ॥ नृ० ॥
॥ १७ ॥ हयगय सुनट रथ साजज्युं, ते कुमर निय
त प्रयाण ॥ कुशलें मलशे नृपनें, होशे रूमा रे इहां
कोमी कल्याण ॥ नृ० ॥ १८ ॥ ढाल एह एकवीश
मी, इम कही कांति रसाल ॥ जुगतें वीजा खंमनी,
नणतां होये रे घर घर मंगल माल ॥ नृ० ॥ १९ ॥
॥ चोपाई ॥ खंम खंम रस ढे नवनवा, सुणतां मीठा
शाकर लवा ॥ निर्मल मलय चरित्र जग जयो, वी
जो खंम संपूरण थयो ॥ २० ॥

॥ इति श्री ज्ञानरत्नोपाख्यान द्वितीयनाम्नि मलय
सुंदरिचरित्रे पंमितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत
प्रबंधे मलयसुंदरीपाणीग्रहणप्रकाशको नामा द्वितीयः
खंमः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७५ ॥

॥ अथ तृतीय खंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रीजो खंम घमंमज्युं, पूरण कीध प्रगट्ट ॥ हवे
त्रीजो कहेवा नणी, उमग्यो रंग गरट्ट ॥ १ ॥ प्रेमें
प्रणमी शारदा, कहेशुं शेष चरित्र ॥ अति रसशुं
श्रोता सुणी, करजो करण पवित्र ॥ २ ॥ हवे कुमर

वनमां जई, मलयानें पभणंत ॥ फिरवुं निशि समशानमां, नारीनें न घटंत ॥ ३ ॥ ते माटे नर रूप तुज, करुं कही इम चाल ॥ तिलक कस्युं आंबारसें, गोली घसी ततकाल ॥ ४ ॥ नारी रूपें नर हुउं, थयां बेहु संबंध ॥ देवी गृहनां शिखरथी, काढे चोर निरुद्ध ॥ ५ ॥ कहे इस्युं रे गत दिनें, गया चोर तुज देख ॥ जा कुशलें जिहां रुचि होवे, तिहुनो पंथ उवेख ॥ ६ ॥ प्राण लाभ धनलाभ में, तुम पसायें लद्ध ॥ इम कही ते नमते घणुं, तेणे पयाणुं कीध ॥ ७ ॥ बिहुं भुव नथी ऊतरी, आवे वृक्षतलें आप ॥ तव तिहां गयणे गेबनो, सुण्यो भूत आलाप ॥ ८ ॥ कुमर डरंतो भूतथी, करवा यतन प्रकार ॥ ततक्षण कामिणी कंठथी, लीए उतारी हार ॥ ए ॥ रहे रहे ठानी सलक मां, सांभल देइ कान ॥ वृक्षमां भूत वदे किस्युं, कुमर करे इम शान ॥ १० ॥ ठानां वृक्ष पोलाशमां, बिहुं बेठां थिरगात ॥ सावधान थइ सांभले, भूत तणी इम वात ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ सहेर भलो पण सांकडो रे, नगर भलो पण दूर रे॥ हठीला वयरी ॥ ए देशी ॥

वृक्ष शिखरें इम बोलीउं रे, भूताने एक भूत

रे ॥ मोहन रंगीला ॥ वात कहुं नवली जली होला
ल ॥ सांजलजो अदजूत रे ॥ मो० ॥ १ ॥ जूत वको
कहे वातरी हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ कुमर सुणे
रह्यो हेठरे ॥ मो० ॥ रहस्य मरम जोतां वली हो
लाल ॥ वेधक पासे नेठ रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ २ ॥ पु
हवी ठाण नरिंदनो रे, माहावल नामे कुमार रे ॥ मो० ॥
ठे मतिवंत गुणायरु होलाल, रतिपतिने अणुहार
रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ३ ॥ तस जननी पदमावती रे,
तेहना गलानो हार रे ॥ मो० ॥ किणहीक अलख
पणें लीयो हो लाल, माय करे डुःख जार रे ॥ मो० ॥
॥ जू० ॥ ४ ॥ ईम पण वांध्यो आकरो रे, वालण
हार कुमार रे ॥ मो० ॥ हार न दौं दिन पांचमे हो
लाल, तो मुज अगनि आधार रे ॥ ॥ मो० ॥ जू० ॥
॥ ५ ॥ मातायें पण आदस्यो रे, पण तेहवो निर
धार रे ॥ मो० ॥ पांच दिवसमां ते लहुं हो लाल,
तो रहुं जीवित धार रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ६ ॥ ख
वर नहीं ठे कुमरनी रे, हार केमें गयो कठ रे ॥ मो० ॥
पंचम दिन कालें हुशे हो लाल, सूरज ऊग्या पूंठ रे
॥ मो० जू० ॥ ७ ॥ नृपनंदन मुगतावली रे,
मलवा डुर्लज वेह रे ॥ मो० ॥ ते डुःख मरवुं आ

गमी हो लाल, बेठी राणी तेह रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ ॥ ८ ॥ विषथी के गिरि पातथी रे, के पेशी जल देश रे ॥ मो० ॥ मरशे के वली शस्त्रथी हो लाल, के करी अगनिप्रवेश रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ ए ॥ लोक बहुलशुं राजीयो रे, मरशे पूंठें तास रे ॥ मो० ॥ खबर लेईनें आवीयो हो लाल, हुं तिहांथी तुम पास रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ १० ॥ भूपनंदन वम कोटरें रे, सांभले बेठो एम रे ॥ मो० ॥ फाटे हीयकुं डुः खथी हो लाल, काचो घट जल जेम रे ॥ मो० ॥ ॥ भू० ॥ ११ ॥ चिंता भर मन चिंतवे रे, देव कथ न नहीं फोक रे ॥ मो० ॥ थाशे जो एहवुं कहे हो लाल, तो करशुं श्यो शोक रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ १२ ॥ भूत कहे जश्यें तिहां रे, वहेलां गंमि प्रमाद रे ॥ मो० ॥ कौतिक जोशुं खंतशुं हो लाल, लेशुं रुधिर सवाद रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ १३ ॥ इम कही सम कालें कस्यो रे, भूतकुलें हुंकार रे ॥ मो० ॥ आका शें वम ऊपड्यो हो लाल, लेता साथ कुमार रे ॥ ॥ मो० ॥ भू० ॥ १४ ॥ वेगें वम नभें चालतो रे, आव्यो पुहवीठाण रे ॥ मो० ॥ आलंबन गिरिनीचें जई हो लाल, तुरत कस्यो मेलाण रे ॥ मो० ॥ भू०

॥ १५ ॥ पुर पासें गोला तटें रे, नामे धनंजय यक्ष रे ॥ मो० ॥ भूत गयां तस देहरे हो लाल, करवा कौतुक लक्ष रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ १६ ॥ निजपुर उपवन भूमिनां रे, परिचित तरुनां वृंद रे ॥ मो० ॥ कुमर निहाली उलखी हो लाल, पाम्यो परमानंद रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ १७ ॥ कुमर भणे मलया भणी रे, दीसे पुण्य प्रमाण रे ॥ मो० ॥ जेहथी ए वड ऊपडी हो लाल, आव्यो पुहवीठाण रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ ॥ १८ ॥ वड कोटरथी नीसरी रे, जइयें उपवन कूल रे ॥ मो० ॥ सुर शक्तें वली ऊडशे हो लाल, तो कर स्यां श्यो सूल रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ १९ ॥ एम विचारी नीसर्यां रे, वड कंदरथी दोय रे ॥ मो० ॥ कदली वन छे ढूंकडुं हो लाल, तिहां जइ बेठा सोय रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ ॥ २० ॥ ऊपडतो गयणांगणें रे, देखे वड वली तेम रे ॥ मो० ॥ मांहो मांहे कहे इहां थको हो लाल, जाशे आव्यो जेम रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ २१ ॥ जो रहेतां ए हमां वसी रे, तो जातां किण थान रे ॥ मो० ॥ पडतां विपमी ओलमां हो लाल, जिम पवनें तरु पान रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ २२ ॥ बीजे खंडें ए कही रे, सुंदर प

हेली ढाल रे ॥ मो० ॥ कांतिविजय कहे पुण्यथी हो लाल, वाधे सुजश विशाल रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर निसुणे तदा, विनताना आक्रंद ॥ दया पणे नयणें जरे, करुणा जल निस्पंद ॥ १ ॥ आवीश हुं वहेलो प्रिये, चिंता मुज न करेश ॥ इंम कही नर रूपें त्रिया, तिहां ठवि चल्यो नरेश ॥ २ ॥ निरखत पियु नी वाटडी, शूने रंजाकुंज ॥ रयणि गमावे नारि ते, दाधी दुःखने पुंज ॥ ३ ॥ पीत वरण प्राची हुवे, पास्यां कमल विबोध ॥ बंधनयरथी बद्ध जिम, बूटा अलिकुल योध ॥ ४ ॥ गुंजा पुंज समान तनु, उदयो बालो सूर ॥ आलें किरणजालें हणी, कस्या तिमिररिपु दूर ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वृषजान जुवनें गई दूती ॥ ए देशी ॥

॥ मलया मन एम विचारे, जाउं हुं पुरमां करारें ॥ माय बापने मलवा कामें, मुज नाह गयो हुशे धामें ॥ १ ॥ चाही इंम चाली चुंपे, आवी वही पुरनी खुंपें ॥ पेसे जव पुरनें दुवारें, रोकी तव नगर तलारें ॥ २ ॥ दिव्य वेश निहाली चमक्यो, कहे कुण तुं आयो धमक्यो ॥ बोलाव्यो तिहां उत्तर नापे, दश दिशिमां लोचन थापे ॥ ३ ॥ मलिया केई नगर निवासी, निरखे तस

रूप प्रकाशी ॥ कुंमलने डुकूलनी फाली, ठेलख्यां म हवलनां चाली ॥ ४ ॥ तलवर कहे किहांथी लाधां, आनूपण कुमरनां बाधां ॥ इम कही नृप पासें लाव्यो, देखी नृप चित्त चमकाव्यो ॥ ५ ॥ कहे कोण पुरुष ए नवलो, सोहे नूपणें करी चांतीलो ॥ मुज सुतनां पहिर्यां दीसे, आनूपण विश्वावीसें ॥ ६ ॥ तलवर क हे ए हिसंतो, पकड्यो पुरमां पेसंतो ॥ पूछ्यो पण उत्तर नापे, पूठो वली जो हवे आपे ॥ ७ ॥ नूपति कहे कुंण तुं किहांथी, आव्यो कहे साच जिहांथी ॥ मलया मनमांहे विमासे, साचुं इहां जूठुं नासे ॥ ॥ ८ ॥ कहिशुं अम चरित्र वखाणी, कोइ सद्दहशे नहीं प्राणी ॥ कहवुं नहीं पीउरा पाखें, नावी मटशे नहीं लाखें ॥ ए ॥ इम धारीने मलया बोले, महबल मु ज मित्रने तोलें ॥ ते माटे ए वेश प्रसिद्धो, मुजने ते णे पेहेरण दीधो ॥ १० ॥ शूरपाल कहे तेह क्यां ठे, सा कहे इहां हिज जिहां त्यां ठे ॥ नृप कहे होये जो इहां गावे, मुज मलवा तो किम नावे ॥ ११ ॥ जूठी सवि वात प्रकाशी, चोकस न पमी विण रासी ॥ महबल थी प्रीति वखाणे, तो सेवक कोइ तुज जाणे ॥ १२ ॥ इत्यादिक वचन सुणीनें, रही मौन धरी मन दीने ॥ बो

ल्यो नरपति हुंकारी, एह वात हवे अवधारी ॥ १३ ॥
आणदीठां मुज नंदननां, वसनादिक लीधां तनना
लोजसार नामें जेणे चोरें, रहे ते गिरिकंदर गोरें ॥
॥ १४ ॥ चोर्यो पुरनो जेणें माल, पकड्यो ते माटे
हवाल ॥ काले तस निग्रह कीधो, तस बांधव दीसे
ए सीधो ॥ १५ ॥ निजबंधु वियोगें बलतो, सूधि लेवा
आव्यो चलतो ॥ पहेरी मुज सुतनो वेश, इणे पुरमां
कीध प्रवेश ॥ १६ ॥ मुज सुत हणीने इणे मलीनें,
मुज वैरी ए अटकलीनें ॥ लोजसार कन्हें जई हणजो,
इहां पाप किस्युं मत गणजो ॥ १७ ॥ मलया मनमां इं
म ध्यावे, असमंजस कर्मनें दावे ॥ प्राणांतिक आपद
मोटी, दीसे छे इहां वली खोटी ॥ १८ ॥ चिंतवती पूर्व
सलोक, रही मौन धरी अतिशोक ॥ तव बोल्यो सची
व विचारी, महाराज जुवो अवधारी ॥ १९ ॥ जिम
साह नहीं ए साचो, तिम चोर करी मत खांचो ॥ आ
चरणा दीसे रूडी, शिर आवी तो मति कूडी ॥ २० ॥
इहां उचित करावो धीज, होये शुद्ध अशुद्ध पतीज ॥
इम करी हणशो तो आछे, कोई दोष न देशे पाछे
॥ २१ ॥ नृप कहे शी धीज वतावो, तव ते कहे सर्प
मंगावो ॥ साचो घट सर्पनी धीजें, होशे तो चरण न

सीजें ॥ २२ ॥ नृप गारुरुविद अविलंवें, मूके तव शैल अलंवें ॥ डुरूर विषधर आणेवा, गया हसता ते तत्खेवा ॥ २३ ॥ वस्त्र कुंमल नृपें लेई, तलवरने सोंप्यो तेई ॥ वंध आवी मलया राणी, पण ढालें व हेशे पाणी ॥ २४ ॥ त्रीजे खंमें वीजी ढाल, इम कांति कहे सुरसाल ॥ केई कौतुक होशे आगें, सांज लजो श्रोता रागें ॥ २५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे पटराणी तणी, महुलणी आवी दोम ॥ गलगलती नृप आगलें, कहे एम कर जोम ॥ १ ॥ देव खवर नहीं कुमरनी, पंचम दिन ठे आज ॥ नेट अ निष्ट इहां किस्युं, दीसे ठे नर राज ॥ २ ॥ पुत्र रतन डुर्लन हूउ, हार तणी शी वात ॥ शैल अलंवाथी पमी, करशुं ते डुःख घात ॥ ३ ॥ अविनय जे कीधा हुवे, ते खमजो नरनाथ ॥ संदेशा तुम राणीयें, इम दीधा मुज हाथ ॥ ४ ॥ समयोचित चित्तमां धरो, करो आ प हित जाणी ॥ इम सुणी नरपति तेहने, पन्नणे अ वसर वाणी ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जुंवखमानी देशी ॥

सुज वचनें इम त्रांखजो रे, राणी समीपें जाय ॥ स

लूणी गोरमी ॥ मुजने पण ताहरी परें रे, ए दुःख ख मीउं न जाय ॥ स० ॥ १ ॥ खबर करेवा मोकल्या रे, दिशिदिशि सेवक साथ ॥ स० ॥ ते आव्यार्थी जाण शुं रे, वात तणो परमार्थ ॥ स० ॥ २ ॥ पामीशुं नहीं सर्वथा रे, कुमर तणी जो सुद्धि ॥ स० ॥ तो तुज गति मुजने हजो रे, धारी में एहवी बुद्धि ॥ स० ॥ ३ ॥ उं ट करूण किण बेसशे रे, तेल जूउं तेल धार ॥ स० ॥ कुंमल वसन कुमारनां रे, आव्यां सहसाकार ॥ स० ॥ ४ ॥ किस रहेशे ठानो हवे रे, लाधो पग संचार ॥ स० ॥ पुरुष अपूर्वक दाखशे रे, तेहने ए निरधार ॥ स० ॥ ५ ॥ सहि नाणी राणी जाणी रे, आपीने कहे जो एम ॥ स० ॥ जिम ए अजाएयां आवियां रे, सुत पण आवशे तेम ॥ स० ॥ ६ ॥ पुरुषने धीज करावशुं रे, जेहथी लाधां साज ॥ स० ॥ मलशे नंदन जीव तो रे, करशे जो महाराज ॥ स० ॥ ७ ॥ महुलणी आवी महोलमां रे, सकल सुणी अवदात ॥ स० ॥ कुंमल वसन समर्पिनें रे, सुपरें सुणावी वात ॥ स० ॥ ८ ॥ विस्मित मन राणी हुइ रे, पूछे वस्तु निदान ॥ स० ॥ महुलणी आगम पुरुषथी रे, जांखे तस घ टमान ॥ स० ॥ ए ॥ हर्ष शोकाकुल कामिनी रे, म

हुलणी आगें वदंत ॥ स० ॥ मुज सुत वल्लभ आवि
यो रे, कहेवा सुधि कुण खंत ॥ स० ॥ १० ॥ अथवा
कोईक वैरीये रे, कुमर हण्यो छल खेल ॥ स० ॥ कुंम
ल वसन लीयां तिंके रे, ते आव्यां इंणि वेल ॥ स०
॥ ११ ॥ ते माटे निरखुं हवे रे, करतो धीज विशु
द्ध ॥ स० ॥ इम कही यक्षगृहें गई रे, परिकर साथें
सुद्ध ॥ स० ॥ १२ ॥ नृप पहेलो तिहां आवियो
रे, वींट्यो जणने थाट ॥ स० ॥ आव्या तव विषध
र ग्रही रे, गारुमी जोतां वाट ॥ स० ॥ १३ ॥ नृप
तिनें कहे गारुमी रे, देव अलंवा हेठ ॥ स० ॥ वि
वर अनेक निहालतां रे, लाधो फणिधर नेठ ॥ स०
॥ १४ ॥ फूंकारें तरु वालतो रे, कालो काजल वान
॥ स० ॥ मंत्रप्रयोगें कुंजमां रे, घाल्यो आणी निदा
न ॥ स० ॥ ॥ १५ ॥ यक्ष धनंजय आगलें रे, मूकावे
नर कुंज ॥ स० ॥ नर न्हवरावी आणीयो रे, सुभटें
करी संरंभ ॥ स० ॥ १६ ॥ रूप निहाली तेहनुं रे,
कहे राणी पुरलोक ॥ स० ॥ एहवा गुण इम रूपवी
रे, विधि रचना हुई फोक ॥ स० ॥ १७ ॥ चंद्र अंगार
जो खरे रे, पावक जल विश्राम ॥ स० ॥ दाह अमृ
तथी जो हुवे रे, तो एहथी ए काम ॥ स० ॥ १८ ॥

दिव्य कठिन ए एहनें रे, देतां मन न वहंत ॥ स० ॥
दोष नहिं नृपति तणो रे, गुणही एम लहंत ॥ स० ॥
॥१९॥ समसूधो वानी ग्रहे रे, वाधे सुजश अताग ॥स०॥
जात्य सुवर्ण हुताशनें रे, ताप्यो ले गुण ताग ॥ स० ॥
॥ २० ॥ नररूपा विनता तिहां रे, जपती मन नव
कार ॥ स० ॥ श्लोकारथ निरधारती रे, ऊघाडे घट
बार ॥ स० ॥ २१ ॥ निर्भय करकमलें ग्रह्यो रे, वि
षधर अति रोषाल ॥ स० ॥ लोक लह्यो अचरिज
नवो रे, निरखी निरुपम ख्याल ॥ स० ॥ २२ ॥ नाग हू
उं निर्विष मुखो रे, रह्यो तस वदन निहाल ॥ स० ॥
नेह निविड रस पूरीयो रे, संबंधें ततकाल ॥ स० ॥२३॥
साचो साचो इम कहे रे, पाडे नर करताल ॥ स० ॥
त्रीजे खंडें ए कही रे, कांतें त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केलि करंतो करतलें, काढें मुखथी हार ॥ ते
मलया कंठें ठवे, मुखें ग्रही फणिधार ॥ १ ॥ ते निर
खी विस्मित हुउं, नृप प्रमुख पुर लोक ॥ हार पि
छाणी इम कहे, करता नयणें टोक ॥ २ ॥ लखमी
पुंज किहांथकी, आव्यो एह अचिंत ॥ विण वादल
वरसात ज्युं, करे अचंभ अनंत ॥ ३ ॥ जाल तिहां

क नरनो चढी, चाटे जब अहिराव ॥ दिव्यरूप तरु
णी हुई, तब ते मूल स्वन्नाव ॥ ४ ॥ विस्तारी फणि
मंमली, रह्यो उपर धरी छत्र ॥ जोतां जण अद्भुत र
स, लहे चित्र सुपवित्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ माली केरे बागमां,
दो नारंग पक्के रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ थर थरतो नरराजीयो, न्नणे एहवी वाचा लो
॥ अहो न्न० ॥ देखी तिहां अचरिज मोटोरे लो ॥ विण
विगतें में मूरखें, काम कीधां काचां लो ॥अ०॥ देखी०
॥१॥ पुरजण देवी वारता, अनरथ उगाड्यो लो ॥ अ० ॥
न्नरनिंदें सूतो इहां, मृगराज जगाड्यो लो ॥ अ० ॥ दे०
॥ २ ॥ नाहिं सामान्य न्नुजंग ए, कोइ देव सरूपी लो
॥ अ० ॥ निरखत रचना एहनी, रही मनमें खूंपी लो
॥ अ० ॥ दे० ॥ ३ ॥ शक्ति सहित ए बे जणां, ढां
की निज वाना लो ॥ अ० ॥ पुरमां कार्य उद्देशथी,
आव्यां कोई छानां लो ॥ अ० ॥ दे० ॥४॥ परमारथ लहे
तो नथी, आराधी बेहुनें लो ॥ अ० ॥ न्नगतें सूधां
रीजवी. पूछु गति एहुनें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ५ ॥
इम कहेतो धूप उखेवतो, कुंकुमांजल छांटे लो ॥
अ० ॥ फणीधर मूके सुंदरी, कही इम मुख जोवे

लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ अविनय मुज पन्नग प्रजु,
कीधो ते खमजो लो ॥ अ० ॥ जक्तें वश होय देव
ता, इम जाणी समजो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ नि
सुणी नृपति वीनति, मलया अहि मूक्यो लो ॥ अ० ॥
नृप पयपात्र धस्युं तिहां, पीवा जइ ढूक्यो लो ॥
अ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ संतोष्यो पयपानथी, नरपति आ
देशें लो ॥ अ० ॥ गारुमीयें पाठो ग्रही, मूक्यो गिरि
देशें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ए ॥ नृपति पूछे नारीनें,
जोतां जण पासें लो ॥ अ० ॥ नरथी नारी किम हुई,
एह कौतुक जासे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १० ॥ कुण
छे किम आवी इहां, केहनी तुं बेटी लो ॥ अ० ॥
रहस्य कहो सवि चित्तथी, अंतर पट मेटी लो ॥ अ०
॥ दे० ॥ ११ ॥ मलया एहवुं चिंतवे, मूल रूप ए उ
लटचुं लो ॥ अ० ॥ जाल अमृतथी मांजतां, पहेलुं
पण उलटचुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १२ ॥ रूप ए विष
हर चाटतां, कहो किम बदलाणुं लो ॥ अ० ॥ हार
लह्यो पीयु करतणो, अचरिज इहां जाणुं लो ॥ अ० ॥
दे० ॥ १३ ॥ कारण ए मुज पीउनां, विण कारण सीधां
लो ॥ अ० ॥ कारणें नाग थई तिणें, कारज शुं कीधां
लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १४ ॥ समजण मुज पमती नथी,

इयो उत्तर आपुं लो ॥ अ० ॥ जेतुं इहां कहेवुं घटे, तेतुं थिर थापुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १५ ॥ लाजें मुख नीचुं करी, कहे मलया वाली लो ॥ अ० ॥ दक्षिण दिशि चंद्रावती, वीरधवलें पाली लो ॥अ०॥ दे०॥१६॥ हुं ते नृपनी नंदनी, जीवितथी प्यारी लो ॥ अ०॥ नामें मलया सुंदरी, चंपक उरधारी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ॥ १७ ॥ नृप कहे जुगतुं नहीं, ए वचन विशेषें लो ॥ अ० ॥ प्रथम कह्युं तुं तेहथी, मलतुं नहीं लेखे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १८ ॥ कारण वशें ते नृपने, पुत्री जो आई लो ॥ अ० ॥ केताइक जण आवशे, तो पुंठे धाई लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १९ ॥ हार सहित एहने हवे, देवी तुज पासें लो ॥ अ० ॥ सुखशाताशुं राख जो, उंचे आवासें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ २० ॥ राणी मलयाने तिहां, राखे मन खांते लो ॥ अ० ॥ चोथी त्रीजा खंमनी, ढाल नांखी कांतें लो ॥अ०॥ दे० ॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कहे सुण नामिनी, पंच दिवसने अंत ॥ हार रयण अणजाणिउं, लाधो अति चाहंत ॥ १ ॥ कीधो महबल नंदनें, प्राणांतिक पण जेम ॥ सुख दुःख अंगें साहसी, पुरुषो दीसे तेम ॥ २ ॥ वचन सु

णी राणी हूई, दुःख जारें दिलगीर ॥ प्रीतमने इम वि नवे, नयण जरंती नीर ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सासू काठा हे गहुं पी साय, आपण जास्यां हे मालवे, सोइ नारी जाणे ॥ ए देशी ॥

॥ पीया बेठा हे कांइ निचिंत, कान ढालीनें हे इ णिपरें ॥ सुत मायो घरें ॥ पीया विरहो हे अति खट कंत, सुतनो हे हीयमा जीतरें ॥ सु० ॥ १ ॥ पीया मुजथी हे रह्यु न जाय, लंबा दीहा किम नीगमुं ॥ सु० ॥ पीया रयणि हे वैरणी थाय, नींद गई शूनी जमुं ॥ सु० ॥ २ ॥ पीया बालुं हे नवलख हार, पु त्र रतन जेहथी गम्यो ॥ सु० ॥ पीया लेई हे रतन उदार, पाहाण कारज आगम्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥ पीया ढोल्युं हे सरस पीयूष, क्षार उदकने कारणें ॥ सु० ॥ पीया कापी हे सुरतरु रुंख, वाव्यो धंतुरो बारणे ॥ सु० ॥ ४ ॥ पीया जीवुं हे हुं हवे केम, पुत्र रहित दोजागिणी ॥ सु० ॥ पीया गिरि हे झंपावीश जेम, निवृत्त होइ जीवित जाणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रीया वारी हे में समजाय, पहेलां पण तुजनें घणुं ॥ सु० ॥ प्री या लेहेशुं हे पुण्य पसाय, हार परें सुत आपणुं ॥

सु० ॥ ६ ॥ प्रीया वचनें हे इम आसास, पुत्र त्रिठो ही गोरीने ॥ सु० ॥ प्रीया आव्यो हे निज आवास, मन वींध्युं दुःख कोरीनें ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रीया पो होता हे निज निज थान, लोक जस्यां अचरिज चिंते ॥ सु० ॥ प्रीया साले हे साल समान, नृपराणीने वि रह ते ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रीया वोल्यो हे तपतां दिस, रा त्ति विहाणी दोहिले ॥ सु० ॥ प्रीया जाणे हे दुःख जगदिश, के जस वीते ते कले ॥ सु० ॥ ए ॥ प्रीया आया हे जन परभात, कुमर खवर पाम्या नहीं ॥ सु० ॥ प्रीया चित्तमां हे अति अकुलाय, दंपती चा ल्यां गिरि वही ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रीया पकवा हे घाली हांम, नृप राणी ऊंचां धसे ॥ सु० ॥ प्रीया सासें हे नरीयां तास, पुरुष केइक आव्या तिसें ॥ सु० ॥ ॥ ११ ॥ प्रीया नृपनें हे ते कहे एम, गोला तट वम कालियें ॥ सुत पायो वमें ॥ प्रीया टांग्यो हे वागु ली जेम, सहचल दीठो गोवालीये ॥ (कनालिये) सु० ॥ १२ ॥ प्रीया वांध्यो हे जे लोजसार, चोर अ धो मुख जिण वमें ॥ सु० ॥ प्रीया जीम्यो हे काल मजार, तुम नंदन तिहां तमफमे ॥ सु० ॥ १३ ॥ प्री या जाण्यो हे नहीं परमार्थ, दीवुं तेहवुं जांखीयुं ॥

सु० ॥ प्रीया सुणीने हे इंम नरनाथ, वचन अमृत करी चाखीयुं ॥ सु० ॥ १४ ॥ प्रीया पाम्यो हे विस्मय हर्ष, समकालें ते राजवी ॥ सु० ॥ प्रीया वाध्यो हे मन उत्कर्ष, मरवा इछा भाजवी ॥ सु० ॥ १५ ॥ प्रीया सुतनां हे दरिसण चाहि, चाल्यो नृप वरु सनमुखें ॥ सु० ॥ प्रीया साथें हे मलया उमाह, चाली प्रीतमनी रुखें ॥ सु० ॥ १६ ॥ प्रीया आया हे वरुतरु पास, नृपराणी मलया मली ॥ सु० ॥ प्रीया दीठो हे उंचो आकाश, टांग्यो न शके सलसली ॥ सु० ॥ १७ ॥ प्रीया करशे हे सुत संभाल, नवली विधि नृप आगमी ॥ सु० ॥ प्रीया त्रीजा हे खंमनी ढाल, कांतें कही ए पांचमी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयणें आंसुं नाखतो, पूछे सुतनें भूप ॥ लेखन निपट कृतांतनो, ए तुज कवण सरूप ॥ १ ॥ लोभसार टांग्यो वरू, तुं पण तिम तस कूल ॥ देखीने तुज उुर्दशा, गयो सुद्धि हुं भूल ॥ २ ॥ धिग मुज बल जीवित कला, प्रभुता थई अकाज ॥ जेह छते तें अनुभवी, दोहिलिम उुःख समाज ॥ ३ ॥ इंम कही तेड्यो वर्द्धकी, छेदावी वरू माल ॥ यतनें सुतने जीवतो,

सु० ॥ ६ ॥ प्रीया वचनें हे इम आसास, पुत्र विछो
ही गोरीने ॥ सु० ॥ प्रीया आव्यो हे निज आवा
स, मन वींध्युं दुःख कोरीनें ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रीया पो
होता हे निज निज थान, लोक त्रस्यां अचरिज चिंते
॥ सु० ॥ प्रीया साले हे साल समान, नृपराणीने वि
रह ते ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रीया बोल्यो हे तपतां दिस, रा
ति विहाणी दोहिले ॥ सु० ॥ प्रीया जाणे हे दुःख
जगदिश, के जस वीते ते कले ॥ सु० ॥ ए ॥ प्रीया
आया हे जन परभात, कुमर खवर पाम्या नहीं ॥
सु० ॥ प्रीया चित्तमां हे अति अकुलाय, दंपती चा
ल्यां गिरि वही ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रीया परुवा हे घाली
हांस, नृप राणी उंचां धसे ॥ सु० ॥ प्रीया सासें हे
नरीयां तास, पुरुष केइक आव्या तिसें ॥ सु० ॥
॥ ११ ॥ प्रीया नृपनें हे ते कहे एम, गोला तट वन
मालियें ॥ सुत पायो वनें ॥ प्रीया टांग्यो हे वागु
ली जेम, सहवल दीठो गोवालीये ॥ (कनालिये)
सु० ॥ १२ ॥ प्रीया बांध्यो हे जे लोजसार, चोर अ
धो मुख जिण वनें ॥ सु० ॥ प्रीया नीम्यो हे माल
मजार, तुम नंदन तिहां तरुफरे ॥ सु० ॥ १३ ॥ प्री
या जाण्यो हे नहीं परमार्थ, दीठुं तेहवुं भांखीयुं ॥

सारें तिहांथी, चाल्यो हुं वन मांहे ॥ रो० ॥ ४ ॥ ॥ श्रा
गल जातें दीठोजी ॥ नं० ॥ करी पावक अंगीठोजी
॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो ईठोजी ॥ नं० ॥ साधे एक नर
बेठोजी ॥ नं० ॥ ते कहे मुजने साहमो आवी, आ
वोजी वरुनाग ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र इहां आराधुंजी
॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो साधुंजी ॥ नं० ॥ सहायक
नवि लाधुंजी ॥ नं० ॥ तेहथी काचूं बाधुंजी ॥ नं० ॥
उत्तर साधक तुं माहरे, जिम होये कुशलें सिद्ध ॥ म०
॥ ६ ॥ मन उपगार नरीनेंजी ॥ नं० ॥ न शक्यो बोली
फरीनेंजी ॥ नं० ॥ वचन प्रमाण करीनेजी ॥ नं० ॥ हाथें
खड्ग धरीनेंजी ॥ नं० ॥ उपसाधक थई बेठो पासें, कर
तो कोमी यतन्न ॥ म० ॥ ७ ॥ कहे योगी अवधारी
जी ॥ नं० ॥ जिहां रोवे बे नारीजी ॥ नं० ॥ तिहां बे
वमतरु नारीजी ॥ नं० ॥ करो कुमर हुशीयारी जी ॥
नं० ॥ चोर सुलक्षण शाखें बांध्यो, ते आणो जई वेग
॥ क० ॥ ८ ॥ वचन सुणी हुं चाल्योजी ॥ नं० ॥ उग्र ख
ड्ग कर जाल्योजी ॥ नं० ॥ उन्नें रही जव नाल्यो
जी ॥ नं० ॥ बांध्यो चोर निहाल्योजी ॥ नं० ॥ चोर
तलें विरखे स्वर रोती, दीठी तिहां एक नारि ॥ व० ॥ ए ॥
में पूब्युं कां रोवेजी ॥ नं० ॥ कां डुःख देह विगोवे

काढे नृप करुणाल ॥ ४ ॥ वचन हीण पीडित तनु, वींजे शीतल वाय ॥ चेत वली वेठो हूउ, बोलाव्यो तव माय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ मारगडासां जोवुंजी,
आवे प्यारो कान ॥ ए देशी ॥

माता सुतनें भांखेजी ॥ नंदनजी गुणवंत ॥ कहो मननी अभिलाषेंजी ॥ नं० ॥ किहां विचस्यो अम पासेंजी ॥ नं० ॥ वांध्यो किण बकसासेंजी ॥ नं० ॥ कहे सुख दुःख तें किहां किहां लाधुं, करते हार विशुरू ॥ ॥ मा० ॥ क० ॥ कि० वां० ॥ १ ॥ निंददशा निरधारीजी ॥ नं० ॥ निरखे नयण उघाडीजी ॥ नं० ॥ वेठी आगल माडीजी ॥ नं० ॥ पूंठें मलया लाडीजी ॥ नं० ॥ निजव्यतिकर ते कहेवा लागो, सुस्थ थई नृपनंद ॥ निं० ॥ २ ॥ आव्यो कर आवासेंजी ॥ न० ॥ गोख थई मुज पासेंजी ॥ नं० ॥ हुं वेठो तस वांसेंजी ॥ नं० ॥ उड्यो ते आकाशेंजी ॥ नं० ॥ इम इत्यादिक कदली वन आव्या, तिहां सुधी कही वात ॥ आ० ॥ ३ ॥ रोती कोईक नारीजी ॥ नं० ॥ निसुणी में वनचारीजी ॥ नं० ॥ कदली वन वेसारीजी ॥ नं० ॥ तुम बहुअर निरधारीजी ॥ नं० ॥ आक्रंदने अनु

आलिंगन द्युं हुं, जो आपे तुज बुद्धि ॥ क० ॥ १५ ॥
में निसुणी तसु वाणीजी ॥ नं० ॥ मनमां करुणा आ
णीजी ॥ नं० ॥ कह्युं आवो गुण खाणीजी ॥
नं० ॥ मुज खांधे चढी प्राणीजी ॥ नं० ॥ जिम जा
णे तिम कर तुं एहनें, मेल्यो में ए योग ॥ में० ॥ १६ ॥
धरणीथी ते कूदीजी ॥ नं० ॥ चरण देई मुझ गूं
दीजी ॥ नं० ॥ लेपे शबनी बूंदीजी ॥ नं० ॥ आलिं
गे दृग मूंदीजी ॥ नं० ॥ कंठालिंगन करतां मृतकें, ली
धी नासा तोडि ॥ ध० ॥ १७ ॥ घणुं हुती अनुरागी
जी ॥ नं० ॥ पण नाकें कर दागीजी ॥ नं० ॥ झरती
पाछी जागीजी ॥ नं० ॥ गाढी रोवा लागीजी ॥ नं० ॥
॥ ताणे त्रुटी रह्यो शबमुखमां, नाक तणो अग्रभाग
॥ घ० ॥ १८ ॥ जोते रामत खासीजी ॥ नं० ॥ आ
वी मुखें हांसीजी ॥ नं० ॥ तव नव कोप प्रकाशीजी
॥ नं० ॥ बोल्यो मृतक वकाशीजी ॥ नं० ॥ कांइ ह
से तुं इणे वक मुज ज्यों, बंधाइश निशि काल ॥ जो०
॥ १९ ॥ वचन सुणी हुं झझक्योजी ॥ नं० ॥ शोक
महा जर खझक्योजी ॥ नं० ॥ चिंताथी चित्त तझक्यो
जी ॥ नं० ॥ हृदयथकी जय धझक्योजी ॥ नं० ॥ दै
व प्रयोगें शब ईम बोल्यो, हैहै करशुं केम ॥ व० ॥ २० ॥

नकटी मरती तितरेंजी ॥ नं० ॥ मुज खांधाथी उत रेंजी ॥ नं० ॥ कहेवा लागी ईतरेंजी ॥ नं० ॥ किण न गरें तुं विचरेजी ॥ नं० ॥ नाम थानादिक में ते आ गें, भांख्युं सघलुं साच ॥ नं० ॥ २१ ॥ मुज ऊपर विश्वासीजी ॥ नं० ॥ बोली ते उल्लासीजी ॥ नं० ॥ सुणो कुमर सुविलासीजी ॥ नं० ॥ मुज नासा रूजा सीजी ॥ नं० ॥ तव हुं पीउनुं ऊरुय गुफामां, देखा मीश तुम आय ॥ मु० ॥ २२ ॥ इम कही ते घर चालीजी ॥ नं० ॥ हुं चढीउं वरू मालीजी ॥ नं० ॥ ठेल्यो चोर संभालीजी ॥ नं० ॥ नाख्यो नीचो भा लीजी ॥ नं० ॥ उतरि जोउं तो तिण साखें, बांध्या तिसहीज ठीठ ॥ डं० ॥ २३ ॥ में जाण्यो ततकाला जी ॥ नं० ॥ साधक देवी चालाजी ॥ नं० ॥ ठेली मन ढकचालाजी ॥ नं० ॥ फिरि चढीयो वरू माला जी ॥ नं० ॥ बंधन ठेली केश ग्रहीनें, ऊतरियो व ली हेठ ॥ सं० ॥ २४ ॥ खंध चढावी लीधुंजी ॥ नं० ॥ अकृत शब परसीधुंजी ॥ नं० ॥ जई योगीनें दीधुं जी ॥ नं० ॥ इम पर कारज कीधुंजी ॥ नं० ॥ त्रीज खंडें ढाल ए ठठी, कांतें कही रस रेल ॥ खं० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चरित्र सुणी चित्तमां चक्या, नृपादिक जन नूर ॥
अद्भुत नय आनंद दुःख, हास्य सोग आपूर ॥ १ ॥
वली विगत महबल कहे, मृतक तेह नवराइ ॥ चं
दन रस चर्चित करी, थाप्युं मंडल ठाइ ॥ २ ॥ अ
ग्निकुंड दीवा चिहुं, राख्यो साधक पाल ॥ पद्मासन
बेसी जप्यो, मंत्र तिणें ततकाल ॥ ३ ॥ मृतक तुरत
नम्र उलले, पडे न पावक कुंड ॥ खिन्न थयो जप
ध्यानथी, साधक चिंता मंड ॥ ४ ॥ तेहवे शब गय
णांगणें, उड्यो करतो हास ॥ अवलंब्यो तिमहिज
जई, वृक्षशाखा अवकाश ॥ ५ ॥ चूको कांएक ध्या
नमां, तेणें न सीधो मंत्र ॥ साधेशुं फिरि आवती, रा
तें करीशुं तंत्र ॥ ६ ॥ तुज बलें साधन तणी, थाशें
वहेली सिद्ध ॥ रहो सुभग योगी कहे, उपगरवानी
बुद्ध ॥ ७ ॥ वचन प्रमाणी हुं रह्यो, थई उपसाधक
पास ॥ योगी मरतो मुजनें, बोल्यो एम प्रकाश ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ न्हानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपसाधक जो तुं थयो रे, तो सवि थाशे काम
॥ नंदन रायना रे ॥ पण चोलो मुज चित्तमां रे, ए
हवो एक इंण ठाम ॥ नं० ॥ १ ॥ मुज संगें जो देख

शे रे, तुजने नृप जण वृंद ॥ नं० ॥ तो जई कहे शे बोलव्यो रे, अवधूतें तुम नंद ॥ नं० ॥ २ ॥ प्राण पियाणुं म्हारे रे, होशे अचिंत्युं आय ॥ नं० ॥ तेमाटे तुम फेरवुं रे, कहोतो रूप वनाय ॥ नं० ॥ ३ ॥ जाशो मां मुज पासथी रे, लखमीपुंज अनेथ ॥ नं० ॥ इम धारी मुखमां ठवी रे, कथन ग्रह्युं में तेथ ॥ नं० ॥ ४ ॥ ताम मूली घसी योगीयें रे, मंत्री तिलक मुज कीध ॥ नं० ॥ तास प्रभावें हुं थयो रे, पन्नग विप आवीध ॥ नं० ॥ ५ ॥ मूकी मुज गिरि कंदरें रे, आप गयो कोइ काम ॥ नं० ॥ पवन भखी सुखमां रहुं रे, ठानो विलने ठाम ॥ नं० ॥ ६ ॥ गिरिथल जोतां गारुडी रे, आव्या मुजनें हेर ॥ नं० ॥ मंत्र प्रयोगें वश करी रे, घटमां घाल्यो घेर ॥ नं० ॥ ७ ॥ घट तुम वनमां मूकीयो रे, कुंभ करावी धीज ॥ नं० ॥ तुम आदेशें जे नरें रे, काढ्यो हुं विण खीज ॥ नं० ॥ ८ ॥ तेहने तुरतज ओलखी रे, काढी मुखथी हार ॥ नं० ॥ कंठें धर्यो तेहथी हुवो रे, ते नारी अवतार ॥ नं० ॥ ॥ ए ॥ आराधी गिरि कंदरें रे, मूक्यो पाठो नाग ॥ ॥ नं० ॥ इत्यादिक वीती कथा रे, थइ तुम प्रत्यक्ष भाग ॥ नं० ॥ १० ॥ भूप कहे ते किम हुउ रे, जो

तां नारी सांग ॥ नं० ॥ महबल भांखे तातने रे, शेष कथा एकांग ॥ नं० ॥ ११ ॥ जातां नारी पाछलें रे, गुटिका तिलक रचेय ॥ नं० ॥ नारी नर रूपें करी रे, मुज वस्त्रादिक देय ॥ नं० ॥ १२ ॥ ते फणिधर हुं कर ग्रह्यो रे, धीज समय इंणे बाल ॥ नं० ॥ भाल तिलक चाटयुं चढी रे, में एहनुं ततकाल ॥ नं० ॥ १३ ॥ नर फिटी नारी हुइ रे, ए परमारथ वात ॥ नं० ॥ नृप प्रमुख सहु रीजीया रे, सुणि अद्भुत अवदात ॥ ॥ नं० ॥ १४ ॥ नृप कहे में आचर्युं रे, अणघटतुं प्रतिकूल ॥ नं० लोक कहे न मिटे लिख्युं रे, जे सरजित विधि मूल ॥ नं० ॥ १५ ॥ राणी मलयानें कहे रे, बेसारी उत्संग ॥ नं० ॥ कां न प्रकाश्यो आतमा रे, वत्से तें दुःख संग ॥ नं ॥ १६ ॥ अथवा तें जाण्युं कर्युं रे, वात न खाती पाक ॥ नं० ॥ विण अवसर जे भांखियें रे, न चढे तेह सिराक ॥ नं० ॥ १७ ॥ दुःखमां मौन धरी रही रे, नांखि न एका टोक ॥ नं० ॥ ए विरतंत कही जतो रे, मानत नहीं को लोक ॥ ॥ नं० ॥ १८ ॥ रूडुं दैवें कर्युं हशे रे, पाम्यां दुःखनो पार ॥ नं० अम गुनहो खमजो हवे रे, सतियां कुल शणगार ॥ नं० ॥ १९ ॥ इंम कहेती नृपनी प्रिया

रे, जे जीवितनी आय ॥ नं० ॥ आभूपण सघि ते हमी रे, आपे मलया हाथ ॥ नं० ॥ २० ॥ त्रीजे खं में सातमी रे, ए थई अनुपम ढाल ॥ नं० ॥ कांति कहे सुणतां सदा रे, लहियें मंगल माल ॥ नं० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तात कहे विपधर पणे, रहेतां शैल अलंच ॥ कारण शुं शुं अनुभव्यां, कहीयें ते अविलंब ॥ १ ॥ पवन भखत गिरि कंदरें, निर्गत हुउ दिनेश ॥ रजनी समय साधक धसी, आव्यो मुज उद्देश ॥ २ ॥ दिनकर तरुना डुग्धथी, घस्युं भाल मुज तेण ॥ देखी मूल सरूप हग, बोलाव्यो नेहेण ॥ ३ ॥ आवो कुमर कला निला, करीयें मंत्र विधान ॥ इम कही पावक कुंम तट, लाव्यो दे सनमान ॥ ४ ॥ साधक वचनें व मयकी, आणी दीउं शब फेरि ॥ वेठो जपवा तेह तव, हुं पण वेठो घेरि ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ हरिहां सुज्ञानी साहेब मेरा वे ॥ ए देशी ॥

॥ जिम जिम जाप जपे ते योगी, आहूति ये अवसान ॥ तिम तिम शब ऊपकी पके, तमफमतुं रोष निदान ॥ हठीलो योगिणी आई वे, अरिहां रीस भराई वे ॥ १ ॥

॥ ह० ॥ आधी रातिमां गगन विचालें, वागां डमरू डाक ॥ वीर बावन आगें चलें, पाछंता पोढी हाक ॥ ह० ॥ २ ॥ अन्नयकी उद्भट उतरती, शक्ति क हे रे धीठ॥ मृतक अशुद्ध आणी किस्युं हुं, तेडी कां जूपीठ ॥ ह० ॥ ३ ॥ इम कहेती योगीनें साही, नाखे अगनिनें कुंड ॥ नागपाशने बंधनें मुज, बे कर बांध्या प्रचंड ॥ ह० ॥ ४ ॥ सुंदर रूप कुमर तेमाटें, मारी ले कुण पाप ॥ इम कहेती नन मारगें, बिहुं पग ग्रही डली आप ॥ ह० ॥ ५ ॥ वे शाखा विच हुं प ग नीडी, उंचा पग शिर हेठ ॥ टांगी मुजनें ए वडें, उडी गई लेती कुलेठ ॥ ह० ॥ ६ ॥ शब ते तिमहिज उडी तिहांथी, वलगुं गुंडाले आय ॥ पुरलोकें जोयुं वली, तिहां पाछी कोट फिराय ॥ ह० ॥ ७ ॥ लोक कहे दीसे छे बांधुं तो, किम अशुचि ए कीध ॥ नृप कहे मुखमां एहनें, नासा पल होशे कुशुद्ध ॥ ह० ॥ ८ ॥ लोक कहे इम कहिजतां राजा, जोवरावे जण पास ॥ दीठी वलगी दांतमां, नासा तिण आयो विसास ॥ ह० ॥ ए ॥ ए में साधकनें न जणाव्युं, कुमर करे इं म खेद ॥ नूप कहे नवितव्यनां, मेटीजें केम नमेद ॥ ह० ॥ १० ॥ नूप कहे केम करथी छूट्या, बांध्या वि

पधर पाश ॥ सुत कहे तेहनुं पुंठकुं, मुज मुखमां आव्युं उकास ॥ ह० ॥ ११ ॥ क्रोध जरी चाव्युं में तेहथी, पीड्यो पन्नग जोर ॥ नर्म थई हेठो पड्यो, न चढशुं विष मंत्रथी घोर ॥ ह० ॥ १२ ॥ दोय पहोर रयणीना काढ्या, दुःखमां में विलखात ॥ संकट सहु टलियां हवे, मलतां क्रम योगें तात ॥ ह० ॥ १३ ॥ वचन कह्युं सुरशक्ति मृतकें, ते मलियुं प्रत्यक्ष ॥ मुज विरतंत कह्यो सवे, तुम आगल पूरी पक्ष ॥ ह० १४ ॥ लोक प्रशंसें शिर धुणंतां, अहो हो अतुल बलवीर ॥ थोका काल मांहें घणी, जल सांसयो पीम शरीर ॥ ह० ॥ १५ ॥ नावे वचन पथ मन नवि मावे, कहेतां पण जे वात ॥ ते संकट जलराशिनो, तारु एक तुंहीज तात ॥ ह० ॥ १६ ॥ अहो साहस निर्जय पण माया, बुद्धि महोद्यम खाल ॥ उपगारक करुणापणुं, दृढता मति पुण्य प्रकाश ॥ ह० ॥ १७ ॥ नारि सही लक्षण लाखीणी, मलियो अमनें वेग ॥ लोक अनेक करे तिहां, इम वर्णन गुणमति जेग ॥ ह० ॥ १८ ॥ नृप कहे नंदन मंकस ते, देखाको ठे क्यांहिं ॥ कुमर नृपति जण विंटीउ, देखामे जईने त्यांहिं ॥ ह० ॥ १९ ॥ हरखें लोक मल्या उत्कर्ष, निरखे पावक कुंम ॥ सोवन पुरिसो तिहां तिणें, दीठो

जलहलतो दंम ॥ ह० ॥ २० ॥ ठेयां पण निशिमां हें वाधे, शीश विना जस अंग ॥ पुरसो तेह कढावीनें, जंमार धस्यो नृप चंग ॥ ह० ॥ २१ ॥ सकुटुंबो निज मंदिर आव्यो, रंग जस्यो नर नेत ॥ दस दिन रंग व धामणां, वरताव्यां मंगल हेत ॥ ह० ॥ २२ ॥ त्रीजा खंमनी आठमी ढालें, जांग्या विरह वियोग ॥ कांति विजय कहे पुण्यथी, लहियें मनवंठित जोग॥ह०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नगर वन शोधतो, मलयकेतु मतिवंत ॥ पुहवी ठाण नरिंदनें, वेगें आवी मिलंत ॥ १ ॥ वात प्रकाशी विगतथी, वर कन्यानी एण ॥ जगिनीपति जगिनी बिहुं, मेल वियां नृप तेण ॥ २ ॥ कुशल प्रश्न पूर्वक सहु, हरखित बेठां ठाण ॥ वरकन्यायें आपणुं, दाख्युं चरित्र वखाण ॥ ३ ॥ मलयकेतु शिर धूणतो, पामे मन अचरिज ॥ नवली वातें केहनुं, चित्त न चित्र जरिज ॥ ४ ॥ गोष्टि महारस सागरें, करता हर्षण केलि ॥ जुख तृषा निद्रा प्रमुख, न गिणे रसनें खेलि ॥ ५ ॥ मज्जण जोजन वस्त्रथी, सत्कास्यो नृपनंद ॥ बांध्यो बेहेंनी नेहनो, रहे तिहां स्वछंद ॥ ६ ॥ केताइक दि

न त्यां रही. मागी नृप आदेश ॥ जननी जनक वधाव
वा. करे प्रयाणुं देश ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ घरे आवोजी आंबो मोरीउ ॥ ए देशी ॥

॥ मलय कुमरने नृप कहे, संक्षेपण मन न वहंत ॥
गुणवंताजी कुमर कलानिला ॥ तोपण कहेवा व
धामणी. पठ धारो पुरि मतिवंत ॥ गु० ॥ १ ॥ प्रीति
लता सिंची रसे. पहेलांथी वधारी जेह ॥ सफल हूई
तुम आवतां, पोता वट राखी अछेह ॥ गु० ॥ २ ॥
वीरधवलनें मुज वीनति, कहेजो करी कोडि प्रणाम
॥ मुज ऊपर हित आदरी, गणजो लघु दास समान
॥ गु० ॥ ३ ॥ महबलनें मलया प्रत्यें, पोहोतो आ पू
ठण काज ॥ देखी दंपती ऊठियां, बोलावे वचनें स
लाज ॥ गु० ॥ ४ ॥ महबल कहे मुज ससुरनें, कहे
जो जई कोडि सलाम ॥ चोर थयो हुं रावलो, खम
जो ते गुनह प्रकाम ॥ गु० ॥ ५ ॥ त्रिण शीखें तुम
नंदनी, लेई आव्यो परनो अधीन ॥ उपजाव्युं दुःख
आकरुं, ते करज्यो मांई वात विलीन ॥ गु० ॥ ६ ॥ मल
य जगी मलया कहे, बांधव मुज वात नितार ॥ वी
नवशो माय तातनें, मुज आगमनादि प्रकार ॥ गु० ॥
॥ ७ ॥ चिंता न करशो चित्तमां, मुज सुख शाता वे

आंहिं ॥ चतुर तुमें पण चालतां, सावधान रहेजो रा हिं ॥ गु० ॥ ८ ॥ वचन सहुनां चित्त धरी, गलगल तो थाय विदाय ॥ उपपुर लगें आडंबरें, महिपति पोहोंचावा जाय ॥ गु० ॥ ए ॥ केटले दिन चंद्रावती, पो होंच्यो कहे सकल वृत्तांत ॥ खबर लही माता पिता, पामे तिहां हर्ष अनंत ॥ गु० ॥ १० ॥ महबल मलया संगमें, विलसंते निवहे काल ॥ एक समय बेठा बि न्हे, उंचा मंदिरनें जाल ॥ गु० ॥ ११ ॥ नाक विहु णी नायिका, आवी एक मंदिर बार ॥ महबल देखी ने कहे, एक पश्यतहरनी नारि ॥ गु० ॥ १२ ॥ थिर मीटें तव उलखी, प्रमदायें ते उपमात ॥ प्रीतम क नकवती इहां, दीसे छे आवी कुजात ॥ गु० ॥ १३ ॥ गुह्य न कहेशे लाजती, जो उलखशे मुज देख ॥ ते हथी हुं पमदे रहुं, पूछो अवदात विशेष ॥ गु० ॥ १४ ॥ इम कहेती जुवणंतरें, बेठी जइ सुणवा विगत्त ॥ क नकवती आवी करे, नृप नंदनने प्रणीपत्त ॥ गु० ॥ १५ ॥ आदर दे पूछ्या थकी, कहेशे इहां आप चरित्त ॥ नवमी त्रीजा खंमनी, कांते कही ढाल पवित्त ॥ गु० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पत्तणे सा चंद्रावती, नगरीपति उद्दाम ॥ वीरध

वल नस हुं प्रिया, कनकावती इति नाम ॥ १ ॥ मोप
रि कोप्यो महीपति, एक दिवस विण काज ॥ तव हुं
रूठी नीकली, मूकी सकल समाज ॥ २ ॥ मल्यो वि
देशी मुजाने, तरुणो एक ठयल्ल ॥ तस संकेत सुरि
गृहें, मली राति हुं वल्ल ॥ ३ ॥ देखाडी जय चोरनो,
वस्त्रादिक मुज लीध ॥ मुत्तावलीनें कंचुकी, आप हृथु
तिणें कीध ॥ ४ ॥ शेष जणस साथें मुने, घाली पेटी
मांहिं ॥ कपट करी ते धूरतें, दीठ यंत्र जटकाहिं ॥
॥ ५ ॥ संकेती बीजो तिहां, आव्यो धूरत दोडी ॥
बिहुं उपाडी मंजूषडी, नाखी नदीयें रोडी ॥ ६ ॥ अ
वलंबन विण पवनथी, खाती जोल अठेह ॥ गुहिर
नदी गोला जलें, तरी तरी जेम तेह ॥ ७ ॥ कुमर क
हे किणे कारणें, नाखी तुजनें नीर ॥ अथवा तेहने
ओलखे, जो उन्ना होय तीर ॥ ८ ॥ तेह कहे कारण
किस्युं, हता अजाण्या धूत ॥ निःकारण वैरी इस्या, गया
करी करतूत ॥ ९ ॥ कुमर कहे हो धूरतें, कीधो अनुचित
खेल ॥ शीश धूणंतो आगलें, पुठे कथा उकेल ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ वेकलें जार घणो ठे

राज, वातां केम करो ठो ॥ ए देशी ॥

॥ जलपूरें ते तरती पेटी, प्रात समय इहां आवी ॥

यक्ष धनंजय जवन समीपें, गोला कंठें ठावी ॥ १ ॥ साची वात कहां छां राज, जे वीती छे अममां ॥ तिलक र जूठ कहुं नहीं मोहन, मलताना संगममां ॥ साची० ॥ ए आंकणी ॥ लोजसार चोरें जलमांथी, काढी जार गरिष्ठी ॥ तालुं जांजी जोतां मांहे, वस्त्र सहित हुं दीठी ॥ सा० ॥ २ ॥ शैल अलंब विषम कंदरमां, लेई गयो मुज छाने ॥ द्रव्य सहित मंदिर पोतानुं, देखाड्युं बहुमानें ॥ सा० ॥ ३ ॥ नेहरसें मीजी मुज जींजी, तस संगे मन मोदें ॥ पोहोर दोय रही तिहां थी इंणे पुर, आव्यो काज विनोदें ॥ सा० ॥ ४ ॥ पाप दिशाथी जूपें साही, सांजे वडले बांध्यो ॥ पर्वत शिखर रही में जोतां, मोहन विटंबन सांध्यो ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ राति समय गई पासें रडती, तिहां मली हुं तुमने ॥ आगल वात सकल जाणो छो, ए वीत्युं छे अमने ॥ सा० ॥ ६ ॥ आवो द्रव्य घणुं देखाडुं, इंम सुणी महाबल ऊठे ॥ कह्युं तातने तात कुमरशुं, चाल्यो त्यां तस पूंठें ॥ सा० ॥ ७ ॥ वस्तु हती जे जे हनी तेहनें, दीधी सर्व संजाली ॥ शेष द्रव्य लेइ नरपति नगरें, आव्यो पाछो चाली ॥ सा० ॥ ८ ॥ धन आपी सत्कारी कनका, आवे कुमर निवासें ॥ लखमी

पुंज सहित मलया त्यां, देखी बेठी पासें ॥ सा० ॥ ए ॥
चमकी चित्त विचारे ए किम, इहां आवी जीवंती ॥ कू
पथकी निकशी किम परणी, ए मुज वेरणी हुंती ॥
॥ सा० ॥ १० ॥ फरके अधर शोके नाहिं पूछी, रही
वदन निरखंती ॥ रखे चरित्र मुज चावां पाके, मन
मां इम बीहंती ॥ सा० ॥ ११ ॥ लखमीपुंज मनो
हर सहारो, लीधो तो जिण धूतें ॥ ए पापणीने आ
णी दीधो, दीसे तेण कुपूतें ॥ सा० ॥ १२ ॥ जाणुं न
हीं के लीधो इहुंणे, खेली नवलो फंदो ॥ हवणां तो ए
हिज मुज वैरी, कीधो इम दिल संदो ॥ सा० ॥ १३ ॥
कहे मलया माता ठो हमां, एकाकी किम आव्यां ॥ कुश
ल न दीसे नाक वणी कां, के किणे कसें सताव्यां ॥
॥ सा० ॥ १४ ॥ कुमर वणे पदमिणी मत पूछो, क
हेशुं हुं तुम आगें ॥ दिन न खमे कारज ठे बहुलां, क
हेतां वेला लागे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शीख करी नकटीनें
आप्यो, शूने मंदिर पासें ॥ सुख मीठी हियफासां धी
वी, वासी तिण आवासें ॥ सा० ॥ १६ ॥ प्रति दिन
सें मलया उपकंठें, आवे कनका रंगें ॥ थई विशवा
सिणी विरचवासिणी ने, नव नव कथा प्रसंगें ॥ सा० ॥
॥ १७ ॥ निज निद्रासे मलया केरां, शोक समी निश

दीस ॥ सुख न्नोगवतां मलया एहवे, धरे गर्न सुजगीश ॥ सा० ॥ १७ ॥ ऊपजतां मोहोला पीउ हेजें, पूरे नव नव न्नातें ॥ प्रसव समय आसन्न हूउ तव, दीपे राणी गातें ॥ सा० ॥ १ए ॥ त्रीजे खंमें चावी दशमी, ढाल महारस पूरी ॥ न्नांखी कांतिविजय बुध नेहें, निरुपम राग सनूरी ॥ सा० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

इंण अवसर महबल प्रत्यें, दीये तात आदेश ॥ वत्स विकट न्नट साजसुं, करो चढाई वेस ॥ १ ॥ नामें क्रुर सज्यो गढें, पल्लीनायक क्रूर ॥ करे उपद्रव देशमां, ते निर्कांटो दूर ॥ २ ॥ सन्ना समक्षें दक्ष ते, तात वचन परमाण ॥ मलयानें पूठण न्नणी, गयो न्नुवन गुणखाण ॥ ३ ॥ चिंताकुल प्रमदा कहे, हुं आवीश पीयु साथ ॥ दूर रहीने किम चढुं, विषम विरहने हाथ ॥ ४ ॥ कुमर कहे अवसर नहिं, रहो करी दृढ चित्त ॥ लान्नचित्त गुटिका कन्हे, राखो गुण संजुत्त ॥ ५ ॥ जाणे तुं गुण एहना, करजे खरां यतन्न ॥ ते आपी पन्नणें वली, महबल विरह विखिन्न ॥ ६ ॥ पदमिणी तो पांखे हिये, आवे विरह न्नरेय ॥ गएया दिवसमां ते न्नणी, आवीश कार्य करेय ॥ ७ ॥ ताल वचन जो

अवगणुं, तो लागे कुललाज ॥ दीर्ठ अनुज्ञा सुंदरी, जिम साधुं जइ काज ॥ ८ ॥ नयणें आंसू सींचती, ना खे मुख नीसास ॥ प्रीतम वहेला आवजो, बोली ए म उदास ॥ ए ॥ लेइ अनुमति जणे मनें, बांधी तरकस वेग ॥ पाठी मींटें निरखतो, चल्यो नवनथी वेग ॥ १० ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ अब घर आवो रे रंगसार ढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ कनकवती मुखें मीठी रे धीठी, कपट महा विषवे लि ॥ अहनिशि जोवे रे ठल मलया तणुं ॥ अनुया यी वेसे रमे रे धीठी, वात करे मन मेल ॥ अह नि० ॥ १ ॥ एकलमी नवनें रही रे धीठी, मुज नाग्यें ए नारि ॥ अ० ॥ चिंती इम ठलकेलवी रे धीठी, आवी सदन मजारि ॥ अ० ॥ २ ॥ वेठी मुख करमां ठवी रे गोरी, करती मन उदवेग ॥ प्रमदा निहाली रे जरते लोयणां ॥ वेसे पासें आवीनें रे धीठी, पूछे डुःख धरी नेग ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ अकथकथा कहे मेलवी रे धीठी, रीजावे रति आणि ॥ प्रम० ॥ दिवस गमावे रंगमां रे गोरी, कनकाशुं रसमाणि ॥ नवनव नातें रे करनी खेलणां ॥ ४ ॥ कहे मलया माता इहां रे जोखी, रातें करो विश्राम ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चा

लणां ॥ पयमां साकर भेलवी रे धीठी, चिंतवती म
न ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥ ५ ॥
दिन जिम रजनी नीर्गमे रे गोरी, ऊग्यो दिनकर प्रा
त ॥ तव इम बोली रे करती चालणां ॥ तुज पूंठें
एक राक्सी रे गोरी, लागी छे कम जात ॥ नव नव
भांतें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीठी भर रातमां
रे गोरी, काढी दूरें खेधि ॥ नव० ॥ जो तुं मुजनें
आदिशे रे गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज
नावे रे मनमां चोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी
थई रे गोरी, टालुं एहनुं ठाम ॥ जिम तुज नावे० ॥
मलया मन भोलापणे रे गोरी, माने साचुं ताम ॥
तव इम बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जीहा दंत
भलाववी रे गोरी, जे शीखववुं तुज्क ॥ तव० ॥
मया करी मुज ऊपरें रे भोली; करो उचित जे
गुज्क ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ए ॥
नगरीमां तेहवे समे रे धीठी, देखी मरगी ईति ॥ नव० ॥
भूप कन्हे कनका गई रे धीठी, तेहने देइ प्रतीति ॥
रहस्य लहीनें रे कहे इम बोलणां ॥ १० ॥ तुम आ
गें एक वारता रे सामी, कहेवी छे धरो कान ॥ रह० ॥
तुज हितनी तेतो कहुं रे सामी, जो द्ये जीवित दान

॥ रह० ॥ ११ ॥ अचरय हजो कहे राजीयो रे जोली, कहेतां न कर संकोच ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चो लणां ॥ जगमांहे तेहिज वालहा रे जोली, देखाके जो चोच ॥ जिम० ॥ १२ ॥ तेह कहे ए राक्षसी रे सामी, तुम बहूअर दीसंत ॥ नव० ॥ मुज वचनें नवि वीससो रे सामी, तो देखाकुं तंत ॥ रह० ॥ ॥ १३ ॥ रयणीमां रही वेगला रे सामी, जो जो आज़ चरित्र ॥ नव० ॥ रातें थई ए राक्षसी रे सामी, साधे राक्षस मंत्र ॥ नव० ॥ १४ ॥ अंगणमां नाचे हसे रे सामी, रमे जमे वलगंत ॥ नव० ॥ दिसिदिसि नयणां फेरवे रे सामी, फेंकारी ज्युं रटंत ॥ नव० ॥ ॥ १५ ॥ फेंकारीथी उछले रे सामी, पुरमां मरगी कष्ट ॥ ग्रहशो जो जाई निशें रे सामी, करशे कांई अनिष्ट ॥ नव० ॥ १६ ॥ प्रातसमय सुजटो कन्हें रे सामी, करजो एहनें बंध ॥ जिम तुक नावे रे मनमां चोलणां ॥ पहेलां पण नृपनें हतो रे सामी, पूरवो कष्ट निबंध ॥ रह० ॥ १७ ॥ एहवामां एहथी सुण्युं रे सामी, कारण ए अंतराल ॥ नव० ॥ तेहथी मन मेलुं थयुं रे सामी, चित्त चक्यो भूपाल ॥ नृपति विचारे रे करतो चोलणां ॥ १८ ॥ निर्मल मुज कुल लोकमां रे

सामी, थाशे हे सकलंक ॥ नृपति० ॥ लोक कलंक न लागशो रे गोली, लागजो विषहर रंक ॥ नृप० ॥ ॥ १९ ॥ रातें सर्व जणायशे रे गोली, बाहिर न जां खे वात ॥ तव इम बोली रे करती चालणां ॥ एव ऊघारुं पारकी रे सामी, एहवी नहीं मुज धात ॥ ॥ रह० ॥ २० ॥ सतकारी भूपें तिका रे धीठी, पोहोती भुवन विचाल ॥ अहोनिशि जोती रे० ॥ त्री जे खंमें इग्यारमी रे मीठी, कांतें कही ए ढाल ॥ नव नव भांतें रे करती खेलणा ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ राक्षसनी विनता तणो, रजनीमां सजी साज ॥ आवी मलयानें कहे, कनका कपट जिहाज ॥ १ ॥ पुत्री तुं घरमां रहे, हुंतो बाहिर जाय ॥ हणी निशा चर नारिनें, आवीश वहेली धाय ॥ २ ॥ शिक्षा देइ बाहिर गई, क्रूर चरितनी कूप ॥ वस्त्र उतारें अंगथी, करवा रूप विरूप ॥ ३ ॥ विविध रंग वरणें करी, रंगे आप शरीर ॥ ग्रहे उमाकी वदनमां, वलवलती वे पीर ॥ ४ ॥ रुंममाल कंठें धरे, कर साहे करवाल ॥ प्रत्यक्ष रूपें राक्षसी, थई खेले रोशाल ॥ ५ ॥ एहवे

ठाने रातिमां, आव्यो जोवा नृप ॥ अपर समीप गृ हं चल्यो, निरखे दुष्ट सरूप ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ होजी छुंवे छुंवे वर
सालो मेह, लशकर आया दरिया
पाररो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ होजी कामिणि करती नाच, देखे नृप ठाने रही होलाल ॥ होजी दीसे छे ते साच, जे मुजनें कनका यें कही होलाल ॥ १ ॥ होजी नृप चिंते चित्त एम, कुदंन दुर्येश ए किस्युं होलाल ॥ होजी एहथी नहीं जग खेम, मुजने पण विरुउं किस्युं होलाल ॥ २ ॥ होजी करवी न पके कचाट, पहेली जा समजावीयें होलाल ॥ होजी तेह जणी वनमांहिं, एहने हवणां हणावीयें होलाल ॥ ३ ॥ होजी इम कहेतां नरनाथ, कोपानलशुं परजल्यो होलाल ॥ होजी तेणी सेवक साथ, गुप्त पणें जण मोकल्यो होलाल ॥ ४ ॥ होजी मुज सुतरमणी एह, पापिणी मलया सुंदरी होला ल ॥ होजी रथ चाढी वन तेह, गुपत पणे हणजो परी होलाल ॥ ५ ॥ होजी करतां रातें काम, लोक न जाणे वातनी होलाल ॥ होजी इम सुणी सुभट उ दास, कन्या जीमी गातनी होलाल ॥ ६ ॥ होजी कर

लीधें करवाल, आवत सुभट निहालीनें होलाल ॥
होजी जिहां छे मलया बाल, कनका त्यां गई चाली
नें होलाल ॥ ७ ॥ होजी थरथरती विण सूज, जल
फलती बोले इस्युं होलाल ॥ होजी नृप भट हणवा
मुज, आवे छे करवुं किस्युं होलाल ॥ ८ ॥ होजी तुज
पासें हुं आज, नृप आदेश विना रही होलाल॥ होजी
ते माटे महाराज, मुज ऊपर रूठा सही होलाल ॥ ए॥
होजी क्यांहिक मुजने छिपाड, जणनी मीट न ज्यां प
डे होलाल ॥ होजी मन माने तिहां गाड, हाथ रखे
कोइनो अडे होलाल ॥ १० ॥ होजी मलयाने निर्देश,
पेठी तेह मंजूषमां होलाल ॥ होजी रोती नागे वेश,
बेसे मांहे एकंगमां होलाल ॥ ११ ॥ होजी तुरतज
तालुं दीध, अभय करी राखी तिका होलाल॥ होजी
आव्या सुभट प्रसिद्ध, करता रगत कनीनिका होलाल
॥ १२ ॥ होजी दीठी मलया तेण, बेठी रूप स्वभाव
नें होलाल ॥ होजी ते कहे डरथी एण, बदल्यो सांग
ऊटाकिनें होलाल॥ १३ ॥ होजी फिटरे पापणी दु
ष्ट, जाणी तुं किम मारशे होलाल ॥ होजी लागी लो
कां पुंठ, केटली सृष्टि संहारशे होलाल॥ १४॥ होजी
इम कहीनें ग्रही बांहें, काढी रथ चाढी तिसें होला

ल ॥ होजी चाल्या अटवी राह, श्वापद जिहां वांका
वसे होलाल ॥ १५ ॥ होजी करता अनादर इठ, दे
खी मलया चिंतवे होलाल ॥ होजी दीसे कांइक अ
निठ, इण सूलें माहारे हवे होलाल ॥ १६ ॥ होजी
हणवुं के वनवास, सुसरें निश्चय आदिस्यो होलाल॥
होजी मुज अपराध प्रकाश, अणजाणयो देख्यो किस्यो
होलाल ॥ १७ ॥ होजी के मुज पूरव कर्म, उदित हु
थ्यां फल आपवा होलाल ॥ होजी नहींतो माठा म
र्म, वनी आवे किम एहवा होलाल ॥ १८ ॥ होजी
कठिन थइ रे जीव, खमजे कीधां आपणां होलाल ॥
होजी दारुण कर्म अतीव, छूटे नहीं चाख्या विनां हो
लाल ॥ १९ ॥ होजी पूरव श्लोक संभारि, जणती
नियति निहालिनें होलाल॥होजी मूकी वन संचार,
आघुं पाछुं भालीनें होलाल ॥ २० ॥ होजी ठानी
ऊनक पाहारु, विषम थलीमांहे धरी होलाल ॥ होजी
महसमे नीम निराम, आव्या जण नगरें फरी होलाल
॥ २१ ॥ होजी प्रणमी नृपना पाय, वात सयल तिहां
कही होलाल ॥ होजी मलया मंदिर आय, नृपति
महीर करे वली होलाल ॥ २२ ॥ होजी नाक रहित
ते नारि, नृप जोवरावी मंदिरें होलाल॥ होजी दीठी

नहि किण ठार, नूप नणे नाठी खरी होलाल ॥ २३ ॥ होजी त्रीजे खंडें रसाल, ढाल कही ए बारमी होला ल ॥ होजी कांति विजय सुविलास, सुणजो श्रोता उजमी होलाल ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे दिन केटले, जीती तेह किरात ॥ तात चरण आवी नम्यो, प्रिया विरह अकुलात ॥ १ ॥ मलया नवने संचरे, त्यां नृप साही पाण ॥ वीतक चरित्र त्रिया तणा, कहे सकल सुविनाण ॥ २ ॥ कुमर निसासो नाखतो, बे कर घसतो आप ॥ गदगद कंठें कुंठ मन, करे एम उल्लाप ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ नटीयाणीनी देशी ॥

॥ नूपतिजी कांई कीधुं हो डुःख दीधुं मलया बालने, हाहा नूलो कांहीं ॥ चित्तमां कां न विचार्यो हो नवि धार्यो अवसर आपशुं, प्रकृति पलटी प्रांहीं ॥ नू० ॥ १ ॥ मुज आगम लगें नारी हो नवि धारी कामिनी धारीनें, कीधुं अनुचित कर्म ॥ नाला ज्युं चित्त खटके हो अति नटके अग्निसमा थइ, काम कर्यां विण मर्म ॥ नू० ॥ २ ॥ निर्नासा ते नारी हो ठल नारी दाव रमी गई, जाणुं एहनां मूल ॥ जोव

गयो किहां दीसे हो पूछी शें कारण मूलथी. एहनों एह कुसूल ॥ जू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणुं धरी, मंद वचन कहे एम ॥ जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां, कहो हवे कीजें केम ॥ जू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणां हो जल नयणां पूरण नाखतो. इम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रत्यें. साचुं सहि नरनाथ ॥ जू० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें लंठन चाढीउं, गोत्र उ मूल्युं एण ॥ उलंजा इम देतो हो नृपनंदन पोहोतो मंदिरें, अति पीड्यो विरहेण ॥ जू० ॥ ६ ॥ वल्लभ सुतनें पूंठें हो नृप उठी आवे इमणो, उघारे घर ताल ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज इठी दयिता राक्षसी, रूपें करती चाल ॥ जू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, हुई अपराधें दंक ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें छेदीनें, वांहकखी करी खंक ॥ जू० ॥ ८ ॥ कुमलाणा कां मनमां हो मंदिरमां आवी आपणो, संभालो घर सार ॥ अधमथकी जण हासो हो घर आथ विणासो जाणीयें, छेग न सहे जार ॥ जू० ॥ ए ॥ कुमर..वि

भासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीके जणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीवतां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउं कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मंजूषनी, उघाडे बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख नूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी छेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मयकारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंन ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंन ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताडी आडी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भंछी हो जणह थीकारें इहवी, काढी देशा छेह ॥ नृ० ॥१४॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनोहिं पासीउ, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अभिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हे हे मोह दुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी जूरें सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नडीया हो पुरवासी पडीया संभ्रमें,

फूकि फूकि जोलां खाय ॥ नृ० ॥ १६ ॥ त्रीजे खं
में फावी हो रस जावी वय आवी नली, ताती तेर
मी ढाल ॥ कांति कहे सांजलजो हो चित्त कलजो
कविता चातुरी, श्रोता थई उजमाल ॥ नृ० १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणे अवसर अष्टांगवी, पुस्तक हस्त धरेय ॥ आव्यो
गरक निमित्तिउ, महचल पास धसेय ॥ १ ॥ स्वस्ति व
चन मुख उच्चरें, जुज करी आघो सोय ॥ सचिवादि
क तेहनें नमी, थे सत्कार सकोय ॥ २ ॥ नृप नि
देशें आसने, बेठो नृपासन्न ॥ पेखी पुरातन पारखुं,
खोले शास्त्र रतन्न ॥ ३ ॥ जक्ति युक्तिशुं मंत्रवी, पू
ठे करी कर कोश ॥ उपकारी नैमित्तिया, जूठ गरक
अम जोश ॥ ४ ॥ अकलंकित इण इणी परें, कुमर
वधू सुगुणाल ॥ अम करथी तिम ऊतरी, जिम दा
लें परनाल ॥ ५ ॥ ता दुःखें महीपति हूउ, मरणो
न्मुख सकुटुंब ॥ अशन वसन रस परिहर्यां, न सहे
प्राण विलंब ॥ ६ ॥ तेह जणी कहो अम तणे, जा
ग्यें जाग्य विशाल ॥ मलया मलशे जीवती, पत्नणो
नेहनी जाल ॥ ७ ॥ जोशीनें साहमे मुखें, बेसी विनय
प्रकाश ॥ नृपति बोल्यो तत क्षणें, चारुवचन विलास ॥८॥

॥ ढाल चौदमी ॥ जोशीयडा रे नगर सीरोहीयो राय रे हो रसीया ॥ ए देशी ॥

॥ जोशीयडा रे, लगन निहाली जोय रे हो सुगुणा, कहेने गुणवंती मलशे क्यां वली हो सु० ॥ जो० ॥ क्षण खटमासी होय रे हो सु० ॥ मलया दरिसणनो सुत कौतूहली हो सु० ॥ १ ॥ जो० ॥ कहत म लावे वार रे हो सु० ॥ सुत मत थावे दुःखडे व्याकुली हो सु० ॥ जो० ॥ आतुर न सहे धीर रे हो सु० ॥ जगमां जिम न खमे पाणी पातली हो सु० ॥ २ ॥ जो० ॥ चित्तमांहे निरधार रे हो सु० ॥ लखिने लघु हाथें लगन लह्यो वही हो सु० ॥ जो० मलशे मलया नारि रे हो सु० ॥ अबला जीवती वरषांतें सही हो सु० ॥ ३ ॥ जो० ॥ कुमर सुणे तस वाणी रे हो सु० ॥ मीठडी जीवाडण सरस सुधा समी हो सु० ॥ जो० ॥ अवलंबे निज प्राण रे हो सु० ॥ काने पीयंतो कांई न करे कमी हो सु० ॥ ४ ॥ जो० ॥ पूछे कुमर उदंत रे हो सु० ॥ कहोने जीवंती किहां छे गोरडी हो सु० ॥ ॥ जो० ॥ जोशी तव पभणंत रे हो सु० ॥ सांभल सलूणा जे कहुं वातडी हो सु० ॥ ५ ॥ जो० ॥ जाणी न जाये क्यांहिं रे हो सु० ॥ निवसे वनमांहिं के पुरमां वली हो

सु० ॥ जो० ॥ सुखिणी दुःखिणी प्रायें रे हो सु० ॥ वींटी परिवारके किहां एकली हो सु० ॥ ६ ॥ जो० ॥ नरप ति तेड्या तेह रे हो ॥ सु० ॥ वनमां जाणी सुजटे मूकी सुंदरी हो ॥ सु० ॥ जो० ॥ अजय वीको सस नेह रे हो सु० ॥ आपीने पूछे मलया आशरी हो सु० ॥ ७ ॥ जो० ॥ कहो सेवक किणी रीत रे हो सु० ॥ माहरी आणाथी मलया क्यां ठवी हो सु० ॥ ॥ जो० ॥ ते कहे सा जय जीतरे हो सु० ॥ रोतीने मू की विकटाटवी हो सु० ॥ ८ ॥ जो० ॥ निरखी एहवां चिन्ह रे हो सु० ॥ अम मन जास्युं एहनें राक्सी हो सु० ॥ जो० ॥ नृपति मन निर्विन्न रे हो सु० ॥ कुणही व्यामोह्यो खेलें साहसी हो सु० ॥ ए ॥ जो० ॥ स्त्री हत्या महापाप रे हो सु० ॥ तिमही कुंण देशे हत्या गाजनी हो सु० ॥ जो० ॥ नहीं हणीयें इहां आप रे हो सु० ॥ करणी ए नहीं ठे रूमा लाजनी हो सु० ॥ ॥ १० ॥ जो० ॥ खांति गिरितटें ठव रे हो सु० ॥ पमनी आखमती जिम नावे वली हो सु० ॥ जो० ॥ एकलकी स्वयमेव रे हो सु० ॥ मरशे रमवमती रखमती आफली हो सु० ॥ ११ ॥ जो० ॥ इम मन धारी चाल रे हो सु० ॥ रोतीं वनमांहें मूकी जीवती हो सु० ॥ जो० ॥ आवी

जांख्युं आल रे हो सु० ॥ जयथी तुम आगें कही अ वती वती हो सु० ॥ १२ ॥ जो० ॥ नाठी मुजथी जे ह रे हो सु० ॥ सुहके ते करुणा रूके संग्रही हो सु० ॥ ॥ जो० ॥ विणठी मुज मति बेह रे हो सु० ॥ त्राठी ते पेठी जरू हीयके वही हो सु० ॥ १३ ॥ जो० ॥ नृ प निंदे इम आप रे हो सु० ॥ जणनें परशंसे पुरजन देखतां हो सु० ॥ जो० ॥ परिघल चित्त समाप रे हो सु० ॥ उत्तम जोशीने प्रणमे पेखतां हो सु० ॥ १४ ॥ ॥ जो० ॥ कुमर कहे तुज वयण रे हो सु० ॥ मलियुं ते साचुं अनुसारें तकी हो सु० ॥ जो० ॥ शोधो बाला र यण रे हो सु० ॥ एहेलें खोयुं ते निज हाथांथकी हो सु० ॥ १५ ॥ जो० ॥ त्रीजे खंरू ढाल रे हो सु० ॥ सुपरें ए जांखी रूमी चौदमी हो सु० ॥ जो० ॥ कांति वचन सुरसाल रे हो सु० ॥ सुणतानें लागें सरस सुधा समी हो सु० ॥ १६ ॥ इति

॥ दोहा ॥

॥ कुमर जणे मलया तणा, जनक जणी अवदात ॥ क हेवा चर चंड्रावती, पूरियें प्रेषो तात ॥ १ ॥ वीरधवल पण आगमी, करशे पुत्री शोध ॥ तिहां कदापि जो पामीयें, तो मुज पुएय प्रबोध ॥ २ ॥ करी प्रमाण

भूपें पुरुष, मूक्या चिहुंदिशि भूर ॥ निरखण लागा तेह पण, देश देशंतर दूर ॥ ३ ॥ समजावी निज तनु जनें. भूप जमाके जाम ॥ कंठें उतरतां कवल, पगपग ल्ये विश्राम ॥ ४ ॥ केते दिन निरखी धरा, धरापालनी पास ॥ आव्या नर कर जोमीनें, पभणे एम प्रकाश ॥ ५

॥ढाल पंदरमी॥मदनेसर मुख बोल्यो त्रटकी॥ए देशी॥

॥ सुण महीपति शुद्धि न पामी, फरि आव्या स वि वामी हे ॥ ससनेही रे गोरी, दीठी नहीं मलया किहां ॥ देश नगर गढ डुंगर सोह्या, जलथल वट अ वरोह्या हे ॥ ससलूणी रे गोरी, दीठी० ॥ १ ॥ पुर पाटण संवाहण पाटें, दुर्घट विषमी वाटें हे ॥ स० ॥ फरिया उद्भट अटवी घाटें, मलया जोवा माटे हे ॥ स० ॥ २ ॥ कुमर सुणी इम चिंता जुत्तो, चिंते मन दुःख खुत्तो हे ॥ स० ॥ पूर्व महापातक मुज विकस्यां, सुचरित्त संचय निकस्यां हे ॥ स० ॥ ३ ॥ निर्गमशुं किम दिन अतिलंबा., जोल्यो दुःखनी कुंबा हे ॥ स० ॥ हूउं वियोग प्रियाशुं माहरे, त्रान न दीसे आरें हे ॥ स० ॥ ४ ॥ हेहें शून्य महावन मांहिं, दरू खादर अवगाही हे ॥ स० ॥ मुई हशे हईडुं आफा ली, दयिता मुज सुगुणाली हे ॥ स० ॥ ५ ॥ वनग

हीर फिरती आथमती, किण कर चढशे रमती हे ॥ ॥ स० ॥ के कोइ निर्दय श्वापदसाथें, कीधी हशे निज हाथें हे ॥ स० ॥ ६ ॥ मुज विरहें नय नंगुर म हिला, सहेती संकट डुहिलां हे ॥ स० ॥ यूथ टली वनहरणी सरखी, मरशे नूखी तरसी हे ॥ स० ॥ ॥ ७ ॥ मुज साथें आवंती प्यारी, पापीयके में वारी हे ॥ स० ॥ सुखमांहेथी डुःखमांहे नाखी, दीन वदन हरिणाखी हे ॥ स० ॥ ७ ॥ गोरी तणो विरहो ज चाटें, करवत थईनें काटे हे ॥ स० ॥ मुज हीअरुं पत्र रथी कावुं, इंणी वेला नवि फाटुं हे ॥ स० ॥ए ॥ सुकुलिणी तुं चतुर चकोरी, द्ये दरिसण गुण गोरी हे ॥ स० ॥ देई विछोहो अलवें जारी, न करो प्रीत ठगोरी हे॥स०॥ ॥ १० ॥ संजारी इंम गुण संदोहो, विलवे कुमर समोहो हे ॥ स० ॥ अणीआलां जालां ज्यौं खटके, हियके विरहो जटके हे ॥ स० ॥ ११ ॥ मात पीता समजावे लेखें, सुतने वचन विशेषें हे ॥ स० ॥ पण सुत अरति पड्यो नवि समजे, विषम विरहमां अलजें हे ॥ स० ॥ १२ ॥ वचन निमित्त तणुं चित्त धारी, कुमर निरखण नारी हे ॥ स० ॥ ग्रही खरुग ढानो नली जांतें, निकल्यो माकिम रातें हे ॥ स० ॥ १३ ॥ हूउं प्रजात त

नुज नवि दीसे, शुं कीधुं जगदीशें हे ॥ स० ॥ कुमर गयो जोवा दयिताने, इम कहे पीउ प्रमदानें हे ॥ स० ॥ ॥ १४ ॥ लेहेशे आपद दुःख किम सहेशे, पग पालो कि म वहेशे हे ॥ स० ॥ नूमि शयन करशे किम बालो, नंदन अति सुकुमालो हे ॥ स० ॥ १५ ॥ वधू सहि त सुत मुखडुं जोस्यां, तहीयें कृतारथ होस्यां हे ॥ ॥ स० ॥ मात पिता इम चिंता दाहें, दोहिले दिवस निवाहे हे ॥ स० ॥ १६ ॥ नूख गई सुख निद्रा था की, नृप नंदन एकाकी हे ॥ स० ॥ गामागर पुर क रत प्रवेशा, निरखे देश विदेशा हे ॥ स० ॥ १७ ॥ श्री पंचासर पास प्रसादें, ज्ञान कथा संवादें हे ॥ स० ॥ पन्नरमी मीठी रसनाला, पूरण कीधी ढाला हे ॥ स०॥ ॥ १८ ॥ पूरण त्रीजो खंम वखाण्यो, मलय चरित्र थी आण्यो हे ॥ स० ॥ मलया सरस कथा इम नां खी, कांति वचन श्रुत साखी हे ॥ स० ॥ १९ ॥

इतिश्री ज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनि श्रीमलयसुंद रीचरित्रे पंमित श्री कांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत प्रबंधे मलयसुंदरी श्वसुरकुलसमागमनामा तृतीयः खंमः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीचतुर्थखंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री मोहनलता, वान वधारण मेह ॥ जिन सद्गुरु शारद तणा, नमुं चरण ससनेह ॥ १ ॥ सुणतां मलयानी कथा, टले व्यथानी कोडि ॥ कहेतां जस मन अन्यथा, वृथा तेह पशु जोडि ॥ २ ॥ मलय कथा उचितारथा, करे व्यथानो छेह ॥ कथे विचें विकथान्यथा, वृथा यथा स स तेह ॥ ३ ॥ त्रीजो खंड कह्यो इहां, सरस वचन रस कुंड ॥ उछाहें आदर करी, कहेशुं चोथो खंड ॥ ४ ॥ हवे महाबल वालही, मूकी निशि वन घोर ॥ कर्ण कठिन श्वापद तणा, सुणे शब्द अतिघोर ॥ ५ ॥ थरथरती डरती हिये, झरती आंसू नयण ॥ आरडती पडती कहे, विरहालां इम वयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, अम्मां मोरी पाणीडां गइती तलाव हे, हे मारुडे मेहेवासी डेरा ताणीया ॥ ए देशी ॥

॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, सुसरे न पूछ्यो मुज को वंक हे, हे कोपेंनें कलकलियो राणो मोपरें हे

॥ अरूसां० ॥ ठवीनें कूकु कांइ कलंक हे. हे ठानेशुं अपमानें काढी वाहिरें हे ॥ १ ॥ अ० ॥ अटवी म विपसी दंकाकार हे. हे हियरूडुं थरकाये नयणें देखतां हे ॥ अ० ॥ सिंहना इहां बहुला संचार हे. हे मूगलें नरूकाडे विरूआ पेखतां हे ॥ २ ॥ अ० ॥ गुहरी गुंजे गोहा ठेली हे. हे चित्तानें वनकुत्ता चांटे दोटशुं हे ॥ अ० ॥ हलके गवरिया टोला टोलि हे. हे खेलंता आफलना नाखर कोटशुं हे ॥ ३ ॥ अ० ॥ सकलके सूअरनां सातां यूथ हे. हे तांतां हहं ठजातां थाता आकुलां हे ॥ अ० ॥ वडना ठहलना मांसे शुरू हे. हे रोपाला दाढाला वाघ महावला हे ॥ ४ ॥ ॥ अ० ॥ धसके सींगाला नरता फाल हे. हे रांवरिया अंवरिया लवें अति कूडणा हे ॥ अ० ॥ रखके कूकंता दोडा श्याल हे. हे रोमालां हठवालां रींछ फरे घणां हे ॥ ५ ॥ अ० ॥ खकता दुकवरूना ढोरू रोक हे. हे हींसे ते विण ठींरू पीरू भारका हे ॥ अ० ॥ दीपक करना नदनी मोजा हे. हे टीवरीया गुंवरीया मारकपारका हे ॥ ६ ॥ अ० ॥ वलनें कुरंताडे स्याहघोष हे. हे पंखामें मद वेंजा गेंडा आथरे हे ॥ अ० ॥ चमके चीत्तलफलिया रोम हे, हे जामा वन पाडा आमा आरके हे

॥ ७ ॥ अ० ॥ उलले हुंकलती नाहरकोडि हे, हे लुंकडि यां वांकडियां दरुवडियां दीये हे ॥ अ० ॥ चुंपती खेले गेलें जरखां जोडि हे, हे उग्रमता चलचलता मृ तलपा लीये हे ॥ ७ ॥ अ० ॥ फितकें फेंकारी मु ख फाडी हे, हे ससला ते सलसलता तरु मूलें लुकें हे ॥ अ० ॥ महके सुरहा मशाक बिलारु हे, हे चिंजू ता अति खीजू मदमाता ढुकें हे ॥ ए ॥ अ० ॥ खमके खोजालो खांतें नील हे, हे हूके ठल नवि चूके मांकरु वानरा हे ॥ अ० ॥ पंथें विषधरनी अरुखील हे, हे फुंकीनें परजाले जालां ऊंगरां हे ॥ १० ॥ अ० ॥ अ रुके चमरी वांसांजाल हे, हे वेढुने वली सावज ऊकें रोषमां हे ॥ अ० ॥ खडके ज्ञडके विहगा माल हे, हे खञ्चरिया ठल ज्ञरिया दोडे सूसमां हे ॥ ११ ॥ अ० ॥ अररु उन्नाला आरण उंट हे, हे दाढाला सुंढाला शर ज्ञ घणा उजेहे ॥ अ० ॥ रुवके रोहि बोहिरु बूट हे, हे गोकरुणा कंदलिया मिलि बेसे खूके हे ॥ १२ ॥ ॥ अ० ॥ घुरले घूघडा मांझी घोर हे, हे ज्ञड हडतां ह डहडतां जूत घणां ज्ञमे हे ॥ अ० ॥ चरडा चोरा करता जोर हे, हे धाडानें लेई आवे आडा मागमें हे ॥ १३ ॥ ॥ अ० ॥ एहवा ज्ञीषण वनमां मुज्ज हे, हे निर्दय नृप

ना सेवक सेली ते गया हे ॥ अ० ॥ कहियें को आग
ल दुःख गुज्ज हे, हे विण अपराधें नृप धीठा थया हे
॥ १४ ॥ अ० ॥ जाउं इहांथी क्यां हवे नाथ हे, हे
पीयरकुंनें अलगुं वैरी सासरो हे ॥ अ० ॥ पंखियां
दुःखथी साही हाथ हे, हे राखे त नवि दीसे कोई इ
हां आशरो हे ॥ १५ ॥ अ० ॥ सुसरानी शुं पलटी बु
द्धि हे. हे पछतावो हवे थाशे एहथी आगली हे ॥
॥ अ० ॥ पीउके लीधी नहिं कोई सुद्धि हे, हे निगमे
किम दाहाडा मो पाखें वली हे ॥ १६ ॥ अ० ॥ जनमी
कां हुं न मुई कांई हे, हे दुःखडामां नवि पडती इणवेला
इहां हे ॥ अ० ॥ विलवे मलवुं गोरी त्यांहिं हे, हे सं
भारे चित्त धारे श्लोक भणी तिहां हे ॥ १७ ॥ अ० ॥
अटवीमें प्रगटी पीडा पेट हे. हे बालायें त्यां सुत प्रस
व्यो भलो हे ॥ अ० ॥ रविनो ताजो तेज समेट हे, हे
अवतरीयो सुरवरीयो पुण्यें ऊजलो हे ॥ १८ ॥ अ०॥ सु
ननें खोले नविनें माई हे. हे आपणपें तिहां आप सूति
क्रिया करे हे ॥ अ० ॥ पभणे पुत्र वधावुं कांई हे,
पापिणी हुं इण वेला तुजनें आदरें हे ॥ १९ ॥ अ० ॥
सुतनुं मुखडुं जोती मात हे, हे हरखें ने तिम थरके
वन दखी करी हे ॥ अ० ॥ रजनी वीती थयो परभा

त हे, हे ऊठीने नावाने नदीयें ऊतरी हे ॥ २० ॥ ॥ अ० ॥ निर्मल जलमां न्हाई ताम हे, हे पावन थईने बेठी बाला कांठमे हे ॥ अ० ॥ समरी गुरुनें अ रिहंत नाम हे, हे संतोषे निज आतम वनफल मीठमे हे ॥ २१ ॥ अ० ॥ ज्ञानी वन कुंजें पाले बाल हे, हे हीयमलें हेजाले लालें गह गही हे ॥ अ० ॥ चोथा खंमनी पहेली ढाल हे, हे कांतें इम जलि जांतें पजणी ऊमही हे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंथें वहेतो ते समे, सारथपति बलसार ॥ आवी नदीयें ऊतस्यो, वींट्यो बहु परिवार ॥ १ ॥ अवल बनातां पाथरी, नवल किनातां तांणि ॥ मेरा दीधा महकता, कारुजणें जलठाण ॥ २ ॥ जल तृण इंधण कारणें, पसस्या जन वनमांहीं ॥ सारथपति पण संचरे, तनु चिंतायें त्यांहीं ॥ ३ ॥ संचरतो वन कुंजमां, पोहोतो मलया ठाम ॥ रुदन सुणी बालक तणुं, निरखे विस्मय पाम ॥ ४ ॥ बाल सहित बाला तिहां, देखी चिंते एम ॥ रूप अपूरव लवणिमा, व सती तरुण इहां केम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आतू मन लागुं ॥ ए देशी ॥

॥ सारथपति पूछे हसी, एकलडी कुण आंही रे ॥ गोरी कहे साचुं ॥ उत्तम कुल संजव प्रत्यें, कहे आकृति तुज आंहीं रे ॥ गो० ॥ १ ॥ मूकी इहां किणे अपहरी, के रीशाणी तुं आप रे ॥ गो० ॥ के कोइ इष्ट वियोगथी, कीधो तें वन व्याप रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पुत्र प्रसव ताहरे इहां, दीसे थयो गुणगेह रे ॥ गो० ॥ वनमांहिं बीहती नथी, कहे सुंदरी ससनेह रे ॥ गो० ॥ ॥ ३ ॥ धनवंतो व्यवहारीयो, नामें हुं बलसार रे ॥ गो० ॥ सागरतिलक पुरें वसुं, पर द्वीपें व्यापार रे ॥ गो० ॥ ४ ॥ नलुं कस्युं जगदीश्वरे, मेलवतां तुं आज रे ॥ गो० ॥ मुज घेर आवो वही, मूकी मननी लाज रे ॥ गो० ॥ ५ ॥ वचन सुणी सा चिंतवे, ए नर चपल पतंग रे ॥ गो० ॥ मातो धन यौवन मदें, करशे शील विजंग रे ॥ गो० ॥ ६ ॥ कूडो उत्तर वालतां, रहेशे शील अखंम रे ॥ गो० ॥ इम धारी बोली त्रिया, सुण गुणरयण करंम रे ॥ गो० ॥ ७ ॥ तनुजा हुं चंमालनी, कलहें कोपी आप रे ॥ गो० ॥ आवी रही वनमां इहां, मूकी निज माय बाप रे ॥ ॥ गो० ॥ ८ ॥ मेल मले किम ते घटे, जिम दिन

रजनी योग रे ॥ गो० ॥ देखी जोवा सारिखो, चहेरे
सघला लोग रे ॥ गो० ॥ ए ॥ आवासें पोहोंचो तुमें,
नहीं आवुं निरधार रे ॥ गो० ॥ दुःखियां मुज मा
बापनें, मलशुं जई इण वार रे ॥ गो० ॥ १० ॥ आ
कारें इंगित गतें, ए नहीं नीची जात रे ॥ गो० ॥
कपट पणें उत्तर करे, कारण इहां न जणात रे ॥
॥ गो० ॥ ११ ॥ सार्थपति इम चिंतवी, बोल्यो वचन
विचार रे ॥ गो० ॥ तुज चंचालपणुं कदे, नहीं
नांखुं सुण तार रे ॥ गो० ॥ १२ ॥ मुज आवासें
मानिनी, स्वेछायें रहो आय रे ॥ गो० ॥ तुज वचनें
बांध्यो सदा, रहेशुं हुं मन लाय रे ॥ गो० ॥ १३ ॥
इम कहेतो ऊरूपी लीये, अंकथकी तस बाल रे ॥
॥ गो० ॥ तस्कर जिम चाल्यो धसी, आवासें ततका
ल रे॥ गो० ॥ १४ ॥ शील विखंभन नयथकी, ते
थई कार्यविमूढ रे ॥ गो० ॥ तोपण ते पूंठें चली, नंद
न नेहारूढ रे ॥ गो० ॥ १५ ॥ हरख वचन बोलावतो,
बालाने बलसार रे ॥ गो० ॥ सुत निज वसनें गोप
वी, पेठो नई आगार रे ॥ गो० ॥ १६ ॥ दुःख कर
ती ठातें ठवी, आसासें देई बाल रे ॥ गो० ॥ दासी
एक प्रियंवदा, थापी करण संनाल रे ॥ गो० ॥ १७ ॥

अंबर भूषण भोजनां, आपें दाखी प्रीति रे ॥ गो० ॥
भांखे नहिं कम्बु मुखें, उपावण प्रतीति रे ॥ गो० ॥
॥ १८ ॥ नाम पूठाव्युं अन्यदा, वलसारें करी शान रे
॥ गो० ॥ हसुयें सा कहे माहरूं, मलयसुंदरी अभि
धान रे ॥ गो० ॥ १९ ॥ व्यवहारी इम चिंतवे, मम कहे
ए स्व चरित्र रे ॥ गो० ॥ पण नामें करी जाणीउं,
कुल एहनुं सुपवित्र रे ॥ गो० ॥ २० ॥ चाल्यो तिहां
थी वाणीयो, करतो पंथें मुकाम रे ॥ गो० ॥ उदधि
तिलक पुर आपणें, पोहोतो कुशलें ताम रे ॥ गो० ॥ २१ ॥
पुत्र सहित ठानी रहे, राखी महिला तेम रे ॥ गो० ॥
दासी एक विना कहे, जाणी न पके जेम रे ॥ गो० ॥
॥ २२ ॥ एक समय मलया प्रत्यें, निठुर इम पभणं
त रे ॥ गो० ॥ नाथ पणे मुजनें हवे, आदर तुं गुण
वंत रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ मुज संपदनी सामिनी, था
तां न कर विचार रे ॥ गो० ॥ सपरिवार हुं ताहरो,
रहेशुं आणाकार रे ॥ गो० ॥ २४ ॥ पुत्र नहिं को मा
हरे, ते ठामें तुज पुत्र रे ॥ गो० ॥ थाशे जय जय
मालिका, बधशे इम घरसूत्र रे ॥ गो० ॥ २५ ॥ व
चन सुणी कामांधनां, बोली मलया मुरू रे ॥ गो० ॥
कुलवंतानें नवि घटे, करवुं लोक विरूऊ रे ॥ गो० ॥

॥ २६ ॥ जाजो सर्वस आपथी, पमजो पण ए पिं
रू रे ॥ गो० ॥ चंद्रकिरण सम ऊजलुं, रहेजो शील
अखंरू रे ॥ गो० ॥ २७ ॥ वास्यो बहुल प्रकार
थी, नाख्यो वचन निठेरू रे ॥ गो० ॥ रह्यो अबोलो
बापको, न करे वलती जेरू रे ॥ गो० ॥ २८ ॥ रोषा
रुण घर बारणें, ध्ये तालक सुत लेय रे ॥ गो० ॥ प्रि
यसुंदरी निज नारिनें, पुत्र पणे ते देय रे ॥ गो० ॥
॥ २ए ॥ कहे सुंदरी ए पामीउं, बालक वनिका मां
हि रे ॥ गो० ॥ गुण रूपें तेजें नस्यो, रह्यो लक्षण अ
वगाहि रे ॥ गो० ॥ ३० ॥ व्यनिचारिणी को मारीयें,
नाख्यो एह प्रछन्न रे ॥ गो० ॥ पुत्र रहित आपण
घरे, होजो पुत्र रतन्न रे ॥ गो० ॥ ३१ ॥ ते बालकनें
आपणा, नाम तणे एक देश रे ॥ गो० ॥ नामें बल
इति थापना, कीधी निज उद्देश रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥
राखी धाइ अनेकधा, करवा पोढो बाल रे ॥ गो० ॥
बीजी चोथा खंमनी, कांतें पन्नणी ढाल रे ॥ गो० ॥ ३३॥

॥ दोहा ॥

॥ व्यवहारी हवे एकदा, पूरे प्रबल जिहाज ॥ पर द्वीपें
चालण तणा, करे सजाइ काज ॥ १ ॥ देइ शीखामण
नारिनें, पूठी स्वजन कुटुंब ॥ ढानी मलया जोरथी,

लेइ चाल्यो अविलंब ॥ २ ॥ साजित पूर्वे जहाजमां, जई बेठो शुभ संच ॥ सप्रपंच कारुक जनें, लीधां नांगर खंच ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ ईडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रवहण पूर्यो पाधरो रे, वारु पवननें टेग ॥ जलनिधिमां जल मारगें रे, वहेतो तीरनें वेग ॥ १ ॥ धमकीनें चाले वावर कूल ॥ हवे करशुं केहो सूल ॥ ध० ॥ इम चिंते सा सुधि भूल ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ परदेशें मुज वेचशे रे, के देशे वनवासी ॥ के कुमरणथी मारशे रे, के किहां देशे गासि॥ध०॥२॥कूणी इहां होजो हवे रे, पण मुज तनुज वियोग ॥ संतापें कापे हीयुं रे, जिम रोगी काय रोग ॥ ध० ॥ ३ ॥ जिवन मृत सम ते त्रिया रे, गल गलनी गलनाल ॥ पूछे प्रवहण नाथनें रे, वहेनी आंसु अणाल ॥ ध० ॥ ४ ॥ शुं कीधो मुज नंदनो रे, कहे सत पुरुष यथार्थ ॥ ते कहे तो सुत मेलवुं रे, जो करे मुज चरितार्थ ॥ ध० ॥ ५ ॥ पखिया निरखी आपमां रे, वाव नदीनो न्याय ॥ रावण शील सोहामणुं रे, ते रही मौन धराय ॥ ध० ॥ ६ ॥ अनुगुण पवनें प्रेरियुं रे, वहेतुं प्रवहण थल ॥ कुशलें केते वासरें रे, आव्या वावरकूल ॥ ध० ॥ ७ ॥ वंधारा उतरा विनें रे, आपी नू

पने दाण ॥ व्यवसायी व्यवहारीउ रे, वेचे विविध क्रियाण ॥ ध० ॥ ८ ॥ रंगारा हीरा तणा रे, निर्दय कारू लोक ॥ ते कुलें मलया वेचिनें रे, कीधा शेठें दोकम रोक ॥ ध० ॥ ए ॥ त्यां पण बहु कामी नरें रे, अद्भुत रूप निहालि ॥ काम महारस आरथी रे, ते पण न शक्या चालि ॥ ध० ॥ १० ॥ निज स्वारथ अण पूगतें रे, रूठा दुष्ट जुवाण ॥ निस्महेरा बोले नसा रे, प्रगटे रुधिर उधाण ॥ ध० ॥ ११ ॥ तास रुधिर नांमें करी रे, कृमिज चढावे रंग ॥ मूर्छागत बा ला हुवे रे, नस नस पीड प्रसंग ॥ ध० ॥ १२ ॥ वि च विच अंतर गालीनें रे, पोषे अशनें अंग ॥ वलती महीरगतारथी रे, मांमे रुधिरें रंग ॥ ध० ॥ १३ ॥ बाला चिंते में कीयुं रे, गत नव पाप अथाग ॥ तेह थकी आवी पड्युं रे, मोटुं दुःख दोनाग ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ विफलाशा नूनारणी रे, कां सरजी करता र ॥ देतां दुःख न हुवे दया रे, हे तुज सरजणहार ॥ ध० ॥ १५ ॥ नजरें आवी किहांथकी रे, एकज हुं जगमांहिं ॥ गाम नं हुंतु दुख्कने रे, तो आव्यो मो पाहिं ॥ ध० ॥ १६ ॥ जनमी क्यां परणी किहां रे, आवी वली किण देश ॥ नाज लख्युं बनी आवशे रे,

सुपरें तेह सहेस ॥ ध० ॥ १७ ॥ दुःख पूरें अबला
नारी रे, नाणे मनमां रोष ॥ एकांतें चिंते तिहां रे, स्व
चरित कर्म्मना दोष ॥ ध० ॥ १८ ॥ परहाके गकें
चढ्यो रे, ताके अनुचित दाव ॥ रस पाके थाके वही
रे. अहो नव विषम बनाव ॥ ध० ॥ १९ ॥ घरकी तन
लोही लीयुं रे, मूर्छाणी नूपीठ ॥ खरकी रुधिरें एकदा
रे. पक्षी नारंक शूनि दीठ ॥ ध० ॥ २० ॥ पंखी नन
थी ऊतरी रे, आशंकी पलपिंड ॥ चंच पुटें लेई ऊ
ड्यो रे. सहसा ते नारंड ॥ ध० ॥ २१ ॥ नन मार्गे
ज्यां संचरे रे, जलनिधि मांहि विहंग ॥ तेहवे बीजो
सामुहो रे. आव्यो नारंड तुंग ॥ ध० ॥ २२ ॥ आ
मिष लोजें तेहशुं रे, मंडे जूझ तिकोई ॥ लडतां चंच
थकी पडे रे, ठटके बाला सोई ॥ ध० ॥ २३ ॥ आसु
रिका के खेचरी रे, के सुरकुमरी काय ॥ लखमी के
कोई जोगिणी रे, जलमां रमवा जाय ॥ ध० ॥ २४ ॥
के धारा हरिवज्रनी रे. के दामिणी ये दोट ॥ इम
झण सुरें दीठी तिहां रे, करी करी ऊंची कोट ॥ ध० ॥
॥ २५ ॥ बाला गुणमाला मुखें रे. गणती श्रीनवका
र ॥ तरता गज मत्स्य ऊपरें रे. पडी सुकृत आधार
॥ ध० ॥ २६ ॥ चोथे खंडें ए थई रे, निरुपम त्रीजी

ढाल ॥ पुण्यथकी लहियें सदा रे, कांति सुजश जय
माल ॥ ध० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंखी मुखथी हुं पड्यो, जखपूंठें निर नाथ ॥ पण
जो ए जल बूडशे, तो ग्रहेशे कुंण हाथ ॥ १ ॥ मर
ण समय इंम चिंतवी, कारण अंत अनिष्ट ॥ आरा
धन हेतुक जणे, महापंच परमेष्ट ॥ २ ॥ नमस्कार
पद सांजले, जख वंको करी खंध ॥ तस मुख निरखी
सूचवे, पूर्वागत संबंध ॥ ३ ॥ रहि क्षणिक थिर चित्त
ते, दिशा एक निरधार ॥ तुरत तरंतो चालियो, जुज
लंबो विस्तार ॥ ४ ॥ अहो महोदयनी दिशा, हजी
अछे केतीक ॥ हाले नहीं जल उदरनुं, चाले इंम म
त्स ठीक ॥ ५ ॥ जल रमले कमला चढी, गजखंधें दी
संत ॥ के सुरपादप वेलडी, चलगिरि शिर विलसंत
॥ ६ ॥ संशय एम पमाडती, खगकुलने गंजगेल ॥ चा
ले छांटी जल कणें, जोती जलनिधि खेल ॥ ७॥ सुखें सुखें
प्रवहण परें, वहतो पंथ सपिठ ॥ उदधितिलक वेला
उलें, कुशलें पोहोतो मछ ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ चंद्रावलानी देशीमां ॥

॥ उदधितिलक पूरनो धणी रे, कंदर्प्प नामें जूपा

दो. तेह समय रयवाडीयें रे. चढिउ अरिनो सालो ॥ चढीयो नृपकुल शाल निशंको, दिगिकि डुमामें देखा णी मंको ॥ रंगें रमतो सायर कंठें, आव्यो वींट्यो सु चट उल्लंठे ॥ श्रीराजेंद्र जी रे ॥ निरखे जलनिधि खेल, पनोतो राजवी रे ॥ मूक्या जेणे डुदंत, सीमाडा नांज वी रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पुर साह्यामो जख आवतो रे. जलमां नृपें दीठो ॥ निरख्यो जण सरिखो वली रे, वेठो तेहनी पीठो ॥ वेठो तेहनी करी असवारी, लोक कहे ए नर के नारी ॥ कौतुक वाध्युं जोवा सारु. मलया माणस खांते वारु ॥ जी० ॥ २ ॥ ए क जणे गजमें चड्यो रे. दीसे जिम गोविंदो ॥ एह कवण जल मारगें रे, आवे ठे स्वछंदो ॥ आवे ठे नृप नांखे मानो. कोलाहलथी जाशे पाठो ॥ मौन धरी नि रख्या रही घाटें, जोवे जण ठाना रही थाठें ॥ जी० ॥ ॥ ३ ॥ जणथी कांइक वेगलो रे, आवे सायर तीर ॥ शुंडादंडें सुंदरी रे. उत्तारे ग्रही धीर ॥ उतारि ग्रही बाहिर मोरुं. सुंदर थल नूमि जइ ठोरुं ॥ प्रणमी व लियो पाठो ठाना, वली वली जोतो मुख प्रमदानो ॥ जी० ॥ ४ ॥ थयो अदृश्य मदा जलें रे. रयणायरमां मीनो ॥ नृपनि त्यां मलया कन्हे रे, आवे विस्मय लीं

नो ॥ आवे विस्मय देखी बाला, करपद आदें सकल चवाला ॥ लावण्य निधि ए कुण केम मीनें, मूकी इम कहुं राय नगीनें ॥ जी० ॥ ५ ॥ जोतो फिरि फिरि नेहथी रे, मछ गयो कुण हेतो ॥ एहज महिला पूछतां रे, कहेशे सवि संकेतो ॥ कहेशे सवि निज वीतक वातें, नक्र चक्रनां व्रण पूंछ गातें ॥ ए अहिनाणें सिंधुवगाही, जमीय घणुं दीसे जलमांही जी० ॥ ६ ॥ कोपवशें को वयरीयें रे, नाखी सायर पूरें ॥ के प्रवहण भांगे पडी रे, मछवांसे किहां दूरें ॥ मछवांसें बेठी इहां आवी, इम कहेतो नृप पूछे मनावी ॥ सागर तिलक पुरीनो नायक, कंदर्प नामें अछुं खल घायक ॥ जी० ॥ ७ ॥ निज वीतक कहेतां हवे रे, सुंदरी कांइ म बीहे ॥ कुंण तु किम मीनें धरी रे, आफलती दुःख दीहें ॥ आफलती आवी पुर एणें, हर्ष लही रमणी नृप वयणें ॥ चिंते मुज सुत रहस्यें छिपावी, राख्यो छे ते पुरी हुं आवी ॥ जी० ॥ ८ ॥ सुकृत महाफल पाकियुं रे, मुज दीठा धनधन्नो ॥ पुण्य लता जागे हजी रे, जो लहुं पुत्र रतन्नो ॥ जो लहुं पुत्र तणी शुद्धि इहांथी, तो चरित्रार्थ होये दुःखमांथी ॥ पण कहीयें कांइ एरी गेरी, ए नृप मुज बिहुं पखनो वैरी ॥ जी० ॥

॥ ए ॥ ए नृपनें हुं उलखुं रे, तात श्वसुर कुल द्वेषी ॥ जीवविखंमी माहरुं रे, लेशे सुत संपेखी ॥ लेशे सुत इम चिंती निःशासी, बोली बाला डुःरक चकासी॥ मुज चिंता तुमनें ठे केही, पुण्य विना रजलुं हुं एही ॥ जी० ॥ १० ॥ सेवक पत्नण नृपनें रे, जारी ए डुःख जारें ॥ न शके इष्ट वियोगथी रे, कहेवुं कांई करारें ॥ कहेवुं कांई शंके मत पूछो, डुःखमां वली वली लागशे उंछो ॥ मीठें वयण हवे आत्तासी, उपचरणा कीजें कांई खासी ॥ जी० ॥ ११ ॥ वली नृप पूछे मानिनी रे, तो पण कहे तुज नाम ॥ मंदस्वरें कहे माहरुं रे, मलया नाम निकाम ॥ मलया नाम निकाम नगारो, तदृधकी न लह्यो डुःख आरो ॥ सन्मानी नृप मंदिर आणी, सुख साजें राखी जिहां राणी ॥ जी० ॥ १२ ॥ व्रण संरोहण उंपधि रे, रुजवियां व्रण नासो ॥ दासी दास समीपनें रे, थापी पृथग आवासो॥ थापी पृथग वसन शणगारें, संतोषी नृपें तेणी वारें ॥ मुजनें इस नृपति सतकारें, वारु नहीं आगें इम धारें ॥ जी० १३ ॥ ने दिनथी तत्पर हुई रे, करवा धर्म विशेष ॥ ध्यान धरे अरिहंतनुं रे, ठांकि भ्रम विश्लेष॥ ठांकि भ्रम विश्लेष ।वचकें, आ

राधे जिनधर्म सुटेकें ॥ चोथे खंमें चोथी ढाला, कांति कहे रहे सुखमां बाला ॥ जी० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस नृपति जणे, मलयानें धरी राग ॥ ज डे मुजनें आदरी, कीजें सफल सोहाग ॥ १ ॥ पट्ट बं ध तुजनें घटे, नहीं अवर त्रिय लाग ॥ उचित हेम मय मुद्रिका, अहेवा मणि पर जाग ॥ २ ॥ तुज वच नामृत चंद्रिका, चाहुं जेम चकोर ॥ बीजी दयिता मोजमी, तुं शिरशेखर गेर ॥ ३ ॥ नेह कदे रस दे नहीं, कीधो एक पखेण ॥ बे पख निवहे रस दिये, जिम रथ चक्र युगेण ॥ ४ ॥ मुज मन लागुं तुज्क शुं, वास्युंही न रहंत ॥ कोमि विकल्प कदर्थना, लत्ता पात सहंत ॥ ५ ॥ जो मन जाणये आदरे, तो रस व धतो होय ॥ नहीतो पण ठे मुज वसू, हीये विचारी जोय ॥ ६ ॥ जाइश कीहां पाने पमी, नहीं मूकुं हवे दाव ॥ हसतां रोतां प्राहुणो, एहवो बन्यो बनाव ॥ ॥ ७ ॥ सा चिंते धुर जे ठवी, ठानी हीये निघट्ट ॥ वचन गमें ते डुष्टता, नृपें करी प्रगट्ट ॥ ७ ॥ धिग मुज यौवन रूपनें, लचणिम पमो पयाल ॥ पग पग जास पसायथी, लहुं लाख जंजाल ॥ ए ॥ बूमी कां नहीं जलधिमां, ऊ

खे उतारी कांइ ॥ नरकोपम दुःखमां पकी, है दै पाप प साइ ॥ १० ॥ चाहे शील विखंरूवा, कामंधल नृप धी ठ ॥ मरण शरण जीवित थकी, अद्वत यतनें इठ ॥ ॥ ११ ॥ काम कुचेष्टित मत्त नृप, ऊनो निरखी वा ल ॥ वधिशुं तन मन संवरी, बोली इम ततकाल ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ ठेको नांजी ॥ ए देशी ॥

॥ ठेको नांजी, नांजी नांजी नांजी, ठेको नांजी ॥ नारी नरकनी कूंकी ॥ ठे० ॥ आपे दुर्गति कूंकी ॥ ठे० ॥ अनुचित करतां मीठका बोलां, लोक कहे हा हाजी ॥ केई विरला हित मारग दाखे, तेहिज वाजी साजी ॥ ठे० ॥ १ ॥ परनारीथी संपद निकसे. विकसे अपयश माला ॥ पुरुष पतंगा ऊंपण एतो, विषम अगनिनी जाला ॥ ठे० ॥ २ ॥ जोतां अनुपम चित्र विणासे, लागो जिम मशि बिंदु ॥ तिम परदारा संगति राहु, म लिन करे गुण इंदु ॥ ठे० ॥ ३ ॥ धवल महाजस पट वि णासाके, परनारी रस ठांटो ॥ उत्तम कुल कीरतिपग वींधे, व्यसन महाविष कांटो ॥ ठे० ॥ ४ ॥ रूपन क र विषधरनां मुखमां, जिम जीवितनो सांसो ॥ तिम सुख शील तणी शी आशा, सेवे परत्रिय पासो ॥ ठे० ॥ ॥ ५ ॥ निज नारीथी तृप्त न नांनी, शुं विलखे दुन

माटे ॥ भूत जाणे जो तृप्ति नहीं तो, शुं एवुं कर चाटे ॥ ढे० ॥ ६ ॥ काननना तृणमांहे तुं सूतो, आग उंशीसें सलगे ॥ शीखमली साची हित जाणी, रहेनें मुजथी अलगें ॥ ढे० ॥ ७ ॥ हीये विचारी निरख रे घेला, मदि लामां शुं राचे ॥ दीसे चटुक कटुक परिणामें, इंद्रायण फल साचे ॥ ढे० ॥ ८ ॥ अनृत वचनगृह कंद कलह नुं, मोक्षपथिक पग बेमी ॥ अति आसंगें अबला विलगी, नाखे कुगति जथेमी ॥ ढे० ॥ ए ॥ शठ जन नें पण वलगी खटके, जिम खर पूंठे ढांची ॥ परदा रा काराघर सरखी, निरखी रहो मत राची ॥ ढे० ॥ ॥ १० ॥ कामदेवने आहूति देवा, नारी हुताशन कुं मी ॥ कामी धन यौवन त्यां होमे, देता निजतनु पिं मी ॥ ढे० ॥ ११ ॥ न्यायी नृप जिम जनक प्रजानें, पाले तिम अति रागें ॥ तुं नय ढंमी अनय मग हींमे, तो कहीयें को आगें ॥ ढे० ॥ १२ ॥ चूकवतां डु ष्कर जगमांहिं, साचो शील सतीनो ॥ ग्रहतां हुये डु लहो जीवंते, दृग विष नाग नगीनो ॥ ढे० ॥ १३ ॥ सत्यवती कोपे जे माथे, जस्म करे तस देहा ॥ तेह ज णी अलगो रहे समजी, नाखे कां कुल खेहा ॥ ढे० ॥ ॥ १४ ॥ वंश विशाल विमल कुल ताहारुं, जरियो गुण

संदोहें ॥ तो कां कुमति प्रसंगें जोला, पररमणीशुं मोहे ॥ ढे० ॥ १५ ॥ समजाव्यो बहु नय देखाडी, रामायें रस जरियो ॥ महा कलुष परिणतिथी धीठो, तो पण नवि उसरियो ॥ ढे० ॥ १६ ॥ ए नारीनुं जोरें पण हुं, मूकीश शील विखंडी ॥ सुखें करजो जस्म वपुष ए, इम चिंति थिति ठंडी ॥ ढे० ॥ १७ ॥ विलख वदन कंदर्प नरेसर, राज काजमां वलग्यो ॥ प्रमदा मिलन महोत्सव वन्हि, हृदय सदनमां सलग्यो ॥ ढे० ॥ १८ ॥ निर्जल देश पड्यो जिम माठो, तिम नृप विरही तलपे ॥ दृष्टि प्रसंगादिक मन्मथनी, दश दिशा वशि विलपे ॥ ढे० ॥ १९ ॥ आवर्जन करवा नृप तेहनें, वस्तु नवल नव मूके ॥ सती शिरोमणि वस्तु विशेषें, सुपनंतर नवि चूके ॥ ढे० ॥ २० ॥ वदन थयुं झांखुं मन पसर्या, चिंता जलधि तरंगा ॥ मरणोन्मुख मलया थई बेठी, राखण शील सुरंगा ॥ ढे० ॥ ॥ २१ ॥ धन्य धन्य शील धरे संकटमां, जे निज मन थिर राखी ॥ ढाल पांचमी चोथे खंडें, कांतिविजय शुभ जाखी ॥ ढे० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिवस एक मूकलो, तस्कर कोइ तका

य ॥ मुख ठवि फल सहकारनुं, गयणें ऊड्यो जाय ॥ १ ॥ चंचथकी नारें खिस्युं, जिहां अगासें राय ॥ नन्नथी नृपना अंकमां, ते फल पम्यिुं आय ॥ २ ॥ चकित चित्त करतल ग्रही, चिंते एम नरपाल ॥ अव सर विण किहांथी पम्युं, ए सहकार अकाल ॥ ३ ॥ अठे एक पुरपरिसरें, छिन्नटंक गिरितुंग ॥ तास विषम शिखरें सदा, वनना अंब अनंग ॥ ४ ॥ आएयुं तिहांथी सूकले, ए फल मधुर मलूक ॥ लची पम्युं तस वदनथी, नारें एह अचूक ॥ ५ ॥ आपुं को व ल्लन प्रत्यें, के आरोगुं आप ॥ क्षण एक एम विमासतो, नूपति थापे थाप ॥ ६ ॥ कहे सुन्नटने फल ग्रही, पोहोचो मलया पास ॥ अंतेउरमां आणजो, आपी अति विशवास ॥ ७ ॥ नूपति वचन तथा करी, सुन्नट विटल प्रसिद्ध ॥ आदरशुं तेणें जई, मल यानें फल दीध ॥ ८ ॥ विणकालें किम संन्नवे, ए फल अनुपम आज ॥ विस्मित इम नृपजणथकी, लीये अंब तजी लाज ॥ ९ ॥ सत्यापी फल आपीनें, थापी नूपति धाम ॥ उत्थापी कहे रायनें, पापी निजकृत काम ॥ १० ॥ महाडुःखें दिन नीगमे, तकत

नृपति निशि दाव ॥ एहवे समय विपाकथी, अस्त हूउं दिन राव ॥ ११ ॥

॥ ढाल ७मी ॥ वींदलीनी देशी ॥

॥ मलया एम विमासे, एतो नूंको मुज मन नासे हो ॥ नृपति मतिहीणो ॥ आणी हुं निज आवासें, कांइ न चढें मन विशवासें हो ॥ नृ० ॥ १ ॥ सुंदर शील वी गोशे, आकुं नें अवलुं न जोशे हो ॥ नृ० ॥ शाख लाखीणी खाशे, तो सूल किस्यो हवे होशे हो ॥ नृ० ॥ २ ॥ कामी होये निर्लज्जा, तस शी नगिनी शी न ज्जा हो ॥ नृ० ॥ बांधे चावी धज्जा, नवि जाणे ख ज्जा अखज्जा हो ॥ नृ० ॥ ३ ॥ इम धारी वेणी टंटो ली, काढी कचमांथी गोली हो ॥ नृ० ॥ आंबा रस मां चोली, बींदी करी सूधी घोली हो ॥ नृ० ॥ ४ ॥ नर हूउं फीटी नारी, दिव्य रूप कला संचारी हो ॥ ॥ नृ० ॥ सुंदर योवन धारी, जाणे मन्मथनो अवता री हो ॥ नृ० ॥ ५ ॥ वेगो मंदिर जालें, अंतेउर रूप्या ल निहाले हो ॥ नृ० ॥ सूको जिम रह्यो आलें, सुर नन्नी माल विचालें हो ॥ नृ० ॥ ६ ॥ अद्भुत रूप निहाली, थई राणी सवि कोपाली हो ॥ नृ० ॥ जा णे संचे टाली, इम थंनी रही विरहाली हो ॥ नृ०

॥ ७ ॥ चिंते ए कुंण वारु, सुंदर नर अति दीदारु हो ॥ नृ० ॥ ए सुरपति अवतारु, कहुं अवर पुरुष ते कारु हो ॥ नृ० ॥ ८ ॥ वसुधाथी नीसरियो, कोइ प्रत्यक्ष ए सुरवरियो हो ॥ नृ० ॥ विद्याधर गुणें नरियो, के सिद्ध पुरुष अवतरियो हो ॥ नृ० ॥ ए ॥ पीसी काम विकारें, निहणे त्यां नयण प्रहारें हो ॥ नृ० ॥ वेधी आरें पारें, तस रूप महारस धारें हो ॥ नृ० ॥ ॥ १० ॥ यामिक संशय पेठो, जोखें कुंण गोखे ए बेठो हो ॥ नृ० ॥ अंतेउर वशि एणें, कीधुं समजावी नेणें हो ॥ नृ० ॥ ११ ॥ नृपतिनें वीनवियो, आव्यो नृप त्यां धसमसियो हो ॥ नृ० ॥ नीरुपम तरुणो दीठो, अति शांत सुखासन बेठो हो ॥ नृ० ॥ १२ ॥ कुंण ए पेठो सौधें, चिंते नृप चढिउ क्रोधें हो ॥ नृ० ॥ मलया बदलें योर्द्धे, कुण मूक्यो मुज अवरोधें हो ॥ नृ० ॥ ॥ १३ ॥ नृपतें तेह दबावी, पूछ्या नरु भृकुटी चढावी हो ॥ नृ०॥ ते कहे मलया आणी, न गई क्यां बाहिर जाणी हो ॥ नृ० ॥ १४ ॥ बेठा छां घर द्वारें, राजेसरजी निरधारें हो ॥ नृ० ॥ कहे नृपति चित्त धारी, नर ए थयो तेहीज नारी हो ॥ नृ० ॥ १५ ॥ नृप पूछे जइ पासें, तुम रूप किस्युं ए नासे हो ॥ नृ० ॥ ते कहे

जेहवुं देखो, तेहवो तुं इहां शुं लेखो हो ॥ नृ० ॥ ॥ १६ ॥ नहिं खेचर अणुहारो. सिद्ध साधकथी पण न्यारो हो ॥ नृ० ॥ मलयानां इणें जमही, पहेस्यां वे पट ते तिमही हो ॥ नृ० ॥ १७ ॥ में रति रस मागंतें, नर रूप धख्युं कोइ तंतें हो ॥ नृ० ॥ जाणुं मलया एही, बेठी ठलवानें सनेही हो ॥ नृ० ॥ १८ ॥ महीपति कहे सेवकनें, इम अंतेउरमां न वने हो ॥ नृ० ॥ करशे अनरथ गाढो. कर साही बाहिर काढो हो ॥ नृ० ॥ १९ ॥ मलय सुंदरी इति नामें, का ढ्यो वहि भुज ग्रही तामें हो ॥ नृ० ॥ वाह्य रहे नृप राखे, एक दिन वली एहवुं भाखे हो ॥ नृ० ॥२०॥ रूप कख्युं शे योगें. नरनुं कुण तंत्र प्रयोगें हो ॥ नृ० ॥ हतुं स्वाभाविक जेहवुं, थाशे किम क्यारें तेहवुं हो ॥ नृ० ॥ २१ ॥ तव चिंते सा हियमामें, विलखे नृप जोगनें कामें हो ॥ नृ० ॥ मौन कन्यानी वेला, रहेशे व की एहनी मेला हो ॥ नृ० ॥ २२ ॥ मलया वाजी जीती. नृपतिनी मति गति वीती हो ॥ नृ० ॥ ठही जो ये ग्वंसें, कांतें कही ढाल थमंकें हो ॥ नृ० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कसी कसी नृप पूछीयुं. हसी न मेले मीट ॥

तींखो लागो ते तदा, जिम बावलनो चीट ॥ १ ॥ मलयकुमरी ऊपर हूउ, रोषारुण भूपाल ॥ मंमावे तन तर्जना, दिन दिन बूरे हवाल ॥ २ ॥ तामें ताते ताजणे, मारे लाठी लात ॥ मुक्की वली चूकी दीये, पामे नामी घात ॥ ३ ॥ घरसे कर्कश भूतलें, आकर्षे पग बंध ॥ हर्षें पर्षद निरखतें, धर्षें दे पग खंध ॥ ४ ॥ सिंचे नीचें कूपमां, निहणे पूंठि निबंध ॥ मोटे सोटें चोटीनें, नर्म करे तन संधि ॥ ५ ॥ नृपसुत ईम तामी जतो, चिंते हे किरतार ॥ कहीयें इहांथी नीसरी, ल हीशुं डुःखनो पार ॥ ६ ॥ एक दिवस निद्रावशें, पड्यो निरखी पुहरात ॥ रहस्यपणे पुर बाहिरें, वहे कुमर मधरात ॥ ७ ॥ पथिशालायें वीशम्यो, धरी मरण मन आश ॥ दीठो भमत इहां तिहां, अंध कूप तस पा स ॥ ८ ॥ तस कंठें उन्नो रही, चित्त चिंते दिलगीर ॥ पमशुं जो कर भूपनें, तो दहेशे बे पीर ॥ ए ॥ शरण नहिं महारें इहां, मरण विणा कोइ उर ॥ इष्ट संन्नारी आपणो, ईम बोली तिण ठोर ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥ उधवजी कहेशो बहु न
कहि ॥ ए देशी ॥

॥ प्रनुजी डुःखणी कांइ हुं सरजी ॥ ए आंकणी ॥

पीयु विरहो तीखी कातरणी, काटीकरे हिय पूर जी ॥ प्रीतम विण न शके कोइ सांधी, लाख मले जो दूर जी ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ वाहालानो मुज देई वीछो, दुःख संकटमां नाखी ॥ नाग्य रहित ज्यां त्यां हुं नटकुं, मधु नूलि जिम माखी ॥ प्र० ॥ २ ॥ दैव अटारा महाबल साथें, ए नव दीधो वियोगो ॥ परनव कंत पणे मुज तेहनो, मेलवजे संयोगो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कूआ शिर ऊनी नररूपें, देती इम उलंना ॥ सज्ज हूइ कूपें झंपावा, प्रेम नरी निरदंना ॥ प्र० ॥ ४ ॥ एहवे त्यां दयितानें जोतो, महबल ते दिन शेपें ॥ पहियशालमां रातें सूतो, निंद लही नवि लेशे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ हवे जावुं जोवा दिशि केही, इम चिंतवतो जागे ॥ मलयायें जे दीया उलंना. ते कानें जइ वागे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ एह अपूरव वचन प्रियानां, सरखा सुणतां लागे ॥ प्राण त्यागनां सूचक प्राहें, पफुंद नन मागें ॥ प्र० ॥ ७ ॥ संभ्रमथी ऊठ्यो त्यां नमकी, कहेतो इम मुख वाणी ॥ विफल महा साहस रस खेलें, मरण लीये कां ताणी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ शरण हजो मुज महबल पीयुनुं, इम कही झंपा दीधी ॥ कुमरें पण तस पूठें तिमहिज, ते अनुचरणा कीधी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ स्फुट चेतन

नर मूर्छा नाख्यो, लघु सादें इम नांखे ॥ मुज अव लाने ए दुःखमांथी, महबल विण कुण राखे ॥ प्र० ॥ १० ॥ कुमर जोवे विस्मित ते वचनें, कर पद तास उल्लासें ॥ सजग थयो नर मूर्छा नाठी, बेठो ऊठी पासें ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे किणे संबंधे, इणे मुज नाम संनाख्यो ॥ के मुज नामें कोइ सनेही, दुःखमां हियडे धाख्यो ॥ ॥ प्र० ॥ १२ ॥ पूछ्युं कहे साचुं कुंण तुं बे, कां पडियो इम कूपें ॥ उलखीनें स्वरनें अनुसारें, पुरुष कहे अति चूंपे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कुंण तूं बे किम आयो कूपें, पडियो कां मुज केडें ॥ इत्यादिक पूठी सहु पाठें, काम करो एक नेडें ॥ प्र० ॥ १४ ॥ निजथूंके मांजो मुज बिंदी, नांखुं जिम स्वसरूप ॥ तिम कीधुं तेणें तव मलयानुं, प्रगट हूवं धुर रूप ॥ प्र० ॥ १५ ॥ कूप नींतिथी एहवे नागें, बाहिर वदन विकास्युं ॥ अंधकूपमां तस मणि तेजें, दूरें तिमिर विणास्युं ॥ प्र० ॥ १६ ॥ दुर्लभ दयिता दर्शन देखी, उत्कंठयो सरवंगें ॥ सहसा आगल आवी क्यांथी, चिंते इम उमंगें ॥ प्र० ॥ १७ ॥ विण आन्नें वूठा घर मेहा, थातां संगम नीको ॥ अण चिंतित साजन मेलाथी, बीजो सुख सवि फीको ॥ प्र० ॥ १८ ॥ इम

कहीनें नयणें जल जरतो, पूछे तस विरतंत ॥ सापि कहे हियरु डुःख पूरी, धुरथी व्यतिकर तंत ॥ प्र० ॥ १ए ॥ कहे पिउ तें संकट सायरमां, पेसी डुःख अनुजवें ॥ जोग्य योग्य सुकुमाल शरीरं, कष्ट सह्यां किम अंगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासेंथी जे वलसारें, कनथीनें सुत लीधो ॥ अठे किहां ते सा कहे शेठें, मूक्यो इहां घरे सीधो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ लहेश्यो किम नंदन गुरु सूधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ थाशे सवि होशे जो इहांथी, बूटक वार कदापि ॥ प्र० ॥ २२ ॥ मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूछ्युं वली दयितायें ॥ आप चरित्र सघलां ते जांखे, कुमर यथा इछायें ॥ ॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख संजापण करतां वेहु,, रजनी त्यां निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंमें, पजणी कांतें उमाहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥रयणी गई प्रगमो हूउं, ऊग्यो रवि अनुरूप ॥ अनुपद जोतो राजिउ, आवे जिहां ठे कूप ॥ १ ॥ निरखी ते जण कूपमां, बोल्यो धरणी नाथ ॥ जूठे सहजरूपें त्रिया. विलसे ठे किण साथ ॥ २ ॥ अहो रूप रति सुतगना, चंदर गुण विज्ञान ॥ युगती जोमी जोमनां, नृ.

ल्यो नहिं जगवान ॥ ३ ॥ इंद्राणी सुरपति परें, रति रतिपति उपमान ॥ शोजे अनुपम जोमलुं, अनुगुण रूप समान ॥ ४ ॥ अजय हजो तुमनें बिन्हें, आवो कूपक कंठ ॥ दर्पांधल कंदर्प नृप, कहे राग रस बंठ ॥ ५ ॥ जूपें बिहुनें काढवा, कीधो मांची संच ॥ तव पीजनें जूपति तणो, मलया जणे प्रपंच ॥ ६ ॥ रस राच्यो आव्यो इहां, मुज पाठें कम जात ॥ कीधी कोरि कर्दथना, कामांधें दिन रात ॥ ७ ॥ मुज रूपें मोह्यो निलज, न गणे कुलनी कार ॥ आकर्षी निरखी निखर, हणशे तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो कूपथी, नीसरशुं कुशलेण ॥ शिरें सवाई वालशुं, यथा योग्य करणेण ॥ ए ॥

॥ ढाल आठमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग,
सोनारो ठोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी आवती रूमीजी ॥ श्यामा चढि बेसो आणो अंदेसो श्यावती रू० ॥ कुशलें उतरीयें विपत्ति उद्धरीयें रंगमां रू० ॥ बेठो इम कहे तो दोरी ग्रहेतो मंचमां रू० ॥ १ ॥ प्रसदा सपति जी बेठी बीजी मांचीयें रू० ॥ जूपति कहे जणनें पहेली धणनें खांचीयें रू० ॥ क्रम उचें नीचें सेवक खींचे

जोरशुं रू० ॥ गयणंगण गहेरो कीधो वहेरो सोरशुं रू० २ ॥ आतम उत्संमक जाणे करमंक सापना रू० ॥ निरखंत नराणा कलश पूराणा पापना रू० ॥ अंध कूपक आरें आवे करारें ज्यां त्रिया रू० ॥ नृपें लहि तावा चे कर आघा ताकिया रू० ॥ ३ ॥ सुख माहिं उतारी बाहेर नारी राजिये रू० ॥ बेठी पिउ विहुणुं ऊणुं डुणुं मन किये रू० ॥ महबल तस केके आव्या नेके कांठके रू० ॥ कोपें कलुपाणा नरनो ग णो दीनके रू० ॥ ४ ॥ चिंते एह रुपें अधिको मोपें वेरीयो रू० ॥ लावण्य पयोधि नारियें शोधि वर कीयो रू० ॥ मुज मीटथी रमणी सावी जमणी गजुवे रू० ॥ मीठो गाल पामी खोलनो कामी को हुवे रू० ॥ ५ ॥ मादलिउ मार्यो स परिवार्यो गोठिनो रू० ॥ नाखुं अंध कोठीमां जिम पोठी पोटिनो रू० ॥ थापी इम टूंकी कापी मूकी दोरडी रू० ॥ बंधनथी छूटी मांची त्रूटी उघडी रू० ॥ ६ ॥ पमिउ ततखेवा खातो ठवां कोरनां रू० ॥ नीचें दल नाना लागा कांठा जोरना रू० ॥ नारी तस पूठें पमघा उठे माहसें रू० ॥ नृ पें कर साही गर्व्वी वाहीनें तिसें रू० ॥ ७ ॥ आणी आवानें राय प्रकासे तेहनें रू० ॥ कुंण गरस नरि

थो तें आदरियो जेहनें रू० ॥ पूछी नवि बोले आंसू ढोले दुःखनां रू० ॥ निःश्वास विछूटे आहार न बोटे इकमना रू० ॥ ॥ ८ ॥ मूर्छा लही जागी कहेवा लागी एहवो रू० नोजन पिउ पाखें न करुं लाखें जेहवो रू० ॥ मूकी एक महेलें थाप्या गयलें पाहरु रू० ॥ बेठो जइ काजें राज समाजें पाधरु रू० ॥ ए ॥ था शे किम कूपें नाख्यो नूपें नाहलो रू० ॥ नीसरशे क्यां थी किम करी त्यांथी वाहलो रू० ॥ चिंता चित्त धर ती हइडुं नरती शोगमें रू० ॥ आसंगल गाढो कर ती दाहाढो नीगमे रू० ॥ १० ॥ रति त्यां अण ल हेती, विरहें दहेती देहनी रू० ॥ ॥ निशिमां एक मा गें नूतल नागें ते परी रू० ॥ डंकी विषधरियें रोषें नरिये क्यांहिंथी रू० ॥ बोली अहि विलगो न रहे अलगो आंहिंथी रू० ॥ ११ ॥ नोकार संनारे जिन मन धारे थिर मनें रू० ॥ पोहरायत आया हणवा धाया नागनें रू० ॥ जीवितथी टाल्यो नाग उछाल्यो वेगलो रू० ॥ विरतंत सुणायो नूपति आयो व्याकुलो रू० ॥ १२ ॥ उपचार घणेरा कीधा नलेरा जे घट्या रू० ॥ साहमा विष जोला लहेर हिलोला ऊमट्या रू० ॥ इंद्री थयां शून्य चेतन ऊना घारणें रू० ॥ एक सास

उसासो मंकित सासो क्षण क्षणं रू० ॥ १३ ॥ ते दुःख निशि ग्रहेती न लहे वहेती विश्रमो रू० ॥ कर्खा तन ताजी प्रगट्यो गाजी प्रहसमो रू० ॥ था को उपचारें नृप निवारें अति दुःखें रू० ॥ पम्हो वजमावे साद पमावे जन मुखें रू० ॥ १४ ॥ देश कंन्या वंधुर रणरंग सिंधुर तेहनें रू० ॥ आपे नृप रा जी जे करे साजी एहनें रू० ॥ करता पुर फेरी शेरी शेरीयें फस्या रू० ॥ त्रिक चाचर चोकें नृप पथ धोके संचस्या रू० ॥ १५ ॥ थानक सवि जटकी पाठा उटकी नें वल्या रू० ॥ नृप जवननी वाटें आवे उचाटें खल जव्या रू० ॥ चोथे खंमें चावी ढाल सोहावी आठमी रू० ॥ कहे कांति उमंगें रसनें रंगें ए गमी रू० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे नर एक अभिनवो, पम्ह ठवे त्यां आय ॥ नृप सुजटें नृपति कन्हें, आएयो तेह बुलाय ॥ १ ॥ नि रखत मुख नृप उलखे, अहो पुरुपनें प्रांहिं ॥ कूप थकी किम नीसरी, आव्यो दीसे आंहिं ॥ २ ॥ देव रूएयो मुज वेरीयें, कीधो केण कुकज्ज ॥ मुजनें अल गो जाणीनें, काढ्यो ए निर्लज्ज ॥ ३ ॥ इम चिंति

अण ऊलखू, थयो गोपिताकार ॥ करवा स्वारथ सा
धना, बोल्यो वचन उदार ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ गाढा मारूजी, नमर पीवे नाठी
चगें ॥ अमली पीवे कलाल रे ॥ गाढा मारु अति
उनमादी माहारो साहेबो ॥ ए देशी ॥

॥ मोरा नेहीजी, अम वखतें आव्या नलें, उपकार
क सत्यवंत हे ॥ मो० ॥ करुणा ते कीधी साहिबे,
मोहनजी मतिमंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ तुम
सरिखे आनूषणें, पुहवी तल शोनंत रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ १ ॥ मो० ॥ मलया विष वालण तणुं, काम
करो लेई हाथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रणरंग आपुं
हाथियो, जनपद तनुजा साथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ २ ॥ मो० ॥ लाखिणुं लोकां विचें, ए बे यशनुं
काम रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ वली हुं मुख बो
ल्याथकी, आपीश अधिक इनाम रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ ३ ॥ मो० ॥ महाबल कहे मुजनें इहां, आपीश
मां तुं कांई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मागुं एहिज
सुंदरी, जो पण निर्विष थाई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ४ ॥
॥ मो० ॥ आवी देशांतरथकी, नहीं केहने संबंध रे
॥ मो० ॥ क० मो० ॥ एहवी मुजनें आपतां, कर

शे कुण प्रतिबंध रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ५ ॥ मो० ॥ संकट पनि
यो मह्हीपति, कहे तुज देईश तेह रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ बीजां पण मुज केटलां, काम करीश जो ते
ह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ६ ॥ मो० ॥ जे कहेशे नृप का
म ते, करिनें तुरत सर्व रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ले
जाईश निज आरजा, चिंते एम सगर्व रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ ७ ॥ मो० ॥ नृप वचन अंगी करी, आव्यो
मलया समीप रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मृतांगत दीठी
त्रिया, मूर्की गरल उद्दीप रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ८ ॥
॥ मो० ॥ विषम अवस्था नारीनी, जोतां जलभरें नय
ण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रोषें मन काळुं करी, बो
ले इस वली वयण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ९ ॥ मो० ॥ ग
त चेतन ए सर्वथा, न लिये श्वास लगार रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ मो० ॥ तोपण अंगें आगमी, करशुं हुं
प्रतिकार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १० ॥ मो० ॥ प्र
स्तर निषेधी लोकनो, धरणी करी जल सित्त रे ॥ मो०
॥ क० ॥ मो० ॥ तिमहिज नृपने सेवकें, कीधी
धरा सुपवित्त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ११ ॥ मो० ॥
नृपति आदिं जन सवे, बेठा बाहिर आय रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ मो० ॥ कुसुमें मंडल मांडीयुं, विप्र बालक

नो उपाय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १२ ॥ मो० ॥ मंग्ल
मां पूजी विधें, ध्यान धरी मह्‌ा मंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ कटिपटमांथी काढीउं, विष वालक मणिलं
त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १३ ॥ मो० ॥ क्षाली मणि
जल सिंचीयुं, विकस्यो लोयण लेश रे ॥ मो० ॥ क० ॥
मो० ॥ ढांक्या ज्यौं रवि तेजथी, कमल हशे एक दे
श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १४ ॥ मो० ॥ मुखमां जल
सिंच्युं तदा, वलिया सास उसास रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ लोचन पूरां उघड्यां, कमल ज्यौं पूर्ण प्रका
श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १५ ॥ मो० ॥ सर्वंगें जल सिं
चीयुं, पायुं उदक अशेष रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥
ऊठी आलस मोमती, करती हाव विशेष रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ १६ ॥ मो० ॥ पउधास्या प्रभुजी इहां, कू
पथकी किण रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ साजी
मुजनें किम करी, पूछे सा धरी प्रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ १७ ॥ मो० ॥ कुमर कहे मांची थकी, पमीयो हुं
जई हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ त्यां मणि तेजें
एक शिला, दीठी मणिधर हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १८ ॥
॥ मो० ॥ ठाने जइ मूठी हणी, उघन्युं तदा बार रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणिधर रलक्यो पर मुहें,

पेठो हुं तिण ठार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १९ ॥ मो० ॥ साहस धरि हुं चालीयो, विवरें धरणी मांहिं रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ विषधर दीवीधर थयो, आवे पूंठें उठांहिं रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २० ॥ मो० ॥ एह सुरंगा चोरनी, तिण वली वीजुं वार रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ मो० ॥ होशे एहवुं चिंतवी, आवो कीधो प्रचार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २१ ॥ मो० ॥ तेहवे मुख आगें थई, मणिधर नागो तेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ श्याम तिमिरकुल उल्लस्युं, जिस जरूता जरू चेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २२ ॥ मो० ॥ अनुसारें हुं चालतो, आथरूीयो जई द्वार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ चरणें हणी वीजी शिला, नाखी उलटी तिवार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २३ ॥ मो० ॥ वार विवरनुं उघरूयुं, नीसरियो वहि आय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ जन्म्या गर्भावासथी, चिंत्युं ईम अकुलाय रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ २४ ॥ मो० ॥ आघरो चाल्यो वही, जोतो अहिगति लीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ शिलाशिरें दीठो अही, वेठो थई निर्भीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २५ ॥ ॥ मो० ॥ मंत्र जपी ते वश कीयो, लीधो तस मणि नंग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ गिरि नदीत्रें सम

ज्ञानमां, दीसे तेह सुरंग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २६ ॥
॥ मो० ॥ पश्यतहर दीसे मूळ, चिंती इम शिल तेय रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ढांकी बार सुरंगनें, नीसरियो
उमहेय रे ॥ मो० ॥ क०॥ २७ ॥ मो० ॥ ठाने पुरमां पेसतां,
निसुण्यो पम्ह निनाद रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ पू
ब्युं जाण्युं ताहरें, व्याप्यो विष उन्माद रे० मो० ॥
॥ क० ॥ २७ ॥ मो० ॥ तुज विरहो अण सांसही, प
म्ह ठव्यो पण बंध रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणि
योगें साजी करी, गाळ्यो विषनो गंध रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ २ए ॥ मो० ॥ बांध्यो वचनें सांकमो, धींगो
पण नरनाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ देशे तुजनें सु
ज नणी, हवे न करे मन दाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ ३० ॥ मो० ॥ पीयु वचनें रंजी त्रिया, चोथा खं
म विचाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ कांतिविजय
नांखी रसें, निरुपम नवमी ढाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरें नृपति तेमीउं, आव्यो अधिक प्रमोद ॥
निरखे बाला हर्खथी, करती वात विनोद ॥ १ ॥ शिर
धूणी नृपति नणे, अहो शक्तिनो खेल ॥ अम दुःख
साथें जेणीयें, फेंक्यो गरल उवेल (प्रवाह) ॥ २ ॥

अति विस्मित वसुधाधवें, पुछ्युं नाम निवेश ॥ सिद्ध पुरुष इति तेहनी. निज कहे नाम निर्देश ॥ ३ ॥ जि मीं नहीं गत वासरें, विरची वाला एह ॥ उचित जमा मो तेह तणी. कहे नृप ससनेह ॥ ४ ॥ पय पाकुं सा कर रसें. पावे कुमर सहाय ॥ स्वस्थ हुई वातो करे, ते नृप सुतनी साथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ पंथीडा रे संदेशडो ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर तणे नृपति प्रत्यें; करो शीख सुजाण ॥ थो मलया मुजनें हवे, पालो वचन प्रमाण ॥ १ ॥ हुं रे विदेशी पंथियो. न सहुं ढील लगार, ॥ मुज मन ऊ ठ्युं इहांथकी. चालण निरधार ॥ हुं० ॥ २ ॥ कांइ विचारो गजिया, करो कोइ विषाद ॥ इसवा थाशो लोकमां. मूक्यां मरयाद ॥ हुं० ॥ ३ ॥ रवि जलधर जलनिधि शशी. मूके नहिं स्थिति आप ॥ तिम नृप पण नवि उथपे. कुलवट स्थिति थाप ॥ हुं० ॥ ४ ॥ आपो मलया एहनें, थाउ राजि प्रसन्न ॥ दंपती उः च्चियां मेलवी. करो सत्य वचन्न ॥ हुं० ॥ ५ ॥ सम जावे इम नृपनें, पुरनां लोक समस्त ॥ आपृच्छ्यो ते सांभली. कोपे मदमस्त ॥ हुं० ॥ ६ ॥ क्षण एक अ ण बोल्यो रही, मांडे बीजी वात ॥ हे हे निठुर पणा

तणी, जूर्ज जूठी धात ॥ हुं० ॥ ७ ॥ पूछे नरपति सिद्धनें, लोयण कलुषाय ॥ कहे रे ताहरे एहशुं, श्यो सगपण थाय ॥ हुं० ॥ ८ ॥ सिद्ध कहे धण माहरी, पामी मुज्ज विजोग ॥ दैवदयाथी माहरो, लह्यो आज संयोग ॥ हुं० ॥ ए ॥ अवनीपति आखे वली, कर एक मुज काम ॥ ढील नहीं देतां पछें, तुजनें एह वाम ॥ हुं० ॥ १० ॥ दुःखे शिर नित्य माहरुं, तेहनो एह उपाय ॥ लक्षणधर तुज सारिखो, नर आवे चलाय ॥ हुं० ॥ ११ ॥ चयमां बाली तेहनुं, कीजें जस्म शरीर ॥ लेपें शिर पीमा हरे, तेह जस्म सनीर ॥ ॥ हुं० ॥ १२ ॥ उंषध ए तुजनें जलें, करवुं माहरे काज ॥ सोंप्युं दुष्कर काम ए, मारण नरराज ॥ हुं० ॥ ॥ १३ ॥ लुब्ध्यो मलया देखीनें, निर्लज ए नरराज ॥ मुजनें हणवा कारणे, सोंपें एहवुं काज ॥ हुं० ॥ ॥ १४ ॥ अधमें मुजनें सूचव्युं, पहेलुं पण एह ॥ करशुं जो मृत्यु आगमी, तो पण देशे छेह ॥ हुं० ॥ १५ ॥ मरण विना कुंण करी शके, दुःख संजव काज ॥ अंगीकरशुं में धुरथकी, न करया मुज लाज ॥ हुं० ॥ १६ ॥ एम धारी साहस रही, बोल्यो त्यां नर सिद्ध ॥ चिंता न करो राजिया, कारज ए में लीध ॥ हुं० ॥ १७ ॥

दुर्लभ उपध ताहरुं, करवुं में निरधार ॥ तुं पण प्रम दा आपतां, मत करजे विचार ॥ हुं० ॥ १७ ॥ फो गट गाल फुलाविनें, कहे नृप हसंत ॥ उपकारकनें आपतां. कहो शुं खटकंत ॥ हुं० ॥ १ए ॥ कठिन हृदय नरराजियो, हरख्यो मन पापिष्ट ॥ राखे दंपती जूजू आं. जण थापी निःकृष्ट ॥ हुं० ॥ २८ ॥ मंदिर आवे मलपतो, करतो रस चाल ॥ दशमी चोथा खंमनी, कांतें कही ढाल ॥ हुं० ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे नृपनें कहे, करवा उचित विधान ॥ काठ शकटनरि जातरी, मूके ज्यां समशान ॥ १ ॥ निरखी विपम कर्त्तव्यता. दुःखियां पूक्यां लोक ॥ हाहा नरमणि विणसशे. इम कहे थोकें थोक ॥ २ ॥ ते हवां आनूपण धरी. वींट्यो राज सुनट्ट ॥ पश्चिम पो हारें पितृवनें. पोहोंचे कुमर प्रगट्ट ॥ ३ ॥ व्यतिकर लोकथकी लहे. मलया पियुनो थाप ॥ संतापी विर हानलें. विधविध करे विलाप ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ ऊठ कलालणी नर घ

को हे, दारूमारो मूल सुणार ॥ ए देशी ॥

॥ धिग मुज योवन रूपनें हे, धिग मुज जनम अ

काय ॥ आपद पमियो जेहथी हे, मोहें लोजाणो ना थ ॥ प्राण प्यारो बलवा हे कांइ जाय० ॥ १ ॥ पहेलो डुःख सागरथकी हे, तरियो तुं समरछ ॥ ए वेलामां साहेबा हे, कुंण ग्रहशे तुज हछ ॥ प्रा० ॥ २ ॥ काठ कुठी मां जीमियो हे, पंजरमां जिम कीर ॥ नीसरशे क्यां थी तदा हे, मुज नणदीरो वीर ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ कर साही नृपतिजमें हे, खेप्यो तुं चयमांहि ॥ सहेशे किम पीमा घणी हे, कीधी पावक दाहि ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ क्यां आव्यो इहां मोहना हे, मलियो कां मुज आय ॥ कांइ जीवामी पापिणी हे, हुं हुइ जे डुःखदाय ॥ ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ विरहो ताहरो प्रीतमा हे, हियमे द्ये घसि घाव ॥ नेह निठुर नाहर थयो हे, खेले कठिन कुदाव ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ आशाथी तें त्रोमीयां हे, ए वेला जगदीश ॥ तरगोमी अधमारगें हे, काढी पूरी रीश ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ प्रीतमली हीयमे वसी हे, लागें मीठी गाढ ॥ साले बूटी अधरसें हे, जिम तीखी यमदाढ ॥ ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ पमजो शिल शिर तेहनें हे, पाड्यो जेणे वियोग ॥ पारजन तेहनां रखमजो हे, जिम काप्यां थल फोग ॥ प्रा० ॥ ए ॥ विलपत प्रमदा खीजती हे, डुःख पूरी महे मूर ॥ पीयुनें लोयण आंसुयें

हे. चे जल अंजली पूर ॥ प्रा० ॥ १० ॥ निरखुं नय णें नाहलो हे. तो मुज भोजन वात ॥ वेही एहवुं आदरी हे, करवा आतम घात ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ नृप नंदन समशानमां हे. इहां तिहां निरखी ठोर ॥ खमके उछिन थानकें हे. मोटोटी चय एक कोर ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ ब्राह्मण देखी तेहवुं हे, पुर जण मलिया धाय ॥ द्विज गिरी धमता हिये हे, नृपतिनें कहे आय ॥ प्रा० ॥ ॥ १३ ॥ देव विचास्या विण इस्यो हे, मांड्यो कवण अन्याय ॥ राखमिशें पशुनी परें हे, हणियें नहीं सि रूगाय ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ मलया नापो तो जले हे. पण मारो कां एह ॥ अस वचनें मूको हवे हे, करी क रुणा गुणगेह ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ नृप जणें ए स्वामि नी हे. मुजनें नवि निरखंत ॥ उपरांठी काठी हुवे हे. जो नर ए जीवंत ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ ए वाला विण मा हरे हे, न पके जक पल मात ॥ मत पकजो ए वात मां हे. सो वातें एक वात ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ निर्दय नव तिहां बोलीयो हे. जीवो नामें प्रधान ॥ शी एहनी तुमनें पडी हे. मेलो ठो इहां तान ॥ प्रा० ॥ १८ ॥ पोतानें पापें पडी हे. मरशे जो दुःख आणि ॥ तो नगरीमां केहनें हे, ए होशे घर हाणी ॥ प्रा० ॥ १९ ॥

राजानें मंत्री इहां हे, मलिया पापी दोय ॥ तो ते हवा नररत्ननें हे, कुशल किहांथी होय ॥ प्रा० ॥ २० ॥ ढारमिशें आरंभियो हे, अनरथ विश्वा वीश ॥ सहि दुर्मति ए बेहुनें हे, ढारज पमशे शीश ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ गलतां माखी जीवती हे, को करे एहवुं काम ॥ अन्योन्य कहेतां जण तिके हे, पोहोता निज निज गाम ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ अकल कला कोई केलवी हे, पियु लेहेशे जयमाल ॥ चोथे खंमें अग्यारमी हे, कांतें पन्नणी ढाल ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इष्ट संजारी आपणो, परवरियो जमवृंद ॥ दक्षिण करें प्रदक्षिणा, चय पाखलि नृपनंद ॥ १ ॥ पुरजन मुख हाहा रवें, आपूरयो आकाश ॥ लोक हृदय कसणें करे, शोक परीक्षा न्यास ॥ २ ॥ सहसा नृपसुत उतपति, पमे चितामां जाम ॥ ततक्षण पुरजन नेत्रथी, पसरयां आंसू ताम ॥ ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ तमाके तोमी ठे दुःख माला ॥ ए देशी ॥

॥ निरखे सुजट विकट चयमांहि, पेठो कुमर जिवारें ॥ चिहुं दिशि प्रबल अनल सलगाड्यो, पसरी जाल तिवारें ॥ १ ॥ ऊबाकें जलकी ठे दिगमाला,

तापें कटकण लागा काठ ॥ चमकें चमकी छे सुर वाला ॥ ए आंकणी ॥ धोरणी धूम तणी त्यां प्रसरी, दिशिदिशि अंबर छायो ॥ श्यामघटा करी पावकरूपें, जाणे पावस आयो ॥ क० ॥ २ ॥ वन्हि पतंग उडे तगतगता. खजुआ जिम चिहुं ओरें ॥ जाल वीज ज्युं चिलकण लागा. अनल जलदनें जोरें ॥ क० ॥ ३ ॥ सात जीभ शतजीभ थईनें. नभतल चाटण लागो ॥ तस उद्दीपक पवनसहायी, विशमो थई त्यां वागो ॥ क० ॥ ४ ॥ धीरपणुं पुर लोक प्रशंसे, तस हा रव अण सुणतां ॥ ज्वलत रह्यो विश्वानल देखी. सुभट वल्या गुण थुणता ॥ क० ॥ ५ ॥ जिम कीधुं तणें तिम नृप आगें. तांस्युं सकल वनावी ॥ नृप प्रधान विना पुरजननें. ते निशि निंद न आवी ॥ क० ॥ ६ ॥ हुउे प्रभात विभा तनु तारा. ढांक्या सूर प्रभा वें ॥ तव शिर रक्षा पोटि धरीनें. आवे सिद्ध स्वभा वें ॥ क० ॥ ७ ॥ देखी विस्मित लोक उमंगें, पग प ग गहवुं पूछे ॥ अहो सुगुण तुं आव्यो किहांथी, शि शें गह कीस्युं छे ॥ क० ॥ ८ ॥ ते चयनी रक्षा लेइ हुं. आव्यो छुं नृप काजें ॥ इम कहेतो पोहोतो नृप भवनें. सिद्ध पुरुष शुभ साजें ॥ क० ॥ ए ॥ रात्र पो

टली आपे नृपनें, कहेतो एहवुं रंगें ॥ ए नाखो निज माथे एहथी, रहेजो निरुआ अंगें ॥ ऊ० ॥ १० ॥ नूप जणे शुं न बल्या चयमां, आव्या दीसो साजा ॥ आग सगी नहीं जगमां केहनें, न गणे सतियां आजा ॥ ऊ० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे कूमा आगें, वनशे कूमुं बोल्युं ॥ कहे नृपनें हुं दाधो चयमां, मन साहस नवि मोल्युं ॥ ऊ० ॥ १२ ॥ मुज साहसथी सुरगण रीज्या, अमृत रसें चय गारे ॥ थयो सजी चित्त फरी हुं तेहथी, आवी रह्यो चय आरें ॥ ऊ० ॥ १३ ॥ गार पोटली तिहांथी लेइ, आव्यो राज समीपें ॥ वाचा तेह पले तो रूमी, बोली जेह महीपें ॥ ऊ० ॥ १४ ॥ नूप विचारे धूरत एणें, मीट सकलनी वंची ॥ ॥ इहां रह्यो गाली चय बाली, सुनटें करी दृग ऊंची ॥ ऊ० ॥ ॥ १५ ॥ कांत समागम जाणी मलया, मलवानें धसी आवी ॥ आरक्षक परिवारें वींटी, निरखत हरख न मावी ॥ ऊ० ॥ १६ ॥ एकांतें जइ पूछे पतिनें, पावक पेठा स्वामी ॥ कुशलें केम मल्या ते नांखो, पीयु कहे अवसर पामी ॥ ऊ० ॥ १७ ॥ अंध कूप गत जेह सुरंगा, ते मुख में चय खमकी ॥ पृथुल गर्त्त घरनें आकारें, द्वार शिलायें अमकी ॥ ऊ० ॥ १८ ॥

पेठो हुं चयसां थइ ठानें, छार सुरंग उघाडी ॥ सबल सुरंग शिला तल छारें, दीधी पाछी आडी ॥ ऊ० ॥ १ए॥ सुभटें त्रय सलगाडी मूकी, वली वली थइ टाढी ॥ छार उघाडी कुशलें आव्यो. ठार नृपति शिर चाढी ॥ ऊ० ॥ २० ॥ सुंदरो गुह्य कथा ए माहरी, कोइ आगें मत जांखे ॥ छुष्ट नृपति मुज ठिद्र विलोके. तुज सेवा अभिलाखे ॥ ऊ० ॥ २१ ॥ चोथे खंकें थइ छादशमी. ढाल सुधारस मीठी ॥ कांति कहे धणनी पिउ संगें. विरह व्यथा सवि नीठी ॥ ऊ० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो नरपति तेहवे, कहे सिद्धनें जंत ॥ जोजन वो सखया जणी. अम हाथें न करंत ॥ १ ॥ तरुणी तुरत जमाडीनें, कहे सिद्ध सुण राय ॥ कीधुं कारज ताहरूं, हवे अम दीयो विदाय ॥ २ ॥ आपो मुज धण आदरें. आपो बोल प्रमाण ॥ निरखे जीवा सामुहो, वचन सुणी सहेराण ॥ ३ ॥ संकल्टी जगव्यो वली, मंत्री कल नुं धाम ॥ अहो सिद्ध साध्युं सबल. नृपतिनुं ए काम ॥ ४ ॥ उपकारी गिर सेहरो. महा सत्त्वर सिंधु ॥ बीजुं पण महीपति तणुं. कर एक कारज बंधु ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ विंजाजी हो रतन कूर्ज मुख सांकमो
रे विंजा, किम करी करुं रे ऊकोल ॥
रायविंजा, सयण मारू ॥ ए देशी ॥

॥ साधकजी हो एह पुरनें अति ढूकमो रे मित्ता, नामें गिरिछिन्न टंक ॥ सिद्ध रूमा, सयण म्हारा ॥ ॥ सा० ॥ विषम ऊरध शिखरें तिहां रे मित्ता, अंब अछे निरकंक ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ सा० ॥ फल तेहनां अति सीयलां रे मित्ता, लहीयें बारही मास ॥ सि० ॥ सा० ॥ ते शिखरें ऊंचा चढी रे मित्ता, तलपी हवे आकाश ॥ सि० ॥ २ ॥ सा० ॥ विषम थलें आंबा शिरें रे मित्ता, पोहोचीनें फल लेय ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ ऊंपावो वली अंबथी रे मित्ता, भूतल जा ग तकेय ॥ सि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ आवो इहां कुशलें वही रे मित्ता, मूको फल नृप भेट ॥ सि० ॥ सा० ॥ पित्तविकार नरिंदनो रे मित्ता, टलशे तेहथी नेट ॥ ॥ सि० ॥ ४ ॥ सा० ॥ कुमर विमासे दोहिलो रे मि त्ता, ए पण नृप आदेश ॥ सि० ॥ सा० ॥ थानक मरण तणुं सही रे मित्ता, न फुरे जिहां मति लेश ॥ सि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ जो न करुं तो कामिनी रे मित्ता, नापे ए नरनाथ ॥ सि० ॥ सा० विहुं वातें

मृत्यु माहरूं रे मित्ता, पकिया नूमि वे हाथ ॥ सि० ॥ ॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रनावथी रे मित्ता, करशुं डुष्कर काज ॥ सि० ॥ सा० ॥ जीवितनें मुज सुंदरी रे मित्ता, ठे दोय वात सुसाज ॥ सि० ॥ ७ ॥ ॥ सा० ॥ धारी एहवुं आदरं रे मित्ता, मंत्री वचन तिम तेह ॥ सि० ॥ सा० ॥ आसनथी ऊठ्यो धसी रे मित्ता, साहसनुं कुलगेह ॥ सि० ॥ ८ ॥ सा० ॥ मलया जल नयणें नरे रे मित्ता, डुःख पूरें दिलगीर ॥ सि० ॥ सा० ॥ महबल जण वींट्यो घणे रे मित्ता, आवे गिरिवर तीर ॥ सि० ॥ ए ॥ सा० ॥ जिम जिम गिरि ऊंचो चडे रे मित्ता, तिम तिम जणने शोक ॥ ॥ सि० ॥ सा० ॥ नृपतिनें मंत्री हइये रे मित्ता, वाधे हर्षना थोक ॥ सि० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोने गिरि टूंके चढ्यो रे मित्ता, उदय गिरि जिम सूर ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ नृप सुनटें नीचो रह्यो रे मित्ता, अंध देखाड्यो दूर ॥ सि० ॥ ११ ॥ सा० ॥ करुं जे में उपार्ज्युं रे मित्ता, न्याय धर्मनें मेल ॥ सि० ॥ सा० ॥ सफल हजो माहरुं इहां रे मित्ता, तेहथी साहस खेल ॥ सि० ॥ १२ ॥ सा० इम कहेतां अंधा थकी रे मित्ता, आप झंपापात ॥ सि० ॥ सा० ॥

हाहारव लोकां तणो रे मित्ता, गिरि कूदे नवि मात
॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० पडवंयो गिरिकंदरें रे मि
त्ता, हाहारव ततखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जाणुं साह
स देखीनें रे मित्ता, बोल्यो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥
॥ १४ ॥ सा० ॥ पडतो वेगें शृंगथी रे मित्ता, धे खे
चरनी भ्रांति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अदृश्य हुउं जन
देखतां रे मित्ता, जिम थाशें नृप खांति ॥ सि० ॥
॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मित्ता,
हाहा पाप प्रचंड ॥ सि० ॥ सा० ॥ पडतां एहना
हाडनो रे मित्ता, जडशे कहो किहां खंड ॥ सि० ॥
॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजन एहवुं नांखतां रे मित्ता,
नृपपुर अशिव कहंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज
घर आव्या वही रे मित्ता, तस साहस स लहंत ॥
॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहडें सकल सुणावियुं रे
मित्ता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ आप
कृतारथ मानता रे मित्ता, निवहे रात निरंत ॥ सि० ॥
॥ १८ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रभातें आवियो रे मित्ता, लै
सहकार करंड ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी
कहे रे मित्ता, आव्या केम अखंड ॥ सि० ॥ १९ ॥
॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेशुं पछें रे मित्ता, हवणां म

मृत्यु साहस रे मित्ता, पडिया भूमि वे हाथ ॥ सि० ॥
॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रभावथी रे मित्ता, क
रशुं दुष्कर काज ॥ सि० ॥ सा० ॥ जीवितनें मुज
सुंदरी रे मित्ता, ए दोय वात सुसाज ॥ सि० ॥ ७ ॥
॥ सा० ॥ धारी एहवुं आदरें रे मित्ता, मंत्री वचन
तिम तेह ॥ सि० ॥ सा० ॥ आसनथी उठ्यो धसी
रे मित्ता, साहसनुं कुलगेह ॥ सि० ॥ ८ ॥ सा० ॥
मलया जल नयणें भरे रे मित्ता, दुःख पूरें दिलगीर
॥ सि० ॥ सा० ॥ महबल जण वींट्यो घणे रे मित्ता,
आवे गिरिवर तीर ॥ सि० ॥ ए ॥ सा० ॥ जिम जिम
गिरि उंचो चढे रे मित्ता, तिम तिम जणने शोक ॥
॥ सि० ॥ सा० ॥ भूपतिनें मंत्री हस्ये रे मित्ता, वाधे
दर्पना डोक ॥ सि० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोभे गिरि
टूंकें चढ्यो रे मित्ता, उदय गिरि जिम सूर ॥ सि० ॥
॥ सा० ॥ नृप सुभटें नीचो रह्यो रे मित्ता, अंध दे
खाड्यो दूर ॥ सि० ॥ ११ ॥ सा० ॥ रुडुं जे में उ
पार्ज्युं रे मित्ता, न्याय धर्मनें मेल ॥ सि० ॥ सा० ॥
सफल हजो माहरूं इहां रे मित्ता, तेहथी साहस
खेल ॥ सि० ॥ १२ ॥ सा० इम कहेनो अंधा
श्रकी रे मित्ता, आप झंपापात ॥ सि० ॥ सा० ॥

हाहारव लोकां तणो रे मित्ता, गिरि कूहे नवि मात ॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० पमृठंध्यो गिरिकंदरें रे मित्ता, हाहारव ततखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जाणुं साहस देखीनें रे मित्ता, बोल्यो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥ ॥ १४ ॥ सा० ॥ पमृतो वेगें शृंगथी रे मित्ता, थे खेचरनी भ्रांति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अदृश्य हुर्ज जन देखतां रे मित्ता, जिम थाशें नृप खांति ॥ सि० ॥ ॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मित्ता, हाहा पाप प्रचंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पमृतां एहना हाममो रे मित्ता, जमशे कहो किहां खंम ॥ सि० ॥ ॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजन एहवुं भांखतां रे मित्ता, नृपपुर अशिव कहंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज घर आव्या वही रे मित्ता, तस साहस स लहंत ॥ ॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहमें सकल सुणावियुं रे मित्ता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ आप कृतारथ मानता रे मित्ता, निवहे रात निरंत ॥ सि० ॥ ॥ १८ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रभातें आवियो रे मित्ता, लै सहकार करंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी कहे रे मित्ता, आव्या केम अखंम ॥ सि० ॥ १९ ॥ ॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेशुं पछें रे मित्ता, हवणां म

पूछयो कांइ ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहेतो इम जन वी टोयो रे मित्ता. नृप भवनें गयो धाइ ॥ सि० ॥ २० ॥ ॥ सा० ॥ श्यामवदन राजा हुउं रे मित्ता, वीहीनो निरखी चित्त ॥ सि० ॥ सा० ॥ बोल्यो तेहवे मंत्रवी रे मित्ता, कुशल्यो किम तुं मित्त ॥ सि० ॥ २१ ॥ ॥ सा० ॥ इमहीज इति मुख बोलतो रे मित्ता. मूके अंब करंक ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहे ए ल्यो ग्याउं सहू रे मित्ता, चित्त समावो उदंक ॥ सि० ॥ २२ ॥ सा० ॥ वीहीना हाकें वापका रे मित्ता, नृप प्रमुख करे मून ॥ सि० ॥ सा० ॥ बे त्रण तेह करंकथी रे मित्ता, निकस्या थइ फल धृन ॥ सि० ॥ २३ ॥ सा० ॥ नृपनें पूठी संचरे रे मित्ता, मलया पास हसंत ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ सा घनथी जिम मोरमी रे मित्ता. पीउ दीठे विकसंत ॥ सि० ॥ २४ ॥ सा० ॥ सकल उचित वि धि साचवी रे मित्ता, बेठी पीउ संग बाल ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ पंडितजी रे चोथे खंडें तेरमी रे मित्ता, कां तें कही ए ढाल ॥ सि० ॥ २५ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोमी कामिनी कहे, भांखो कंत उदंत ॥
गइ दिन रात आगल कथा, सर्व गहेंबर रूतवंत ॥

॥ १ ॥ सुंदरी पहेलो मुज मल्यो, योगी वनमां जेह ॥ प्रजल्यो पावक कुंममां, थयो व्यंतरो तेह ॥ २ ॥ ते व्यतर इहां अंबमां, वसिउं मुज जाग्येण ॥ गिरिथी पक्मियो वचन वदे, उलखियो हुं तेण ॥ ३ ॥ आप करें मुजनें मही, बोल्यो ते गुण लीह ॥ रे उपगारी मित्र तुं, मनमां कांइ म बीह ॥ ४ ॥ आप स्वरूप कह्युं तिणें, में पण मुज विरतंत ॥ करतां मैत्री संकथा, वीती राति तदंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ मुज मनकुं तुमथी हल्युं, रहो रहो मित्र सुजाण रे ॥ थावो अम घर प्राहुणा; पालो प्रेम पुराण रे ॥ मु० ॥ १ ॥ पूरवला संबंधथी, मलीयो जो मुज आई रे ॥ तो तुं एम उतावलो, उठीनें कांई जाई रे ॥ मु० ॥ ॥ २ ॥ प्राहुण गति शी साचवुं, कहे तुं मुखथी आप रे ॥ तुम आणा माथे धरुं, जिम जग नृपनी गप रे ॥ मु० ॥ ॥ ३ ॥ तव हुं बोल्यो ते प्रतें, सुण बांधव गुणवंत रे ॥ नृप कामें हुं आवियो, ढील इहां न खमंत रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ पण बांध्यो में जेहवो, तेहवो हुये सुकयत्थ रे ॥ तो जाणुं मैत्री तणुं, सही सफल परमत्थ रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ बोल्यो सुर सुण मित्रजी, ए नृप शत्रु सरीख रे ॥ हणवा

चाहे तुजानें, कहे तो शुं हवे शीख रे॥मु०॥६॥ में जांण्युं एह एटले, नहिं विरमे जई आप रे॥ तो एहनें सम जावशुं, करी कृपा उपजाप रे॥ मु० ॥ ७ ॥ विषम प्रयोजन ताहरे, आवी पडे कोई जेथ रे॥ संभाख्यो हुं ततक्षणें, करशुं सान्निध्य तेथ रे॥ मु० ॥ ८ ॥ इम कहतो सुर तिहांथकी, लाव्यो एक करंड रे॥ सरस रसाल तणे फलें, भरीयो तेह अखंड रे॥ मु० ॥ ए ॥ मुजनें तेह करंडशुं, सुरवर आप उपाडी रे॥ मूक्यो पुरनें उपवनें, जिहां जिन मंदिर आडी रे॥ मु० ॥ १० ॥ सुर बोल्यो ए फल जई, देजे तुं नृप हाथें रे॥ अदृश्य रसिक रूपें तिहां, आवीश हुं तुज साथें रे॥ मु० ॥ ११ ॥ जे जे घटशे काम त्यां, करशुं ठाने हुं तेह रे॥ शीख दियो इम मुजनें, देवें आणी सनेह रे॥ मु० ॥ ॥ १२ ॥ आप्यो तेह करंडीउ, नृपति आगलें जाई रे॥ लेई अनुज्ञा तेहनी, वेगो हुं इहां आई रे॥ मु० ॥ ॥ १३ ॥ एहवे तेह करंडथी, कडकडनो स्वर क्रूर रे॥ उछलियो चलियो महा, पसरंद नरपूर रे॥ मु० ॥ ॥ १४ ॥ त्यारें पहेलो हुं नृपनें, के धुर त्यारें प्रधान रे॥ एक जणनें विहु मांहिथी, नहिं मूकुं हुं निदान रे॥ मु० ॥ १५ ॥ शब्द सुणीनें नरपति, पभि

यो चिंतानी जाल रे ॥ थरथरतो कहे सचिवनें, कर माहारी संजाल रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ सिद्ध पुरुष कोई सिद्ध ए, गूढातम विपरीत रे ॥ दुष्कर काम करे ह सी, अण चिंत्युं केणी रीत रे ॥ मु० ॥ १७ ॥ फल मिशें एह करंडमां, आणी कांइ बलाय रे ॥ आपणनें क्षयकारिणी, वलगाडी कुपलाय रे ॥ मु० ॥ १७ ॥ सचिव कहे नृपनें प्रजु, एहनें मुख दियो धूल रे ॥ इम कहीनें वारी जतो, आवे करंडनें मूल रे ॥ मु० ॥ १ए ॥ क्रूर सुणे रव तेहनो, जिम यमडुंडुनिनाद रे ॥ कर्ण विवर विष सारिखो, करत अशनि धुनि वाद रे ॥ मु० ॥ २० ॥ फल ग्रहेवा तस ढांकणुं, ऊघाडे ततकाल रे ॥ वज्रा नल सरखी तदा, प्रगट हुई माहाजाल रे ॥ मु० ॥ २१ ॥ जड जड शब्दें गाजती, प्रत्यक्ष जेम जडधाकि रे ॥ तेह करंडथी नीसरी, ऊरध जाग धूमाकि रे ॥ मु० ॥ ॥ २२ ॥ दुष्ट प्रधाननें तेणीयें, जाल्यो जेम पतंग रे ॥ क्षणमां जीवो त्यां हुउ, निर्जीवित दहि अंग रे ॥ मु० ॥ २३ ॥ मंदिर कांठें सलगिउ, अगनि स हा डुरवार रे ॥ बीहितो नृप तव सिद्धनें, तेडावे ति णि वार रे ॥ मु० ॥ २४ ॥ मुज आधीन सुरें तिहां, दीसे ठे कांइ कीध रे ॥ इम धारी नृपति कनें, आवे

सिद्ध प्रसिद्ध रे ॥ मु० ॥ २५ ॥ कहे सकल परें रा
जियो. बोल्यो एम झरंत रे ॥ सिद्ध कृपा करी·टालियें,
विज्वर एह डुरंत रे ॥ मु० ॥ २६ ॥ सिद्धं तव जल
गंटीयुं, अनल हुउं उपशांत रे ॥ ढांक्यो अंब करंमी
उ, तव रहियो विश्रांत रे ॥ मु० ॥ २७ ॥ कानें ते
ह करंमनें, वेसे नहीं कोई आय रे ॥ सापें खाधो शिं
ढ्री, देखी कुण न झराय रे ॥ मु० ॥ २८ ॥ कुशलें
सिद्ध करंमीयो, उघामी फल लेय रे ॥ विस्मित नृपा
दिक जाणी, आपहथु जब देय रे ॥ मु० ॥ २९ ॥ त
व महीपति झरतो हीये, खंचे कर मुख फेरी रे ॥
थापी वीजानें करें. लेवरावे सिद्ध प्रेरी रे ॥ मु० ॥ ३० ॥
जीवानो नंदन वक्रो, सचिव कस्यो गुण खाणी रे ॥
चोथा खंमनी चौदमी, कानें ढाल वखाणी रे ॥ मु० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप पूछे किम ऊठल्यो. एह महानय सिद्ध ॥
मंत्रीनें जेणें इहां. मरण अवस्था दीध ॥ १ ॥ कहे
सिद्ध ए पल्लव्यो. तुज अन्याय कुवृक्ष ॥ हवे फूल फ
ल एहनां, लहेशे तुं प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ महीयल मांहिं
महीपति, जेह करे नय पोप ॥ नासे आपद तेहथी.
वाधे संपद कोप ॥ ३ ॥ नीतिमांहे आपद तणां,

आस्पद छे अविवेक ॥ संपद होय सयंवरा, निरखी
नृप नय छेक ॥ ४ ॥ तेह जणी नय गोचरें, निगम
विचारी गुज्ज ॥ आतम वचन प्रमाणवा, आपो महि
ला सुज्ज ॥ ५ ॥ सामंतादिक बोलिया, करो देव ए
चयण ॥ अनय रसें कोपाववो, न घटे ए नर रयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ योगीसर चेला ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी नरराजियो रे, पडीयो विमासण मांहिं
रे ॥ नारि रस रातो, पेखे उपांपल गोचरें होलाल ॥
हियडे चढी मुज्ज नायिका रे, प्यारी जीवन प्रांहीं रे ॥
करशुं विधि केही, मुज मनथी नवी उतरे होलाल ॥१॥
मंत्र तंत्रादिक योगना रे, लहेतो विविध प्रकार रे ॥
साधे वाहिरनां, कारज्ज ए सहेजें इहां होलाल ॥ तेह
जणी निज देहनो रे, सोंपुं काम सफार रे ॥ अन्यंत
र कोई, डुष्कर ते करशे किहां होलाल ॥ २ ॥ कार
ज विण कीधे सही रे, जोतां पुरनां लोक रे ॥ होशे उ
शीयाला, जोठे पडशे बापडो होलाल ॥ फरि नहीं मा
गे सुंदरी रे, थाशे मसागति फोक रे ॥ पहेली जे की
धी, मलशे नहीं वली ताकडो होलाल ॥ ३ ॥ इम
करे फावशे प्रिया रे, अपयश लोक विचाल रे ॥ न
हीं होशे महारे, एहवुं विचारी बोलियो होलाल ॥

त्रीजुं काम करे हवे रे, तो धुं महिला संभाल रे ॥ आठी ए तुजनें, वचन थकी हुं न बोलीयो होलाल ॥ ४ ॥ निज नयणें निरखुं सदा रे, पुंठि विना मुज अंग रे ॥ तेमाटे थांसो. देखुं हुं तेहवो करो होलाल ॥ मुज उपर करुणा करी रे, पूरो एह उमंग रे ॥ सुगु णा सोभागी. मानीश पाड इहां खरो होलाल ॥ ५ ॥ नृपनंदन चींते ईस्यो रे, एह स्यो सोंप काम रे ॥ नृप हसवा सरिखो. कुमति कदाग्रह केलवी होलाल ॥ राणी कहे रायनें रे, ए स्यो मांड्यो उधांम रे ॥ ए हथी कहीं आगें, सिद्धि किशी ताहरे नवी होलाल ॥ ॥ ६ ॥ पुंठ जोवे कोण आपणी रे, जो पण होय दक्ष हाम रे ॥ इम कहीनें खांचे, नाभी नृप ग्रीवा तणी हो लाल ॥ उलटी मुख वांकू वल्युं रे, आव्युं ग्रीवानें ठा म रे ॥ ग्रीवा मुख ठामें, आवी रही तव आफणी होलाल ॥ ७ ॥ पूंठ निहालो खंतशुं रे, काम थयूं तुज ठीक रे ॥ नृपनि गुण मानो. वचन सुणी इम नेहवे होलाल ॥ सचिव नवो रोपें चड्यो रे, बोल्यो थई साहसिक रे ॥ गुण भूरन धीना. लाज नहीं तुज ने हवे होलाल ॥ ८ ॥ जनक हण्यो तें मादगे रे, जीवो नामें वजीर रे ॥ खुनी अन्याची, वीहितो नहीं

असमंजसें होलाल ॥ अम जोतां वली नृपनें रे, कां दुःख द्ये बे पीर रे ॥ मरमी गलनाखी, कांई मरे वाल्हो रसें होलाल ॥ ए ॥ राज सजामां वाधीयो रे, सबलो हालकल्लोल रे ॥ देखी नृप विरुउ, लोक मल्या ल ख धाईनें होलाल ॥ जन मुखथी लही वातमी रे, पमियो महादुःख जोल रे ॥ राजानी राणी, बीह ती आवी उजाईनें होलाल ॥ १० ॥ दुःखीयो दीन दयामणो रे, रूपें अपूर्वाकार रे ॥ नृपतिनें देखी, द श आंगुली वदनें उवे होलाल ॥ पमती रमती सिद्ध नां रे, प्रणमी चरण उदार रे ॥ अबला सुकुलीणी, दीन स्वरें तिहां वीनवे होलाल ॥ ११ ॥ मूको कोप कृपा करी रे, थाउ सुप्रसन्न चित्त रे ॥ साहेब गुणवं ता, अम अबला साहामुं जूउ होलाल ॥ पति जिक्षा अमनें दीउ रे, दातारां शिर छत्र रे ॥ साधक करुणा ला, ताण्यो न खमे तांतुउ होलाल ॥ १२ ॥ जेहवो हतो तेहवो करो रे, धुरनुं रूप बनाय रे ॥ साचा उ पगारी, जश लेतां न करो गई होलाल ॥ थाशे कारज एटलुं रे, तो अम लाख पसाय रे ॥ मोहन रंगीला, न हीं होय तो गणजो मूई होलाल ॥ १३ ॥ शीक्षा दीधी आकरी रे, राखी नहीं कांई खोट रे ॥ माणस जो हो

गे. तो थई छे गहटले घणी होलाल ॥ निद्रू विमासी ए. हवुं रे. चोल्यो एह जो दोट रे ॥ पाय आणवाण. वनमां जिन प्रणमे श्रुणी होलाल ॥ १४ ॥ श्रीजिन अजित जुहारीनें रे, पाये आवे आंहिं रे ॥ तो थाशे साजो. बीजो उपाय नहीं तिश्यो होलाल ॥ अलगरश्रू पण गजियो रे, कहे हवे चालो त्यांहिं रे ॥ साजो जो थाउं. तो मुज अजर अछे किश्यो होलाल ॥ १५ ॥ लोक कहे निज पापथी रे. वलगो आवी बीग रे ॥ नृ पनिनें पूछे. करशे नहीं हवे खोजणी होलाल ॥ रूप वन्युं जोत्रा जिश्युं रे. प्रत्यक्ष जिम जोटींग रे ॥ दीसे छे कांई, खेधें लत पाम्यो घणी होलाल ॥ १६ ॥ पुर जन जोवा पखणुं रे, चढिया गोखें धाय रे ॥ तिहां वांका होके. गामें गामें टोलें मल्यां होलाल ॥ चाल ण मांके नृपति रे, पण न पके वग कांइ रे ॥ जोतां दुःखदायी. कारण वे वांकां मल्या होलाल ॥ १७ ॥ जो मांके पग पाधरा रे, तो दीसे नहीं माग रे ॥ लो चन उपरांठे. लक थकतो पगें आथके होलाल ॥ अ वले पग ज्यां संचरे रे, लेतो मारग त्याग रे ॥ धरणि त्यां वाधे. प्रेरण शक्ति विना पके होलाल ॥ १८ ॥ विहुं वानें पुर लोकनें रे. करतो कौतुक दुःख रे ॥ जई आ

च्यो पाछो, साले मार कुचोटनी होलाल ॥ लोक स मक्ष समजावियें रे, थाशे हवे अनिमुख्ख रे ॥ चिंते इंम बीजी, खांचे नशा शिद्ध कोटनी होलाल ॥ १ए ॥ व इन वलीनें पाधरुं रे, वेहुं पाछुं गाम रे ॥ लागी न हिं वेला, हूउं अंतेउर त्यां खुशी होलाल ॥ कर जो मी कहे सिद्धनें रे, वेचाणा तुम नाम रे ॥ सुगुणा ससनेही, जोईयें ते मागो हसी होलाल ॥ २० ॥ सि द्ध हवे मागशे इहां रे, चोंपे मलया बाल रे ॥ नृपति पासेंथी, अरज करावी तेहशुं होलाल ॥ चोखी चो था खंमनी रे, एह पन्नरमी ढाल रे ॥ नांखी रस नेली, कांतिविजय बुध नेहशुं होलाल ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर कहे राणी प्रत्यें, वंछित आप विचार ॥
जो होय चारो तुम तणो, तो देवरावो नार ॥ १ ॥
गोरमीयां गुणवंतियां, जो देवरावो वाम ॥ तो थोमामां प्रीछजो, सरियां मुज लख काम ॥ २ ॥ वचन सुणी राणी सवे, आवी नृपनी पास ॥ मलया मूकावण नणी, करे कोमि अरदास ॥ ३ ॥ उत्तर न दीये महीप ति, पामो कांइ प्रगट्ट ॥ आने कानें काढतो, चिंते एम

निघट्ट ॥ ४ ॥ जानी मलया सुंदरी, राखुं किम जग दीश ॥ बुद्धि नको मुज ऊपजे, जेहथी फवे सदीस॥५॥

॥ ढाल शोलमी ॥ प्रणमी सद्गुरु पाय,
गायशुं राजीमती सतीजी ॥ ए देशी ॥

एहवे अनल उदंरु, वाजीशालामांहिं जागीउं जी ॥ उंचो जाल अखंरु, दारुण गयणें लागीउंजी ॥ १ ॥ निरखीनें नरराज, सिऊप्रत्यें पभणे इस्युं जी ॥ चोथुं वली मुज काज, एक अठे करवा जिस्युं जी ॥ २ ॥ वारू पाट केकाण, एह वसे हयशालमां जी ॥ काढो खेंची सुजाण, काम करो एक तालमां जी ॥ ३ ॥ दीज्यो हुं तुज नारि, आजज सोंपुं ए व मीजी ॥ जोतां जण दरबार, वलीयो मणिमय पाघ डी जी ॥ ४ ॥ निसुणी पुरजन लोक, जांखे ए नृप चातम्योजी ॥ पाम्या शीक्षा रोक, तो वली इम कां पां तम्योजी ॥ ५ ॥ अति कुमध्यवसाय, टोके नहीं ए कु मतिजी ॥ करी कोइ व्यवसाय, योग्य दीयुं शीक्षा रति जी ॥ ६ ॥ ध्यातो एहवुं त्यांहिं, उछाहें धमणो थइ जी ॥ पेसण हुतभुज मांहिं, वाजी शालें उठो जइ जी ॥ ७ ॥ मनमां नृपनें आप, निंदे आक्रोशें घणो जी ॥ वांध्यो कोपनें व्याप, इष्ट संनारे आपणोजी ॥

॥ ८ ॥ संजारे तेह देव, करवा सफल मनोरथाजी ॥ ऊंपावे ततखेव, दीपें पतंग पमे यथाजी ॥ ए॥ हाहा कार करंत, शोक जस्या पुरजन तदाजी ॥ आंसूमें व रसंत, लोचन जिम जल वारिदाजी ॥ १० ॥ पाम्यो जूप प्रमोद, कुमर ऊंपाणो देखीनेंजी ॥ माणे हास्य वि नोद, सचिवनें साथ विशेषिनेंजी ॥ ११ ॥ चढियो ह य सिद्धराज, अगनिथी नीसरिउ तवेंजी ॥ दीसे जि म सुरराज, आराह्यो उच्चैःश्रवेंजी ॥ १२ ॥ दीपे तेज अपार, दीव्य वसन जूषण धस्यांजी ॥ ऊलहल ज्यो ति तुखार, अंगें साज जला जस्याजी ॥ १३ ॥ धो रादिक गतिपंच, (१ धोरितं २ वलितं ३ प्लुतकं ४ उत्तरकं ५ उत्तेजितं) जेदें तुरंग रमाम्तोजी ॥ तन विलसित रोमांच, जननें चित्र पमाम्तोजी ॥ १४ ॥ देतो हर्षविषाद, लोक जूपतिने पालटीजी ॥ मनमां अति आल्हाद, धरतो इम कहे उल्लटीजी ॥ १५ ॥ अहो अहो तीर्थनी जूमि, एह ठे वंछित दायिनी जी ॥ ज्वलित हुताशन धूम, फरसें जे अघ घायि नीजी ॥ १६ ॥ पमियो हुं इहां आज, बीजो तुरं गम ए वलीजी ॥ बलतां सिद्धतां काज, एहवा थया माठा टलीजी ॥ १७ ॥ आजथकी अम अंग, रोग

जरा नहीं संक्रमेंजी ॥ नहीं हूवे मरण प्रसंग, अमर हुआ विहुं रंगमेंजी ॥ १८ ॥ सांजली वायक एह, गा जादिक सवि जूजूआजी ॥ वलवा अगनिमां तेह, प रुवानें तत्पर हूआजी ॥ १९ ॥ जो जो प्रत्यक्ष ख्या ल, तीरथ महिमानो शिरेंजी ॥ हूआ वेहु निहाल, तीर्थ प्रनावें इणी परेंजी ॥ २० ॥ आपणनें इण गा म, तन होम्यां फल छे वहूजी ॥ धरता मोटी हो हां म, आव्या नर पडवा सहूजी ॥ २१ ॥ वोल्यो सिद्ध विचार, रे रे क्षण एक परखीयेंजी ॥ आणो घृत नि रधार, अगनि जूगतिशुं पूजीयेंजी ॥ २२ ॥ आण्या घृतना कुंन, ॐ दह दह पच पच इस्योजी ॥ नणतो मंत्र सदंन, आहूति ये मन उल्लस्योजी ॥ २३ ॥ पहे लो पेशीश आंहि, हुं इम कही नृप पेशीउजी ॥ पूंठें सचिव संवाद, जई नृप पासें वसीउजी ॥ २४ ॥ कुमरें वास्या लोक, पडता अवर हुताशनेंजी ॥ पड ख्यो पडखो स्तोक, आववा द्यो नृप सचिवनेंजी ॥ २५ ॥ लागी वार विशेष, राय सचिव किम नावियाजी ॥ वेला तुमनें हो रेख, लागी नहीं जव आवियाजी ॥ ॥ २६ ॥ इम पुरलोकना वोल, सांजलीनें सिद्ध वो लीउजी ॥ क्षार मूल्या अटोल, अगनि पड्या कोण

जीवीउंजी ॥ २७ ॥ अगनि पत्रिउं हुं आज, सुरसा
न्निध्यथी नीसर्योजी ॥ बोली सकल समाज, वैर वाल
ए रूडो कर्योजी ॥ २८ ॥ फलियो अनय कुवृक्ष, नृ
प मंत्रिसुत मंत्रिनेंजी ॥ सामंतादिक दक्ष, बोल्या व
ली आमंत्रिनेंजी ॥ २९ ॥ राज्य निवाहक सिद्ध, हो
जो राजा आपणेंजी ॥ इम कही राजा कीध, महो
त्सव आडंबर घणेंजी ॥ ३० ॥ मान्यो जन सिद्धरा
ज, पाले राज्य सुनीतिथीजी ॥ महिपतियां शिरता
ज, राखे जनपद ईतिथीजी ॥ ३१ ॥ अडके विषमे
काम, लेजे सुरू संजारिउंजी ॥ आजाखी सुर आम,
सिद्ध तेह विसर्जिउंजी ॥ ३२ ॥ चोथा खंडनोषंग,
मलय चरित्रथी संग्रहीजी ॥ कांतिविजय मन रंग, ढा
ल शोलमी ए कहीजी ॥ ३३ ॥

॥ दोहा

॥ आव्यो देशांतर थकी, तेहवे तिहां बलसार ॥ लेई
निरुपम नेटणुं, चली आवे दरबार ॥ १ ॥ नृप नेटी
बेठे तिहां, दीठी मलया बाल ॥ मलयायें पण पेखीउं,
सारथपति ततकाल ॥ २ ॥ एक एकनें उंलख्यां, थातां
नयणां नेट ॥ मलियां शत वर्षांतरें, चतुर न नूले नेट
॥ ३ ॥ करतो तुरतज उठीउं, आव्यो मंदिर आप ॥

चिंते हैंहे आवीयां, उदय महा मुज पाप ॥ ४ ॥ अ हो महोदधि परतके, आव्यो एहनें ठोकि ॥ देवे किम ए नृपशुं, मेली सांधा जोसी ॥ ५ ॥ जे कीधुं में एहनें, अनुचित करण अन्याय ॥ कहेशे ते जो नृपनें, तो मुज मरण सहाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ सीता हो प्रिया सीतारा परजात' प्रणमुं हो प्रिया प्रणमुं पग नाथें करी जी ॥ ए देशी ॥

॥ मलया हो प्रिय मलया कहे सुविचार, निसुणो हो प्रिय निसुणो जे आव्यो वाणीयोजी ॥ नामें हो प्रिय नामें ए बलसार, तेहज हो प्रिय तेहज पापनो प्राणी योजी ॥ १ ॥ मुजनें हो प्रिय मुजनें दीधी जेण, विधविध हो प्रिय विध विध दुष्ट कदर्थनाजी ॥ राख्यो हो प्रिय राख्यो ठानो एण, मुजसुत हो प्रिय मुजसुत करनां अभ्यर्थना जी ॥ २ ॥ इणी परें हो प्रिय इणी परें प्रमदा बोल, निसुणी हो नृप निसुणी ततक्षण कोपीयोजी ॥ साह्यो हो नृप साह्यो शेठ निटोल, परिकर हो निज परिकरशुं कांठें दीयोजी ॥ ३ ॥ कीधी हो नृप कीधी क्रियाणां व्याप, वांकज हो वक वांकज नाख जणावीयोजी ॥ चित्तमां हो ने चित्तमां विमासे आर, सार्थ महो इम सार्थप चिंता लावीयोजी ॥ ४ ॥

छूटण हो मुज छूटण कोई उपाय, दीसे हो नहीं दीसे नहीं कोई आशरी जी ॥ आवे हो वली आवे छे एक दाय, वखतें हो यदि वखतें थई आवे तरीजी ॥ ५ ॥ एहना हो नृप एहना वैरी दोय, परिचित हो मुज परिचित शूर नृपति धुरेंजी ॥ बीजो हो वली बीजो शूर समोय, धींगरु हो बल धींगरु वीरधवल शिरेंजी ॥ ६ ॥ जीती हो तेह जीती एहनें ताम, छोमण हो मुज छोमण विधि करशे वहीजी ॥ अमलख हो हवे अमलख सोवन डाम, परठी हो तस परठी जन मूकुं सहीजी ॥ ७ ॥ लक्षण हो धर लक्षणधर गज आठ, आण्या हो घर आण्या परदेशां थकीजी ॥ तेहनो हो वली तेहनो जणावी ठाठ, छूटीश हो हुं छूटीश एह नेदें थकीजी ॥ ८ ॥ समजू हो एक समजू सोमो नाम, माणस हो निज माणस सवि समजावीनेंजी ॥ मूक्यो हो तिहां मूक्यो छानो ताम, वणिकें हो तिण वणिकें वीरधवल कनेंजी ॥ ए ॥ जातां हो मग जातां अधमग मांहि, मलिया हो बिहुं मलिया बिहुं ते राजवीजी ॥ डुर्गम हो अति डुर्गम तिलक गिरि त्यांहि, नीषण हो जिहां नीषण जिहां रुद्राटवीजी ॥ १० ॥ निसुणी हो नृप निसुणी जूठी वात, एहवी हो धुर ए

हवी जनमुखथी कहीजी ॥ पल्ली हो तिण पल्लीपति किम जाति. भीमें हो वन भीमें मलयानें ग्रहीजी ॥ ११ ॥ आव्या हो तिहां आव्या वेहु नरिंद. निज निज हो जन निज निज जनपदथी वहीजी ॥ दुर्जय हो तेण दुर्जय भीम पुलिंद. रमतो हो रण रमतो रण बांध्यो ग्रहीजी ॥ १२ ॥ जोतां हो तिहां जोतां मलया बाल. दीठी हो नहीं दीठी नहीं किण थानकेजी ॥ वलीया हो नृप वलीया नृप तिण काल, मलियो हो जई मलियो सोम अचानकेजी ॥ १३ ॥ वीरप हो नृप वीरपना आदेश. पामी हो वर पामी वर तिम वीनवेजी ॥ सार्थप हो तेह सार्थपनो संदेश, सुणतां हो नृप सुणतां अंगीकरे सवेजी ॥ १४ ॥ आधुं हो धन आधुं देतो वीर. आवे हो विधि आवे शूर प्रत्यें हसीजी ॥ शूरो हो नृप शूरो नृप शोंडीर. लोकें हो बहु लोकें वात ग्रह धसीजी ॥ १५ ॥ नृपकुल हो एह नृपकुल सार्थे रूप. चाल्युं हो नित्य चाल्युं आवे आपणेजी ॥ वेगे हो कोइ वेगे नूतन रूप. तेहने हो हवे तेहने हवे हणयुं गणेजी ॥ १६ ॥ सर्वस्व हो तस सर्वस्व लेयुं लूंटि. सार्थप हो वली सार्थपनें मूकावयुंजी ॥ थाशे हो अम थाशे यशनी लूंटि. अग्निो हो वली अग्निो

गम चूकावशुंजी ॥ १७॥ मंत्री हो इम मंत्री दोय नरेश, करवा हो रण करवा सिद्ध नरिंदशुंजी ॥ चाल्या हो धकि चाल्या कटक निवेश, करता हो पथ करता पथ स्वछंदशुंजी ॥ १८ ॥ उदधि हो जिम उदधितिलक पुर पास, आव्या हो धर आव्या धर कंपावताजी ॥ वा दल हो दल वादल उंच आकाश, दीधा हो तिहां दीधा मेरा फावताजी ॥ १ए ॥ बे नृप हो हवे बे नृप मूकी दूत, आगम हो निज आगम हेतु जणावशेजी ॥ सा हमो हो नृप साहमो सेन संजुत्त, करवा हो रण क रवा रसमां आवशेजी ॥ २० ॥ चोथे हो एह चोथे खंमें ढाल, नांखी हो इम नांखी सत्तरमी नावथीजी ॥ सुणतां हो घर सुणतां मंगलमाल, आवे हो नित्य आत्रे कांतें सुहावती जी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरप शूर बन्ने मली, शीखावी अदनूत ॥ सिद्ध नरेसर उपरें, मूके डुर्द्दम दूत ॥ १ ॥ अवसरविद वाचाल मुख, साहसिक निर्लोज ॥ स्वामीनक्त हित मग कथक, परखद मांहे अक्षोन ॥ २ ॥ दीर्घदर्शी दीरघगति, सर्वसह मतिवंत ॥ नीति निपुण ग्राहक पिशुन, (शत्रुनो चाकिर) ए गुण दूत वहंत ॥

॥ ३ ॥ असवास्यो केकाण रथ, पद्हेस्यो जाव कुलिम्म ॥ सिऊराय नवनांगणें, जइ पोहातो जालिम्म ॥ ४ ॥ द्वारपाल नृप वीनवी, दीधो नवन प्रवेश ॥ करी स लाम सिऊरायनें, नांखे इम संदेश ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ उदया ने पुरथी मांकवो रे, गढ अरबुदरी जान महाराजा ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवीठाणनो राजीउ रे, शूरपालण शूरपाल ॥ महाराजा ॥ दम दांनोने फोज लेइनें रुकेजी आवे ॥ चं डावती नगरी धणी रे, वीरधवल ठगाल महाराजा ॥ द० ॥ १ ॥ ए बेहु एकमतुं थया रे, रुठो तोपर आ ज म० ॥ द० ॥ खेलि रण रस खांनशुं रे, लेशे ताहारुं राज म० ॥ द० ॥ २ ॥ सारथपतिनें रो कियो रे, नामें जे बलसार म० ॥ द० ॥ ते साथें वे नृपति रे, राखे स्नेह अपार म० ॥ द० ॥ ३ ॥ दा ना जग व्यवहारीयो रे, सहुनें बांधव तुल्य ॥ म० ॥ ॥ द० ॥ पेशकसी करता नली रे, मागे नहीं कांइ मूल्य म० ॥ द० ॥ ४ ॥ पुत्रपणे बांधव परें रे, जाणे एहनें नृप म० ॥ द० ॥ तो ते किम सहेश प ड्यो रे, देखी दुःखने कूप म० ॥ द० ॥ ५ ॥ एणें जाने आवने रे, कीधो अमशुं नेह म० ॥ द० ॥ तु

म नगरें वासो वसे रे, ते जणी मूको एह म० ॥ द० ॥
॥ ६ ॥ कहेवारूथुं म्हारे मुखें रे, अम नृपें इम तु
ज्ज म० ॥ द० ॥ सत्कारी मूको परो रे, पालो राज्य
सज्जुज्ज म० ॥ द० ॥ ७ ॥ खमियें पण एकवारनो
रे, कीधो वरांसे वंक म० ॥ द० ॥ पक्रिया पण मुख
रू ग्रह्या रे, दंत फिरि निज अंक म० ॥ द० ॥ ८ ॥
वाह्याली पाडु गायनी रे, जो आपे पयपूर म० ॥
॥ द० ॥ मीठा माटे खाइयें रे, एवुं पण मामूर म० ॥
॥ द० ॥ ए ॥ धनपति कदिह्कि पांतरे रे, तो ते कि
म न खमाय म० ॥ द० ॥ खिरतो पण दल अंगणे
रे, फलियो तरु न कपाय म० ॥ द० ॥ १० ॥ अ
म नृपें बांहें ग्रह्यो रे, ते दुःखीयो किम थाय म० ॥
॥ द० ॥ गूंजे जे वन केसरी रे, त्यां कुंजर न वसा
य म० ॥ द० ॥ ११ ॥ शूर अछे तुं साहेबा रे, पण
तुज कटक अलप्प म० ॥ द० ॥ सायरमां जिम सा
थुउ रे, थाइश त्यां तुं गरूप्प म० ॥ द० ॥ १२ ॥
ते एहनें मूकावशे रे, तुजने शिक्षा देइ म० ॥ द० ॥
एह वातें मत आणजे रे, शंका बल उमहेइ म० ॥
॥ द० ॥ १३ ॥ थाइश मां तुं आकलो रे, जुजबल
नें विशवास म० ॥ द० ॥ बे जण उंषध एकनुं रे, ए

हवो जगत प्रकाश म० ॥ द० ॥ १४ ॥ म पकीश
माना मोहमां रे . संकेश्वर जिम मुंज म० ॥ द० ॥ उ
चित हितारथ धारियें रे. आणी मननी सूज म०द०॥१५
॥ इन वचन सुणी सहे रे, आव्या सुसरो तात म०
॥ द० ॥ मनमांहे हरख्यो घणुं रे. बोल्यो फेरवी धा
न म० ॥ द० ॥ १६ ॥ सैन्य घणुं जो नृपनें रे, तो शुं
नहीं भुज होय म० ॥ द०॥ एक एक देह नहीं किश्युं रे.
केवल नर नहीं होय म० ॥ द० ॥ १७ ॥ एकलको पण
दिणयरु रे. तेज तणो अंबार ॥ म० ॥ द० ॥ कोडिग
मे तारातणुं रे, हरे महातम सार ॥ म० ॥ द० ॥
॥ १८ ॥ आफलतो आसा लगें रे. मानीमां शिरदार
म० ॥ द० ॥ एकाकी पण केशरी रे. गाले गजमद
नार म० ॥ द० ॥ १९ ॥ तिम हुं जो पण एकलो
रे. ते नृप ते बल साज म० ॥ द० ॥ बाण रणमां ते
होनी रे. फकीश भुजनी खाज म० ॥ द० ॥ २० ॥ बा
हलो पण अन्याइयो रे. शीखवीयें सुत आप म० ॥
द० ॥ अन्यायें याता परू रे, लाज्या नही अथाप
म० ॥ द० ॥ २१ ॥ जो नहीं वे नृपनो रे, तो अम
केहो लाज म० ॥ द० ॥ अम साथें तो ठेकनां रे, ज
रशे बाथां आज म० ॥ द० ॥ २२ ॥ न दीयें शिक्षा

दुष्टनें रे, न गणे साजन शर्म्म म० ॥ द० ॥ तो अ म सरिखानें रहे रे, केहो नृपनो धर्म म० ॥ द० ॥ २३ ॥ अन्यायी तुज राजिया रे, आव्या जेह उमंग ॥ म० ॥ ॥ द० ॥ तेहने पण समजावशुं रे, खग साखें रण जंग म० ॥ द० ॥ २४ ॥ सर्व मनोरथ एहुना रे, पूरीश हुं इणवार म० ॥ द० ॥ जा कहेजे तुज पूठलें रे, आव्यो हुं निरधार म० ॥ द० ॥ २५ ॥ दूत गयो पाछो वही रे, चोथे खंर्के अनुप म० ॥ द० ॥ ढाल कही ए अढारमी रे, कांतिविजय करी चूंप म० ॥ द० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहासनथी ऊठियो, बहि मंरूपमां आय ॥ ढक्का तिहां संग्रामनी, वजरावे सिऊराय ॥ १ ॥ रणरातो मातो मर्दे, तातो क्षत्रीय तेज ॥ आव्यो नृप मलया कन्हे, कहेवा रहस्य सहेज ॥ २ ॥ महुलामां मलया ज्ञणी, ये रहेवा निर्देश ॥ चतुरंगी सेना सजी, धरे आप रणवेश ॥ ३ ॥ असवारी कीधी गजें, रण रंगे शणगार ॥ नीसरियो पुरथी महा, धिंग कटक विस्तार ॥ ४ ॥ नवल दमामां गऋगड्या, वागां वरु रणतूर ॥ रसिया नाद जंजेरिया, अंगिग उलट्यो शूर ॥ ५ ॥ उंपां ये करवालने, टोपां कै पहेरंत ॥ तोपां

केता सज्ज करे. धोपां केइ धरंत ॥ ६ ॥ गज गाजे हय हयणें. रथ चितकार अखंक ॥ सिंहनाद शूरा तणे. बधिर हुवे ब्रह्मंक ॥ ७ ॥ कवच हरा आयुधधरा. पूरा रण खेलाक ॥ रणथंभ जइ वागियां. फोजां तणां कमाक ॥ ८ ॥ बे दल आमा साहमां, अभियां आइ सवाहिं ॥ तासकिअणपेखा वही. ताक जक रण मांहिं ॥ ए ॥

॥ ढाल आगणीशमी ॥ करूखानी देशी ॥

॥ सजे फोज अति चोज नृप बे जके सिरूशुं, रण तणा दाव रमता न चूके ॥ उनक बनना महा मद ठवया हाथिया. जेम गिरिवर तके आइ ढूके ॥ ॥ सजे० ॥ १ ॥ गज चढ्यो जेह ते गज चढ्याथी अके. रथ चढ्यो रथचढ्याथी न मूंजे ॥ तुरंगधर तुरंगधर साथ झपटां लीये, पायचर पायगां संग झूजे ॥ सजे० ॥ २ ॥ बजत शरणाइयां राग सिंधु शिरे. शुद्दिर निशाण चोसाल गुंजे ॥ पूर रणतूर रव वीर नेरव नची. युरू रम निरखवा जइ प्रभुंजे ॥ स० ॥ ३ ॥ खुणत रणनाद उनमाद रस पूरिया. देह ससनेह ज्यों छिगुण फूले ॥ त्रटक त्रटकी पके कवच कीचां तणां. नेदीयां निरखण रोमांच झूले ॥ स० ॥ ४ ॥ शम चिचकार झवकार जलनो जिस्यो. गाढीयो गयणवर

पुंमरीकें ॥ खम्म कल्लोल नृपहंस खेले तिहां, फेर न
हीं जलधि रणमां रतीकें ॥ स० ॥ ५ ॥ सुहम वच
नोपरि वचन प्रतिहत करे, सिंहनादें महा सिंहनादं ॥
भुजयुगा फालणे भुज युगा फालता, करत रण नयें
लीला विवादं ॥ स० ॥ ६ ॥ वीर शिरवाल रण चालमां
उत्सुक्या, ऊर्ध्वमुख तास रुचि तेम शोभी ॥ ज्वलित
मन रोप पावकथकी नीसरे, धूम धोरणी जिसी गग
न थोभी ॥ स० ॥ ७ ॥ करत ललकार हलकार भम को
पिया, चलत धमकारशुं शेष मोले ॥ कर ग्रही ढाल
धुंताल धुंकल रसें, ढयल ढंढाल करवाल तोले ॥ स० ॥
॥ ८ ॥ जाति भुज वीर्य गुण वंश उदभावता, बंदिजन
प्रबल शूरां जगामे ॥ उमगिया योध बल बोध करि
आपणा, रण तणी सबल बाजी फवामे ॥ स० ॥
॥ ए ॥ अश्व खुरताल पमतालथी ऊपमी, खेह अं
बर चढी सूर ढायो ॥ दिशि हुई धूंधली अरुण रंगें
धरा, जाणे विण काल वरसाल आयो ॥ स० ॥ १० ॥
सगग शर धार वरषण लगी चिहुं दिशें, बगग बरछी
चले अगग गेमी ॥ रणण रणकार भल्ली (फरसी)
तणा वागिया, सिल्ल सुहमाण नाखे उथेमी ॥ स० ॥
॥ ११ ॥ खम्म खटकार गजदंत ऊपर पमे, जरर

जरद्दर करे अगनि वुंदा ॥ तप तप्या शुद्ध सित्कार जल वर्षणें. तुरत शीतल करे ते गयंदा ॥ स० ॥ ॥ १२ ॥ सबल हाथाल जूजाल मोगर ग्रही, जोरशुं वेरी सनमुख उछालें ॥ वहत नव शस्त्र देखी सुर खेचरा. वज्रशंकायें नासे विचालें ॥ स० ॥ १३ ॥ प्रोइया सुभट केइ गांजके गगनमां, ऊरध कीधा जि स्या नट्ट वंशें ॥ उछत आकाश आयास विण गृध्र नें. वलि महोत्सव हुउ तास मंसें ॥ स० ॥ १४ ॥ अकक अमकाट करि छूटीयां शतघनी, धुमल धूआं धुखें धुम्मरोला ॥ अगनि कण खिरत नग तगत ताता घणा, दश दिशें चालीया लोह गोला ॥ स० १५ ॥ दकक परनाल ज्यों खाल रुहिरा वहे. ककक नर को परी खंक फूटें ॥ गकक गेवरि गकें नालि मुख आह्र ण्या, खकक खग खाटकें फलक त्रूटें ॥ स० ॥ १६ ॥ कखड़ खय काल सरिखो हुउ आकरो, मिरू नृप सें न्य नाशुं दिगंतें ॥ थिर करी बल ह्वे आप समरंग णें. आवियो राय रोपाल खंतें ॥ स०॥ १७ ॥ हाक नो सुभटनें युद्ध मंके निहां. सिरू रणरंग गज वेसी ताजें ॥ विश्व भूषण गजें शूर चढि धाइयो. वीर संग्राम तिलकें विराजें ॥ स० ॥ १८ ॥ देखि पर

दल महा पूर्व परिचित तिहां, अमर संचारियो सिद्ध रायें ॥ आवियो करण साहाय्य वेगें वही, नृप हित हेत लागो उपायें ॥ स० ॥ १९ ॥ आवता वैरी हथियार अध मारगें, लेय सिद्धरायनें देव आपे ॥ सिद्ध शर धार वरसी घणा नृपनें, मोरचाथी परा दूर थापे ॥ स० ॥ २० ॥ कौतुकी अर्द्ध चंद्राल बाणें करी, शूरनां वीरनां छत्र छेदें ॥ चम चम नेजा धजा मांहिं मूरत वसा, तोरुियां चिन्ह नृपनां उमेदें ॥ ॥ स० ॥ २१ ॥ कर ग्रहे नृप विहुं शस्त्र जे नांखवा, तेह पण सिद्ध शस्त्रें विखंडे ॥ करत यतना घणी बेहुंना देहनी, समरनो खेल इम वारु मंडे ॥ स० ॥ ॥ २२ ॥ नृप जांखा पड्या चित्त संकल्पता, समर करता रह्या शस्त्र नांखी ॥ खंड चोथे नली ढाल उग णीशमी, जाति कडखा तणी कांतें जांखी ॥ स० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीन वदन शोकातुरा, जोतां नीची देह ॥ नि रख्या सिद्धं महीपति, नाख्या जाणे वेह ॥ १ ॥ इम इम कारज साधना, करवी ते सुरराय ॥ इम सम जावीनें लिखे, लेख एक तिण ठाय ॥ २ ॥ बाण मुखें ठ वी लेख ते, मूक्यो गुण संधेव ॥ नरपति कुल खो

जावतो, चव्यो गगन ततखेव ॥ ३ ॥ पोहती हेवो ऊ तरी. करे प्रदक्षिण तीन ॥ शूरनृपतिने पारखती. ते शर थई आधीन ॥ ४ ॥ पय प्रणमी लोटंगणे, मूके लेख तुरंत ॥ सिऊ नरींद कन्हे वही, फरी आव्यो उमगंत ॥ ५ ॥ चरित निहाली वाणनां. विस्मित हूआ नरींद ॥ देव सगति विण किम हुवे. अचरिज एह अमंद ॥ ६ ॥ निश्चेतन चेतन तणा. खेले खेल कदापि ॥ परमारथ एहनो इहां, किम जाणीशुं आप ॥ ७ ॥ एम कही निज कर ग्रही. तुरत उखेके लेख ॥ जोतो अक्षर मालिका. लहे परम उल्लेख ॥ ८ ॥ लोक सकल मलिया तिहां. सुणवा पत्र उदंत ॥ हरख वशंवद पत्र त्यां. वांचे वसुधा कंत ॥ ए ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ थाराने माहारा करहला,
चरता नदीने तीर हमीरा ॥ ए देशी ॥

स्वस्तिश्री जिनपद नमी, जक्त्या श्रीमती तंत्र ॥ सनेही ॥ शूरप नृप चरणांबुजें. सुत महबल लिखि पत्र॥ सनेही ॥ १ ॥ कुशल संदेशा पालवे, ठ थमने सुखशान ॥स०॥ तात शरीर नीरोगता. चाहुं हुं दिनरात ॥स०॥ कु० २ ॥ वीरधवल सुसरा जणी, प्रणति करुं कर जोमि ॥ स० ॥ तास श्वसुर सुपसायथी, पाम्यो यशनी

कोमि ॥ स० ॥ कु० ॥ ३ ॥ निज दयिता पामी ति
हां, लाधुं वली नृपराज्य ॥ स० ॥ पूज्य चरण शुन्न
चिंतनें, कीधुं सबल साह्राज्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ४ ॥
में नुज वीरज दाखीउं, करवा बाल विलास ॥ स० ॥
खमजो अविनय माहरो, करजो कोप विनाश ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ ५ ॥ तात चरण नेट्या तणी, चाह हती
निज नित्य ॥ स० ॥ ते शुन्नदैवें माहरी, पूरी आ
ज अचिंत्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ६ ॥ कांई विषाद करो
हवे, पगधारो पुरमांहिं ॥ स० ॥ वांचत लेख ईस्यो
सुणी, पूस्या हर्ष उह्नांहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ ७ ॥ पर
मानंद महारसें, सिंच्या नृप सरवंग ॥ स० ॥ सैनिक
समक्त कहे अहो, अहो अहो ए दिन चंग ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ ८ ॥ कुमरीशुं सुतरलजी, मलियो महब
ल आई ॥ स० ॥ जीवित सफल थयुं हवे, जीवा
ड्या महाराई ॥ स० ॥ कु० ॥ ए ॥ उद्धरिया दुःख
खाणथी, दुहिलममां लहि आथ ॥ स० ॥ काढ्या
नरक निवासथी, पकतां साह्या हाथ ॥ स० ॥ कु० ॥
॥ १० ॥ शूरपाल नृप इम कही, वीरधवल लेई सं
ग ॥ स० ॥ महबल साहमो चालियो, धरतो बहुल
उमंग ॥ स० ॥ कु० ॥ ११ ॥ पूज्य विनें साहमा

पगं. दीठा आवत नेण ॥ स० ॥ सहसा हरखें सामो हो. आवे आर रसेण ॥ स० ॥ कु० ॥ १२ ॥ मलिया हेजें हरखना, टाली वैर विरोध ॥ स० ॥ मांहो मांहि प्रकाशीउं. पूरण प्रेम निबोध ॥ स० ॥ कु० ॥ ॥ १३ ॥ हर्ष तणे आंसू जलें. गाम्यो विरह हुताश ॥ स० ॥ नेह नवांकुर पल्लव्या. वाध्या रंग विलास ॥ स० ॥ कु० ॥ १४ ॥ जगमां चंदन सीयलुं, तथी शशिकर योग ॥ स० ॥ शशिकरथी पण शीयलो. वाहालानो संयोग ॥ स० ॥ कु० ॥ १५ ॥ क्षण एक इष्ट कथारसें. निरवाहे सुख शील ॥ ॥ स०॥ वैतालिक (भाटचारणादिक) बोल्या तिसें. न सहे वासर ढील ॥ स० ॥ कु० ॥ १६ ॥ सिऊनृपें निजपुर प्रत्यें. पथ गाव्या नृप दोय ॥ स० ॥ विंट्या निज निज परिकरें, आव्या भवनें सोय ॥ स० ॥ कु० ॥ १७ ॥ गेनी दुःख संतारीनें. राणी मलया ताम ॥ स० ॥ बोलावी सुसरादिकें, आदर देय प्रकाम ॥ स० ॥ कु० ॥ १८ ॥ तुरत करावी महावलें, अशनादिकनी भक्ति ॥ स० ॥ सैनिक सर्व संतोषियां, नृपालें भली युक्ति ॥ स० ॥ ॥ कु० ॥ १९ ॥ तात श्वसुर आदें सहु. बेठां सुखमां त्यांहिं ॥ स० ॥ कहि निहाली कुमरनी, चित्र लहे

चित्तमांहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ २० ॥ सुत आगें जनका दिकें, नांखि निज निज वात ॥ स० ॥ मलयायें कुम रें वली, नांख्या तिम अवदात ॥ स० ॥ कु० ॥ २१ ॥ चोथे खंमें वीशमी, नांखी अनुपम ढाल ॥ स० ॥ कांतिविजय कहे सांनलो, आगल वात रसाल ॥ ॥ स० ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पुत्री तणां, निसुणी दुःख विरतंत ॥ विषम कर्मगति नावतो, तनुजानें पन्नणंत ॥ १ ॥ हे हे नृपकुल रूपनी, पोषी लामु विलास ॥ रखमी दि शि दिशि रंक ज्यौं, पमी कर्मनें पास ॥ २ ॥ सह्यां विविध दुःख आकरां, कोमल अंगें एम ॥ व्यसन म होदधि दुस्तरें, तरी तरी परें केम ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नगर रतनपुर जाणीयें ॥ ए देशी ॥ अथवा, नहो नावना मन धरो ॥ ए देशी ॥

॥ सूरपति महीपति बोले ए, पमिया मामा मोलें ए, खोले ए, निज मन दुःखनी गांठमी ए ॥ १ ॥ हा पुत्री हा पापीयो, कुमति दशायें व्यापीयो, थापीयो, कूमो कलंक ताहरे शिरें ए ॥ २ ॥ काज कस्युं में अण जा एयुं, जल पीधुं ते विण गाएयुं, अतिताएयुं, तुज साथें

में दुर्मति ए ॥ ३ ॥ गुनहो ते सवि माहरो, खम जो गुणवंती खरो, आफरो, मननो हवे दूरें करो ए ॥ ४ ॥ जित कोपा तुं सुंदरी, आ रलियायत गुणभरी, दिलवरी, कहीयें ते हियमे धरो ए ॥ ५ ॥ परमारथ नी ज्ञापिका, निर्मलकुलनी दीपिका, वापिका, तुं सत्य शील कमल तणी ए ॥ ६ ॥ वचन सुणी सुस्सरा त णां, मलया ते धरी धारणा, कारणां, दुःखनां तुरत विसारीयां ए ॥ ७ ॥ धन्य धरामां तुज मती, साहस करुणा रात ठती, धृतिगति, सूरिम शुभकृत तुज भ लां ए ॥ ८ ॥ इंस महाबल गुण भांखता, नृपादिक यश दाखता, जणकिता, सलहें महवलनें तिहां ए ॥ ए ॥ जनक दिक पूछे तिहां, वत्स कहो सुत छे कि हां, लीधो इहां, पापीऐ जे वाणीयें ए ॥ १० ॥ पुत्र कहे वाणिज घरें, ठानो किहां किण उधरे, पण खरें, खबर नहीं छे ते तणी ए ॥ ११ ॥ तेमीनें पूछां खरो, उतरशे नहीं पाधरो, आकरो, करतां ते देखाडशे ए ॥ १२॥ तत्क्षण सुभटें आणियो, पग बांधीनें ता णीयो, वाणीयो, दुःख पीड्यो रोवे घणुं ए ॥ १३ ॥ कहे रे दुर्मति शुं कस्यो. पुत्र लेइनें किहां धस्यो, जाशे ऊस्यो, किम तुजथी अम नंदनो ए ॥ १४ ॥ करवुं घ

टशे तुज शिरें, तेतो करशुं हिज खरें, पण अवसरें, सुत जावा देशुं नहीं ए ॥ १५ ॥ बीहीनो ते कहे तो आपुं, पुत्र तुमारो करी थापुं, दुःख टापुं, माहरो जो दूरें करो ए ॥ १६ ॥ ठेम्हो मुज सकुटुंबनें, जो नवि पाम्हो विटंबनें, तो मुनें, देतां वेला ठे नहीं ए ॥ १७ ॥ हरख्या तस वचनें सवे, मान्युं वचन तथा तवें, तिण लवें, पुत्र आणीनें सोंपियो ए ॥ १८ ॥ निरख्यो बालक सुंदरु, रूपें जाणे पुरंदरु, मंदिरु, सौम्य कलानो ऊलकतो ए ॥ १९ ॥ नूपादिक सवि हरखीया, पुत्र रतन गुण परखीया, निरखीया, अंग सकल लक्षण खरवां ए ॥ २० ॥ राय कहे बलसारनें, कहेरे सी निरधारिनें, कुमारने, कीधी नामनी थापना ए ॥ २१ ॥ ते कहे बल इति थापना, कीधी ठे करी कल्पना, उल्लापना, चित्त माने ते कीजीयें ए ॥ २२ ॥ एहवे नंदन रस ग्रह्यो, तात तणे खोले रह्यो, गह गह्यो, लेवा धननी गांठमी ए ॥ २३ ॥ दादाने कर गांठमी, सो दीनारनी दीठमी, ऊयमी, बालक ते खांची लीये ए ॥ २४ ॥ जोराथी शाढी ग्रही, मूकाव्यो मूके नही, दादे नहीं, शतबल नाम त्यां थापीयुं ए ॥ २५ ॥ सारथपतिनें ठोमीयो, घरवाखर लूंटी लीयो, जीवित दीयो, निज जावित

परिपाळवा ए ॥ २६ ॥ शूर कहे वरषांतरे, मलया प्रीतमशुं खरे, इणिपुरें, निश्चयशुं दीसे मली ए॥२७॥ ज्ञानी वचन साचुं मळ्युं, वरषांतें दुःख निर्दळ्युं, दूरें टळ्युं, संकट सघळुं आजथी ए ॥ २८ ॥ राज्य ग्रह्युं को तूहलें, सिद्ध नृपें सुजनें वलें, ते तिण वेलें, तातन णी आप्युं वहीए ॥ २९ ॥ सकुटुंबा वे महीपति, व हता स्नेह रसोन्नति, शुभमति, राज काज करता रहे ए ॥ ३० ॥ चोथे खंभें मीठमी, एकवीशमी रस पूठ ठी, इठमी, ढाल कही कांतें भली ए ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते कालें तेणे समे, करता उग्रविहार ॥ पारस जिनना शिष्य मुनि, चंद्रयशा अणगार ॥ १ ॥ ते पु रवरने उपवनें, समवसस्या गुरु राज ॥ केवलधर सुर नर नम्या, वींट्या साधु समाज ॥ २ ॥ उपगारी त्रि हु लोकने, पूज्य कृपारस सिंधु ॥ भव अनंत जांखे यथा, रूपें श्रीजगबंधु ॥ ३ ॥ वनपालक जई वीनव्या, विहुं भूपतिने वेग ॥ पुरजन वृंदे परिवस्या, आवे भूप सतेग ॥ ४ ॥ पंचाभिगमन साचवी, प्रणमी जिननें जेम ॥ धर्मकथा सुणवा वन्हे, वेगा विनयी तेम ॥ ५ ॥

ढाल बावीशमी ॥ वणझारानी देशी ॥

॥ चित्त बूजो रे कांई छांमो मोहनी निंद, जागो वि षयघारिणीथकी, नवि बूजो रे ॥ चि० ॥ एतो विषमो काल पुलिंद, छल जोवे छानो तकी ॥ न० ॥१॥ चि० ॥ थेंतो सांकमे छेरामांही, सूता काल अनादिना ॥ न० ॥ चि० ॥ बोध न पाम्यो त्यांहिं, खोया फोकट के ई दिना ॥ न० ॥ २ ॥ चि० ॥ वरजो विषय कषाय, ए हमां स्वाद न को अछे ॥ न० ॥ चि० ॥ रहेशो जो ल पटाय, पछतावो होशे पछें ॥ न० ॥ ३ ॥ चि० ॥ वर्जो हिंसा दूर, सत्य वदो परधन तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ छां मो मैथुन नूर, परिग्रह मूर्छा मति नजो ॥ न० ॥ ४ ॥ ॥ चि० ॥ क्रोधादिक रिपु चार, संगति एहनी छांमजो ॥ न० ॥ चि० ॥ प्रेम नाव संचार, तजजो द्वेष नमा मजो ॥ न० ॥ ५ ॥ चि० ॥ कलहने अभ्याख्यान, चा मी रति अरति तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ पर परिवादादा न, न करो माया मृषा रजो ॥ न० ॥ ६ ॥ चि० ॥ मि थ्यामति मय साल, काढी नाखो चित्तथी ॥ न० ॥ ॥ चि० ॥ कुगति तणा ए जाल, छाण अढारह नित्य थी ॥ न० ॥ ७ ॥ चि० ॥ जींतो इंड्रिय गाम, मन मां कमुं वश करो ॥ न० ॥ चि० ॥ नावो चित्त सुठाम,

शील सुरंगो आदरो ॥ भ० ॥ ८ ॥ चि० ॥ परचो योगा भ्यास, अहनिशि भावो भावना ॥ भ० ॥ चि० ॥ मुगति दीये विलास, कारण एता पावनां ॥ भ० ॥ ए ॥ चि० ॥ कर्त्रिम ए संसार, तन धन यौवन कारिमां ॥ भ० ॥ चि० ॥ जात न लागे वार, जिम कायरनो शूरमां ॥ भ० ॥ १० ॥ ॥ चि० ॥ कुण केहनो जगमांहि, स्वारथनां सहुको सगां ॥ भ० ॥ चि० ॥ स्वारथ विण नर प्रांहि, वालानें आपे दगां ॥ भ० ॥ ११ ॥ चि० ॥ पुण्य अने वली पाप, एहि ज साथें आवशे ॥ भ० ॥ चि० ॥ भोगवशे दुःख आप, तिहां नहिं को वेंहेंचावशे ॥ भ० ॥ १२ ॥ चि० ॥ भुंरु तणुं जिम ठाण, नरभव धर्म विना तिस्यो ॥ भ० ॥ ॥ चि० ॥ सुलहा भवभव प्राणि, धर्म नहीं मलशे इस्यो ॥ भ० ॥ १३ ॥ चि० ॥ दश दृष्टांत दुलंभ, मानव भव पुण्यें लही ॥ भ० ॥ चि० ॥ पाम्या योग सुलंभ, सफल करो हवे ते वही ॥ भ० ॥ १४ ॥ चि० ॥ थावो अति उजमाल, अवसर फिरि नहीं आवशे ॥ भ० ॥ चि० ॥ लाख गमे जंजाल, धर्म मारग विच थावशे ॥ भ० ॥ १५ ॥ चि० ॥ चेतो चित्तमां आप, कहेशो पछी जाण्युं नहिं ॥ भ० ॥ चि० ॥ ॥ टालो भव संताप, शिव कारण संयम ग्रही ॥ भ० ॥ १६ ॥

॥ चि० ॥ धर्म तणो उपदेश, चंद्रयशायें इम दीयो ॥ ज० ॥ चि० ॥ रीज्या दोय नरेश, पुरजन सघलो हरखियो ॥ ज० ॥ १७ ॥ चि० ॥ चोथा खंमनी ढाल, एह कही बावीशमी ॥ ज० चि० ॥ कांतिविजय जयमाल, वरियें सुणतां मनगमी ॥ ज० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूरनरेशर अवसरें, पूछे गुरुनें एम ॥ जगवन् मलया जलथकी, ऊखें उतारी केम ॥ १ ॥ सुख शातायें जलधिथी, आणी उतारी कंठ ॥ कारण ते सुणवा तणो, छे अमने उतकंठ ॥ २ ॥ केवलनाण दिवायरू, महिमावंत महंत ॥ चंद्रयशा सूरीश्वरू, इम कारण पजणंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर चित्त धरी, जलनिध तरी रे, मलया मीन सहाय, कारण ते कहूं रे ॥ वेगवती नामें हती, जेह पालती रे, बालानें धाय माय ॥ का०॥ ॥ १ ॥ डुर्ध्यानें कालें मरी, ते अवतरी रे ॥ जलनिधिमां गजमीन ॥ का० ॥ पमतां जारंक मुखथकी, अति डुःखथकी रे, श्रीनवकारमां लीन ॥ का० ॥ २ ॥ गज मत्सनें वांसे पमी, जाणे चढी रे, कमला गजने पूंठ,

॥ का० ॥ गाढें नवपद त्यां जएयां, श्रवणें सुएया रे, मीनें
मनमां तूठ ॥ का० ॥ ३ ॥ ईहापोह करया थकी, मीनें
वकी रे, दीठो गत जव आप ॥ का० ॥ ग्रीवा वाली नि
रखतां, मन हरखतां रे, वाध्यो प्रेमनो व्याप ॥ का० ॥
। ४ ॥ जोतां मलया ऊलखी, पुत्री डुःखी रे, लागो
विचारण मीन ॥ का० ॥ हैहै डुःखें अवधरी, एहमां
रुरी रे, डुर्विधिनें आधीन ॥ का० ॥ ५ ॥ मुजथी कां
ई न नीपजे, नवि संपजे रे, उपकारकनां काम ॥ का० ॥
तोपण मूकुं ईहां थकी, रूकुं तकी रे, जिहां होवे वस
तीनुं गाम ॥ का० ॥ ६ ॥ यदपि कदाचित् ए वली,
डुःखथी टली रे, पामे वल्लज योग ॥ का० ॥ ईम चिं
ते तेणे माठलें, धरी पाठलें रे, मूकी थल संयोग ॥
। का० ॥ ७ ॥ कंधर वाली निरखतो, एहनें कितो रे,
डुःख धरतो ऊख राय ॥ का० ॥ नेहें हियके फूरतो,
जल पूरतो रे, पाछो जलमां जाय ॥ का० ॥ ८ ॥
ातजव देखी जागीयो, सोजागीयो रे, माछो पामी
वेवेक ॥ का० ॥ फासु आहार आहारतो, मन
धारतो रे, श्रीनवपदनी टेक ॥ का० ॥ ए ॥ पूरी
ऊख आयुष तिहां, सुगति इहां रे, ऊपजशे लघु
कर्म ॥ का० ॥ कालें परिणति पाकशे, जव थाक

छे रे, आराधि जिनधर्म ॥ का० ॥ १० ॥ सद्गुरु वचनें सद्दहे, साचुं कहे रे, नूपादिक नविलोग ॥ ॥ का० ॥ वेगवती नव सांनली, कहे एम वली रे, अहो अहो नावी जोग ॥ का० ॥ ११ ॥ लोक कहे एक एक प्रत्यें, जूउं मछ ठतें रे, पाल्यो जननी प्रेम ॥ का० ॥ दाख्यो पण लोहारिकें, अधिकाधिकें रे, वानी धारे हेम ॥ का० ॥ १२ ॥ मलया चरित्र सुहामणुं, रलियामणुं रे, कहेतां वाधे प्रीति ॥ का० ॥ ढाल त्रेवीशमी ए सही, मन गह गही रे, कांतिविजय शुन रीति ॥ का० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछे वली नर राजिउं, नगवन् करुणावंत ॥ मलया महबल पूर्वनव, नांखो स्वामी सुतंत ॥ १ ॥ बालायें वली महबलें, श्यां श्यां कीधां कर्म ॥ जेह थकी यौवन समे, पाधां दुःख विण मर्म ॥ २ ॥ सूरि नणे महीपति सुणो, थिरकरी चित्त बनाव ॥ मलयाने महबल तणा, नांखुं गत नवनाव ॥ ३ ॥

ढाल चोवीशमी ॥ हस्तिनागपुर वर नलुं, ॥ जिहां पांडु राजा सार रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवी गण नुज पुरवरें, एक गृहपति हुतो स

मृद्ध रे ॥ प्रियमित्र नामें अपुत्रिउ, धनवंतो पूर्वें प्रसि
द्ध रे ॥ धनवंतो पूर्वें प्रसिद्ध, पूरवनव केवली, इम त्यां
रव रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ त्रण दयिता तेहने हूती, रुद्रा
वली नद्रा नाम रे ॥ त्रीजी तिम प्रियसुंदरी. नामें तस
प्रीतिनुं ठाम रे ॥ ना० ॥ २ ॥ वहेन सगी धुरनी बिन्हें.
मांहो मांहे धारे नेह रे ॥ बिहुं उपर प्रिय मित्रनें,
नवि बेठो प्रेमनो नेह रे ॥ नवि० ॥ ३ ॥ प्रियसुंदरी
साथें पिउ, अनुकूल रहे निश दीश रे ॥ निरखी ते
बहु अंगना, पोषे मनमां अति दोष रे ॥ पो० ॥ ४ ॥
प्रियसुंदरी प्रियमित्रथी, बिहुं कलह करे नित्यमेव
रे ॥ प्राहिं सोकलमी तणी, दीसे जग एहवी टेव रे ॥
दी० ॥ ५ ॥ मदनप्रिय नामें तिहां, प्रियमित्रनें हुतो
मित्र रे ॥ प्रियसुंदरी साथें तेणें, मांमी रतिप्रीति वि
चित्र रे ॥ मां० ॥ ६ ॥ काम महारस याचना, अव
लाने करतो तेह रे ॥ प्रियमित्रें दीठो तिहां, तव जा
ग्यो कोप अछेह रे ॥ त० ॥ ७ ॥ निज बांधव आगें
कही, तस चरित्र रहस्यनुं तेण रे ॥ पुरबाहिर का
ढ्यो परो, निर्बंधी कोप वशेण रे ॥ नि० ॥ ८ ॥ बो
ल्या तिहां केइ वाणिया, जाणे तेह गुह्यनी वात रे ॥
नहीं ए अजाणी अमथकी, पण न करुं कोइ परतां

त रे ॥ प० ॥ ए ॥ निज मोटा गुण लघु करे, परगुण अणु मेरु करंत रे ॥ धन्य धरामां ते नरा, विरला कोइ जननी जणंत रे ॥ वि० ॥ १० ॥ मदनवदन जांखुं करी, नाठो दिशि धारी एक रे ॥ डुर्वह अटवी मां पड्यो, नूख्यो वली तरस्यो ठेक रे ॥ नू० ॥ ११ ॥ पार लह्यो अटवी तणो, त्रीजे दिन तेणे नेठ रे ॥ आव्यो वही एक गोकुलें, दीठा पशुपालक द्रेठ रे ॥ दी० ॥ १२ ॥ महिषी कुल वन चारता, बेठा तरु ठा या ठाम रे ॥ नोजननो अरथी थसी, आव्यो तेह पा सें ताम रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ पय याच्यां गोवालीया, आपे पय महिषी दोहि रे ॥ पामर जन पण आचरे, करुणा रस अवसर मोहि रे ॥ क० ॥ १४ ॥ खीर त णुं नाजन ग्रही, पशुपालक अनुमति लेय रे ॥ आ वे समीप सरोवरें, शीतल जल थानक केय रे ॥ शी० ॥ ॥ १५ ॥ पंथे वहेतो अनुक्रमें, चिंते चित्त एम सुद्दढ रे ॥ कोइकने आपी जमुं, होय तो मुज जनम कयह रे ॥ हो० ॥ १६ ॥ चिंतवतां इम सामुहो, मलीयो मुनि पुण्य पसाय रे ॥ मास तणो उपवासियो, पारण दिन टाणे आय रे ॥ पा० ॥ १७ ॥ मुनि निरखी मन हर खियो, अहो सफल दिवस मुज आज रे ॥ प्रतिला

त्री एह साधुनें, सारुं मुज वंछित काज रे ॥ सा० ॥
॥ १७ ॥ धारी मनशुं एहवुं, कर जोमी आगल आय
रे ॥ पन्नणे साधु प्रत्यें इस्यो, पय शुद्ध अछे मुनिराय
रे ॥ प० ॥ १ए ॥ मुज उपर करुणा करी, वोहोरो
फासु पय एह रे ॥ इव्यादिकनी शुद्धता, निरखे मु
नि वोहोरे तेह रे ॥ नि० ॥ २० ॥ वांध्युं अनर्गल जा
वथी, मदनें शुन्न कर्म विशेष रे ॥ मुनिने प्रणमी आ
वियो, सरपालें लई पय शेष रे ॥ स० ॥ २१ ॥ आप
कृतारथ मानतो, पीवे पय शेष तिकोय रे ॥ विषम
तटें सरोवर तणे, जल पीवा वेगो सोय रे ॥ ज० ॥ २२ ॥
पग लपट्यो तिहांथी खशी, पमियो जल कंमे जाय रे ॥
मरण लही ए पुरवरें, मदनप्रिय दान पसाय रे ॥
म० ॥ २३ ॥ विजय नरेशरने घरें, सुत रत्न पणे उ
त्पन्न रे ॥ कंदर्प नामे थापियो, तस तात मरण
संपन्न रे ॥ त० ॥ २४ ॥ पाट पितानो आक्रमी, थई
वेगो पृथिवीपाल रे ॥ चोथे खंमें ए कही, कांतें चो
वीशमी ढाल रे ॥ कां० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुंदरीशुं प्रियमित्र त्यां, विलसंतो एकतान ॥ रु
ड्डा जड्डा नारिशुं, वांधे वैर निदान ॥ १ ॥ अन्य दिनें

प्रिय मित्रने निज ललनां लेइ लार ॥ यक्ष धनंजय जे टवा, चाल्यो सपरीवार ॥ २ ॥ पंथें वहेतो अधमगें, आव्यो ज्यां वड हेठ ॥ इक मुनि साहमो आवतो, देखे त्यां निज डेठ ॥ ३ ॥ आपणनें साहमो मल्यो, अशुभ सुकृत ए मुंड ॥ यात्रा थाशे निःफला, एहथी अशुज अखंड ॥ ४ ॥ इम कहेती प्रियसुंदरी, जन वाहन थोचार ॥ करे परिसह साधुनें, पापिणी रांड कुहाडि ॥ ५ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ जसोदानें गोरीमें ढोला, पमीरे नगारारी ठेर ढोला, जाग मजा जे रे रणसिंघ नागोरा ॥ ए देशी ॥

॥ उदय आव्यो मुजने इहां हांजी, परिसह मोटो एह हांजी, चिंति एहवुं रे, मुनि काउस्सग्ग ठावे ॥ त्रिविधें धारी रे, आतम वोसिरावे ॥ आ० ॥ अन्नड उससियादिकें हांजी, आगारें निरवेह ॥ चि० ॥१॥ पद अंगुष्ठ नखें ठवी हांजी, लोचन तारा धार हांजी, ध्यान महोदधि लहेरमां हांजी, झीले मुनि अविकार हांजी ॥ चि० ॥ २ ॥ बांधी अमशुं बाकरी हांजी, ऊभो ए हठ मांडि हांजी, कहेती एहवुं रे, कोपी मठराली ॥ कुमतें व्यापी रे, आचरणें काली ॥ आ० ॥ कहे सुंदरी

सेवक प्रत्यें हांजी, मर्यादा वट गांफि हांजी ॥ क० ॥३॥
साहमां ए ऊटवाहथी हांजी, जारे लाव हुताश हां
जी, ए पापीनें मांन्नियें हांजी, जिम होये अशुन्न वि
नाश हांजी ॥ क० ॥ ४ ॥ अशुकन फल एहनें हुवे
हांजी, फीटे वली अहंकार हांजी, सुंदरी सेवक एह
वां हांजी, निसुणी वचन विचार हांजी ॥ क० ॥ ५ ॥
कहे में चरणे पाडुका हांजी, पहेरी ढे नहीं आज
हांजी, ऊटामां कुण जायशे हांजी, विपम थलें विण
काज हांजी ॥ क० ॥ ६ ॥ मूकी कदाग्रह एहवो हां
जी, चालो आगें सदीस हांजी, वचन सुणी पीज
दासनां हांजी, बोल्यो चढावी रीश हांजी ॥ क० ॥ ७ ॥
कहेतां एहवुं रे, कोप्यो मन्नरालो ॥ कुमतें व्याप्यो रे,
आचरणें कालो ॥ अहो सेवक सुंदरी तणा हांजी,
बांध्या वस्त्रशुं पाय हांजी, नूमी जिहां लागे नहीं हां
जी, वली कंटक नन्न जाय हांजी ॥ क० ॥ ८ ॥ वा
हनथी प्रियसुंदरी हांजी, ऊतरे हेठी तुरंत हांजी ॥
मुनिवर पासें आइनें हांजी, निसुर इम पन्नणंत हां
जी ॥ क० ॥ ए ॥ इण अपशुकनें अमतणो हांजी,
कदिमत होजो वियोग हांजी ॥ विरह हजो ताहरे स
दा हांजी, वाहालानो वली सोग हांजी ॥ क० ॥ १० ॥

पाखंडी तुं पापीउ हांजी, राक्षसनो अवतार हांजी ॥ सब जयंकर सत्वनें हांजी, डुर्लग तुज आकार हांजी ॥ क० ॥ ११ ॥ निठुर इम आक्रोशथी हांजी, तप सीनें त्रणवार हांजी, पाषाणे करी आहणे हांजी, करती कोप अपार हांजी ॥ क०॥१२॥ उंघो मुनिना हाथ थी हांजी, ऊरूपी लीये निरलज्ज हांजी ॥ निज वाह नमां थापीनें हांजी, टाले कुशुकन कज्ज हांजी ॥ क० ॥ ॥ १३ ॥ कुशुकन फल एहनें हुउ हांजी, चालो ह वे निहचिंत हांजी ॥ इम कहेतां परिवारनें हांजी, सुखें दंपती पंथे वहंत हांजी ॥ क० ॥ १४ ॥ यक्ष जवन पोहोतां वही हांजी, पूज्यो धनंजय देव हांजी, बेठा करजोडी बिन्हें हांजी, सारे विधिशुं सेव हांजी ॥ क० ॥ १५ ॥ रागिणी श्रीजिनधर्मनी हांजी, तस घर दासी एक हांजी ॥ एहवुं बोली रे, सुंदरी सुगुणा ली ॥ सुमतें व्यापी रे, आचरणा वाली० ॥ कर जोडी दंपती प्रतें हांजी, समजावे इम ठेक हांजी ॥ए०॥ १६ ॥ पापकरम बांध्युं महा हांजी, आज तुमें त्रिण काज हांजी, उपशम धर तेहवो घणुं हांजी, संताप्यो रु षिराज हांजी ॥ ए० ॥ १७ ॥ हासें पण जो को क रे हांजी, एहवा रुषिनी जेह हांजी ॥ इह जव परजव

मां लहे हांजी, दारिद्र दुःख अछेह हांजी ॥ ए० ॥ ॥ १७ ॥ श्रीअरिहंतें सूत्रमां हांजी, वेष कह्यो वंद नीक हांजी, आदर करतो वेषनें हांजी, आणे मुगति नजीक हांजी ॥ ए० ॥ १ए ॥ दासी वचनें तेहवां हांजी, पाम्यां ते प्रतिबोध हांजी॥दुर्गति दुःखथी बीह नां हांजी, थरक्या थई गतक्रोध हांजी ॥ ए० ॥ २० ॥ पछतावो करता हीये हांजी, ऊरतां लोचन नीर हां जी, दीन मना थइ आपने हांजी, नींदे वली वली धीर हांजी ॥ ए० ॥ २१ ॥ निजदासीनें प्रशंसता हां जी, पाछां आवे धाम हांजी, तेहिज मुनिपासे जइ हांजी, वंदे पग शिर नाम हांजी, ॥ ए० ॥ २२ ॥ चो था खंम तणी हुई हांजी, ए पणवीशमी ढाल हांजी, कांति कहे धन्य ते नरा हांजी, मन वाले ततकाल हांजी ॥ ए० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जो धर्मध्वज आज हुं, पाछो फरी पामेश ॥ तोहिज ए थानक थकी, काउस्सग्ग पारेस ॥ १ ॥ क री प्रातज्ञा एहवी, तिमहीज ऊभो तेह ॥ राग दोष परिणति तजी, पेठो उपशम गेह ॥ २ ॥ गुण निरखी संयम तणा, स लहे दंपती तास ॥ धर्मध्वज पाछो दि

थे, करता स्तुति अन्यास ॥ ३ ॥ निजकृत कुचरित चेष्टना, संचारी सवि राग ॥ गदगद कंठें वीनवें, ध रतां दुःख अताग ॥ ४ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ मारुजी केणे थांने चा
ल्योजी चालयो, किणे थांने दीधी शीख
मारा लोजी ॥ वारीहो दक्षिणरी हो
राजन चाकरी ॥ ए देशी ॥

॥ साधुजी मेंतो थांने चालोजी चालव्यो, म्हेंतो थांशुं कीधी जेरू म्हारा साधु, वारी हो सुगुण रे हो जाउं जामणें साधुजी ॥ राज रूमी जांति हो आदरी, कोप नाख्यो दूरें फेमी ॥ मा० ॥ १ ॥ मेंतो थारी कीध हो अवगना, पमीयां मोहें बेहु आप ॥ मा० ॥ जव जप ग्राही इहां आकरुं, अलवें बांध्युं जुंरुं पाप ॥ मा० ॥ ॥ २ ॥ खमजो महोटी एह ।वराधना, करुणामें रूमे म नवालि ॥ मा० ॥ ताता कूता पूठें हो जो जसे, पण गज न पमे तेहने ख्याल ॥ मा० ॥ ३ ॥ जंबुक जजो कूके हो रोशमां, जोरे सोरें मुखमाने पास ॥ मा० ॥ तोही जो ही मातो हो केसरी, मांमे नहीं हणवानो क्यास ॥ मा० ॥ ४ ॥ दोषें पोष्यो जारी हो आतमा, थाशे केहा असचा हवाल ॥ मा० ॥ जो कोई हेतु हो दाखीयें, दू

टां जेथी पातक जाल ॥ मा० ॥ ५ ॥ पारी काउस्सग्ग त्यां हो इम कहे, कोपां जो में एम अकंम ॥ नोला प्राणी, वारी हो संयमनां हो लीजें नामणां प्राणीजी० ॥ जीव कोई नाहीं हो लोकमां, याशे साधु धरम शत खंम ॥ नो० ॥ ६ ॥ थेंतो खेलो शुद्ध विवेकशुं, पालो रूमो जिननो धर्म ॥ नो० ॥ गंमो दूरें गाढी ए मूढता. छेदो नवनां पोषक कर्म ॥ नो० ॥ ७ ॥ पामी सूधी शिक्षा हो साधुथी, श्रद्धा आणी साचे चित्त ॥ नो० ॥ वार व्रत नावें हो उच्चस्यां, समकित शुद्ध जाचाचि चित्त ॥ नो० ॥ ८ ॥ नक्तें पानें मुनिने आमंत्रिनें, आव्यां गेहें दंपती हर्षे ॥ नो० ॥ लीना नीना सार संवेगमां, नाखी मनथी कुमति निकर्षे ॥ नो० ॥ ए ॥ आवे पुरमां साधु ते गोचरी, नमतो नमतो घर घर वार ॥ नो० ॥ तेहनें गेहें आव्या पुण्यथी, देहाधारी उपशम सार ॥ नो० ॥ १० ॥ निरखी वेहु साधुनें हरखियां, मानें आतमनें सुकयछ ॥ नो० ॥ फासु आपे हो असना नावशुं, दंपति मनमां रीजी तछ ॥ नो० ॥ ११ ॥ पाले वारे व्रत त्यां हो निरमलां, ःफिण्पामत अद.गो न गंम ॥ नो० ॥ चोथे खंमें चावी छवीशमी, कांतें नांखी ढाल मन कोम ॥ नो० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुडा नद्रा नारिनें, शोक्य अने पिउ साथ ॥ म
हा कलह एक दिन हुउं, तेणें निभ्रंठी नाथ ॥ १ ॥
शोक्य धरम जगमां निपख, साले साल समान ॥ स
हे मरण पण नवि सहे, शोक्योमां अपमान ॥ २ ॥
धिग धिग जीवित आपणुं, जनम निरर्थक कीध ॥
कलह टले नहीं को दिनें, डुहग पणे पिउ दीध ॥ ३ ॥
यथाशक्ति दानादिकें, कीधां परनव कज्ज ॥ मरण श
रण हवे आदरी, नांखां डुःखशिर रज्ज ॥ ४ ॥ एक
मनी बे बेहेनकी, चिंती एम एकांत ॥ ठानें जई कूवे
पकी, करवा डुःख विश्रांत ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ नाथतानी देशी ॥

॥ रुडा मरण तिहां लही, जयपुर नृप श्रीचंद्रपाल
रे लाल ॥ तेहनें घर पुत्री पणे, थई कनकवती इति
बाल रे लाल ॥ ॥ १ ॥ नांखे गत नव केवली, निसुणे प
रषद धरी कान रे लाल ॥ वैर न करशो केहथी, जो
होय हियके कांई शान रे लाल ॥ नां० ॥ २ ॥ वीरध
वल इंणे राजिये, परणी ते प्रेम रसेण रे लाल ॥
नद्रा मरी थई व्यंतरी, बीजी परिणाम वशेण रे ला
ल ॥ नां० ॥ ३ ॥ नमती ते वन व्यंतरी, एकदिन

पुर पृथिवीगाण रे लाल ॥ आवी देखे विलसता. प्रियसुंदरी प्रियनें टाण रे लाल ॥ नां० ॥ ४ ॥ देखी वैर संनारियुं, कोपें कलकलती चित्त रे ॥ लाल ॥ सुतां बिहूं ऊपर जई, नाखे निशिमां घरनिंति रे लाल ॥ नां० ॥ ॥ ५ ॥ शुन परिणामें दंपती, तिहां पामे मरण अकाल रे लाल ॥ प्रियमित्र जीव ए ताहरो, थयो पुत्र महाबल बाल रे लाल ॥ नां० ॥ ६ ॥ प्रियसुंदरीनो जीव ते, हुई मलयसुंदरी ए बाल रे लाल ॥ वीरधवलनी नंदनी. तुज सुत दयिता सुकुमाल रे लाल ॥ नां० ॥ ॥ ७ ॥ मलयायें तुज नंदने, परनवें जे बांध्युं वैर रे लाल ॥ रुडा नडा नारिशुं, तस फल इहां लाधां घेर रे लाल ॥ नां० ॥ ८ ॥ पूरव वैर संनारती, तेह असुरी अवधें जाण रे लाल ॥ महबलनें हणवा वली, रस सांके उद्यम आण रे लाल ॥ नां० ॥ ए ॥ पुण्य प्रनावें एहनें. न सकी कांई करण अनिष्ट रे लाल ॥ सूतां निशि देवी रहे, करती उपसर्गह डुष्ट रे लाल ॥ ॥ नां० ॥ १० ॥ वस्त्र विनूषण कुमरनां, हरियां इणे क्रोधें व्याप रे लाल ॥ वट कोटरमां मूकीयां, लाधां ने कुमरनें आप रे लाल ॥ नां० ॥ ११ ॥ प्रथम मिलनमें आपिउं, कन्यायें कुमरनें हार रे लाल ॥ लक्ष

मीपुंज मनोहरू, सुरवनमाला अनुकार रे लाल ॥ ॥ जां० ॥ १२ ॥ सूतो निरखी कुमरनें, तेह पण ह रियो निशिमांहिं रे लाल ॥ व्यंतरीयें मंदिरथकी, संचारी वेर अथाह रे लाल ॥ जां० ॥ १३ ॥ गलत्र व वहिननी प्रीतथी, आप्यो जई कनका कंठ रे लाल ॥ कोली नवें पण रस दीये, है विषमी प्रेमनी गंठ रे लाल ॥ जां० ॥ १४ ॥ चोथे खंके सुंदरू, थई सत्तावी शमी ढाल रे लाल ॥ कांति कहे हवे पूछशे, इहां वी रधवल नूपाल रे लाल ॥ जां० ॥ १५ ॥

दोहा

॥ इणे अवसर विस्मित हीये, वीरधवल नूपाल ॥ पूछे इम केवली प्रत्यें, आपी करतल नाल ॥ १ ॥ स्त्रयंवर मंमप विना, महबल प्रथम कदाच ॥ मल्यो नहीं मलया प्रत्यें, तो हार दियो किम राच ॥ २ ॥ हसे कुमर कुमरी मनें, निज चरित्रगत जाणि ॥ ज्ञात चरित्र विचित्र ते, नांखे गुरु तेणें ठाण ॥ ३ ॥ कुमर मली पहेलो जई, आव्यो पामी हार ॥ कनकायें नव वैर थी, विरच्यो कूम प्रकार ॥ ४ ॥ मलया पुत्री उपरें, कोपाव्यो नृप व्यर्थ ॥ इत्यादिक धुरनी कथा, आखे सुगुरु सदर्थ ॥ ५ ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ जीरे जीरे स्वामी ॥
॥ समो सस्या ॥ एदेशी ॥

॥ वचन सुणी केवली तणां, बोल्या परषद लोको
रे ॥ कंदल कंद वधारवा, विष जलधर जोको रे ॥ १ ॥
धिग धिग चित्त नारी तणुं, अनरथ फल आपे रे ॥
कुमति कदाग्रह पोषीनें, रस रीतें उथापे रे ॥ धि० ॥ २ ॥
कहे वली आगें केवली, महबल निशि मांहीं रे ॥ व्यं
तरीयें हणवा भणी, अपहारयो उछाहीं रे ॥ धि० ॥
॥ ३ ॥ महबल मूठी आहणी, नाठी विकराली रे ॥
विषम चरित्ता व्यंतरी, न करे वली आली रे ॥ धि०
॥ ४ ॥ सेवक सुंदर ते मरी, थयो भूत उदंडो रे ॥
बाहिर पुहवीठाणने, ते वडमां प्रचंडो रे ॥ धि० ॥ ५ ॥
भमतो महबल विधिवशें, आव्यो वडतरु हेठ रे ॥
ते भूतें तिहां ओलख्यो, निरखी गतभव देठ रे ॥ धि०
॥ ६ ॥ वड डालें पग एहना, बांध्यो माथे नीचे रे ॥
जिम धरणी अडके नहीं, कंटक नवि खुंचे रे ॥ धि०
॥ ७ ॥ वचन संभारी एहवुं, प्रियमित्रनुं तेणें रे ॥ क
रवा पीडा कुमरनें, संच मांड्यो एणें रे ॥ धि० ॥ ८ ॥
शबना मुखमां अवतरी, इम बोल्यो हसंतो रे ॥ मूढ
हसे कांइ मुजनें, देखी बांध्यो एकंतो रे ॥ धि० ॥ ९ ॥

तुं पण एहिज वस्तलें, आगामिणी रातें रे ॥ बंधाशे उंचे पगें, नीचे शिर थातें रे ॥ धि० ॥ १० ॥ सहेशे बहु दुःख पापथी, टांग्यो जिम चोर रे ॥ तेपण ते द्विज महबलें, सह्यां दुःख कठोर रे ॥ धि० ॥ ११ ॥ रुद्रायें एकण दिनें, लोन्नें लही लागो रे ॥ चोरी पिउनी मुद्रिका, गतजवमां आगो रे ॥ धि० ॥ १२ ॥ मुद्रा सुंदर सेवकें, दीठी लेतां ठाने रे ॥ जोतो पियु मुद्रा प्रत्यें, समजाव्यो शानें रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ रुद्रा पासें मुद्रिका, दीठी में ठे जाउ रे ॥ मांगी लीयो इम हलफल्या, आकुल कांइ थाउ रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ वचन सुणी सुंदर तणा, रुद्रा मन रूठी रे ॥ सुंदर साथें चोरटी, लरूवानें ऊठी रे ॥ धि० ॥ १५ ॥ कोपाकुल बोली इस्युं, जूठ इम कांइ नांखे रे ॥ दुर्मति काप्या नाकना, कांइ शरम न राखे रे ॥ धि० ॥ १६ ॥ मुद्रा में लीधी किहां, आल एम चढावे रे ॥ मुज सरखी नूंरुी नथी, जाणे ठे तुं चावे रे ॥ धि० ॥ १७ ॥ मौन करी सुंदर रह्यो, बीहीतो मनमांहिं रे ॥ प्रियमित्रें करी तारूना, लीधी मुद्रा त्यांहिं रे ॥ धि० ॥ १८ ॥ लघुता कीधी शोक्यमां, रुद्रा अपमानी रे ॥ दीन वदन जांखी थई, रही बापरुी ठानी रे ॥ धि० ॥ १९ ॥

दुर्वचनें वांध्यां जिके, रुद्रा जवें पापो रे ॥ जोगवियां फल तेहनां, कनका थई आपो रे ॥ धि० ॥ २० ॥ सूति पणे ए सुंदरी, जव वैरिणी जाणी रे ॥ कनकवतीनी नासिका, लीधी मुखें ताणी रे ॥ धि० ॥ २१ ॥ हसतां वांधे जे जीवको, तेह रोतां न बूटे रे ॥ अनरस जा वें परिणमी, चिरकालें ते खूटे रे ॥ धि० ॥ २२ ॥ ढाल कही अमवीशमी, चोथे खंमें ए चावी रे ॥ कांति कहे मन उल्लसी, सुणो श्रोता जावी रे ॥ धि० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

कहे सुगुरु नृपति जणी, शेष कथा विरतंत ॥ सावधानता आदरी, परषद सकल सुणंत ॥ १ ॥ मदन धरंतो गतजवें, प्रियसुंदरीशुं राग ॥ कंदर्प्प जव तेहथी हुउ, मलयाशुं रस लाग ॥ २ ॥ पूर्वें मलया महवलें, लही संकलपं मर्म ॥ दीधुं दान सुसाधुने, पाल्यो श्रीजिनधर्म ॥ ३ ॥ तेहथी सुकुलादिक तणी, सामग्री लही आंहिं ॥ आराधि विहुके नहीं, सुकृत कमाई क्यांहि ॥ ४ ॥ जवतारक जिनधर्मनें, रीजि जजो अह खीज ॥ उलटो पण सवलो फलें, जूमि पड्यां जो बीज ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणत्रीशमी ॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥
॥ प्रियसुंदरी मुनिवरनें देखी, आप कुलवट कां
णि उवेखी रे ॥ हुई साधुनी द्वेषी ॥ बंधु वियोग ह
जो नित्य ताहरे, तुंतो दीसे राक्तस जाहरे रे ॥ हु० ॥
॥ १ ॥ रूपें तुं दीसे नयकारी, प्राण नूतनें दे दुःख
नारी रे ॥ हु० ॥ तुज मुख जोतां पुण्य पणासे, म
ल मलीन वपुष तुज वासें रे ॥ हु० ॥ २ ॥ इम क
हीनें पाषाण प्रहारें, हण्यो मुनिवरनें त्रण वारें रे ॥
॥ हु० ॥ महबल पण तिहां मौन करीनें, अनुमोदे
दृष्टि धरीनें रे ॥ हु० ॥ ३ ॥ बेहु जणें महापातक
बांध्युं, नीषण नव बंधन सांध्युं रे ॥ हु० ॥ पछता
वो करतां वली पाछें, बहु खेपव्युं समजी आछें रे
॥ हु० ॥ ४ ॥ खेपवतां दल ऊगर्या जेहवुं, इहां फ
ल लह्युं तेहथी तेहवुं रे ॥ हु० ॥ त्रिहुं वारें लह्यो
बंधु वियोगो, न मटे पूरवकृत नोगो रे ॥ हु० ॥ ५ ॥
कनकाथी लाधो अतिवंको, एणी रात्रिचरनो (राक्त
सीनो) कलंको रे ॥ हु० ॥ वंक विना मूकी वन सी
में, रखमी गिरि गहन तटीमें रे ॥ हु० ॥ ६ ॥ देश
विदेश लह्यां दुःख केतां, पार आवे न कहे तेतां रे
॥ हु० ॥ बिहुं जण कर्म तणे अनुसारें, सह्यां संक

ट त्रिविध प्रकारें रे ॥ हु० ॥ ७ ॥ ऋरुपी मुनि रयह रणुं दीधुं, मलयायें तिम वली दीधुं रे ॥ हु० ॥ तेहथी पुत्र वियोग लहीनें, फरी पामी संयोग वहीनें रे ॥ हु० ॥ ८ ॥ करी उपसर्ग सुसाधु विराध्यो, अंतें तिम जे आराध्यो रे ॥ हु० ॥ तेहिज हुं बद्मस्थ टलीनें, हुउ केवली तपसीनें रे ॥ हु० ॥ ए ॥ विहुं जणनो वीजो नव एही, महारे नव एकज तेही रे ॥ हु० ॥ वचन सुणी मनमां कसखाणो, वली वोल्यो ईम महीराणो रे ॥ हु० ॥ १० ॥ नगवन् कनकवती तेम असुरी, तव वैर विरोधें प्रसरी रे ॥ हु० ॥ करशे एहुनें वली कांई मावुं, किंवा वैर पुरातन घावुं रे ॥ हु० ॥ ११ ॥ सूरि नणे असुरी कर तास्मी, गई वैर विरोध विठांमी रे ॥ हु० ॥ कनकवती नमती इहां आवी, विपमो एक दाव उपावी रे ॥ हु० ॥ १२ ॥ एक उपद्रव करशे कोपें, तुज सुतनें वैराटोपें रे ॥ हु० ॥ कनका असुरी डुरित डुरंता, नमशे नव काल अनंता रे ॥ हु० ॥ ॥ १३ ॥ मलया महवलनो नव नांख्यो, एहमां अत्र शेप न राख्यो रे ॥ हु० ॥ उंगणत्रीशमी चोथे खंमें, कांतें कही ढाल उमंगें रे ॥ हु० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मलया महबलनुं तिहां, निसुणी चरित विशाल ॥ नव निस्पृह परषद हुई, धरी वैराग्य रसाल ॥ १ ॥ दंपति सहगुरु मुखथकी, निसुणी आप चरित्त ॥ अति वैरागें आदरें, बारे व्रत सुपवित्त ॥ २ ॥ मुनि सेवा करशुं सदा, आणी नक्ति विशेष ॥ ग्रहे अन्नि ग्रह एहवो, सुगुरु मुखें निर्दूष ॥ ३ ॥ केता संयम आदरे, श्रावकनां व्रत केय ॥ नद्रक नावी केई हुआ, रागादिक नाखेय ॥ ४ ॥ चरित आप संताननां, सांन्नलीनें बिहुं नूप ॥ नवनिरुक थई ऊमह्या, संयम ग्रहण अनूप ॥ ५ ॥

॥ ढालत्रीशमी ॥ जिनवचनें वैरागीयोहो धन्ना ॥ एदेशी ॥

॥ जिनवचनें वैरागीउं हो राया, इंम कहे बे कर जोरु ॥ राज्य चिंता करि आपणी हो सामी, तुम पासें मन कोरु रे हो मोरा सामी, संयम लेशुं बे ॥ १ ॥ संयम रस पीयूषमां हो सामी, केलि करण मन हुंस ॥ विषयादिक लागे तिसा हो सामी, जेहवा कटुक थल तूसरे ॥ हो० ॥ २ ॥ अवसरविद नाणी कहे हो राया, मा प्रतिबंध करेह ॥ तहत्ति करी ऊव्या विन्हे हो राया, आव्या निजनिज गेह रे ॥ हो० ॥ ३ ॥ पो

छत्रीशगण तणो कीयो हो राया, सूरें महबल राय ॥ सागरतिलकें थापियो हो राया, शतबल अभिषेकाय रे ॥ हो० ॥ ४ ॥ वीरधवल वसुधाधवें हो राया, मलयकेतु अभिधान ॥ आप तणे पाटें ठव्यो हो राया, तिहांहिज देई सनमान रे ॥ हो० ॥ ५ ॥ पद चिंता आप आपणी हो राया, कीधी जनपद हेत ॥ संयम लेवा संचरे हो राया, निज निज नारी समेत रे ॥ हो० ॥ ॥ ६ ॥ ते केवली पासें जई हो राया, संयम ल्ये श्रीकार ॥ रुके हितशिक्षा ग्रहे हो साधु, चरण करण गुणधार रे ॥ हो सोरा साधु, संयम पाले वे ॥ ७ ॥ संयम रूपण टालवा हो साधु, शम दम शौच पवित्र ॥ तृण मणिनें सरिखा गणे हो साधु, गणे समा रिपु मित्र रे ॥ हो० ॥ ८ ॥ गुरु पासें हुआ अभ्यसी हो साधु, द्वादश अंगी जाण ॥ छठ अठम आदें घणां हो साधु, करता तप शुभ जाण रे ॥ हो० ॥ ९ ॥ महासती पासें ठवी हो साधु, नृपराणी देई दीख ॥ सामायिक आदें ग्रहे हो साधु, शिवपद साधन शीख रे ॥ हो० ॥ १० ॥ दिन केताई तिहां रही हो साधु, उपगारी गुरु राय ॥ विहार करे वसुधा तलें हो साधु, बिहुं मुनि सेवे पाय रे ॥ हो० ॥ ११ ॥ शोपी तन तप आकरे हो साधु,

सघलां ते व्रत पाल ॥ सुरलोकें थया देवता हो साधु, संलेषण संजालि रे ॥ हो० ॥ १२ ॥ महाविदेहें सिजशे हों साधु, कर्मतणो करी नाश ॥ अक्षय अव्याबाह नुं हो साधु, लहेशे पद सविलास रे ॥ हो० ॥ १३ ॥ चोथे खंडें त्रीशमी हो साधु, ढाल कही अजिराम ॥ कांति विजय कहे माहरो हो साधु, ते मुनिने होजो प्रणाम रे ॥ हो० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जगिनी पति जगिनी प्रत्यें, आपूढी अति प्रीति ॥ आवे आप पुरें वही, मलयकेतु वरु रीति ॥ १ ॥ सागर तिलकपुरें ठवी, सेनानी निर्जंग ॥ महबल आवे निजपुरें, शतबल सुत लेई संग ॥ २ ॥ पाले राज्य महाबली, गाले अरियण मान ॥ सेवे श्री जिन धर्मनें, सकुटुंबो महिराण ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥ मयणरेहा सती ॥ ए देशी ॥

॥ ते व्यंतर साहायथी रे हां, महबल देश अनेक ॥ साधे महाबली ॥ श्रीजिन वचनां धर्मनी रेहा, करे महोन्नति एक ॥ सा० ॥ १ ॥ पुरपाटण संबाहणं रेहां, थापी जिण प्रासाद ॥ सा० ॥ करे जक्ति मुनिवर तणी रेहां, छांमी पंच प्रमाद ॥ सा० ॥ २ ॥वी

जो सुत महबल तणो रेहां, हुउं सहसबल नाम ॥ सा० ॥ वर लक्षण गुण सायरू रेहां, वंश वधारण मान ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकदिनें रयणी समे रेहां, मह वल मलया नारि ॥ सा० ॥ श्लोक पुरातन चित्त धरे रेहां, अन्वय अर्थ विचार ॥ सा० ॥ ४ ॥ त्रिधिपदनी वक्तव्यता रेहां, नांखी अदृष्ट सरूप ॥ सा० ॥ धर्मा धर्म पदार्थनो रेहां, कथक अदृष्ट अनूप ॥ सा० ॥ ५ ॥ स्वर्ग मुक्ति गति साधना रेहां, हेतु प्रथमपद वाच्य ॥ सा० ॥ नरकादिक गति कर्षणें रेहां, बीजो हेतु अवा च्य ॥ सा० ॥ ६ ॥ कारण जुगपदनो कह्यो रेहां, एकज पद पर्याय ॥ सा० ॥ जावि प्रमुख अनेक छे रेहां, ते हना वाचक प्राय ॥ सा० ॥ ७ ॥ परिपाको रस ते दीये रेहां, चिंतित होये अकयह ॥ सा० ॥ शुन्न अशुन्ना दिक जावथी रेहां, द्ये परिणत फल सह ॥ सा० ॥ ८ ॥ अवसरपणाथी तेहनी रेहां, शक्ति कही बलवंत ॥ सा० ॥ पूरवपक्ष विचारतो रेहां, हुइ निज वश तेह तंत ॥ सा० ॥ ए ॥ विषय कषाय वशें पड्या रेहां, ते न लहे तस व्यक्ति ॥ सा० ॥ न्यायें अशुन्न वित्तावनी रेहां, चाखे रस परिपक्ति ॥ सा० ॥ १० ॥ जाणो उ वेखे आपथी रेहां, सहज प्रत्यें परतीर ॥ सा० ॥ अ

हो अहो जननी मूढता रेहां, पीवे विष तजी खी
र ॥ सा० ॥ ११ ॥ आज लगें नवि उलख्यो रेहां, नि
र्मल सहज स्वभाव ॥ सा० ॥ भूली भमी भवमां घणुं
रेहां, जिम जलनिधिमां नाव ॥ सा० ॥ १२ ॥ दाव
नहिं चूकुं हवे रेहां, करवा निज उचितार्थ ॥ सा० ॥
भीनी परम संवेगमां रेहां, धारी इम श्लोकार्थ ॥
सा० ॥ १३ ॥ महबल पण तव ऊभग्यो रेहां, भवथी
विषय विमुक्त ॥ सा० ॥ परिणति संयम सारनी रे
हां, हुइ बिहुंने अभिमुक्त ॥ सा० ॥ १४ ॥ विद्या
शोखे शैशवें रेहां, यौवन साधे भोग ॥ सा० ॥ वृद्ध
पणे व्रत आदरे रेहां, अंते अणसण योग ॥ सा० ॥
॥ १५ ॥ नीति पुराणें एहवुं रेहां, भाख्युं नृप कर्त्त
व्य ॥ सा० ॥ महबल मन धारी इस्युं रेहां, सजग
हुउ मन भव्य ॥ सा० ॥ १६ ॥ पुत्र सहसबलनें ठवे
रेहां, निजपाटें धरी प्रेम ॥ सा० ॥ सागरतिलकें थापीउ
रेहां, पहेलो शतबल जेम ॥ सा० ॥ १७ ॥ मलया
साथें उछवें रेहां, आवे सुगुरु समीप ॥ सा० ॥ पंच
महाव्रत उच्चरयां रेहां, विधिपूर्वक अवनीप ॥ सा० ॥
॥ १८ ॥ ढाल हूइ एकत्रीशमी रेहां, चोथे खंडे अदो

५ ॥ सा० ॥ कांति कहे सुणतां हुवे रेहां. अध्यातम रस पोप ॥ सा० ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ दुविहा शिक्षा पालतां, विहु जण तप जप ली न ॥ करे विहार महीतलें. थया सुगुरु आधीन ॥ १ ॥ गुरु आदेशें विहुं जणां, जइ नंदननें पास ॥ वारे व्यसनथकी सदा, श्रीजिनधर्म प्रकाश ॥ २ ॥ आप कृतारथ मानता, बे बांधव नृप पूत ॥ मांहो मांहि सुशीखथी. थया नेह संजुत्त ॥ ३ ॥ विहुंनी श्रीजिन धर्मथी, नेदी साते धात ॥ बीजानें पण शीखवे. मा रग ते अवदात ॥ ४ ॥ राजऋषि सत्त्वबल हवे, वहेतो व्रत असिधार ॥ आगमविद गीतार्थमां, हुउ शिरोमणि सार ॥ ५ ॥ एकाकी विचरण जणी, मागी गुरु आ देश ॥ कुरुकी संबल महामुनि. विचरे देशविदेश ॥ ६ ॥ ॥ ढाल बत्रीशमी ॥ रमतां फाटो घाघरो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपशमधर मुनि सेहरा रे. सुरगिरि थिर परें चि त्त रे राज ॥ सौम्यें रे जेह आगें पूरण चंदमा रे ला जे ॥ १ ॥ सर्व सहे वसुधा समो रे, अप्रतिहत वा युनें रे तोलें ॥ कुंजर रे परिसहथी जेहवो. केसरी अ मोलें ॥ २ ॥ आलंबन विहे नहीं रे, गगनपरें निरपे

ड रे आपें ॥ दीपे रे रवि झींपे ताजा तेजने प्रतापें ॥ ३ ॥ व्रतनो भार उपाड्वा रे, समरथ शक्तें जेह्वो रे धोरी ॥ भाजे रे रागादिकना गढ सिंधुरा बल फो री ॥ ४ ॥ पंकज पत्र तणी परें रे, रहे निर्लेप सदैव रे रूडो ॥ दरियो रे गांभीर्यें जेह्नें आगलें न ऊंडो ॥ ५ ॥ अंजन लेश धरे नहिं रे, निर्मल जेह्वो शंख रे गाजे ॥ आवे रे उपसर्गें सूरिम आदरी रे गाजे ॥ ६ ॥ विहरंतो मुनि एकलो रे, सांज समय एक दि सनें रे टांणे ॥ आव्यो रे पुर सागरतिलकें उद्याणे ॥ ७ ॥ शतबल सुत ऋषि रायनो रे, राज करे तिहां राजवी रे शूरो ॥ वारे खड्ग धारें अरिनें न्यायमां रे पूरो ॥ ८ ॥ ते ऋषि निरखी ओलखी रे, हर्ष भस्यो वनपाल रे दोडी ॥ आव्यो रे नृपतिने प्रणमी वीनवे कर जोडी ॥ ए ॥ देव महाबल साधुजी रे, आज जनक तुम पुण्यथी रे आव्या ॥ वनमां रे एकाकी संयम योगमां रे भाव्या ॥ १० ॥ शतबल नृपति सुणी इस्युं रे, हरषवशें रोमांचशुं रे व्यापे ॥ प्रीतें रे वनपालकनें मणिभूषणां त्यां आपे ॥ ११ ॥ अवनीपति चिंते इस्युं रे, आज हुउं छे असूर रे माटे ॥ काले रे वांदीशुं युक्तें ऋद्धिनें रे थाटें ॥ १२ ॥ धन्य धरा हुई मा

हरे रे, पावन ए पुर लोक रे वारू ॥ दीधो रे जे पु एयें जनकें आइने दीदारु ॥ १३ ॥ एम कही पद पा डुका रे, मूकीनें नरनाथ रे वंदे ॥ त्यांहि रे अति नत्तें गातो पापनें निकंदे ॥ १४ ॥ तात चरण युग नेटिनो रे, लाजी ते निशि डुःखथी रे काढें ॥ प्रगम्यो रे हवे प्रगट्यो दिणयर दीपियो प्रगाढें ॥ १५ ॥ ढाल हुइ बत्रीशमी रे, चोथे खंमें एह रे चोखी ॥ कांतें रे शुन्न शांतें नांखी रंगमां रस पोखी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती हवे ते समे, जनपद पुर नटकंत॥ देवयोगथी डुरकणी, तिण पुर आवी रहंत ॥ १ ॥ तेहिज दिन संध्या समे, काननमां गइ काम ॥ दृष्टि पड्यो महबल मुनि, रह्यो काउस्सग्ग ताम ॥ २ ॥ निरखी रूमें उलखी, हुइ महा नय नीती ॥ तेहिज ए सुत शूरनो, महबल मुनि अवनीत ॥ ३ ॥ मूलथ की ए माहरां, जाणे सकल चरित्त ॥ करशे प्रगट इहां कदे, तो माहारे कुण मित्त ॥ ४ ॥ तेह नणी विरचुं इहां, तेहवो कोइ उपाय ॥ जेहथी को जाणे नहिं, मुज कुचरित्त पलाय ॥ ५ ॥ करुं उपेक्षा किम हवे, अ नरथ चांपुं पाय ॥ नहिं मुज जीवत अन्यथा, वली

इण पुर न वसाय ॥ ६ ॥ दुष्ट चरित्रा एहवुं, धारी मन मां पाप ॥ कारज अवसर पख्खती, जई बेठी घर आप ॥ ढाल तेत्रीशमी ॥ वीर वखाणी राणी चेलणाजी ॥ ए देशी ॥

सांज विहाणी पडी रातडीजी, व्यापिउं घोर अंधार ॥ तरा लग्या गगनमां तारकाजी, लाग्या फिरण निशिचार ॥ सां० ॥ १ ॥ एकरूपें थया विश्वनाजी, जूजुआ वस्तु समुदाय ॥ आक्रम्या श्याम अलिकुलस मेजी, तमगुणें आप ढल पाय ॥ सां० ॥ २ ॥ खेलता सुररमणी रसेंजी, जेह मधुपान रसलीन ॥ व्यसनथी तेह अलि बांधियाजी, कमल काराघरें दीन ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ लोक निज निज घर विश्रमेजी, वली मल्या मार्ग संचार ॥ तेह समे निसरी गेहथीजी, रहस्य पणे तेह जिम जार ॥ सां० ॥ ४ ॥ अगनी धुखंती ग्रही हाथमांजी, आवी जिहां मुनिवर तेह ॥ मूर्त्तिधर धर्म ज्यों थिर रह्योजी, काउस्सग्गें झलकंते देह ॥ सां० ॥ ॥ ५ ॥ पोलिये द्वार पुरनां जड्यांजी, संत व्यवहार विधिमाण ॥ जाणे निज नेत्र मल्यां पुरेंजी, त्राति मुनि कष्ट मन जाण ॥ सां० ॥ ६ ॥ लोकसंचार नहीं बाहिरेंजी, निरखीयो शून्य वन त्राग ॥ दुष्ट कनका लही आपणोजी, साधवा कार्यनो लाग ॥ सां० ॥ ७ ॥

काष्ट अंगारनें कारणेजी, किणहीकें थापिया आण ॥ गतदिनें सीममां सहजथीजी, सामटा ते मल्या टां ण ॥ सां० ॥ ७ ॥ तेह काठें करी पापिणीजी, आवरे साधुनें तेम ॥ चिहुं दिसें निरखतां साधुनुंजी, अंग दीसे नहीं जेम ॥ सां० ॥ ए ॥ विंटंतां साधुने काष्ठशुंजी, आणी हत्या महा व्याप ॥ चउगइ दुरक संसारनंजी, विंटीयो तेणीयें आप ॥ सां० ॥ १० ॥ पूर्व नव वैरथी तेणीयेंजी, निर्दयायें महाघोर ॥ अगनि सलगामीयो चिहुं दिसेंजी, पवनथी जागीयो जोर ॥ सां० ॥ ११ ॥ मुनिवरें काउस्सग्ग ध्यानमांजी, देखी उपसर्ग मरणां त ॥ कीधी आराधना चित्तथीजी, तेम रह्यो योग रस शांत ॥ सां० ॥ १२ ॥ खंम चोथे खरी खांतशुंजी, एह तेत्रीशमी ढाल ॥ कांतिविजय कहे हवे इहांजी, साधशे साधु जयमाल ॥ सां० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उद्दीप्यो वनदव समो, ज्वालजिह्व चउफेर ॥ मुनि वरनें तन पाखतें, खातो धूम णिधेर ॥ १ ॥ कोमल तनु रु धिरायनुं, चाले वन्हि तपंत ॥ मूलथकी कनका तणां, जा णे सुक्र न दहंत ॥ २ ॥ विकटोपद्रव पीकता, सहेतां श्री ऋषिधोथ ॥ जागा निज आतम प्रबें, देता इम प्रतिबोध ॥

॥ढालचोत्रीशमी॥रागबंगाल॥राजा नहीं नमे ॥ए देशी
॥ रे जीव क्रोधकूं दूरें डारि, शांतिदशासौं आप कौं तार ॥ ज्ञानी आतमा ॥ हांरे तेरे घरका रूप सं जार ॥ मेरे आतमा ॥ हांरे रागादिककी संग निवार ॥ तेरे आतमा ॥ ए आंकणी ॥ आय मिल्या हे तर न उपाव, मत जूले तुं अबको दाव ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ काल अनादिका जटक्या अनंत, अजुअ न पाया ज वजल अंत ॥ ज्ञा० ॥ चूकेगा जो आजका खेल, तो फिरि न मिले अैसा मेल ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ चढिके आ ठे जाव जिहाज, तर ले जवसागर बिनु पाज ॥ ज्ञा० ॥ जावमहा प्रवहनकौं फेर, ध्यान पवनसौं तैसें प्रेर ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ कुशल स्वजावें करिकें करार, जेसें पा वें जवतटपार ॥ ज्ञा० ॥ दुःख पाय तें नरक निगोद, करत बसेरा कर्मकी गोद ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ ता दुःख आ गें या दुःख कौंन, घटमें बिचारिकें देखत कौंन ॥ ॥ ज्ञा० ॥ या महिलाको कबुअ न दोष, मत कर इ न उपर तुं रोष ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काट न आयु, आइ जई हे साची सहायु ॥ ज्ञा० ॥ बाहि र तनकुं जारेंगी आगि, अच्यंतर तन नहीं इन ला गि ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ कहा दहेगी अगनि सगोल, अ

खय खजाना तेरा अमोल ॥ ज्ञा० ॥ मैत्री मेरे सब सौं होय, जीव सकलसौं वैर न कोय ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ आप खमाउं दोपरतीव, मोसौं खमहो सिगरे जीव ॥ ज्ञा० ॥ ऐसे धरे मुनि निर्मल ध्यान, क्षपकावलीकै चढी सोपान ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ घाति करमकों प्रजारे निदान, उपज्यो तवही केवलज्ञान ॥ ज्ञा० ॥ शुक्ल ध्यानानलको प्रयोग, अंतर वाहिर अगनि संयोग ॥ ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ तिनसौं जव उपग्राही कर्म्म, जस्म करैं लिनुमैं तजी जर्म्म ॥ ज्ञा० ॥ अंतगम केवली व्है के साध, पायो मुगतिपद जयो है अवाध ॥ ज्ञा० ॥ ॥ १० ॥ जनम जरा मृतके दुःख टार, जवकों जलां जलि दै निरधार ॥ ज्ञा० ॥ चोथे खंमें राग वंगाल, चोतीसमी पूरी जइ ढाल ॥ ज्ञा० ॥ कांतिविजय कहे देखहुं खेल, समतासौं जयो कर्म उखेल ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्वलित प्राय हुताशनें, हुउं जिव्हारें तेथ ॥ नाठी कनका पापिणी, वीहिती केथ अनेथ ॥ १ ॥ अहो दुष्टता नारिनी, विधि विरची विप सींची ॥ मारे अलवें अपरनें, तस रस सरवस खींचि ॥ २ ॥ मति जेहनी पग हेवले, दावी रहे सदाय ॥ अनरथ

करतां तेहनें, वासें कुण समजाय ॥ ३ ॥ एक साधु हणतां हुवे, जीव अनंत विनाश ॥ जांख्यो आगम मां इस्यो, तिर्थंकरें प्रकाश ॥ ४ ॥ भ्रष्ट हुई शुज्ज क र्मथी, दुष्ट पाप रस लीन ॥ कष्ट सहेशे नवनवां, अ ष्ट कर्मवश दीन ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥ विनता विहसी रे वीनवे ॥ ए देशी ॥

॥ रयणि विहाणी प्रह थयो, दिणयर कीध प्रकाशो रे ॥ बहु परिवारें परिवस्यो, अवनीपति सविलासो रे ॥ १ ॥ आवे मुनिनें रे वांदवा, शतबल जक्ति विलु ध्धो रे ॥ जनक वदन जोवा जणी, उत्कंठित मन सू धो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अति उत्सव आमंबरें, कानन मा जव आयो रे ॥ निरखे तेहवे रे साधुनो, देह जस्म मय ठायो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ असमंजस जोयाथकी, महीपति दुःखमांहें नमियो रे ॥ जक्तें प्रीतें रे जोल व्यो, ध्रसके धरा तल पमियो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ मोहें जास्यो रे राजवी, मूर्च्छांणो मन जणो रे ॥ सजग हुउ उ पचारथी, पामे तव दुःख दूणो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ प रिकर दुःखियो रे नृपदुःखें, रोवे विलवे अनेको रे, शोकनृपतिनें रे आंसुयें, करता पट अजिषेको रे ॥ ॥ आ० ॥ ६ ॥ नृपति पजणे रे पापीये, किणे ए की

खय खजाना तेरा अमोल ॥ ज्ञा० ॥ मैत्री मैरे सब सौं होय, जीउ सकलसौं वैर न कोय ॥ ज्ञा०॥ ७ ॥ आप खमाउं दोषरतीउ, मोसौं खमहो सिगरे जीउ ॥ ज्ञा०॥ ऐसे धरे मुनि निर्मल ध्यान, क्षपकावलीके चढी सोपान ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ घाति करमकों प्रजारे निदान, उपज्यो तबही केवलज्ञान ॥ ज्ञा० ॥ शुक्ल ध्यानानलको प्रयोग, अंतर बाहिर अगनि संयोग ॥ ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ तिनसौं जव उपग्राही कर्म्म, जस्म करैं विनुमें तजी जर्म्म ॥ ज्ञा० ॥ अंतगम केवली व्है के साध, पायो मुगतिपद जयो है अबाध ॥ ज्ञा० ॥ ॥ १० ॥ जनम जरा मृतके दुःख टार, जवकों जलां जलि दै निरधार ॥ ज्ञा० ॥ चोथे खंमें राग वंगाल, चोतीसमी पूरी जइ ढाल ॥ ज्ञा० ॥ कांतिविजय कहे देखहु खेल, समतासौं जयो कर्म उखेल ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्वलित प्राय हुताशनें, हुउ जिन्हारें तेथ ॥ नाठी कनका पापिणी, वीहिती केथ अनेथ ॥ १ ॥ अहो दुष्टता नारिनी, विधि विरची विष सींची ॥ मा रे अलवं अपरनें, तस रस सरवस खींचि ॥ २ ॥ म ति जेहनी पग हेठले, दाबी रहे सदाय ॥ अनरथ

करतां तेहनें, वासें कुण समजाय ॥ ३ ॥ एक साधु हणतां हुवे, जीव अनंत विनाश ॥ नांख्यो आगम मां इस्यो, तिर्थंकरें प्रकाश ॥ ४ ॥ भृष्ट हुई शुन्न कर्मथी, डुष्ट पाप रस लीन ॥ कष्ट सहेशे नवनवां, अष्ट कर्मवश दीन ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥ विनता विहसी रे वीनवे ॥ ए देशी ॥

॥ रयणि विहाणी प्रह थयो, दिणयर कीध प्रकाशो रे ॥ बहु परिवारें परिवस्यो, अवनीपति सविलासो रे ॥ १ ॥ आवे मुनिनें रे वांदवा, शतबल नक्ति विलुद्धो रे ॥ जनक वदन जोवा नणी, उत्कंठित मन सूधो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अति उत्सव आम्बरें, कानन माजव आयो रे ॥ निरखे तेहवे रे साधुनो, देह नस्म मय गयो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ असमंजस जोयाथकी, महीपति डुःखमांहें नम्यो रे ॥ नक्तें प्रीतें रे नोलव्यो, धसके धरा तल पम्यो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ सोहें नास्यो रे राजवी, मूर्छाणो मन ऊणो रे ॥ सजग हुउ उपचारथी, पामे तव डुःख दूणो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ परिकर डुःखियो रे नृपडुःखें, रोवे विलवे अनेको रे, शोकनृपतिनें रे आंसुयें, करता पट अनिषेको रे ॥ ॥ आ० ॥ ६ ॥ नूपति पनणे रे पापीये, किणे ए की

धुं अकाजो रे ॥ निर्ग्रंथ निःकारण वैरीयें, उपसर्ग्यो मुनिराजो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ भवभ्रमणथी रे दुर्मति, वीहीनो नहीं लवलेशो रे ॥ हाहा हियडुं रे तेहनुं, वज्र कठिन सुविशेषो रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ चरण तुमा रां रे तातजी, पामीनें पण दुहिलां रे ॥ प्रणमी न शक्यो रे पापथी, आवीनें हुं पहिलां रे ॥ आ० ॥ ए ॥ मीट तुमारी रे रस भरी, न पमी माहारे अंगें रे ॥ वचन तुमरां रे नवि सुण्यां, वेशी इण एक रंगें रे ॥ आ० ॥ १० ॥ सकल मनोरथ माहरा, विलय गया मनमांहिं रे ॥ कामें नाव्या रे कारिमा, जिम कूआनी छांहिं रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ तात तणो आ गम सुणी, हरख हुउं मुज जेतो रे ॥ इंण वेला मुज पापथी, थयो दुःखरूपी तेतो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ अशरण कीधो रे साहिबा, आजथकी हुं अनाथो रे ॥ सुतवत्सल जातां मुन्हें, लीधो कांइ न साथो रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ निरखी न शकुं रे तेहवी, एह अवस्था रे दीसे रे ॥ पुण्य किहांथी माहरे, दर्शन न लह्युं दी सें रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ शोकें पूर्‍यो रे जनकनें, विलपे इम नृपालो रे ॥ कांतें चोथा रे खंमनी, कही पणती समी ढालो रे ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूरित लोचन आंसुयें, खेदाकुल नूपाल ॥ निजन्न
टनें इम आदिसे, करि भृकुटीनो चाल ॥ १ ॥ पग अनु
सारें निरखता, करो शीघ्र परगट्ट ॥ जिम पापीनें पाप
फल, आवे उदय विकट्ट ॥ २ ॥ आप हृदय गाणे ठव्यो,
बीजो डुष्ट परिणाम ॥ डुःप्रधर्ष रस सींचतां, ऊग्युं क
टक विराम ॥ ३ ॥ मुनि हिंसा शाखाशतें, पाम्यो अति
विस्तार ॥ आशंकादिक कुसुमशुं, वाध्यो चिहुं पख
ञार ॥ ४ ॥ प्राणनाश फल तेहनुं, अभिमुख हूउं स
मक्ष ॥ हिंसकनें फलशे हवे, पोष्यो पातक वृक्ष ॥ ५ ॥
॥ ढाल ठत्रीशमी ॥ लाठलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी ततकाल, ऊठ्या नरु मठराल, आज
हो डुठा रे जण रूठा जाणे कालनाजी ॥ १ ॥ जोतां
इत उत नूम, मांके सबली धूम, आज हो धारे रे अ
नुसारे पगनें तेहनेंजी ॥ २ ॥ पुर बाहिर एक देश, पेखत
कुंज निवेश, आज हो दीठी रे त्रिय धीठी पेठी खाकु
मांजी ॥ ३ ॥ नीचे मुख नयनीत, श्याम वसन
अविनीत, आज हो वेठी रे ऊपरांठी काया गोपवीजी
॥ ४ ॥ सुहकें साही केश, काढी बाहिर देश, आज हो
आणी रे कलुषाणी सोंपी रायनेंजी ॥ ५ ॥ नूपें तामी

जोर, पामंती मुख सोर, आज हो पूछे रे कहे शुं छे कारण वेरनुंजी ॥ ६ ॥ हणिउं तें महाभाग, मुनिवरनें इणे जाग, आज हो लाखें रें तुज पाखें न करे को इ स्युंजी ॥ ७ ॥ हणी घणी भूपाल, सींची तरुनी भाल, आज हो भांखे रे सवि दाखे करणी आपणीजी ॥ ८ ॥ रुठो भूप तिवार, नाना विध देई मार, आज हो मारी रे तेह नारी सारी पातकेंजी ॥ए॥ आप चरितने यो ग, पामी फलनो भोग, आज हो छठी रे दुःख पूठी न रकें ऊपनीजी ॥ १० ॥ नरक तणा संताप, सहेशे अ ति दुःख आप, आज हो वक्रें रे भवचक्रें भमशे वापमी जी ॥ ११ ॥ चोथे खंमें रसाल, छत्रीशमी एह ढाल ॥ आज हो कांतें रे भलि भांतें भांखी शास्त्रथीजी ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भूमिपाल निज तातनो, शोक अतीव करंत ॥ समजाव्यो सचिवादिकें, पण क्षण नवि छंमंत ॥ १ ॥ जाणी तेहवुं तातनुं, दुस्सह मरण विराम ॥ पमियो शोकसमुद्रमां, भूप सहस्रबल ताम ॥ २ ॥ शतबल दशशतबल विन्हें, जनक शोक चित्त धारि ॥ लखमण राम तणी परें, तपे अरतिनें भार ॥ ३ ॥ कृष्णदेव बलिभद्रनें, द्वारावतीनें दाह ॥ शोक हुउं पितृनो जि

स्यो, तिस्यो हुउं इहां प्रांह ॥ ४ ॥ अरति हेतु गजराजनें, जिसी अजाकी खोह ॥ साहसधरनें पण तिस्यो, विषम स्वजननो मोह ॥ ५ ॥

॥ ढाल सारुत्रीशमी ॥ हुं दासी राम तुमारी ॥ ए देशी ॥

॥ एहवें निर्मल चरित्त पवित्ता, सत्य शील संतोष विचित्ता ॥ पालंती व्रत एक चित्ता, साध्वी मलया तप जुत्ता हो राज, महासती धुर शोहे ॥ श्रुतधर्मे नवि पडिबोहे हो राज ॥ म० ॥ १ ॥ एकादश अंगनी जाण, पामी शुन्न अवधिनाण ॥ नावंती थिर अप्पाण, संयम तव योग विहाण हो राज ॥ म० ॥ २ ॥ संदेह नविकना टाले, कुमतादिकना मद गाले ॥ एक अवसर अवधें नाले, महाबल निर्वाण निहाले हो राज ॥ म० ॥ ३ ॥ निज नंदन प्रतिबोधेवा, नवताप डुरंत हरेवा ॥ आवी तिण पुरि ततखेवा, होवे साधुनें धर्मनी टेवा हो राज ॥ म० ॥ ४ ॥ साधुयोग वसतीनें ठामें, पशु पंडग रहित सुधामें ॥ साध्वीनें गण अनिरामें, विंटी रही आइ सुकामें हो राज ॥ म० ५ ॥ शतबल नृपति अति नक्कें, वांदे श्रावकनी युक्तें ॥ समजावा साध्वी युगतें, जिणथी पामे वली मुक्तें हो राज ॥ म० ॥ ६ ॥ राजेंद्र पिता तुज शूरो, उपशम संवेगें पूरो ॥ सत्य साहस शौच सनूरो, पाम्यो शिवसुखमह

मूरो हो राज ॥ म० ॥ ७ ॥ उपसर्ग्यो कनकवतीयें, न कस्युं मन कलुषव्रतीयें ॥ नवसागर तरतां तीयें, अवलंबन दीधुं त्रीयें हो राज ॥म० ॥ ८ ॥ धन पुत्र कलत्र गृह नार, जस कारण तजीयें सार ॥ तप लोच क्रिया व्यवहार, साधीजें विविध प्रकार हो राज ॥ म० ॥ ए ॥ सेवे जे गिरि वन घांटा, सहियें कटुक वचनना कांटा ॥ उपसर्ग उरगनी आंटा, खमीयें थई धीरजना सांटा हो राज॥म० ॥ १० ॥ दुर्लन ते पद् तातें लाधुं, नीगमीयुं नवनय वाधुं ॥ हवे कां मन शोकें दाधुं, करे कांई वपुप ए आधुं हो राज ॥ म० ॥ ११ ॥ कृतकृत्य हुउ मुनिराय, तिणें हर्ष तणो ए उपाय ॥ ते माटे अहो महाराय, कांई शोक करे इणे गाय हो राज ॥ म० ॥ १२ ॥ पोतानो वाल्हो कोई, निधि पामे सहसा सोई ॥ तिहां शोक के हर्षज होई, कहे हियमे विचारी जोई हो राज॥म०॥ ॥ १३ ॥ विश्वानल पीमा तातें, सांसही होशे एह वातें ॥ चिंता म करे तिलमातें, जय अरथी खिति सहे गातें हो राज ॥ म० ॥ १४ ॥ साधक नर विद्या साधे, पहेलुं तिहां दुःख सहे वाधे ॥ निज कारज सिद्धि आराधे, तव आयत फल सुख लाधे हो राज ॥ म० ॥ १५ ॥ पहेलुं दुःख सघले दीसे, पाछें सुख संनव हीसे ॥ इ

म जाणीने विश्वावीशें, मन नाखे शोकमां कीसें हो राज ॥ म० ॥ १६ ॥ नेट्या नहीं चरण पिताना, मत कर इंम नरि चिंताना ॥ पहेली परे हवणां दाना, तुज नक्तिना गुण नहीं ठाना हो राज ॥ म०॥ १७ ॥ शोक मूकीने हवे नूप, संसारनो नावि सरूप ॥ दृढ धारी विवेक अनूप, तज दूरें ए नवकूप हो राज ॥ म० ॥ १८ ॥ डुःख सागर ए संसार, संगम सुपना अनुकार ॥ लखमी जिम वीज संचार, जीवित बुंद बुंद अणुहार हो राज ॥म० ॥ १ए ॥ तुज सरिखा जो इंम करशे, शोकाकुल हियडुं नरशे ॥ वापड्लो किहां संचरशे, धीरज थानक विण फिरशे हो राज ॥म० ॥ २० ॥ इंम धर्म तणो उपदेश, निसुणी प्रतिबुज्यो नरेश ॥ ठंमे सवि शोक कलेश, संवेग लह्यो सुविशेष हो राज ॥ म० ॥ २१ ॥ प्रणमे नित्य नित्य नूपाल, महत्तरिका चरण त्रिकाल ॥सामत्री शमी ए कही ढाल, चोथेखंम कांति रसालहोराज ॥ म०

॥ दोहा ॥

॥ महत्तरिकाना मुखथकी, सुणे धर्म उपदेश ॥ करे महोन्नति धर्मनी, धर्म धुरीण नरेश ॥ १ ॥ शत बल मुनि निर्वृतिथलें, मांड्यो नवल प्रासाद ॥ तात तणी प्रतिमा तिहां, थापे तजी विषवाद ॥ २ ॥

उत्सव रंग वधामणां, वर्त्तावे निशिदीश ॥ ल्ये लाहो लखमी तणो, अवसरविद अवनीश ॥ ३ ॥ सकल नगर लोकां प्रत्यें, करी महा उपगार ॥ नृपनें पूठी महत्तरा, तिहांथी करे विहार ॥ ४ ॥ पुहवीगण महापुरें, लघु सुत बोधण काम ॥ समवसरी मलया महा, सती नमी नृप ताम ॥ ५ ॥

॥ ढाल आम्त्रीशमी ॥ जांजरीया मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवीपति साधवी मुखेजी, निसुणी रे श्रीश्रुत धर्म ॥ सपरिवार जिन धर्ममांजी, थिर थयो प्रीछीनें मर्म ॥ १ ॥ गुणवंतो रे महीपति, नावी सहसबल नाम ॥ ए आंकणी ॥ दिन केताइक अंतरेंजी, शतबल नामें नरिंद ॥ महत्तरा वंदन नणीजी, थयो उतकंठ अमंद ॥ गु० ॥ २ ॥ लघु बांधवना प्रेमथीजी, आकरण्यो उमगंत ॥ आवे तिहां परिवारशुं जी, बे बांधव त्यां मिलंत ॥ गु० ॥ ३ ॥ बे बांधव दिन प्रत्यें जइजी, वांदी महत्तरा पाय ॥ सुणे धरमनी देशनाजी, मन थिरनावें ठहराय ॥ गु० ॥ ४ ॥ समकितधारी व्रतधरुजी, पूजितदेव त्रिकाल ॥ दानें पोषे पात्रनेंजी, जीवदया प्रतिपाल ॥ गु० ॥ ५ ॥ य

थाशक्ति तप आचरेजी, साहमीनी करे नक्ति ॥ दान
शाला मांके घणीजी, वारे अधर्म प्रसक्ति ॥ गु० ॥ ६ ॥
मारि शब्द जनपद थकीजी, काढे दूर तदंत ॥ वीतरा
ग आणा धरेजी, धारे चित्त विकसंत ॥ गु० ॥ ७ ॥
गाम नगर पुर पाटणेजी, थापे जिनना प्रासाद ॥ जि
ननवनें जिन बिंबनेंजी, पूजे अति आल्हाद ॥ गु० ॥
॥ ८ ॥ अठाइ महोत्सव करेजी, रथ यात्रा विरचं
त ॥ तीर्थ यात्रा आदें घणांजी, सुकृत अनेक करंत
॥ गु० ॥ ए ॥ धर्मनारना धुरंधरुजी, मांहो मांहि
सनेह ॥ शासननी उन्नति वधीजी, करता रहे तिहां
बेह ॥ गु० ॥ १० ॥ नृप अनुजाइ पुरतणाजी, लोक
सकल सेवे धर्म ॥ लोकोत्तर धर्में तिहांजी, ढांक्यो
लौकिक नर्म ॥ गु० ॥ ११ ॥ शुद्ध धर्ममां थापिनेंजी,
पुरजनने समजाई ॥ आपूठी बिहुं पुत्रनेंजी, अने
थि महत्तरा जाई ॥ गु० ॥ १२ ॥ घणा वरस लगें
पालीयुंजी, चारित निरतीचार ॥ तपोयोगध्यानें करी
जी, लघु कस्या डुरितना नार ॥ गु० ॥ १३ ॥ अंतें अण
सण आदरेजी, श्रीमती मलया नाम ॥ आराधीनें क
पनीजी, अच्युत कल्पें ताम ॥ गु० ॥ १४ ॥ बावीश
सागर देवीनुंजी, पालीने निरुपम आय ॥ महाविदेहें

अनुक्रमेंजी, ऊपजशे शुन्नगाय ॥ शु० ॥ १५ ॥ वोधिन्नाव लहेशे तिहांजी, सुगुरु संयोग लहेवि ॥ शुद्ध चारित्र तिहां पमिवजीजी, लेहेशे मुगति सुखहे वि ॥शु० ॥१६॥ ढाल कही अमत्रीशमीजी, चोथा खंमनी एह ॥ कांति कहे मलया इहांजी, पामी नवतणो छेह ॥ शु० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक श्लोक चिंतनथकी, पामी मलया पार ॥ ते माटे संसारमां, ज्ञान सकल शिरदार ॥ १ ॥ सुप रीक्षक सुविवेकीयें, करवो ज्ञानान्यास ॥ फुहिलम संकट उमरे, ज्ञान निधान प्रकाश ॥ २ ॥ संकटमां पण पालीयुं, जिम मलयायें शिल ॥ तिम वली वीजो पाल शे, ते लेहेशे शिवलील ॥ ३ ॥ महावलें जिम सांसह्यो, माहा विषम उपसर्ग ॥ तिम वली जे सहेशे खरो, लेहेशे ते अपवर्ग ॥ ४ ॥ जिम प्रथम व्रत आदस्यां, दंपतीयें दृढ चित्त ॥ आदरवां तिम नावथी, वीजे पण सुप वित्त ॥ ५ ॥ कीधी मुनि आशातना, दंपतीयें धुर जेम ॥ फुख हेतु जाणी तिसी, करशो मां कोई तेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल ओगणचालीशमी ॥ दीठो दीठो रे वामाजीको नंदन दीठो ॥ ए देशी ॥

॥ नावे नावे रे नवि करजो ज्ञान अन्यास ॥ ज्ञानें

संकट कोमि पलाये, ज्ञानें कुमति न बाधे ॥ ज्ञानें सु
जश लहे जगमांहीं, ज्ञानें शिवपद साधे रे ॥ नवि क
रजो ज्ञा० ॥ १ ॥ यद्यपि नाणादिक समुदित इहां,
मुगति हेतु जिन नांख्युं ॥ तोपण योगक्षेमनुं हेतु,
पहेलुं ज्ञानज दाख्युं रे ॥ न० ॥ २ ॥ पासतणा नि
र्वाण दिवसथी, वरिस गयां शत एक ॥ तेहवे हुई सत्य
शील सलूणी, मलया सुंदरी सुविवेक रे ॥ न० ॥ ३ ॥
श्लोक एकनो नाव विचारी, तेह लही नवपार ॥ ते
कारण शिवसाधन साचुं, ज्ञानज एक उदार रे ॥ न०
॥ ४ ॥ शंख नरेश्वर आगें पहेलुं, श्री केशीगणधारें ॥
मलय चरित नांख्युं विस्तरथी, ज्ञानतणे अधिकारें
रे ॥ न० ॥ ५ ॥ तेह तणो रस सर्वस्व लेई, श्रीजय
तिलक सूरींदें ॥ नूतन मलयचरित्त संक्षेपें, नांख्युं
अति आनंदें रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ज्ञान रत्नव्याख्या इति
नामें, त्रण अधिकारें प्रसिद्धो ॥ तेहमांहि इम संबं
ध सूधो, धुर अधिकारें लीधो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ श्रीत
पगण गणनायक गिरुआ, श्रीविजयप्रन सूरि ॥ गुण
वंता गौतम गुरु तोलें, महीमां महिमा सनूर रे ॥ न०
॥ ८ ॥ तास शिष्य कोविदकुल मंमन, प्रेमविजय बु
ध राया ॥ कांतिविजय तस शिष्यें इणि परें, विध विध

भाव बनाया रे ॥ भ० ॥ ए ॥ संवत सर मुनि मुनि इ
धु (१७७५) वर्षें, रही पाटण चोमास ॥ श्रीविजयद
र्मा सूरीश्वर राज्यें, गाई मलया उल्लास रे ॥ भ० ॥ १० ॥
अखा त्रीज तणे शुभ दिवसें, रास हुउं सुप्रमाण .
बालकनीपरें माहरी, हांसी न करशो सुजाण रे
॥ भ० ॥ ११ ॥ श्रीजयतिलक वचनथी जे में, न्यूना
धिक कांई भांख्युं ॥ संघ सकलनी साखें तेहनुं, मि
छाडुक्कम्म दाख्युं रे ॥ भ० ॥ १२ ॥ उत्तमना गुण
परिचय करतां, होय समकितनो शोध ॥ उत्तर लाभ
अधिक वली पामे, श्रोता जे प्रतिबोध रे ॥ भ० ॥ १३ ॥
पाटण नगरनो संघ विवेकी, तस आग्रहथी सीधी ॥
चिहुं खंडें थई सर्व संख्यायें, ढाल एकाणुं कीधी रे
॥ भ० ॥ १४ ॥ जे भवि भावें भणशे गुणशे, लेहेशे ते
जयमाल ॥ उगुणचालीशमी कही कांतें, चोथा खंड
नी ढाल रे ॥ भ० ॥ १५ ॥ सर्व श्लोक संख्या ॥ ३४८८ ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनाम्नि श्रीमलयसुं
दरीचरित्रेपंडितकांतिविजयगणिविरचितेप्राकृतप्रबंधे
शीलावदातपूर्वभववर्णनोनामाचतुर्थखंडःपरिसमाप्तः॥